राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली

शादी

भूमिका

संसार में सर्वाधिक रसमय संबंध कदाचित् पुरुष-स्त्री का है। इसकी रसमयता के अतिरिक्त भी इसमें और अन्य संबंधों में अंतर है। अन्य संबंधों में एक भोक्ता होता है और दूसरा भुक्त। इसमें भोक्ता-भुक्त दोनों ही हैं। इस कारण यह आदिकाल से चिन्ता और चिन्तन का विषय बना हुआ है।

प्रत्येक रसमय संबंध में भोग का भोग करने वाले पर प्रभाव होता है। यह प्रभाव ही चिन्तन और चिन्ता का विषय है। कारण यह कि इसका प्रभाव तत्कालिक स्वाद और उससे उत्पन्न होने वाले सुख-दुःख के अतिरिक्त सन्तान के रूप में है। यही सब झगड़े का मूल है।

जो लोग जीवधारियों में किसी आत्म-तत्त्व की उपस्थिति मानते हैं, वह इस बन रहे जीव के लिए संसार का द्वार बंद करना नहीं चाहते। दूसरे, जो एक जीवधारी और निर्जीव में केवल मात्र प्रकृति की स्थिति का अंतर मानते हैं, वह इस फल को नष्ट कर देने में हानि नहीं समझते।

इस फल के नष्ट करने मे भी दो स्थितियां हैं। एक यह कि इसे बनने ही न दिया जाए और दूसरी यह कि बन जाने पर नष्ट कर दिया जाए; दोनों ही स्थितियां आत्म-तत्त्व मानने वाले स्वीकार नही करते। दोनों को पाप मानते हैं।

एक तीसरा पक्ष भी है जो इस फल से बन रहे समाज के विचार से भी इसके बनने में बाधा अथवा बन जाने पर नष्ट करने में चिन्ता का विषय मानते है।

इन सब परिणामों पर और उनमें सब दृष्टिकोणों से प्रकाश डालने का यत्न इस पुस्तक में किया गया है।

वास्तविक प्रश्न ये हैं—

(1) इस उत्कट स्वाद को नियंत्रण में रखने की आवश्यकता है अथवा नहीं?

(2) विवाह इसको नियंत्रित रखने में कुछ योगदान देता है अथवा नहीं?

(3) इसका रसास्वादन करने वाले आने वाले जीव के प्रति और उससे बनने वाले समाज के प्रति अपना कुछ उत्तरदायित्व समझें अथवा नहीं?

(4) जो पहले आ गए हैं, उनको अधिकार है क्या कि पीछे आने वालों का मार्ग अवरुद्ध करें ?

(5) समाज के घटक होने से समाज से लाभ उठाने वाले समाज को श्रेष्ठ बनाने में कुछ जिम्मेदारी मानते हैं अथवा नहीं ?

(6) इन सब स्थितियों में विवाह का प्रभाव क्या होता है ?

ये सब समस्याएं आदिकाल से चली आती हैं और मानव समाज ने इन समस्याओं को सुलझाने में विवाह से श्रेष्ठ और सबल प्रभाव वाला कोई अन्य उपाय प्रतीत नहीं किया ।

अनेक पथ, वाम मार्ग, भैरवी चक्र और कुपंथ भी विवाह का स्थानापन्न ढूंढने में लीन रहे हैं । परन्तु वेद जैसी सबसे प्राचीन पुस्तक में विवाह-पद्धति की श्रेष्ठता वर्णन होने से लेकर आज भूमण्डल के सब देशों में यही स्वीकार की गई है ।

यह पुस्तक एक उपन्यास है । इसमें वर्णित घटनाएं और व्यक्ति सब काल्पनिक हैं । केवल विषय ही सत्य और विवेचनीय है ।

—गुरुदत्त

प्रथम परिच्छेद

सेठ महेश्वर प्रसाद की पत्नी सत्यवती बम्बई बाईकुला क्षेत्र मे एक मकान की सातवीं मंज़िल पर एक फ्लैट के ड्राइंग रूम में बैठी चाय के लिए पति और बच्चों की प्रतीक्षा कर रही थी। पति इसी मकान की दूसरी मंज़िल पर कारोबार के कार्यालय में काम समाप्त कर आने वाला था।

सत्यवती की एक लड़की और एक लड़का था। लड़का सिद्धेश्वर हायर सैकेण्डरी में पढ़ता था। वह स्कूल से आ चुका था और अपने कमरे में बैठा परिवार के अन्य सदस्यों के चाय के लिए आने की प्रतीक्षा कर रहा था। लड़की लड़के से आठ वर्ष बड़ी थी। वह एम० ए० पास कर राज्य सचिवालय में सेवा कार्य प्राप्त कर चुकी थी।

वास्तव में रेवा की प्रतीक्षा हो रही थी। पिता भी अपना कार्य समेट लड़की के सचिवालय से आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

रेवा सवा पांच बजे आई और लिफ्ट से ऊपर के फ्लैट को चढ गई। पिता ने उसे ऊपर जाते देखा तो वह भी उठा और कार्यालय के चपरासी को कार्यालय बन्द करने को कहने लगा। वह लिफ्ट की ओर चल पड़ा। लिफ्ट लड़की को लेकर ऊपर गई थी। इस कारण सेठ साहब उसकी नीचे आने की प्रतीक्षा करने लगे।

चपरासी ने कार्यालय बन्द किया और चाबी सेठ जी को दी ही थी कि लिफ्ट नीचे आ गई। सेठ जी भी उसमें सवार हो, ऊपर जा पहुंचे।

वह घर के ड्राइंग रूम मे पहुंचे तो पत्नी एक सोफे पर बैठी थी। सेविका मोहिनी सैण्टर टेबल पर चाय का सामान लगा रही थी।

सेठ जी ने सोफा पर बैठते हुए पूछा, "रेवा आई थी?"

"जी! आप बैठिए। वह भी आती है।"

इस समय लड़का सिद्धेश्वर आ गया। बैठते ही बोला, "पिता जी! हमारी कल से परीक्षा आरम्भ हो रही है।"

"और तुम इसके लिए तैयार हो?"

"जी! उत्तीर्ण तो अवश्य ही हो जाऊंगा। सम्भव यह है कि स्कूल में प्रथम रहूं।"

"मुझे तुम्हारे उत्तीर्ण होने से मतलब है। प्रथम होने से कुछ विशेष लाभ नही होगा। तुम्हारी बहन प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने लगी तो फिर उसने पढ़ाई छोड़ी

ही नहीं, जब तक आगे पढ़ने के लिए कोई श्रेणी नही रही। और फिर मेरे व्यवसाय में सहायक होने के स्थान पर वह सचिवालय में सेवा-कार्य करना पसन्द कर बैठी है।"

"पर पिता जी ! मैं आपके साथ व्यापार में लग जाऊंगा।"

इस समय मोहिनी कमरे से बाहर निकल गई। रेवा अभी भी नहीं आई थी और सत्यवती पति तथा लड़के के लिए प्यालों में चाय बनाने लगी।

"और रेवा ?" सेठ जी ने पूछा।

"उसकी तबीयत ठीक नही है। इस कारण चाय नही लेगी।"

"क्या कष्ट है ?"

"आप चाय लीजिए। चाय के उपरान्त मैं पता करूंगी।"

सेठ जी समझे नही। परन्तु घर के विषय मे, विशेष रूप से बच्चों के विषय में सत्यवती की बात सर्वोपरि होती थी। इस कारण सेठ जी चुप हो गए और चाय लेने लगे। एक-दो घूंट चाय लेकर सेठ जी पुत्र से ही पूछने लगे, "कब तक परीक्षा समाप्त होगी ?"

"अप्रैल की दस तारीख को अन्तिम परीक्षा है।"

"तब ठीक है। मैं यूरोप जा रहा हूं और जाने से पूर्व तुम को यहा कुछ काम समझा देना चाहता हूं, जिससे तुम यहां की सूचना मुझे देते रहा करोगे।"

सिद्धेश्वर प्रसन्न था। यद्यपि वह श्रेणी मे एक योग्य प्रतिभाशाली विद्यार्थी समझा जाता था, परन्तु वह स्कूल-कालेजों की चक्की से बाहर हो अपनी बुद्धि का और अन्य गुणो का प्रयोग करना चाहता था।

उसने पूछ लिया, "पिता जी ! कब जाएंगे ?"

"मई मास के मध्य में।"

चाय के साथ देसी मिठाई थी। तीनों, पिता, मां और पुत्र मज़े में लेते रहे।

चाय समाप्त हुई। सेठ जी उठकर कुछ मिनट के लिए आराम करने अपने बैड रूम मे चले गए। लड़का भी उठा और अपने पढाई के कमरे मे चला गया।

मा उठकर लड़की के कमरे मे जा पहुंची। लड़की पलंग पर लेटी हुई थी।

"क्या बात है रेवा !" मां ने कमरे मे प्रवेश करते हुए पूछा।

रेवा मां का मुख देखती हुई लेटी रही। उसने उत्तर नही दिया।

मां ने पलग के समीप कुर्सी खिसका, उसपर बैठते हुए कहा, "मोहिनी कह रही थी कि तुम खाया-पिया उलट रही थीं।"

"हां, मा ! मध्याह्न का खाया छाती पर अटका रखा था। अभी लिफ्ट से ऊपर आते हुए मितली हुई और यहां पहुंच बाथरूम में जा सब निकाल आई हूं।"

"मैं दो-तीन दिन से तुम्हारे मुख पर विवर्णता देख रही हूं ?"

"मां ! असल बात यह है कि मुझे दिन चढ गए हैं। मुझे रजस्वला हुए दो

मास से ऊपर हो चुके हैं।"

"ओह! यह कैसे हो गया?" मां आश्चर्य से रेवा का मुख देखती रह गई।

"मैं समझती हूं कि वैसे ही हुआ होगा जैसे सब औरतों को होता है। मैं चाहती तो नहीं थी, परन्तु कहीं भूल हो गई है और यह हो गया है।

"मैं आज आधे दिन की छुट्टी लेकर डाक्टर के पास गई थी। डाक्टर ने परीक्षा कर बताया है कि दो मास का गर्भ है।

"मैंने उसे गर्भपात के लिए कहा है, परन्तु उसकी राय है कि यह ठीक नहीं होगा।

"वैसे मुझसे एफिडेविट लेकर वह यत्न कर सकती थी, परन्तु उसने मुझे राय दी कि मैं ऐसा न कराऊं। मेरा भावी जीवन बिगड़ सकता है।"

"और यह किसका है?"

"बता नहीं सकती।"

इस पर तो मां पीत मुख लड़की की ओर देखती रह गई। उसने पूछा, "तो तुम एक से अधिक पुरुषों की संगत में रहती हो?"

"यही तो कह रही हूं।"

"तुमने बहुत बुरा किया है।"

"क्या बुरा किया है? मां! यह एक भूल तो हुई है कि असावधान हो गई थी और सन्तान निरोध का उचित उपाय प्रयुक्त नहीं हुआ। परन्तु यह कुछ बुरा हुआ है, ऐसा मैं नहीं मानती!"

"मैं यह नहीं कह रही हूं। मैं तो यह कह रही हूं कि तुमने विवाह किए बिना किसी पुरुष की संगत का लाभ उठाया है। यह बुराई है।"

अब लड़की उठकर बैठ गई। लेटे-लेटे वह भलीभांति युक्ति नहीं कर पा रही थी। उसने बैठते हुए कहा, "देखो मां! पिछले वर्ष मैं गुरु जी के आश्रम में गई थी। वहां दो दिन उनका प्रवचन सुनती रही थी। उनका मत था कि विवाह का विधान मानव समाज के घोर पतन का कारण हो गया है। उन्होंने यह भी कहा था कि आदिकाल में मनुष्यों में विवाह का विधान नहीं था और पुरुष-स्त्री स्वेच्छा से तथा स्वतन्त्रता से विचरते थे।

"तब पिता जी भी मेरे साथ थे और उन्होंने भी आचार्य जी के प्रवचन को सुनकर पसन्द किया था।

"तब से ही मैंने अपना व्यवहार बदला है। सन्तान न हो, इसकी शिक्षा बर्थ कन्ट्रोल क्लीनिक वालों ने दी थी। वहां मैंने बताया था कि कुछ ही दिनों में मेरा विवाह होने वाला है और मैं अभी सन्तान नहीं चाहती। इस कारण वहां काम करने वाली लेडी डाक्टर ने बहुत परिश्रम से मुझे इस विषय में सब कुछ समझा दिया था।"

मां यह कथा सुन अवाक् हो लड़की का मुख देखती रह गई। आखिर उसने बिखर गए दूध का विचार छोड, जो कुछ बचा है, उसकी रक्षा के विषय में विचार करना आरम्भ कर दिया। उसने पूछा, "तो अब क्या करोगी ?"

"मां ! अभी तो दस-पन्द्रह दिन की कार्यालय से छुट्टी लेकर अपनी पाचन-शक्ति को ठीक करूंगी। तदनन्तर मैं कार्यालय जाया करूंगी। डाक्टर मिस रमजान से बात कर आई हू। मुझे वह अपने क्लीनिक मे प्रसव से पूर्व भरती कर लेगी और फिर मेरे स्वस्थ होने तक वह वहां रखेगी। मैंने उससे होने वाले बच्चे के 'डिस्पोज़ल' के विषय मे भी विचार किया है। उसने वचन दिया है कि इसके विषय मे भी वह मेरी सहायता करने का यत्न करेगी। इस सब का वह दो हजार रुपया मागती है। औषधि इत्यादि का मूल्य पृथक होगा और यदि किसी अन्य डाक्टर की सहायता की आवश्यकता पड़ी तो उसकी फीस भी पृथक देनी पडेगी।"

"और तुम मान आई हो ?"

"हा ! और कह आई हू कि मैं कल उसे कुछ पेशगी जमा करा दूगी।"

"तो तुम्हारे पास रुपया है ?"

"हा, मा ! मैं इसके लिए तुमसे अथवा पिता जी से नही मागूगी।"

"तो डाक्टर से मिलने कब जाओगी ?"

"मा ! मैं तुमको साथ नही ले जाऊंगी। मैंने वहां अपना नाम और पता भी मिथ्या लिखवाया है। मैं नही चाहती थी कि इस घटना से पिता जी के नाम पर किसी प्रकार का लाछन लगे।"

सत्यवती कितनी देर तक लड़की के पलंग के समीप कुर्सी पर गम्भीर विचारों मे निमग्न बैठी रही।

आखिर वह उठी और एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर बोली, "किसी मूर्ख के प्रवचन को अपनी मलिन बुद्धि से विचार कर घोर नरक की ओर चल पडी हो। परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे।"

रेवा की हसी निकल गई। वह मां को सात्वना देने के लिए बोल उठी, "मां ! तुम चिन्ता न करो। मैं पिता जी और पिता जी के परिवार को इससे बाहर रखना चाहती हूं। और तुम तो जानती ही हो कि जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वैसा ही उस कर्म का फल भोगता है। इस कारण तुमको मेरे इस कर्म से भयभीत नही होना चाहिए। तुम अपने विचार से इसके फल से अछूती रहोगी।

"यद्यपि मैं ऐसा नही मानती। मैं तो एक समाजवादी जीव हूं। मैं और मेरे समाज के लोग अपना एक नया समाज बना रहे हैं और मेरी नौका इस भवसागर को पार करने की क्षमता रखती प्रतीत होती है।"

मां न तो लडकी जितना पढ़ी थी और न ही वह कभी अपने पति के गुरु के प्रवचन सुनने गई थी। वह एक निष्ठावान् हिन्दू परिवार की कन्या थी।

जब उसने सुना कि लड़की उसके पति के गुरु की शिष्या बन बिना विवाह के किसी अज्ञात पुरुष के बीज को अपने पेट मे सींचने लगी है तो वह कमरे से निकल आई।

रेवा के कमरे स वह सेठ जी के कमरे मे गई। सेठ जी सायंकाल के भ्रमण के लिए जाने वाले थे और वह पत्नी को साथ ले जाने के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

सत्यवती आई तो पूछने लगे, "क्या है रेवा को ?"

सत्यवती ने हाथ के संकेत से बैठने को कहा और स्वयं उनके समीप बैठ उसने रेवा की पूर्ण बात बता दी।

सेठ महेश्वर प्रसाद पूर्ण कथा सुन खिलखिलाकर हंस पड़ा। इससे तो सत्यवती को अत्यन्त विस्मय हुआ और वह प्रश्नभरी दृष्टि से पति के मुख की ओर देखने लगी।

सेठ जी ने कहा, "मुझे स्मरण है गुरु जी ने क्या कहा था और मुझे यह भी स्मरण है कि मैं उस समय मुस्कराया था। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं था कि मुझे उनकी बात पसन्द आई थी। अगले दिन बहुत प्रातःकाल, गुरु जी अभी अपनी समाधि पर बैठने की तैयारी कर रहे थे कि, मैं उनको कहने जा पहुंचा था कि उन्होंने अधूरी बात कहकर वहां एकत्रित होने वाले युवक-युवतियों को मिथ्या मार्ग पर डालने का यत्न किया है।

' उनका कहना था, 'मैंने अपनी साधना का फल बता दिया है। प्रत्येक साधक की प्रकृति उसका मार्ग दर्शन करेगी। यह स्त्री की प्रकृति में है कि वह अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध करे।'

"उन्होंने यह भी बताया था कि विवाह की प्रथा दुर्बलात्मा मनुष्यों ने, विशेष रूप से पुरुषों ने, निर्माण की है। मैं मानव समाज को इस दासता की शृंखला से मुक्त करने का उपाय बताता हूं और यह प्रकृति के स्वभाव में है कि वह क्रिया की प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। यह प्रतिक्रिया अनेकों प्रकार से उत्पन्न हो सकती है।

"हम, मेरा मतलब है कि मैं और रेवा तो उसी दिन मध्याह्न की गाडी से बम्बई लौट आए थे। इस वर्ष मैं जा नहीं सका।"

"तो", सत्यवती का कहना था, "यह आपके गुरु जी का विष ही है। मैं कहती हूं कि इसका फल अति कटु होने वाला है !"

"नहीं रानी ! मैं इसके फल की दिशा मोड़ दूंगा। तुम निश्चिन्त रहो। क्या नाम बताया है रेवा ने डाक्टर का ?"

"डाक्टर रमज़ान, एम० बी० बी० एस०।"

"ठीक है ! मैंने उसका क्लीनिक देखा है। अच्छा, मैं भ्रमण के लिए जा रहा हूं। चलोगी ?"

"इस घटना को सुनकर चित्त नहीं करता।"

"तुम भी हो तो स्त्री ही न। व्यर्थ की चिन्ता करती रहती हो। जो जैसा करता है, वैसा शुभ-अशुभ उसको प्राप्त होता है !"

"आप जाइए। मैं आज नहीं जा रही।"

सेठ जी गए तो वह ड्राइंग रूम में आ गई। वहां सिद्धेश्वर अपनी मां की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने पूछा, "मां ! रेवा दीदी को क्या है ?"

"वह बीमार है। उसे औरतों वाली बीमारी है। पुरुषों को इसमें झांकना नहीं चाहिए।"

सिद्धेश्वर चुप कर रहा।

रात खाने के समय रेवा को भूख लगी तो वह भी खाने की मेज पर आ बैठी।

मा ने कह दिया, "सयम से थोड़ा-थोड़ा खाओ। नहीं तो फिर शैक को भागोगी ?"

"मां ! मैं सावधान हूं।"

भोजन पर भी परिवार के चारों व्यक्ति उपस्थित थे। उस समय रेवा की बीमारी के विषय में किसी प्रकार की बात नहीं हुई। रेवा ने पुदीने की चटनी के साथ आधी चपाती ही ली और फिर खाना बन्द कर दिया।

जब सेठ जी और उनकी पत्नी अपने सोने के कमरे में गए तो सेठ जी ने बताया, "मैं डाक्टर मिस रमजान से मिल आया हूं और उसके साथ सब प्रबन्ध कर आया हूं।

"डाक्टर ने कहा है कि वह गर्भपात के खिलाफ है। यद्यपि उसे गर्भपात करने का लाईसेंस मिला हुआ है। परन्तु वह यह कर्म यथाशक्ति रोकती है। यही उसने मिस सोमानी को कहा है।"

"मिस सोमानी ?"

"हां, यही नाम डाक्टर को बताया है और उसने अपने रजिस्टर मे लिखा है।"

"और आप किस नाम से उसके साथ मिले हैं।"

"राम सरोदे। मैं मराठी में ही उससे बात करता रहा हूं। मैं समझता हूं कि उसे विश्वास हो गया है कि मैं मराठा सरकारी अफसर हूं।"

"उससे आप क्या निश्चय कर आए हैं ?"

"यही कि यह प्रसवादि सही-सलामत हुआ तो दो सहस्र रुपया मैं उसे दूंगा और पीछे बच्चे के एक वर्ष तक पालन-पोषण का पूरा व्यय भी दूंगा। जब बच्चा एक वर्ष का होगा। तब उसके विषय में पुनः विचार कर लिया जाएगा। यदि बच्चे दो हुए तो तीन सहस्र दूंगा।"

"परन्तु प्रसव का खर्चा तो रेवा दो सहस्र रुपये स्वय देने का वचन दे चुकी है?"

"उसके पास धन फालतू आ रहा है। वह उसको नाली में बहाने का विचार कर रही है तो मैं कैसे मना कर सकता हूं, परन्तु वह धन दे रही है बच्चे को 'डिस्पोज ऑफ' करने के लिए। डाक्टर ने इसका अर्थ समझाया है। वह यह कि पैदा होते ही उसको कुछ खिलाकर उसकी हत्या कर देगी कि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हुआ है। मैं उसे यह सब कुछ दे रहा हूं बच्चे के सही-सलामत उत्पन्न करने और फिर एक वर्ष तक पालन-पोषन करने के लिए। एक वर्ष बाद उसके पालन-पोषण का मैं स्वयं प्रबन्ध करूंगा।

"देखो रानी! मेरा इसमें कूद पड़ने का उद्देश्य केवल दयाभाव है। प्रकृति जो कुछ निर्माण करती है, उसमें सहायक होने के लिए। डाक्टर का उद्देश्य, मैं यह समझा हूं कि हजरत मुहम्मद की उम्मत में एक की वृद्धि करना है। मैं उसमें बाधा खड़ी करना चाहता हूं।"

सत्यवती ने कहा, "यदि वह मुझे बताकर डाक्टर से निश्चय करती तो मैं गर्भपात कराने का यत्न करती?

"मैं समझती हूं कि यह प्रकृति मायावी है। यह मनुष्य को घेर-घार कर अपने जाल में फमाकर अपनी सृष्टि में वृद्धि करती रहती है। मैं इस मायावी प्रकृति की माया को भग करने का यत्न करती।

"आपने तो रूढ़िवादी हिन्दुओं के दयाभाव से प्रेरित होकर इस दुर्घटना का मुख मोड देने का यत्न किया है।"

"परन्तु देवी! मैं यह सन्तान में वृद्धि के लिए नही कह रहा। मैं तो जो कुछ निर्माण हो गया है, उसकी रक्षा के लिए ही यत्न कर रहा हूं। यही तो अहिंसावाद है। इसी से मैं सामान्य हिन्दू से भिन्न हूं।"

सत्यवती समझी नही, परन्तु इतना समझ गई कि उसकी और पतिदेव की विचार दिशा मे अन्तर है। इस कारण वह चुप कर रही।

रेवा को डाक्टर ने 'मॉनिंग सिकनैस' की औषधि देकर एक सप्ताह में ही कार्यालय में काम-काज करने योग्य कर दिया। परन्तु एक पखवारा भर कार्यालय से अनुपस्थित रहकर जब रेवा कार्यालय मे पहुंची तो उसके कार्यालय के विभाग के कई साथी, उससे उसकी अनुपस्थिति का कारण पूछने लगे। रेवा के दो प्रकार के उत्तर थे। कुछ को वह कहती थी कि आगामी रविवार सविस्तार से बताऊंगी, कुछ अन्य को यह कहती थी कि पेट में पीड़ा हो गई थी। उसकी चिकित्सा में पन्द्रह दिन लग गए हैं और यह उसका सौभाग्य है कि वह शीघ्र ही पुनः सब प्रकार से स्वस्थ हो काम पर आ सकी है।

इन मिजाजपुर्सी करने वालों में विभाग के सुपरिन्टेंडेण्ट मिस्टर रावर्ट

कार्माइकल भी थे। यह महानुभाव ऐंग्लो इण्डियन कम्यूनिटी के घटक थे। इनकी मा एक महाराष्ट्रियन अछूत जाति की थी और पिता एक नीग्रो स्त्री तथा अमेरिकन पुरुष का परिणाम था।

सुपरिन्टेंडेण्ट लच के समय से पहले आया और खड़े-खड़े रेवा से हाथ मिला कर पूछने लगा, "अब तबीयत कैसी है ?"

"अभी दुर्बलता है। छुट्टी के पहले पांच दिन मे तो भोजन पचता नही रहा। पीछे कुछ पचने लगा था।"

"तो डाक्टर से 'सफाई' के लिए नही कहा ?"

"डाक्टर ने मना कर दिया था। वह कहती थी कि उसके लिए विलम्ब हो चुका है। इस कारण मेरे शरीर को बहुत हानि पहुंच सकती है। और तब शेष जीवन भर कष्ट होगा।"

"परन्तु इस स्थिति मे तो अन्य बहुत-सी कठिनाइयां उपस्थित हो जाएगी ?"

"क्या कठिनाइया उपस्थित हो जाएगी ?"

' क्या चाय नही लोगी ?"

"जा रही हू।"

"तो आओ। मैं तुमको निमन्त्रण देता हूं।"

रेवा उठ सुपरिन्टेंडेण्ट के कमरे मे चली गई। उसके जलपान का प्रबन्ध उसके रिटायरिग रूम में हो रहा था। जब मिस्टर कार्माइकल रेवा के साथ वहां पहुंचा तो चाय और कुछ सैण्डविचेज टेबल पर तैयार कर रखे हुए थे। कार्माइकल के कहने पर चपरासी ने पहले ही दो व्यक्तियों के लिए चाय का सामान तैयार किया हुआ था। साहब को रेवा के साथ आते देख वह रेवा को सलाम कर कमरे से बाहर निकल गया।

दोनों कुर्सियों पर बैठकर चाय लेने लगे।

2

रेवा आज पन्द्रह दिन के उपरान्त अपने दफ्तर गई थी और फिर लच के तुरन्त उपरान्त लौट आई थी। उस समय मां सिद्धेश्वर से पूछ रही थी, "परीक्षा कैसी चल रही है ?"

सिद्धेश्वर ने कहा, "मां ! आज समाप्त हो गई है और मैं समझता हूं कि मैं अपने स्कूल में तो प्रथम रहूंगा।"

"तो अब पिता के कार्यालय में कब जाने लगोगे ?"

"मैं नीचे पिता जी से बात कर आया हूं। उनका कहना है कि आधा घटा आराम कर मुझे आज से ही कार्य सीखना आरम्भ कर देना चाहिए। आज अप्रैल

मास की दस तारीख है और वह युरोपियन टूअर पर सत्रह मई को जाने वाले है। उन्होंने पैसेज बुक करा रखा है।"

"तब ठीक है। चाय लेकर नीचे चले जाओ। तुम्हे बिना समय व्यर्थ गवाये पिता जी के काम को समझने में लग जाना चाहिए।"

"पर मेरे स्कूल के प्रिंसिपल साहब कह रहे हैं कि मुझे कम से कम बी० ए० तक की पढ़ाई कर लेनी चाहिए।"

"यह प्रलोभन है तुम्हे सरकारी काम का चस्का डलवाने के लिए। एक बार सरकारी काम करने लगे तो हरामखोरी की आदत पड जाएगी तो फिर तुम किसी भी प्राइवेट फर्म मे काम नहीं कर सकोगे। वहा तो परिश्रम और बहुत ही सोच-समझकर काम करना पड़ता है।"

"पिता जी भी यही कह रहे थे। उनका यह भी कहना है कि प्राईवेट काम मे तो उसमे होने वाला लाभ ही अधिक और अधिक काम करने की प्रेरणा देता है। यह एक अच्छी प्रेरणा है। इसके विपरीत सरकारी काम में काम को टालने की रुचि उत्पन्न हो जाती है।

"मां! मैं यह समझता हूं और मैंने मन में फैसला कर रखा है कि पिता जी के काम में सहयोग दूंगा।"

इस समय रेवा आ गई। मां ने पूछा, "आज तुम जल्दी ही चली आई हो?"

"हां, मां! कुछ फिर मितली होने लगी थी। इस कारण अफसर को कहकर चली आई हूं।"

वास्तव में रेवा के साथियों ने एक क्लब बनाई हुई थी। उस क्लब का नाम था—"फ्री-लांसर्ज"। इस क्लब के कुछ सदस्य थे—उसके गुरु जी के शिष्य—जो विवाह बन्धन को दासता और एक अस्वभाविक जीवन का द्योतक मानते थे। कुछ बाहरी सदस्य भी थे।

रेवा और उसका सुपरिन्टेंडेण्ट राबर्ट कार्माइकल भी उसी क्लब के सदस्य थे। इस क्लब के सदस्यों ने सौगन्ध ली हुई थी कि वे विवाह नही करेंगे और परस्पर सम्बन्ध मे किसी पर बलात्कार नही करेंगे। स्वेच्छा से ही व्यवहार करेंगे।

प्रत्येक सदस्य क्लब के किसी भी सदस्य अथवा क्लब के बाहर लोगों से सम्पर्क बना सकता था। शर्त यह थी कि वह सम्पर्क स्थाई नही होगा। स्थाई सम्पर्क ही विवाह है। यह क्लब के नियमों तथा उपनियमों में था।

राबर्ट का विवाह हो चुका था। परन्तु उसके क्लब का सदस्य बनने के एक मास के भीतर ही मिसेज कार्माइकल का रहस्यपूर्ण ढग से देहान्त हो गया था। मिसेज कार्माइकल की शव-परीक्षा भी हुई थी। डाक्टरों ने किसी प्रकार के हत्या के प्रमाण नहीं पाए थे। यह घोषणा की गई थी कि हृदय की गति बन्द हो जाने पर मृत्यु हुई है।

मिसेज़ कार्माइकल के देहान्त के समय उसके तीन बच्चे थे। एक चौदह-पन्द्रह वर्ष का था। दूसरा दस वर्ष का था और तीसरा सबसे छोटा छः वर्ष का था। तीनों बच्चे रेवा से स्नेह रखते थे। रेवा राबर्ट के घर भी आया-जाया करती थी।

रेवा जब से डाक्टर रमज़ान की चिकित्सा में गई थी, वह क्लब मे नही गई थी आज वह कार्यालय मे गई तो उसका चित्त क्लब जाने को भी हो गया। जब राबर्ट ने उसे अपने रिटायरिंग रूम मे चाय पिलाई थी तो उसने पूछा था, "अब क्लब कब आओगी?"

"इच्छा तो है कि आज आऊं।"

"तो ठीक है। मैं छ बजे के लगभग आऊंगा।"

"मैं आज शीघ्र ही कार्यालय से जाना चाहती हूं। क्लब आने से पूर्व कुछ आराम करना चाहती हूं।"

"हा, तुम जा सकती हो।"

इस प्रकार रेवा शीघ्र ही घर पहुंच गई थी। यह तो उसने मा के सामने बहाना बनाया था कि उसको कुछ मितली होने लगी थी, इस कारण वह दफ्तर से भाग आई है। वास्तव मे वह क्लब तो जाना चाहती थी, परन्तु साथी के रूप मे वह कार्माइकल को पसन्द नही करती थी। आज जब कार्माइकल ने कहा था कि वह भी क्लब आयेगा तो उसे सन्देह हुआ था कि वह उससे सगत की याचना करेगा। इस कारण उससे बचने के लिए दफ्तर से शीघ्र ही निकल गई थी।

वह पांच बजे घर से निकली तो मन मे विचार करने लगी कि कार्माइकल की संगत से बचने के लिये क्या करे। उसे कुछ ऐसा समझ आया था कि यदि वह वहा पहुंची और कार्माइकल ने प्रस्ताव किया तो वह इन्कार नही कर सकेगी, परन्तु यदि वह उसके आने से पहले किसी अन्य सदस्य के पास जा बैठी तो कार्माइकल बलपूर्वक उसे अपने साथ नही ले जा सकेगा।

इस कारण घर से निकलते ही वह फोर्ट एरिया मे क्लब के एक सदस्य वृन्दावन माधव की दुकान पर जा पहुंची। वृन्दावन माधव वहां "स्मगल्ड गुड्स" की दुकान करता था। उसका 'ट्रिक' यह था कि प्रत्येक बिकने वाली वस्तु के कुछ नग सरकारी नीलामी से वह मोल ले लेता था। यह प्रायः तस्करी का वह सामान होता था, जो सरकार कस्टम पर ज़ब्त कर लेती थी। इस प्रकार प्रत्यक्ष में खरीदा माल दुकान में रहता था। परन्तु वह प्रायः बेचता था तस्करों से लिया हुआ माल।

रेवा उसकी दुकान पर पहुंची तो माधव ने जलपान के विषय मे पूछ लिया। रेवा ने कह दिया, "मैं आपको क्लब ले जाने के लिए आई हूं।"

इसका अभिप्राय माधव समझता था। वह दुकान अपने छोटे भाई के हवाले कर रेवा के साथ चल पड़ा।

दोनों वहां पहुंचे तो राबर्ट कार्माइकल भी वहां पहुंच गया। वे लगभग इकट्ठे ही क्लब में पहुंचे।

ये अभी भीतर जा ही रहे थे कि राबर्ट उनके पीछे-पीछे ही वहां क्लब में प्रवेश करता दिखाई दिया।

"हैलो मिस्टर माधव !" राबर्ट ने पीछे से आवाज़ दी तो रेवा और माधव ठहर गए, वे सैण्ट्रल हाल की ओर जा रहे थे। माधव ने राबर्ट से हाथ मिलाया और पूछा, "आजकल आपके दर्शन बहुत कम होते हैं। मैं समझा था कि आप बम्बई से कहीं बाहर गए हुए हैं।"

"नहीं ! यहां ही हूं। बात यह है कि कई दिन से रेवा जी क्लब नहीं आ रही थी। आज यह मुझे निमन्त्रण देकर यहां लाई हैं।"

"सत्य ? मैं तो समझा हूं कि यह मुझे मेरी दुकान से उठाकर साथ लाई हैं ?" माधव ने पुनः चलते हुए कहा।

तीनों सैण्ट्रल हाल की ओर चल पड़े। रेवा अब माधव और कार्माइकल के बीच में चल रही थी।

कार्माइकल ने कह दिया, "बताओ रेवा ! मैं गलत कह रहा हूं क्या ?"

"यह सर्वथा सत्य नहीं है।" रेवा ने कह दिया, "देखिए, मैं आपको स्मरण कराती हूं। आप मध्याह्न की चाय का निमंत्रण दे मुझे अपने रिटायरिंग रूम में ले गए थे। वहां बातों ही बातों में आपने पूछा था कि अब क्लब में कब आओगी ?

"मैंने कहा था, हां, मैं आज वहां जाने की इच्छा कर रही हूं।

"इस पर आपने कहा था, मैं भी आज चलूंगा।

"मैंने इसका उत्तर कुछ नहीं दिया था।"

"तो यह मौन रहना स्वीकारोक्ति नहीं थी ?" कार्माइकल ने पूछा।

"हां, परन्तु किस बात की ? मौन रहने का यही अर्थ हो सकता है कि मैं आपके कार्य में बाधक नहीं। परन्तु इसका यह अर्थ कहां से हो गया कि मैं आज आपके किसी कार्य की इच्छा कर रही हूं।"

"तो तुम मिस्टर माधव की संगत की इच्छा करती हो ?"

'मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है। न ही मेरे मौन रहने का वह अर्थ है जो आप समझ रहे हैं।"

"और मिस्टर माधव के यह कहने का क्या अर्थ है ? उसने कहा है कि तुम इन्हें दुकान से बुलाकर लाई हो ?"

"इस विषय में मैं इनसे बात कर लूंगी। जहां तक आपका यह कथन है कि मैंने आपको क्लब आने का निमन्त्रण दिया है, गलत है।"

क्लब में यह नियम था कि संगत स्वेच्छा से होती थी। कोई किसी को विवश नहीं कर सकता था। यह व्यवस्था सबने स्वेच्छा से स्वीकार की हुई थी। इस

कारण राबर्ट कार्माइकल हाल मे खड़ा-खड़ा ही रेवा से बोला, "तो मुझसे बहुत भूल हो गई है। मैं क्षमा चाहता हूं।" इतना कह वह रेवा और वृन्दावन माधव को वहीं खड़ा छोड़ हाल के एक दूर कोने में एक खाली मेज पर जा बैठा।

उसे जाता देख माधव ने हंसते हुए पूछा, "रेवा ! अब ?"

"मैंने अभी चाय नहीं ली। इस कारण मैं उस पर आपको निमंत्रण देती हूं।"

"धन्यवाद !" माधव ने कहा और राबर्ट से दूर एक कोने में एक मेज पर जा पहुंचे।

वे वहां बैठे ही थे कि इन दोनों से बड़ी आयु की एक स्त्री वहां आ पहुंची और बोल उठी, "मिस्टर माधव ! क्या मैं भी अपने को आपके साथ चाय के लिए आमंत्रित कर सकती हूं ?"

"निमंत्रण देने वाली रेवा देवी हैं।" माधव का कहना था।

"तो रेवा जी ! मुझे भी निमत्रण दे दीजिए।"

"ठीक है। आ सकती हैं। क्यों, आज किसी ने निमंत्रण नहीं दिया ?"

नई आई स्त्री ने समीप एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "मैं यहां पहुंची तो देखा कि मेरी पर्स घर रह गई है। इस कारण प्रतीक्षा में थी कि कोई चाय पर आमंत्रित कर ले तो कुछ तरोताजा होकर जाऊं। इस समय आप दिखाई दे गए हैं।"

बैयरा आया तो आर्डर रेवा ने ही दिया, "कॉफी और शेष जो ये लोग पसन्द करें।"

माधव ने कहा, "चिकन कटलेट।" इतना कह उसने समीप बैठी स्त्री से पूछ लिया, "सरोजिनी बहिन ! आपके लिये क्या आए ?"

"मैं तो 'फिश स्टिक्स' पसन्द करूंगी।"

"और आप रेवा देवी ?"

"जो आपने कहा है। मैं वही पसन्द करती हूं।"

बैयरा गया तो सरोजिनी ने कहा, "यहां हम बहन-भाई नहीं होते। यदि बहन-भाई का रिश्ता हो भी तो मुख से नहीं कहते ?"

"यह यहां का नियम नहीं है।"

"मैंने प्रथा की बात कही है।"

"वह मानने वाले की इच्छा पर है। मैंने तो केवल यह कहा था…।" व कहता-कहता रुककर रेवा से पूछने लगा, "राबर्ट कह रहा था कि आप बीमार रही है। क्या कष्ट था आपको ?"

रेवा ने एक क्षण तक ही विचार किया और फिर कहा, "मुझे डाक्टर बताया है कि मेरे पेट में बच्चा बनने लगा है।"

"सत्य ?"

"हां ! डाक्टर रमजान मेरी पिछले पन्द्रह दिन से चिकित्सा कर रही हैं।

"क्या चिकित्सा कर रही हैं ?"

"मैं चाहती थी कि गर्भपात करवा दूं। परन्तु उसने मना कर दिया है। वह कहने लगीं कि मुझ जैसी सुन्दर, सर्वथा फ्रैश, हरी-भरी स्त्री गर्भपात कराने से आधी मुर्दा तो हो ही जाएगी और फिर लावण्य भी बिगड़ जाएगा।

"इससे मैं डर गई हूं और मैंने नौ महीने का यह दण्ड भोगना स्वीकार कर लिया है।"

"मैं समझता हूं कि आपने ठीक ही किया है। गर्भपात भयंकर परिणाम उत्पन्न कर सकता है। मेरी एक और सम्मति है कि आप कॉफी और चिकन कटलेट लेकर यहां से सीधा घर लौट जाएं। कहीं यहां राबर्ट जैसे पशु के पल्ले पड़ गईं तो बिना औषधि के ही गर्भपात हो सकता है।"

"इसी कारण तो मैंने आपको आमंत्रित किया था ?"

"नहीं रेवा देवी! मेरी राय मानिए। अब इस काम से नौ मास की छुट्टी ले लें तो अधिक ठीक होगा।"

इस समय बैंयरा कॉफी और खाने का सामान लेकर आ गया।

जब तक बैंयरा सामान मेज़ पर लगाता रहा, तीनों चुपचाप बैठे रहे। जब बैंयरा चला गया तो माधव ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मैं आपके द्वारा मुझे निमंत्रण से मुक्त करता हूं। यह केवल इस कारण कि मुझे आपके स्वास्थ्य की अधिक चिन्ता है और मैं आपसे सहचारिता जीवन के अन्त तक रखना चाहता हूं।"

रेवा एक क्षण तक माधव का मुख देखती रही। फिर बोली, "पर यही तो शादी है, जो हम क्लब के सदस्य अस्वीकार कर चुके हैं।"

"मैं ऐसा नहीं मानता। मेरी एक विवाहिता पत्नी है। यह तो आप जानती हैं। मेरा विवाह क्लब का सदस्य बनने से पहले हो चुका था। मेरा अपनी पत्नी से यह प्रबन्ध है कि वह मेरे घर में रहती है, परन्तु हमारा सम्बन्ध जब दोनों की इच्छा होती है, तब ही होता है। यह ऐसा ही है जैसे किसी क्लब के सदस्य से होता रहता है।"

"परन्तु माधव जी! यही तो विवाह है।"

"नहीं रेवा देवी। विवाह तो बन्धन है और मैंने अपनी पत्नी को बन्धन से मुक्त कर दिया है। स्वेच्छा से विचरने की, उसे और मुझे, दोनों को छूट है।

"मैं अपने क्लब के नियमों का यह अर्थ समझा हूं कि हम किसीसे भी बंधे हुए नहीं हैं। ऐसी मानसिक अवस्था ही दासता से मुक्ति है।

"यह ठीक है कि सामाजिक दृष्टि से मेरा मनोहरा से विवाह हो चुका है। मैंने उसको भी स्वतंत्रता दे रखी है। राबर्ट की भांति मैंने उसकी हत्या नहीं की।"

"तो क्या राबर्ट ने अपनी पत्नी की हत्या की है ?"

"विष देकर तो नहीं। ऐसा कहूंगा तो डाक्टरों की रिपोर्ट के विरुद्ध कहना होगा, जो मैं असत्य सिद्ध नहीं कर सकता। डाक्टरों की रिपोर्ट है कि मृत्यु हृदय की गति बन्द होने से हुई है। यह गति तो कई प्रकार बन्द की जा सकती है। इस पशु ने अवश्य कुछ किया है जिससे उसकी पत्नी की हृदय गति रुक गई है। मैं इसे हत्या ही कहता हूं।"

अब सरोजिनी ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "मैं राबर्ट को इतना क्रूर नहीं समझती थी।"

माधव हस पड़ा, "मैं भी उसे एक भेड़ के लेले की भांति निरीह ही मानता हूं। परन्तु सरोजिनी देवी! ऐवरीथिंग इज़ फेयर इन लव एण्ड वार।"

इस प्रकार सामान्य चर्चा चलती रही और खाना-पीना समाप्त हो गया। माधव ने रेवा को भगाने के विचार से कह दिया, "देखिए रेवा जी! मैं एक अनुभवी व्यक्ति हूं। मेरी पत्नी तीन बच्चों को जन्म दे चुकी है और मैं जानता हूं कि आपकी अवस्था में क्या उचित और क्या अनुचित है। इस कारण मेरी राय यह है कि अब आप घर जाकर आराम करें। यदि सम्भव हो तो कार्यालय से एक वर्ष की छुट्टी ले लें और इस क्लब को अपना मासिक शुल्क भेज दिया करें, परन्तु क्लब का प्रयोग न किया करें।"

रेवा ने बैयरा से बिल मंगवाया, उसकी अदायगी की और बिना एक भी शब्द अपनी मेज के दूसरे साथियों से कहे उठकर सैण्ट्रल हाल से निकल गई।

जब रेवा आंखों से ओझल हो गई तो वृन्दावन माधव साथ की कुर्सी पर बैठी सरोजिनी देवी से कहने लगा, "हां तो अब आप बताइए, कहां चलना चाहिए?"

सरोजिनी वाडेकर दो मिनट आंखें मूंदकर विचार करती रही। माधव यह समझ रहा था कि वह अपने घर चलने का निमंत्रण देगी। वह जानता था कि वह अकेली है।

मिसेज़ वाडेकर एक विधवा थी। आयु बत्तीस वर्ष की थी। एक लड़का था जो इस समय मिलटरी अकादमी पुणे में पढ़ता था। इस कारण वह उससे निमंत्रण दिए जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

एकाएक वाडेकर ने आंखें खोलीं और कहा, "मैंने बहुत विचार किया है। मुझे बहन सम्बोधन कर आपने मेरे हृदय में बर्फ की डली डाल दी है। मैं उसके शीतल प्रभाव को निकालने का यत्न कर रही थी, परन्तु सफल नहीं हुई। इस कारण मैं आपसे क्षमा चाहती हूं। मैं अपने "लॉज" को वापस लौट रही हूं।"

इतना कह उसने कुर्सी से उठ हाथ जोड़ नमस्कार कहा और क्लब के द्वार की ओर चली गई।

माधव वाडेकर को जाते देखता रह गया। जब वह भी हाल से निकल गई

तो उसने हाल में दृष्टि दौड़ाई। पन्द्रह-बीस मेज़ों पर स्त्री-पुरुष जोड़े और कहीं अधिक बैठे हुए थे। राबर्ट कार्माइकल अपनी मेज़ पर अकेला ही था। इस कारण माधव के दिमाग में मज़ाक सूझा और वह कार्माइकल के पास जा बैठा। कार्माइकल विस्मय से उसे वहां आकर बैठते हुए देखता रह गया। फिर एकाएक खिलखिला कर हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "तो भाग गईं दोनों ?"

"नहीं ! मैंने भगा दी है।"

"क्यों ?"

"एक मुझ से आयु में बड़ी थी और मुझे उसकी रूप-राशि पसन्द नहीं थी। दूसरी, इस समय गर्भ से है। वह मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं।"

"तो ?"

"तो मैं समझता हूं कि आपके साथ कहीं पिक्चर देखने का कार्यक्रम बनाऊं।"

"मुझे पिक्चर देखने मे रुचि नहीं।"

"तो किस बात में रुचि है ? अकेले बैठना तो किसी प्रकार भी शोभा नहीं देता।"

"मैं एक बात पर विचार कर रहा हूं।"

"किस बात पर ?"

"वह बताने की नहीं। यदि मेरी योजना चल गई तो आपको और अन्य परिचितों को भी पता चल जाएगा।"

"तो किसके विषय में वह योजना है। मेरे विषय में ?"

"आपने मेरा क्या बिगाड़ा है ?"

"और राबर्ट साहब ! किसने आपको हानि पहुंचाई है ?"

"यदि वचन दो कि बताओगे नहीं तो आपको विश्वास में ले सकता हूं।"

"हां, यदि मेरे विपरीत न हुई तो मैं दूसरे की आग में हाथ नहीं डालूंगा।"

"आपके विपरीत तो कुछ नहीं। आपसे मेरा सम्बन्ध भी कुछ नहीं। एक-दो सौ से अधिक व्यक्तियों की क्लब में मैम्बर होना किसी प्रकार से भी किसी विशेष सम्बन्ध का सूचक नहीं हो सकता।"

माधव मुस्कराता हुआ सामने बैठे एक रीछ की भांति हट्टे-कट्टे और बदसूरत व्यक्ति को देखता रहा। राबर्ट ने बताया, "आज से डेढ़ वर्ष पूर्व यह रेवा मेरे अधीन कार्यालय में काम पर नियुक्त हुई थी। तब से ही मैं इसे पसन्द करने लगा था। आज से आठ-नौ मास पूर्व मेरे एक अन्य क्लर्क ने मुझे इस क्लब का परिचय दिया और मुझे मैम्बर होने की राय दी। मैं मैम्बर बना तो यहां रेवा को कार्यालय के ही एक क्लर्क से बैठ बातें करते देख मैंने भी उससे सम्पर्क बनाने का यत्न किया।

"मुझे छः मास लगे इसको अपने समीप लाने में, तो मेरी पत्नी मुझ से नाराज रहने लगी। उससे तो सहज ही छुट्टी मिल गई।

"दुर्भाग्य से जब उसके शव को गिरजाघर ले जाने लगे तो वहां पुलिस आ गई और शव का पोस्ट मार्टम हुआ। डाक्टरों को मृत्यु का कारण तो पता चल गया, परन्तु कृत्रिम ढंग से हृदय की गति बंद की गई है, वे बेचारे नहीं जान सके।

"मैं रेवा को अपने साथ हिल-मिल गई समझता था, परन्तु आपको मुझ पर उपमा देने की मुझे समझ नहीं आई।

"*बस, यही समझने के लिए गम्भीर विचार में लीन हूं। मैं इसमें कारण नहीं* समझ सका। पहले तो विचार आया था कि आप इसमें कारण हैं, परन्तु देख रहा हूं कि आप नहीं है। इस कारण उसके जीवन में कौन है, यह जानना चाहता हूं।"

"मिस्टर राबर्ट! यह हमारी क्लब का नियम नहीं। हम ईर्ष्या नहीं कर सकते। हम सब अपने-अपने व्यवहार के स्वयं मालिक हैं।"

"तो मैं क्लब छोड़ दूंगा।"

"मैं आपको राय दूंगा कि ऐसा मत कीजिए। रेवा का कोई स्थानापन्न ढूंढ़िए।"

कार्माइकल मुख देखता रह गया। एकाएक वह उठा और माधव को वहीं बैठा छोड़ क्लब से बाहर को चल दिया।

3

रेवा अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य की बहुत चिन्ता करती थी। इस चिन्ता का ही परिणाम था कि वह गर्भपात कराने से रुक गई थी। डाक्टर रमज़ान ने उसे कहा था कि *गर्भपात सर्वथा भय से रहित नहीं है। यह ठीक है कि विज्ञान ने बहुत* उन्नति कर ली है, परन्तु जब भी कोई 'फैटल ऑपरेशन' होता है तो वह डाक्टर की *अज्ञानता अथवा भूल के कारण समझ लिया जाता है। वास्तव में* 'फैटल केसिज़' में डाक्टर की भूल तो अधिक नहीं होती। कई बार स्त्री की मृत्यु किसी न किसी, उसकी विशेषता के कारण होती है। इस विशेषता को डाक्टर तो डाक्टर रहा, परमात्मा भी नहीं जान सकता और उस विशेषता के कारण कुछ स्त्रियां ऑपरेशन टेबल पर ही मर जाती हैं और कुछ पीछे बीमार हो जाती है। विकार तो सब में ही उत्पन्न हो सकता है।

जब डाक्टर रमज़ान ने इस प्रकार समझाया तो रेवा मान गई कि वह बिना पति के गर्भ धारण करने का लांछन सहन करेगी और दो-तीन महीने नर्सिंग होम में रहने का कष्ट भी सहन कर लेगी।

जब वही बात वृन्दावन माधव ने कही तो वह उठकर घर को भागी। अपने

कमरे में पहुंच वह पलंग पर लेटी रही। इस समय सेठ जी अपनी पत्नी और पुत्र के साथ अपोलो प्वायंट पर भ्रमण करने गए हुए थे।

घर के रसोइए ने लड़की को आते और अपने 'बैडरूम' की ओर लम्बे पग उठाकर जाते देखा था। वह नहीं जानता था कि लड़की को क्या कष्ट है। इस पर उसे इतना तो ज्ञान था कि लड़की पिछले पन्द्रह दिन से छुट्टी पर थी। वह अपने कार्यालय नहीं जा रही थी।

रात के आठ बजे जब सेठ अपनी पत्नी और लड़के के साथ लौटा तो उसने ऊपर की मंजिल पर लिफ्ट से निकलते ही बताया, "बिटिया साढ़े पांच बजे आई थी और अपने कमरे में लेटी हुई है।"

पाचक की यह बात सुन पति-पत्नी अवाक् हो उसका मुख देखते रह गए। तब एकाएक सत्यवती सेठ जी को वहीं छोड़ रेवा के बैडरूम में जा पहुंची। रेवा लेटी हुई नहीं थी। वह अपनी मेज के सामने कुर्सी पर बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। इससे मां कुछ आश्वस्त हो पूछने लगी, "किस समय क्लब से लौटी थी?"

"साढ़े पांच बजे यहां आ गई थी।"

"क्यों? वहां तबीयत नहीं लगी?"

"नहीं! सब कुछ फीका-फीका लग रहा था।"

"तो वहां मत जाया करो। मनोरंजन का कुछ अन्य साधन निर्माण करो।"

"क्या निर्माण करूं?"

"कहो तो कल ही तुम्हारा विवाह कर दें?"

"और यह जो पेट में गड़बड़ मचा रहा है?"

"इसका वृत्तान्त विवाह के उपरान्त बता देंगे और फिर इसके प्रतिकार में तुम को सोने से तोलकर तुम्हारे पति को दे देंगे।"

"ओह!" रेवा ने मुस्कराते हुए कहा, "मां! जानती हो, मेरा कितना भार है?"

"कितना है?"

"कुछ दिन हुए मैंने अपना वजन कराया था। मैं हूं बयालीस किलो। आज सोने का भाव है—एक हजार रुपये दस ग्राम का। और बयालीस किलो सोने का दाम बन जाएगा पैंतालीस लाख रुपये के लगभग।"

"हां! मैं समझती हूं, परन्तु तुमने जो पाप किया है, उसका इतना हर्जाना तो देना ही पड़ेगा।"

"नहीं मां! मैंने पाप नहीं किया और जो कुछ हो गया है, उसका मैं इतना मूल्य नहीं समझती। किंचित् मात्र भूल हुई है। उसके लिए किसी लोभी युवक को इतना कुछ दिलवाऊं। यह मुझे अन्याय लग रहा है।"

"तो यहां छुपकर क्यों वैठी रही हो ?"

"तुम्हारे जैसी किसी दुर्वलात्मा ने डरा दिया था। इस कारण क्लव से भाग आई थी। परन्तु यहां कमरे में वैठ विचार करने पर मैं समझ गई हूं कि कुछ अधिक चिन्ता की बात नही। मैंने थोड़ी भूल की है; परन्तु किसी को हानि नहीं पहुंचाई।"

"देख लो! मैं तुम्हारे पिता को इतना कुछ देने के लिए तैयार कर सकती हूं।"

"तो इतना कुछ मेरे नाम लिखवा दो। मैं उससे दुनिया की सैर करूंगी।"

मां बाहर पति के पास ड्राइंग रूम में आ गई। वहा सिद्धेश्वर पिता को अपनी पढ़ाई की बात बता रहा था। इस कारण सत्यवती वैठ गई और लड़के की बात सुनने लगी।

सिद्धेश्वर कह रहा था, "पिता जी! उस वक्त तो कोई प्राणी था नही। प्रकृति के भी, यह जो 104 प्रकार के एटम पहचाने गए है, नहीं थे। रुण्ड-मुण्ड पृथ्वी थी और हाइड्रोजन वायु तथा नाईट्रोजन वायु ही वायु मण्डल में थी। कभी-कभी आकाश मे विद्युत चमकती थी और उसके प्रभाव से हाइड्रोजन नाइट्रोजन में बदल रही थी और नाइट्रोजन बदल रही थी सी-14 में। यह कार्वन भी वायु की अवस्था में ही थी। सी-14 बदल रही थी सी-12 में। यह कार्वन ठोस थी और समुद्र के किनारे पर जमा हो रही थी।

"वस, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन और कार्वन तथा ऑक्सीजन ने यह सब चलता-फिरता, वोलता-हसता ससार वना दिया है।"

"और यह वनाते किसने देखा है ?" सेठ जी ने पूछ लिया।

"उस समय तो देखने वाला कोई था नही। परन्तु अव हाइड्रोजन से नाईट्रोजन, नाईट्रोजन से सी-14 और सी-14 से सी-12 बनती देखी जाती है।"

"और इन चारों को एक वर्तन में वंद कर दें तो कितने दिन में एक सिद्धेश्वर वन सकेगा ?"

इसका उत्तर सिद्धेश्वर नही जानता था। वह पिता का मुख देखता रह गया।

सत्यवती वोल उठी, "नौ महीने में। परन्तु वर्तन मां का पेट होना चाहिए।"

सेठ हंस पडा। सिद्धेश्वर समझा नही और मां के मुख को देखते हुए बोला, "यह मास्टर जी ने नही वताया।"

सत्यवती ने हंसते हुए कह दिया, "तुम्हारा मास्टर जरूर अविवाहित है। अन्यथा वह जानता कि नौ महीने में हम औरतें बच्चा बना देती हैं। मैंने भी दो बनाए हैं। एक सिद्धेश्वर और दूसरी रेवा।"

"नही मां, जिस समय की बात मैं कह रहा हूं, उस समय कोई स्त्री अथवा पुरुष नही था।"

"ज़रूर रहा होगा। अन्यथा इतने करोड़ों- अरबों लोग बन कैसे गए ?

"तुम्हारे मास्टर ने हाइड्रोजन से नाईट्रोजन बनाई प्रतीत होती है। नाईट्रोजन ने सी-14 और फिर सी-12 भी बना ली होगी। परन्तु मनुष्य तो विवाह करने पर ही बन सकता है।"

"नहीं मां ! मास्टर विवाहित तो है। परन्तु वह सी-12 के उपरान्त की बात नहीं जानता ?"

अब सेठ जी ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं समझता हूं कि वह पहली बात भी नहीं जानता। भला हाईड्रोजन कहां से उत्पन्न हुई और फिर रुण्ड-मुण्ड भूमि किसने बना दी और किससे वस्तु बना दी ?"

लड़का निरुत्तर हो, परेशानी में माता-पिता का मुख देखता रह गया।

इस पर सत्यवती खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसने हंसते हुए कह दिया, "तुम्हारा मास्टर कुछ नहीं जानता।"

"तो मां, मुझे वहां पढ़ने किसलिए भेजा था ?"

"तुम्हें यह पढ़ने नही भेजा था। हम जानते थे कि वह यह नही जानता। हमने तुमको उससे मराठी, देवनागरी, अंग्रेज़ी, गणित और भूगोल पढ़ने के लिए भेजा था।

"प्राणी की उत्पत्ति तो वह अपने आप ही पढ़ाने लग गया है और मज़ेदार बात यह है कि जो तथ्य वह स्वयं नहीं जानता, वह उसे पढ़ाने लगा है।"

सिद्धेश्वर को विदित था कि उसके पिता किसी स्कूल-कालेज मे नहीं पढ़े। वह अपने गांव में एक पंडित जी से मराठी और गणित पढ़े थे। गांव से वह बम्बई आ गए थे और यहां उन्होंने एक शिक्षक रखकर अंग्रेज़ी पढ़ ली। अनुभव से वह व्यापार के विधि-विधान सीख गए। अब करोड़पति हैं। देश-विदेश में व्यापार करते हैं और प्राय: बड़े-बड़े देशों में घूम चुके है।

पिता को विज्ञान से अनभिज्ञ जान लड़का उनको समझाने लगा था कि वह स्कूल से क्या पढकर निकला है। वह प्राणी की पृथ्वी पर उत्पत्ति की कथा बताने लगा था। परन्तु मां ने सिद्ध कर दिया कि वह उसके मास्टर से अधिक जानती है।

एक बात उसे सूझी। उसने पूछ लिया, "पर मां ! बच्चा मां के पेट में कैसे बनता है ?"

"मैं जानती तो हूं। सब औरतें, जिनकी आयु पन्द्रह-सोलह वर्ष से बड़ी हो जाती है, जान जाती हैं। तुम्हारी पत्नी जब यहां आएगी तो उसको बता दूंगी। फिर वह भी बच्चे बना सकेगी।'

"पर मां ! दीदी क्यों नहीं बनाती ? वह तो इक्कीस वर्ष की हो चुकी हैं।"

"वह जानती तो है, परन्तु बनाती नहीं।"

"क्यों ?"

"यह वह बताती नहीं ।"

सिद्धेश्वर को एक धुंधला-सा ज्ञान था कि विवाह के बाद पति-पत्नी क्या करते हैं। परन्तु उस करने से बच्चा कैसे बन जाता है, यह वह नहीं समझ सका।

मास्टर ने सृष्टि रचना की बात बताई थी। उसका ज्ञान उस अनुमान के आधार पर था जो युरोपियन अपने अधूरे ज्ञान पर कह रहे थे।

उस अधूरे ज्ञान को कुछ तो मास्टर जी ने अपनी दुर्बल बुद्धि के आश्रय से पूरा करने का यत्न किया था और कुछ सेठ जी ने तथा उनकी पत्नी ने अपनी कल्पना से उस ज्ञान का सम्बन्ध सन्तान उत्पत्ति के साथ जोड़ना चाहा था। वह जुड नहीं सका। इसलिए सेठ जी ने ही अपनी पत्नी से पूछा, "उस काल की बात जब मनुष्य छोड कोई प्राणी भी नहीं था, तब वर्तमान सन्तान उत्पत्ति की प्रक्रिया का उदाहरण कैसे ले बैठी हो ? भला कौन सन्तान उत्पत्ति करता ?"

"जी ! मैं जानती हूं, परन्तु यह भी जानती हूं कि जिसने इसके मास्टर की हाईड्रोजन बनाई थी, वही सिद्धेश्वर को क्यों नहीं बना सका ? जब किसी अन्य की सहायता के हाईड्रोजन बन गई तो सिद्धेश्वर बिना किसी की सहायता के क्यों नहीं बन गया ?

"मैं पूछ रही थी और यह बेचारा मास्टर जी की बात को भी न समझता हुआ कुछ उत्तर नहीं दे सका। आपके गुरु जी की विवेचना थी कि प्रकृति आदि-काल से है और एक पैंडुलम की भांति अनादिकाल से ही डोलती चली आ रही है, कभी पैण्डुलम दाहिनी ओर होता है और कभी बाईं ओर, अर्थात् कभी रचना काल और कभी प्रलय काल। परन्तु यह भी मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं।

"पैण्डुलम भी तो किसी बाहरी शक्ति से ही हिलता-डोलता है। जब तक वह शक्ति पैण्डुलम को हिलाती रहती है, तब तक वह बायें से दायें, दायें से बायें डोलता रहता है। और जब वह शक्ति हिलाना बन्द कर दे तो पैण्डुलम खड़ा हो जाता है।"

इस पर सेठ जी ने *कह दिया, "पैण्डुलम और शक्ति एक ही क्यों न मान ली जाएं ?"*

"ऐसा कई लोग मानते हैं। वे यह भी कहते हैं कि परमात्मा और प्रकृति उपाधि भेद से भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं, वास्तव में एक ही हैं। परन्तु यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है। मैं तो यही पूछ रही हूं कि उपाधि भेद से हो, जब तक जड़ पदार्थ शक्ति रूप नहीं होता, तब तक वह हिल-डोल नहीं सकती और डोलती है तो क्यों ? इस कारण मेरा कहना है कि इन जड़वादियों और ब्रह्मवादियों से भिन्न एक और मत है। वह यह कि न एक है, न दो हैं। प्रत्युत्त, मूल पदार्थ तीन हैं। परमात्मा है, प्रकृति है और जीवात्मा है। परमात्मा निमित्त कारण है, प्रकृति

उपादान कारण है और जीवात्मा भोक्ता है। वेद में तीनों को अनादि कहा है।"

"यह सब बकवास है। किस को जरूरत पड़ी है कि तीन-तीन बन के बैठें!"

इस पर पत्नी और पुत्र दोनों हंसने लगे। पिता ने पूछा, "क्यों सिद्धेश्वर! तुम क्यों हंसे हो?"

"पिता जी! आप निरुत्तर हो गए हैं इसलिए। माता जी जीत गई हैं।"

इस समय भीतर अपने कमरे से रेवा यह जानने आ गई कि ये सब लोग क्यों हंस रहे हैं।

"मुझे यह प्रबन्ध अधिक युक्तियुक्त प्रतीत हुआ है।" सत्यवती रेवा की उपस्थिति की ओर ध्यान दिए बिना कहने लगी, "असंख्य जीवात्माएं हैं। सब अनादिकाल से हैं और जब भी इनका प्रकृति के साथ सम्बन्ध होता है तो ये प्रकृति का भोग करते हैं। भोग करते हुए अच्छे-बुरे कर्म करते हैं, वैसा फल मिलता है। अतः जीवात्मा अनादिकाल से कर्म कर रहा है और अपने कर्मों का फल भोगने के लिए बार-बार जन्म लेता है।

"जन्म लेने के लिए इनको शरीर की आवश्यकता पड़ती है। शरीर प्रकृति से बनता है और प्रकृति से शरीर परमात्मा के बनाने से ही बनते हैं।

"अतः जीवात्मा को भोक्ता मान लेने से वृत्त पूर्ण हो जाता है। ईश्वर जीवात्मा को अपने कर्म का फल भोगने की सुविधा के लिए शरीर देता है। शरीर प्रकृति से बनते है। इस कारण प्रकृति के पंच भूतादि परिणाम बनाने पड़ते हैं।"

अभी भी सेठ जी ने प्रश्न किया, "ईश्वर को क्या आवश्यकता पड़ी है कि वह जीवात्मा की यह सेवा करता फिरे?"

"देखिए जी! यह तो होता है। इसके होने से हम जीवात्माओं को सुविधा मिलती है। रही बात परमात्मा की। वह ऐसा क्यों करता है? उसके मन में ऐसा करने के लिए क्या प्रेरणा है, यह तो मैं नहीं कह सकती। केवल इतना जानती हूं कि मुझे इससे लाभ होता है। इसी कारण मैं उसे दयालु कहती हूं।"

पिता के और अधिक प्रश्न पूछे जाने से पूर्व रेवा ने पूछ लिया, "मां! किसकी बात कर रही हो?"

"तुम्हारी ही चर्चा हो रही है।"

"पर मैं चर्चा का विषय क्यों हूं?"

"यह इसलिए कि सिद्धेश्वर अपने मास्टर की एक बात बता रहा था। इसने कहा था कि सृष्टि की रचना हाईड्रोजन से आरम्भ हुई है। इस पर मैंने पूछा कि हाईड्रोजन किसने बनाई है? इस पर सृष्टि रचना की बात आरम्भ हो गई और फिर बच्चे पैदा होने की बात होने लगी।

"जब सिद्धेश्वर ने पूछा कि बच्चे कौन बनाता है और कैसे बनाता है तो उसको समझाने के लिए मैं कह रही थी कि जीवात्मा को कर्मफल भोगने की

सुविधा देने के लिए परमात्मा यह रचना करता है।

"यह तुम्हारे पिता मान नहीं रहे। परन्तु इसके रचे जाने में कुछ कारण भी नहीं बता रहे।"

"तो यह कोई युक्तियुक्त कारण है कि ईश्वर अकारण किसी दूसरे के कार्य में दखल दे ?"

"देखो रेवा ! यही तो कह रही हूं। परमात्मा किस कारण से यह करता है, यह तो वह जाने। मुझे उसने बताया नहीं कि उसने किस कारण से रेवा को बनाया है। इतना मुझे ज्ञात है कि रेवा को बनाने से मुझे बहुत सुख मिला था। अब भी मिल रहा है।"

"सत्य ? मां ! मैं तुम्हे बहुत सुख दे रही हूं क्या ?"

"हां ! इसमें कुछ भी संदेह नहीं। इसी कारण जब गौरीशंकर पाचक ने बताया कि तुम साढ़े पांच बजे ही क्लब से लौटकर अपने सोने के कमरे में लेटी हुई हो तो मैं भागी-भागी तुम्हारे कमरे में तुम्हारा स्वास्थ्य समाचार लेने गई थी और यह जानकर कि तुम सब प्रकार से स्वस्थ हो, मैं निश्चिन्त हो यहां बैठे सिद्धेश्वर से बात करने लगी थी।"

रेवा इस पर मौन हो गई। सेठ महेश्वर प्रसाद ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैंने सिद्धेश्वर को आज अपने कार्यालय में एक पृथक् मेज-कुर्सी दे, टाईप राईटर पर काम करना सीखने के लिए कह दिया है।"

4

सत्यवती के दृढतापूर्वक यह कहने पर कि वह रेवा से बहुत प्रेम करती है, विचार करती हुई रेवा पलग पर लेटी थी। इससे उसे अपने बाल्यकाल की बातें स्मरण आने लगी थो। वह अभी वहुत छोटी थी कि एक बार तीव्र ज्वर से पीड़ित हो पलग पर लेट गई थी। वैद्य का कहना था कि इस ज्वर मे आंतों मे किसी प्रकार के दाने निकल आते है। जैसे दाने चेचक में निकलते है, वैसे ही इस ज्वर में आंतों के अन्दर की ओर निकलते हैं और जब तक वे दाने मुरझा नही जाते, तब तक ज्वर कम नही होता।

वैद्य जी ने ज्वर की मियाद बयालीस दिन नियत की थी। इस काल में रेवा को लेटे रहने का आदेश था। तब मां को बयालीस दिन तक उसके समीप ही एक खाट डलवा कर दिन रात रहते रेवा ने देखा था।

एक अन्य बार वह पांव फिसलने से गिरकर टांग तोड़ बैठी थी और तीन मास तक पलस्तर लगवाए पड़ी रही थी और फिर कई मास तक पलस्तर का प्रभाव मिटाने के लिए मां उसकी टाग की मालिश करती रही थी। उसको यह

समझ नहीं आ रहा था कि मां क्यों इतना कष्ट सहन कर उसकी सेवा करती रही थी ?

जब विचार करती-करती वह थक गई तो फिर सो गई। उसका ख्याल था कि रात के तीन बज गए थे। अगले दिन भी वह सर्वथा स्वस्थ चित्त नहीं थी। इस कारण उसने ठीक साढ़े नौ बजे अपने अफसर मिस्टर राबर्ट कार्माइकल के बंगले पर टेलीफोन कर दिया। टेलीफोन पर उसने बताया, "मेरी तबीयत आज ठीक नहीं है। इस कारण मैं आज की छुट्टी की याचना करती हूं। लिखित प्रार्थना पीछे भेज दूंगी।"

कार्माइकल ने कह दिया, "डाक्टर का सर्टिफिकेट साथ आना चाहिए, अन्यथा आज की गैर-हाज़िरी लगेगी।"

रेवा को समझ आया कि यह 'रीछ' कल की बात से नाराज़ है। इस पर भी वह समझती थी कि छुट्टी की अर्ज़ी तो भेजनी ही है। साथ में डाक्टर रमज़ान का सर्टिफिकेट भेज देगी।

इस प्रकार प्रातः का अल्पाहार ले, वह डाक्टर के क्लीनिक पर पहुंच गई।

डाक्टर ने छुट्टी के लिए सर्टिफिकेट लिख दिया कि मॉर्निंग सिकनैस का प्रकोप बढ़ गया है, इस कारण उसे दो दिन आराम करना चाहिए।

रेवा ने अर्ज़ी लिखी और साथ में डाक्टर का सर्टिफिकेट लगाकर पाचक गौरीशंकर के हाथ भेज दिया।

गौरीशंकर साढ़े ग्यारह बजे रेवा के कार्यालय में पत्र देकर आया। परन्तु मध्याह्नोत्तर अढ़ाई बजे के लगभग सरकारी हस्पताल के दो डाक्टर वहां आ पहुंचे। रेवा अपने फ्लैट के ड्राइंग रूम में बैठी एक उपन्यास पढ़ रही थी। फ्लैट के बाहर घंटी बजी तो वह उठकर द्वार खोलकर देखने लगी। दो अपरिचित व्यक्तियों को वहां खड़े देख उसने पूछा, "आप किन से मिलने आए हैं ?"

"मिस रेवा को ?"

"आप कौन हैं और रेवा से क्या काम है ?"

उत्तर एक ने दिया, "मैं डाक्टर वाडिया हूं और यह डाक्टर मेहता हैं। हमें आज्ञा हुई है कि मिस रेवा के स्वास्थ्य को देख रिपोर्ट करें कि उसकी अवस्था कैसी है ?"

रेवा समझ गई कि यह उसके रीछ अफसर ने इनको भेजा है। इससे यह पसन्द न करते हुए भी डाक्टरों को भीतर ले गई और उनको बैठा कर बताने लगी कि कल रात मुझे उल्टी होने की शिकायत बहुत देर तक रही थी। रात तीन बजे तक सो नहीं सकी। इस कारण आज और कल की छुट्टी की अर्ज़ी के साथ डाक्टर रमज़ान का सर्टिफिकेट भी है।"

"वह हमारे पास पहुंच गया है। हमने उसको पढ़ लिया है। हम यह जानना

चाहते है कि अन्तिम उलटी कब हुई थी ?"

रेवा ने बताया, "मैंने रात समय नही देखा था। अवश्य दो बजे के पीछे हुई होगी।"

इस पर डाक्टर वाडिया ने पूछा, "आपका नाम दफ्तर में मिस रेवा है ?"

"जी !"

"परन्तु आप प्रैगनैण्ट है ?"

"जी !"

"तो यह बच्चा किसका है ?"

"अभी यह बच्चा नही है। जहां तक मेरा अंग्रेजी का ज्ञान है, इसे 'फोयटस' कहते है।"

दोनों डाक्टर हस पड़े। हंसते हुए मेहता ने कहा, "आप ठीक कहती हैं। तो यह गर्भ किस व्यक्ति से है ?"

"मैं बताना नही चाहती।"

"वह आपका शादीशुदा है ?"

"नहीं ! यदि शादी की होती तो मैं मिस न होती ? मैं मिसेज होती।"

इस पर वाडिया ने पूछा, "आपने उससे, जो कोई भी वह हो, विवाह क्यों नही कर लिया ?"

"यह मेरा पर्सनल मामला है। इसका मैं उत्तर नहीं दूंगी।"

इस प्रकार रेवा की अवस्था का निरीक्षण किया गया। नाड़ी की रफ्तार, दिल की गति और आख, जवान इत्यादि देखी गईं और रिपोर्ट लिखकर वे चले गए।

दो दिन के उपरान्त जब वह दफ्तर में पहुंची और अपनी मेज पर बैठने लगी तो चपरासी उसके हाथ मे एक लिफाफा दे गया।

रेवा ने लिफाफा खोलकर पढ़ा तो उसमे लिखा था—मिस रेवा को सेवा से निलम्बित किया जाता है और 'शो कॉज' नोटिस इस आज्ञा के साथ लगा हुआ था। यह आज्ञा दी गई है कि वह इस नोटिस का उत्तर एक मास के भीतर दे दे, अन्यथा उचित कार्यवाही की जाएगी।

रेवा ने नोटिस पढ़ा और सीधी कार्माइकल के कमरे मे जा पहुंची। उसने वह नोटिस रावर्ट के सम्मुख रखकर कहा, "यह आपने भेजा है ?"

"हा !"

"यह इल्लीगल है ?"

"तो तुम लिखकर उत्तर दो। क्योंकि तुम्हारी एक फाईल बन चुकी है, इस कारण उसम तुम्हारा उत्तर दर्ज कर दूंगा। तब सचिव महोदय जाच कमेटी मुकर्रिर करेंगे। मैं इसमें कुछ नही कर सकता।"

रेवा के मन में आ रहा था कि वह इस 'वहशी' को दो-चार सुनाए, परन्तु अपने पर नियंत्रण रखते हुए वह बिना उत्तर दिए बाहर आ गई और अपनी मेज़ पर सामान समेटने लगी। उसके पड़ोस में बैठा एक बाबू सी० देशपाण्डे आ खड़ा हुआ। देशपाण्डे भी उनकी 'फ्री लांसर्ज़' क्लब का सदस्य था। इस पर भी उसको विदित नहीं था कि यह क्लब में हुए किसी व्यवहार का झगड़ा है। उसने कहा, "रेवा जी ! मुझे आज्ञा हुई है कि आपसे चार्ज ले लूं। आप चार्ज कब देंगी ?"

"अभी, बैठिए।"

देशपाण्डे रेवा की कुर्सी के समीप ही कुर्सी लगाकर बैठ गया।

रेवा ने अपनी मेज़ के दराज़ में से एक काग़ज निकाला और उसमें कायदे कानून के मुताबिक वस्तुओं की सूची, जो उसके पास थीं, गिनकर नीचे लिख दिया, "मैं इनको, जो सामान मेरे पास है, मिस्टर सी० देशपाण्डे को दे रही हूं।"

देशपाण्डे ने लिख दिया, "मुझे ये वस्तुएं मिल गई हैं।"

जब इस प्रकार चार्ज दे दिया गया तो देशपाण्डे ने पूछा, "यह झगड़ा क्या है ?"

"आप मिस्टर वृन्दावन माधव से पूछिएगा तो पता चल जाएगा ?"

देशपाण्डे से रेवा का कई बार सम्बन्ध बन चुका था और वह समझती थी कि देशपाण्डे माधव से सब बात जानकर इस विषय में उसकी सहायता करेगा।

रेवा चार्ज देकर, उसकी एक प्रति देशपाण्डे से हस्ताक्षर करा, घर लौट गई। घर पर साढ़े बारह बजे के लगभग पहुंची। मां अकेली बैठी भगवद्गीता पढ़ रही थी। जब रेवा ड्राइंग रूम में जा पहुंची तो वह लड़की की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगी। रेवा ने ही अपने लौटने का कारण बताया। उसने कहा, "मुझे कार्यालय और नौकरी से 'सस्पेण्ड' कर दिया गया है।"

"क्यों ?"

"यह लिखा है कि मैं बीमार नहीं, स्वस्थ थी और झूठी अर्ज़ी तथा सर्टिफिकेट लेकर भेज दिया है। डाक्टर वाडिया और मेहता की रिपोर्ट से यही पता चलता है। इसके साथ ही यह कुंवारी लड़की किसी अज्ञात व्यक्ति से गर्भ धारण कर कार्यालय के 'मौरेल टोन' को हानि पहुंचाने वाली हो रही है।"

"तो अब क्या करोगी ?"

"मां ! यह नोटिस 'इल्लीगल' है। मैं इसका उत्तर दूंगी और यदि यह नोटिस वापस न लिया गया तो हर्जाना सरकार से लूंगी।"

"मैं समझती हूं कि अपने पिता जी से राय कर लो। पीछे उत्तर देना।"

"ठीक है। लंच के समय पिता जी से बात करूंगी।"

सत्यवती ने कहा, "लंच के पीछे बात पृथक् में होगी। मैं चाहती हूं कि

तुम्हारी अवस्था का ज्ञान अभी सिद्धेश्वर को नहीं होना चाहिए।"

"ठीक है मां! अपने पुत्र को तुम रूई में लपेटकर रख सकती हो। मैं समझती हूं कि सिद्धेश्वर भी गुरु जी की दीक्षा ले ले, तब उससे बात करूंगी।"

मां चुप रही।

उस दिन मध्याह्न के भोजन के उपरान्त सत्यवती ने अपने पुत्र से कहा, "सिद्धेश्वर! तुम नीचे कार्यालय में जाओ। पिता जी अभी आधे घंटे में आएंगे।"

सेठ जी समझ गए कि कुछ विशेष बात होने वाली है। उस दिन की विशेषता का तो वह अनुमान लगा रहे थे। वह मन में विचार कर रहे थे कि रेवा अपने दफ्तर तो गई थी, परन्तु इस समय घर बैठी भोजन कर रही थी। इसका कारण न पता लगने वाला समझ, वह चुप कर रहे।

सिद्धेश्वर नीचे चला गया। वह अभी एक ही बात करना सीखा था कि पिता जी से मिलने के लिए आने वालों से कहे कि सेठ जी आधे घंटे मे मिलेंगे।

जब सिद्धेश्वर चला गया तो मां, बेटी और पिता तीनों ड्राइंग रूम में आ बैठे। वहां बैठते ही सत्यवती ने लड़की को कहा, "अब बताओ। क्या कहती हो?"

रेवा ने अपनी जेब से कार्यालय से मिला नोटिस दिखाते हुए कहा, "मैं चाहती हूं कि सरकार को इस नोटिस की असंवैधानिकता के विषय मे चुनौती दी जाए।"

सेठ जी ने नोटिस पढ़ा और पढ़कर कह दिया, इस झगड़े में पड़ने की आवश्यकता है क्या?

"पिता जी! अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए यत्न करना चाहिए।"

"क्या अधिकार हैं एक नौकर के?"

"संविधान में और उसके अनुसार बने सेवा के नियम-उपनियम हैं। उनमें प्रत्येक सरकारी कार्यकर्त्ता के कुछ अधिकार हैं। उनका उल्लंघन नही किया जा सकता।"

"देखो रेवा! झगड़ा वे करते हैं जिनके अपने साधन शुष्क हो गए हों। सरकारी नियमोपनियमों में खेंचा-तानी होगी। सरकारी वकील कहेंगे कि तुम जैसी चरित्रहीन लड़की के लिए तो कोई अवसर नहीं कि वह कार्यालय में रखी जाए?"

"तो मैं चरित्रहीन हूं?"

"हां, चरित्र का स्वरूप जो समाज ने बनाया है उसको तुमने बिगाड़ा है। यह मैं मानता हूं कि तुम्हारे साथ अन्य भी हैं जो समाज के रूप-रंग को बिगाड़ रहे हैं, परन्तु तुम पकड़ी गई हो।

"यह इस प्रकार है जैसे दस-बीस मिलकर कहीं डाका डालने जाएं और वहां के रक्षकों से झगड़े पर एक पकड़ा जाए और शेष भाग जाएं।

"पकड़े गए व्यक्ति के लिए दो उपाय हैं। एक तो यह कि वह अपने साथियों

की मुखबरी करे, उनको पकड़वा दे। दूसरा उपाय है कि वह क्षमा याचना कर अपने को छुड़ाने का यत्न करे।

"तुम इन दोनों में से कुछ भी करना नहीं चाहती और यह सिद्ध करना चाहती हो कि तुम जो पकड़ी गई हो, वह नियमानुकूल नहीं है।

"परन्तु यह बात चलेगी नहीं। यदि चली भी तो अस्थायी रूप में ही छोड़ने का हुकम हो सकता है। छोड़ते ही तुम्हें पुनः तंग किया जाएगा।"

"मैं समझती हूं कि आप गलत उदाहरण दे रहे हैं। मैं डाकुओं में नहीं हूं। मैं सरकारी काम पर नौकर हूं; वहां रहते हुए मेरे अधिकार हैं। उन अधिकारों के अनुसार मेरा सेवा से निकाला जाना एक विशेष विधि-विधान से ही हो सकता है। वे विधि-विधान पालन नहीं किए गए।"

सेठ जी ने मुस्कराते हुए कहा, "यही मैं कह रहा हूं कि इस मामले में विधि-विधान पर झगड़ा करने से बदनामी अधिक होगी और तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारे माता-पिता का नाम भी, यहां तक कि तुम्हारी जाति-बिरादरी भी बदनाम हो जाएगी।

"और यदि वर्तमान हुकम वापिस भी हो जाए तो इसके स्थान पर तुम्हें विधि-विधान के अनुसार नया हुकम जारी कर पकड़ा जा सकता है।

"इसमें एक बात निर्विवाद है कि तुम अपने पेट में पल रहे बच्चे के बाप को न जानती हो, न बता सकती हो। इसी को चरित्रहीनता कहते हैं।

"और देखो! मैंने यह कहा है कि तुम्हारा दावा यही होगा कि तुम्हारे अफसर राबर्ट हुकम जारी नहीं कर सकते। उन्होंने प्रारम्भिक जांच-पड़ताल नहीं की। यह इसी प्रकार है जैसे तुम्हें कोई खराबी करते देख सामान्य नागरिक पकड़ ले और तुम कहो कि तुम्हें तो पुलिस ही पकड़ सकती है, कोई अन्य नहीं पकड़ सकता।

"यह छूटने का बहाना व्यर्थ है। तुम इस प्रकार का विरोध कर छूट नहीं सकोगी। उनके विचार से तुम दोषी तो हो ही।"

"पर पिता जी! मक्खन में से बाल निकाल देने की भांति मुझे निकाल देने से मेरी बदनामी बहुत होगी।"

"वह तो जो होनी है, हो चुकी। अब तुम्हारे झगड़ा करने से बदनामी अधिक होगी, कम नहीं होगी।

"बदनामी यह नहीं कि तुम कार्यालय में काम करने के योग्य नहीं हो। बदनामी यह है कि तुम्हारे पेट में अज्ञात पुरुष का बच्चा पल रहा है। यह समाज में वर्जित है।

"तुम कह रही हो कि यह कहने अथवा तुम्हें इस अनियमित कार्य को करते हुए पकड़ने का अधिकार तुम्हारे अफसर को नहीं है। सम्भव है सरकारी आज्ञा

वापस हो जाए, परन्तु बदनामी तो पहले से भी अधिक होगी। जो अनियमित बात तुम्हारे अफसर को और तुमको विदित है, वह समाचार-पत्रों में छपेगी तथा सब, जो तुम्हारे साथ मेरा सम्बन्ध जानते हैं, इस बात को जान जाएंगे।

"इससे बचने का मार्ग यह नहीं जो तुम प्रयोग कर रही हो। इससे तो तुम, तुम्हारे माता-पिता और फिर धनी-मानियों की जाति-बिरादरी सब भ्रष्ट-चरित्र समझे जाएंगे।"

"तो मैं क्या करूं?"

"इसका उत्तर ही मत दो और मज़े से घर बैठो। उचित तारीख तक उत्तर नहीं जाएगा तो तुम्हारी नौकरी छूट जाएगी। तुम उसकी चिन्ता न करो।

"शेष बात बच्चे के उत्पन्न होने के उपरान्त विचार कर लेना।"

सेठ जी तो अपनी सम्मति दे नीचे कार्यालय में चले गए। सत्यवती ने रेवा से पूछा, "क्या समझी हो?"

"मां! कुछ नहीं। पिता जी हैं व्यापारी व्यक्ति। नित्य धोखा-धड़ी करते रहते है। जब कहीं पकड़े जाते हैं तो रकम छोड़ चुप कर रहते हैं। कारण यह कि इनका काम तो चलता रहता है।

"परन्तु मां! मेरा काम तो रुक गया है। मैं नहीं जानती कि नौकरी छूट जाने पर क्या होगा?"

"तो तुम नौकरी के बिना जी नहीं सकती?"

"जी तो सकती हूं, परन्तु मान-प्रतिष्ठा के साथ नहीं रह सकूंगी।"

"बदनाम तो तुम हो ही चुकी हो। अब उस बदनामी का समाचार-पत्रों में ढिंढोरा पीटना चाहती हो तो झगड़ा करो। अधिक बदनाम होने से बचने का उपाय है चुपचाप घर बैठे रहना।"

रेवा के लिए यह भी एक समस्या थी कि वह खाली बैठी क्या करे। जीवन में सक्रिय रहने और नित्य नये रंग-रूप में उपस्थित होने के लिए ही उसने सेवा कार्य आरम्भ किया था और क्लब का जीवन पसन्द किया था।

जब वह महाराष्ट्र सरकार के सचिवालय में सेवा कार्य पा गई थी तो उसको अपना जीवन अभी भी खाली-खाली अनुभव होता था। तब वह 'बॉम्बे सिटिजन्स क्लब' की सदस्या बन गई थी।

इन्हीं दिनों वह पिता जी के साथ गुरु जी के आश्रम में दो दिन के लिए गई थी और वहां से लौटने के पहली सायकाल गुरु जी ने समाज सुधार के विषय पर अपना प्रवचन दिया था। उसमें उन्होंने बताया था कि आदिकाल में मानव समाज में विवाह की प्रथा नहीं थी। पुरुष-स्त्री-सयोग स्वेच्छा से होते थे। पीछे मनुष्यों ने विवाह प्रथा चालू की। इसमें कारण था—बलशाली पुरुषों का सुन्दर स्त्रियों को अपने साथ बांधे रखने का यत्न।

इस कारण, गुरु जी का कहना था कि स्त्रियों को विवाह-बन्धन में बांधकर रखना प्रचलित हुआ। यह प्रथम सामाजिक अत्याचार था। यह बन्धन ही वस्तुतः मूल बन्धन है। इसके छूटने से अन्य अनेकों बन्धन छूट जाएंगे।

रेवा के उर्वर मस्तिष्क में इस विचार ने उथल-पुथल मचा दी थी। गुरु जी के आश्रम से लौटकर क्लब में भी इस विषय पर चर्चा चली थी। क्लब के कुछ अन्य सदस्य भी गुरु जी के शिष्य थे और उनके प्रवचनों में भाग लेते रहते थे। उस चर्चा का ही परिणाम था कि 'बॉम्बे सिटिजन्स क्लब' के अन्तर्गत एक 'सब-क्लब' बना ली गई और फिर उसमें सदस्य भरती किए जाने लगे।

'बॉम्बे सिटिजन्स क्लब' में पांच सौ रुपये वार्षिक शुल्क देना पड़ता था। उस क्लब की छतरी के नीचे 'फ्री लांसर्ज़' की अपनी पृथक सभाएं होने लगीं। उनमें इस सब-क्लब के नियमोपनियम बनने लगे। डेढ़ वर्ष से ऊपर हो चुका था इन 'स्वतन्त्र योद्धाओं' की क्लब को बने हुए।

क्लब का अपना स्विमिंग पूल था, अपना एक म्यूजिक हाल, एक रिक्रिएशन हाल था। टेनिस-बैडमिंटन लान थे।

'स्वतन्त्र योद्धा' अपना शिकार ढूंढ़ने तो मूल क्लब मे जाते थे, परन्तु शिकार के भोग के लिए अपना-अपना स्थान ढूढ़ते थे।

पिछले डेढ़ वर्ष से यह चल रहा था। रेवा जब से 'बॉम्बे सिटिजन्स क्लब' की सदस्या बनी थी, तब से वह वहा प्रायः नित्य आ रही थी और 'सब-क्लब' बनने पर उसकी गतिविधियों में भी भाग लेने लगी थी।

कुछ युवक जो रेवा के काफी समीप आ चुके थे, उनमें उसके दफ्तर के सी० बी० देशपाण्डे, राबर्ट कार्माइकल तथा व्यापारियों में वृन्दावन माधव मुख्य थे।

5

जिस दिन रेवा को सचिवालय ने नोटिस दिया था, उसी दिन यह सूचना देशपाण्डे ने क्लब के सदस्यों को दे दी। वह सायंकाल क्लब में गया तो उसका सामना माधव और सरोजिनी से हुआ। उसने माधव को बताया, "रेवा को आज सचिवालय से नोटिस मिल गया है कि कारण बताएं कि क्यों न उसे सेवा-मुक्त कर दिया जाए?"

"क्या दोष लगाया गया है उस पर?" माधव ने विस्मय से पूछा।

"दोष यह है कि वह कुमारी होने पर भी गर्भवती हो गई है। इससे दफ्तर का चारित्रिक रूप बिगड़ता है। मुझे उससे चार्ज लेने की आज्ञा आई है। यह सब राबर्ट की शरारत है।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ है।" माधव का कहना था।

"हां !" सरोजिनी का कहना था, "तीन दिन हुए रावर्ट ने रेवा को अपने बैडरूम में चलने का निमन्त्रण दिया था। रेवा ने इन्कार किया तो इसी से चिढ़कर उसने यह आज्ञा दिलवाई है।"

देशपाण्डे का कहना था, "क्लब की कार्यकारिणी में इस विषय पर विचार करना चाहिए।"

यह प्रस्ताव माधव को पसन्द आया। सरोजिनी और देशपाण्डे ने इसका समर्थन किया और 'सब-क्लब' की कार्यकारिणी के ग्यारह सदस्य एक बंद कमरे में मिले। वहां यह निश्चय लिया गया कि तीन सदस्यों का एक डेपुटेशन रेवा से और यदि आवश्यकता समझे तो रावर्ट से भी मिलकर पूरी जानकारी प्राप्त करे।

यह डेपुटेशन रेवा के घर जा पहुंचा। उस समय रेवा अनिश्चित मन अपने कमरे मे बैठी थी। उसके पिता उसे समझा गए थे कि वह सेवा का विचार छोड़ घर बैठे। प्रसव के उपरान्त उसके लिए काम ढूंढ़ लिया जाएगा।

रेवा को यह राय पसन्द नहीं थी, परन्तु इसका विकल्प वह बता नहीं सकी थी। इस कारण अनिश्चित मन वह क्लब नहीं गई थी। मां के साथ घूमने तो वह कई वर्षों से नहीं जा रही थी। आज भी वह मां तथा पिता के साथ भ्रमण के लिए नहीं गई।

जब क्लब का आयोग घर पर आया तो वह अकेली ही घर पर थी। उसने आयोग के सदस्यों को ड्राइंग रूम में बैठाया और उनसे चाय-पानी पूछी।

आयोग में देशपाण्डे था, वृन्दावन माधव था और प्रीमियर मिलों के मैनेजिंग डायरेक्टर की लड़की रजनी कान्ता थी।

रजनी ने ही कहा, "हम क्लब से खूब खा-पीकर आए है। इस कारण हमें मतलब की बात करनी चाहिए।"

"क्या मतलब है आपके आने का ?" रेवा का प्रश्न था।

"हम आपके कार्यालय के नोटिस के विषय में जांच करने आए हैं।"

"क्या होगा इससे ?"

"यह तो हम बता नहीं सकते। एक बात स्पष्ट है कि क्लब में इस प्रकार धींगा-मस्ती नहीं चलने दी जाएगी। हमे बताया गया है कि राबर्ट कार्माइकल के प्रस्ताव को आपके स्वीकार न करने का यह प्रतिकार है।"

रेवा ने अपने बयान दे दिए, "यह ठीक है कि तीन दिन हुए रावर्ट का प्रस्ताव मैंने स्वीकार नही किया था। उसके उपरान्त तो मैंने दो दिन की छुट्टी डाक्टर के सर्टिफिकेट पर मांगी थी। उस पर दो डाक्टरों का एक आयोग मुझे 'ऐग्जामिन' करने आया था। उन्होंने क्या रिपोर्ट दी है, मैं नही जानती। मुझे आज 'सस्पैंशन' का नोटिस मिला है। उसमें एक आरोप यह भी है कि मेरी छुट्टी की अर्जी झूठी है। डाक्टर का सर्टिफिकेट भी झूठा है।

"साथ ही मैं कुंवारी होने पर भी गर्भवती हो गई हूं। यह कार्यालय में चरित्रहीनता फैलाना है।"

"आप क्या करना चाहती हैं?" रजनी ने ही पूछा।

"अभी तक कुछ निश्चय नहीं कर पाई। मेरे पिता जी का यह सुझाव है कि नोटिस का कुछ उत्तर न दूं और उनको करने दूं जो वह करते हैं।

"पिता जी का यह भी कहना है कि प्रसव के उपरान्त मुझे कहीं अन्यत्र काम ढूंढ़ देंगे।"

इस प्रकार रेवा से पूर्ण स्थिति जानकर माधव ने यह कहा, "हमारी राय यह है कि आप एक सप्ताह तक प्रतीक्षा करें और कुछ न करें। इस बीच हम कुछ करेंगे। उससे आपकी प्रतिष्ठा को बहाल करने का यत्न भी किया जाएगा। पीछे विचार कर लीजिएगा कि आपको क्या करना चाहिए।"

"आप क्या कर सकेंगे, इसकी मुझे सूचना कैसे मिलेगी? मैं अब क्लब में तब तक नहीं आऊंगी जब तक कार्यालय में पुनः बैठने की स्वीकृति नहीं मिल जाती।"

माधव का कहना था, "दो-तीन दिन में हममें से कोई आपको मिलने का यत्न करेगा।"

इस प्रबन्ध से रेवा के मन में पुनः उत्साह भर गया और वह पुनः कार्यालय में जाकर बैठने के स्वप्न लेने लगी।

इस भेंट के तीसरे दिन सरोजिनी, रेवा से मिलने मध्याह्न के समय आई और रेवा की मां से पृथक वह उसके बैड रूम में उससे मिली। वहां बैठ उसने बताया, "क्लब के सदस्यों ने यह विचार किया है कि राबर्ट पर आक्रमण किया जाए और वह आरम्भ भी हो गया है। आज प्रेजिडेंसी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख एक 'एफिडेविट' उपस्थित किया गया है जिसमें राबर्ट पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप लगाया गया है। यह मुआमला अब खुफिया पुलिस के हवाले हो गया है।"

"पर इससे" रेवा का प्रश्न था, "मेरा क्या सम्बन्ध है?"

"अभी नहीं। परन्तु हम यत्न कर रहे हैं कि आपको पुनः कार्यालय में दोष-मुक्त कर काम पर नियुक्त कर दिया जाए और फिर प्रसव से छुट्टी के उपरान्त कार्य मिल जाए।"

इसके साथ ही सरोजिनी ने धीरे से कहा, "मैं समझती हूं कि तुमको जब कार्यालय में काम पर हाजिर होने की स्वीकृति मिले तो सेवा छोड़ देनी चाहिए।"

"यह भी क्लब वालों की राय है?"

"नहीं! यह मेरी राय है।"

"इसमें कारण क्या है?"

"कारण तो युक्तियुक्त है। हमारे प्रत्येक कार्य में कुछ उद्देश्य होता है। हम पुरुषों से सम्बन्ध बनाती हैं तो अपनी दुर्बलता से विवश होकर ही बनाती हैं।

इसी कारण जब कहीं सेवा करती हैं तो धन प्राप्ति के लिए करती हैं। धन की तुम्हें आवश्यकता नहीं। इस कारण मेरी राय यह है कि तुम चुप रहो। कुछ दिन में राबर्ट जेल में होगा और सैक्रेटरी तुम्हारे विरुद्ध दोषों में सार न समझ तुमको लिखेगा।

"परन्तु मेरी राय यह है कि तुम्हें वहां कार्यालय में जाने की आवश्यकता नहीं।"

रेवा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और सरोजिनी बहन! तुमको भी सेवा करने की आवश्यकता नहीं?"

"नही! मेरा पति अपना पचास हज़ार का बीमा मेरे नाम किए हुए था। यह रकम उसके देहान्त के उपरान्त मुझे मिल गई है और मेरा निर्वाह भली-भांति हो रहा है। यह ठीक है कि मैं उतना व्यय नही कर सकती जितना तुम कर सकती हो, इस पर भी मैं मज़े में स्वतन्त्र जीवन चला रही हूं।"

रेवा को यह एक अन्य सुझाव सरोजिनी से मिला। वह यह कि उसे धनाभाव नही, इस कारण सेवा कार्य की उसे आवश्यकता नही। वह इस सुझाव पर भी विचार करने लगी।

जब सरोजिनी चली गई तो मां ने पूछा, "यह औरत कौन थी?"

"यह भी हमारे क्लब की सदस्या है।"

"किस क्लब की?" अब तक सत्यवती जान चुकी थी कि 'फ्री-लांसर्ज़' की एक 'सब-क्लब' है। इसी कारण उसने यह पूछा था।

रेवा ने मुस्कराते हुए बताया, "मां! हमारी 'सब-क्लब' की।"

"यह विवाहिता नही है क्या?"

"यह विधवा है। इसका एक लड़का है जो इस समय पुणे में पढ़ता है। यह घर में अकेली है।"

"ओह! यह भी तुम्हारे गुरु की चेली है?"

"हां, मां! यह भी समझती है कि यदि आरम्भ से यह विवाह से मुक्त होती तो अधिक सुखी होती।"

"जैसे तुम अब हो?"

रेवा हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मुझे दु:ख नही। रुग्ण रहने से कुछ कष्ट हुआ था, परन्तु अब ठीक हू और कष्ट भी नही है।"

"तो तुम्हें कार्यालय से निकाले जाने का दु:ख नहीं है। बिना दु:ख के ही वकील से दावा करने की धमकी दे रही थी?

"देखो रेवा! मनुष्य कुछ भी अकारण नही करता। न ही अकारण करने की इच्छा करता है। इसमें मैं कहती हूं कि जब तुम सरकारी नोटिस का उत्तर देने के लिए तड़फड़ा रही थी, उस समय तो दु:ख भी था। अब दु:ख नहीं रहा तो उसमें

भी कारण है।"

"अब क्या कारण है?"

अब सत्यवती ने मुस्कराते हुए कहा, "इसमें हम, मेरा अभिप्राय है कि तुम्हारे पिता और मैं, तुमको ऐसी राय दे रहे हैं जिससे तुम्हें अपने हो रहे अपमान की कम से कम अनुभूति हो। यदि तुम क्लब जाती होतीं तो वहां अपने कार्यालय से निकाले जाने की चर्चा नित्य सुनतीं और फिर इसके कारण का उल्लेख भी सुनतीं। परन्तु हमने राय दी है कि तुम घर से निकलना छोड़ दो। जब कभी घर से बाहर जाओ तो हमारे साथ जाओ। इससे तुम्हारी निन्दा कम से कम होगी।

"यह है कारण तुम्हारे दिन-प्रतिदिन आश्वस्त होने में और दुःख की विस्मृति में।"

रेवा चुप कर गई। उसे समझ आ गया कि उसने एक बात और सीखी है। वह यह कि वह जब सरकार को मुकद्दमे की धमकी दे रही थी, वह दुःखी थी और अब वह दुःख कम हो रहा है। इससे वह विचार करने लगी थी कि दुःख क्यों कम हो रहा है?

इस पर भी उसने मां से पूछा नहीं। इसमें कारण यह था कि वह मां को अपने से बहुत कम शिक्षित समझती थी। उसको ज्ञात था कि मां छठी-सातवीं श्रेणी तक ही पढ़ी है और वह स्वयं एम० ए० बहुत अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुई थी। इस कारण उसे मां से अपने मन में उठ रहे विचारों का उत्तर पाने की लालसा होते हुए भी पूछने में लज्जा अनुभव होती थी।

वह चुपचाप मां का मुख देखती रही। इस पर सत्यवती ने स्वयं ही उसे कहना जारी रखा, "मैं समझती हूं कि तुम चुपचाप घर बैठी रहो। न तुम अपने परिचितों से मिलोगी, न ही कोई तुम्हें पूछेगा कि यह गर्भ कहां से हुआ है। तुम्हें किसी बात का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं रहेगी। न ही तुम्हें किसी को कुछ बताने में लज्जा का अनुभव होगा।"

"पर मां," अब रेवा ने ही पूछ लिया, "यह बिल्ली को देख कबूतर के आंखें मूंद लेने के तुल्य नहीं होगा क्या?"

"नहीं! कबूतर तो जीवन का भय देखकर आंखें मूंद लेता है और तुम को जीवन का भय नहीं है। हां, तुमको लज्जा का अनुभव हो रहा है। इस कारण कि तुमने कुछ ऐसा किया है जिसे समाज शोभनीय नहीं कहता। उस लज्जा से बचने के लिए तुम आंखें मूंद नहीं रही, वरन् जिनसे लज्जा लगने वाली है, उनसे दूर भाग रही हो?

"यह कबूतर के व्यवहार से सर्वथा भिन्न बात है। कबूतर तो बिल्ली से भागकर छुप नहीं सकता और तुम जिनसे निन्दा का भय है, उनसे छुप सकती हो और छुप रही हो।"

"पर मां !" आखिर रेवा ने मन की बात पूछ ली, "तुम पढ़ी-लिखी तो कुछ भी नहीं, परन्तु बात ऐसे करती हो जैसे तुमने एम० ए० पास कर पी-एच० डी० भी किया हो ?"

सत्यवती हंस पड़ी। हंसकर बोली, "तो यह बात तुम्हें आज पता चली है कि तुम मेरी बातों का उत्तर नहीं दे सकतीं ? परन्तु मैं तो यह तब से जानती हूं जब तुम अभी बातें करना सीखी ही थी। मैं तुम्हें तब से ही समझ रही हूं। तुम समझो अथवा न समझो, यह बात दूसरी है। मैं समझाती रही हूं और तुम उत्तर तो तब से ही नहीं दे सकती थी।"

"हां, जब मैं छोटी थी तो कई बार मुझे तुम्हारी बात पसन्द नहीं आती थी। इस पर भी मान लेती थी, क्योंकि तुम मां हो। परन्तु दो-तीन वर्ष से तो मैं यह समझ रही थी कि तुम अनपढ़ हो, इस कारण तुम कभी ऐसी बात भी करती हो जो मैं पसन्द नहीं करती।

"इस पर भी मैंने तुम्हें समझने का यत्न कभी नहीं किया। यह तो अब डाक्टर से मिल कर आई हूं और मैंने डाक्टर की बातों का उत्तर न दे सकने से उसकी बात मान ली है। मैं तुमको भी डाक्टर की बात का समर्थन करते देख तुम से युक्ति करने लगी थी और अब मुझे अनुभव हुआ है कि मैं तुम्हारी बात का उत्तर नहीं दे सकती।

"इसी कारण पूछ रही हूं कि यह क्यों है। मैं तुम से अधिक पढ़ी हूं और बात तुम ठीक कहती हो।"

सत्यवती हंस पड़ी। हंसकर पूछने लगी, "भला, यह तुमको किसने कहा है कि मैं पढ़ी-लिखी हूं ?"

रेवा विचार करने लगी कि उसे कैसे पता चला है कि मां छठी-सातवीं श्रेणी तक ही पढ़ी है। यत्न करने पर उसे स्मरण आ गया। यह तो मां ने स्वयं ही कुछ वर्ष पूर्व उसे बताया था। बात बी० ए० पास करने के उपरान्त हुई थी। रेवा बी० ए० पास कर आगे पढ़ने की इच्छा व्यक्त कर रही थी। तब उसकी मां ने कहा था, 'क्या आवश्यकता है आगे पढ़ने की ?

'देखो रेवा ! मैं तो सातवीं श्रेणी में पढ़ती थी कि मेरा विवाह कर दिया गया था। तब मैं तेरह वर्ष की थी। विवाह कर बम्बई भेज दी गई और फिर मुझे स्कूल जाने की सुविधा नहीं रही। तुम तो चौदह श्रेणियां पढ़ चुकी हो और क्या पढ़ोगी ?'

रेवा ने वह अवसर स्मरण कर कहा, "मां ! तुमने स्वयं एक दिन कहा था।" साथ ही उसने वह अवसर स्मरण करा दिया।

अब तो मां और भी जोर से हंसी। हंसते हुए बोली, "हां, मैंने कहा था कि मैंने स्कूल की छः श्रेणियां ही पास की थीं। परन्तु यह तो मैंने नहीं कहा कि मैंने

पढ़ना-लिखना और अक्ल सीखनी बन्द कर दी थी। और मैं यह समझती हूं कि अब भी तुम से अधिक शिक्षित हूं। यही कारण है कि तुम्हारी बातों को समझ उनमें राय दे रही हूं।

"तुमने जो कुछ कालेज में पढ़ा है, वह मैंने नहीं पढ़ा, परन्तु जो कुछ संसार में जानने योग्य है, वह मैं तुमसे अधिक जानती हूं और वह है लोक-व्यवहार।"

"वह क्या होता है?"

"वह यह कि ज्यों-ज्यों पृथ्वी पर जनसंख्या बढ़ती जाती है, मानवों में मूर्खों की संख्या बढ़ती जाती है।"

"मां! यह इस कारण है कि मूर्खों की सन्तान अधिक होती है। बुद्धिमानों की सन्तान बहुत ही सीमित होती है। मैं समझती हूं कि संसार में निर्लिप्त रहने के लिए इन मूर्खों से झगड़ा नहीं करना चाहिए?

"हां, यथासम्भव मूर्खों को समझाने का यत्न तो करना चाहिए। यह इस कारण कि जितने मूर्ख संसार में कम होंगे, उतना ही जीवन सुखमय होगा।

"इसी कारण मैं जब भी किसी को अपने से विपरीत कहते अथवा करते देखती हूं तो उसे समझाने का यत्न करती हूं, परन्तु उसे अपने अनुकूल होने पर विवश नहीं करती।

"यही बात मैं तुमसे कह रही हूं। अभी तक तो ईश्वर की कृपा है कि तुम मान रही हो, परन्तु यदि तुम हठ कर अपनी ही बात करोगी तो फिर चुप कर रहूंगी और तुम को अपने मार्ग पर चलने दूंगी।

"यही बात मैं तुम्हारे पिता जी से कहती रहती हूं। आज से बीस वर्ष पूर्व जब तुम अभी दो वर्ष की बच्ची थी, तुम्हारे पिता राजनीति में रुचि लेने लगे थे और एक बार कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा के लिए चुनाव में खड़े भी हुए थे।

"मैंने तब इनको मना किया था, परन्तु यह माने नहीं। मैं चुप रही और वह काम-काज छोड़ दिल्ली जा बैठे। मैं भी इनके साथ वहां चली गई।

"तुम्हारे पिता जी ने सुरक्षा मन्त्री से मित्रता कर ली और बस फिर क्या था। घर पर धन की वर्षा होने लगी।

"हमारी आर्थिक अवस्था लोकसभा में जाने से पूर्व भी बहुत अच्छी थी। तुम्हारे पिता जी ने कांग्रेस दल को एक लाख रुपया दिया था और स्वयं भी इतना ही व्यय कर चुनाव जीते थे।

"परन्तु लोकसभा का सदस्य बनने के बाद तो एक वर्ष उपरान्त ही मेरी संदूकची आभूषणों और नोटों से भर गई। जब उसमें रखने का स्थान नहीं रहा तो मैंने तुम्हारे पिता से कहा, "यदि आप पूरे पांच वर्ष तक लोकसभा के सदस्य रहे तो मुझे धन रखने और छुपाने के लिए दिल्ली में कोई मकान मोल लेना पड़ेगा।

"इस पर तुम्हारे पिता बोले, 'तो क्या हानि है?'

"मेरा प्रश्न था 'और इसमें लाभ भी क्या है? इस धन से आप व्यापार नहीं कर सकते। आप शराब पीते नहीं, वेश्यागमन करते नहीं। तो इसे कहां व्यय करेंगे?'

"मेरे इतना कहने पर तुम्हारे पिता गम्भीर विचार में डूब गए और कुछ दिन के उपरान्त लोकसभा से वापस आए और बोले, 'मैंने बम्बई वापस चलने का निश्चय कर लिया है।'

'और यहां की लोकसभा?' मेरा प्रश्न था। उनका कहना था, 'त्याग-पत्र दे आया हूं। व्यापार से अधिक यहां धोखा-धड़ी होती है। मैं पुनः व्यापार में जा रहा हूं। कम से कम वहां की कमाई को मैं प्रत्यक्ष रूप में व्यय तो कर सकता हूं। यहां की कमाई तो दुराचार पर ही व्यय हो सकती है। इस कारण मेरे जीवन का कांटा बदल गया है।'

"तुम्हारे पिता जी मान गए थे कि मैंने बात ठीक ही कही थी। मैं ठीक बात कह सकी थी क्योंकि मैं निरन्तर पढ़ाई करती रही थी।"

"आप कौन सी पुस्तक पढ़ती थीं?"

"वह आजकल भी पढ़ती हूं। परन्तु पढ़ने से अधिक, पढ़े पर मनन करती हूं।"

6

जब तक रेवा के मन में यह बैठा रहा कि वह घर में सबसे अधिक शिक्षित है, वह घर वालों की संगत मे रहने से बचती रही थी। अब विवश हो घर मे छुप कर बैठा रहना पड़ा तो फिर उसकी बातचीत माता-पिता से अधिक होने लगी थी।

यह ठीक था कि क्लब के सहयोगियों ने रावर्ट के विपरीत पुलिस लगाई तो उसे फंसाने के लिए वे यत्न भी करने लगे। पुलिस की जांच से एक बात और पता चली कि जो डाक्टर रेवा की छुट्टी की अर्ज़ी पर जांच करने आए थे, वही डाक्टर रावर्ट की पत्नी की शव-परीक्षा पर लगे थे।

इस पर तो उन डाक्टरों के विषय में भी जांच-पड़ताल होने लगी। इस जांच में डाक्टर के अधीन एक कम्पाउंडर ने, जो शव-परीक्षा के दिनों हस्पताल में नौकर था, बताया कि रावर्ट ने शव-परीक्षा से पहले डाक्टरों को एक-एक हज़ार रुपया रिश्वत दी थी।

बस, पुलिस ने हस्पताल के डाक्टर और रावर्ट को पकड़ कर पीड़ित करना आरम्भ कर दिया। डाक्टर मेहता बक गया। उसने बताया कि यद्यपि उनको शव में किसी प्रकार के विष के लक्षण नहीं मिले थे, इस पर भी यह रुपया रावर्ट ने मुझे दिया था। मैं इस रुपये को बैंक में जमा नहीं करा सकता था। मैंने पत्नी को

दिया और वह आभूषण खरीद लाई।

इस पर डाक्टर को सरकारी गवाह बना कर छोड़ दिया गया, परन्तु राबर्ट से उन्होंने यह स्वीकार करवा लिया कि उसने पत्नी की हत्या की है।

इस पर रावर्ट को आजन्म कैद का दण्ड दिया गया। इस मुकद्दमे का निर्णय होने में छः मास लग गए और उन दिनों रेवा प्रसव के समीप पहुंच गई थी।

प्रसव के दो दिन पूर्व उसे महाराष्ट्र सरकार के मुख्य सचिव का पत्र आया कि उसके विषय में जांच-पड़ताल से पता लगा है कि वह निर्दोष है। इस कारण उसे अपनी सेवा पर बहाल किया जाता है। उसे अपने विभाग के सचिव को बताना चाहिए कि वह कब सेवा पर आ सकती है।

जब यह चिट्ठी आई तो रेवा की मानसिक अवस्था में बहुत परिवर्तन हो चुका था। इस पर भी सरकारी पत्र आया तो उसने पत्र में लिखी बात मां को समझा दी।

इस समय तक सिद्धेश्वर अपने पिता का व्यवसाय संभालने लग गया था और वह, जब सेठ जी विदेश में गए हुए थे, तो पीछे काम चलाता रहा था। सेठ जी विदेश से लौट आए थे और लड़के की कारगुजारी पर सन्तोष प्रकट कर उसे आशीर्वाद दे चुके थे।

जिस दिन रेवा को पुन: अपने कार्य पर नियुक्त होने का सरकारी पत्र मिला, उस रात भोजन के समय रेवा की मां ने पति को बताया, "रेवा को नौकरी पर हाजिर होने का पत्र आ गया है।"

"और रेवा क्या चाहती है?" सेठ जी का प्रश्न था।

"पिता जी ! मुझे आपकी बात पसन्द आई है।"

"कौन सी बात ?"

"मौन रहना। मैं विचार कर रही हूं कि इसका अभी कुछ उत्तर न दूं मैंने पत्र मां के हस्ताक्षरों से प्राप्त किया है। पीछे मां से उचित उत्तर दिलवा दूंगी। जाना हुआ तो देरी का कारण बता दूंगी। न जाना हुआ तो कुछ भी प्रकट नहीं करूंगी।"

"और यही मैं तुमसे पूछ रहा हूं कि तुम सरकारी नौकरी पर जाना चाहती हो अथवा नहीं ?"

"उसी के विषय में तो मन निश्चय नहीं कर पा रहा। मां कहती है कि मेरी बुद्धि अस्थिर है और मैं समझती हूं कि यह आवश्यकता से अधिक स्थिर है जो किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सकती।"

सेठ जी और सिद्धेश्वर हंस पड़े। रेवा ने परेशानी अनुभव करते हुए पूछ लिया, "सिद्धेश्वर ! तुम किसलिए हंसे हो ?"

"इस कारण कि तुम स्थिर के अर्थ, ठहर गई, समझ रही हो। मां ने मुझे भी

बुद्धि स्थिर करने की बात बताई है। परन्तु इसका अभिप्राय 'स्टैण्ड स्टिल' नहीं। इसका अभिप्राय यह है कि ऐसी सामर्थ्यवान् जो तुरन्त निश्चय पर पहुंचे और फिर ठीक निश्चय दे। और दीदी ! तुम समझ रही हो वैसे स्थिर जैसे एक पत्थर का टुकडा होता है।"

रेवा विचार करने लगी कि क्या उसके कथन का यही अर्थ निकलता है कि उसकी बुद्धि जडवत् हो गई है। उसको समझ आया कि वह जड़वत् नहीं है। उसने भी एक योजना पर विचार किया है। वह यह कि अभी मौन रहा जाए। इस कारण उसने कह दिया, "सिद्धेश्वर ! मेरा यह अभिप्राय नही है कि मैंने विचार करना ही छोड दिया है। केवल यह कहा है कि मैंने कुछ दूर तक विचार किया है और शेष के लिए अभी यत्न नहीं कर रही।"

"यह तो ठीक है, परन्तु जो तुमने कहा था, उसका अर्थ यह नहीं निकलता था। तुमने मा को कहा कि तुम्हारी बुद्धि इतनी स्थिर हो गई है कि कुछ विचार ही नही करती।

"दीदी ! मैंने तुम्हारी भाषा को अशुद्ध कहा है। तुम्हारी नीयत और सामर्थ्य पर कुछ नही कहा।"

रेवा विचार कर रही थी कि अब तो उसका भाई भी कैंची के कतरने की भाति दलील करने लगा है। वह हैरान थी कि यह कैसे हो गया, आठ-नौ महीने में ही स्कूल से बाहर आते ही वह बुद्धि का प्रयोग सीख गया है।

इस पर भी उसने पिता से पूछा, "आप क्या समझते है ?"

"देखो रेवा ! सात महीने के लगभग हो गए हैं तुम्हें सरकारी नौकरी से पृथक हुए और तुम इस समय तक विचार कर चुकी होगी कि तुमने जीवन में क्या करना है ?"

"हा, कुछ तो किया है।"

"क्या निश्चय किया है ? यही तो पूछ रहा हू।"

"वह अपने विवाह के विषय मे है। मैं अब विवाह नहीं करूगी।"

"तो क्या करोगी ?"

"यह हस्पताल से लौटकर बताऊगी।"

"ठीक है। तब तक तो कुछ करने को है भी नहीं।" पिता ने कह दिया।

"पर पिता जी !" सिद्धेश्वर ने कह दिया, "मैंने भी कुछ निश्चय किया है।"

"हां, तुम भी बताओ। तुमने क्या निश्चय किया है ?"

"मैं विवाह करूगा।"

माता-पिता हस पड़े। मां ने ही कहा, "तुम्हारे विवाह की अभी चर्चा नही हो रही। तुम अभी अट्ठारह वर्ष की वयस के हो। तुम्हारा विवाह अभी तीन वर्ष उपरान्त ही हो सकेगा।"

"पर मां !" सिद्धेश्वर ने कहा, "मैंने यह तो नहीं कहा कि आज ही करूंगा। बात यह है कि दीदी की पूर्ण कहानी अब मुझे पता चल चुकी है। मैं उसके विषय में ही विचार कर रहा था कि मैंने अपने भविष्य का कार्यक्रम बना लिया है। उसमें विवाह भी एक 'आईटम' है।"

रेवा ने कह दिया, "मुझे ध्यान आ रहा है कि गुरु जी ने अपने एक व्याख्यान में कहा था कि विवाह की प्रथा पुरुषों ने सुन्दर लड़कियों पर अपने अधिकार जमाने के लिए चलाई है और इसी बात को सिद्धेश्वर प्रमाणित कर रहा है।

"हम स्त्रियों ने यह निश्चय किया है कि विवाह नहीं करेंगी और इस प्रकार किसी पुरुष की दासता को स्वीकार नहीं करेंगी।

"मैंने कभी किसी पुरुष के आदेश को नहीं माना था और उन पर राज्य करती रही हूं। यह तो मेरी ही भूल थी कि सावधान नहीं रही और मैं फंस गई हूं।"

सत्यवती ने कहा, "ठीक है। अभी एक-दो और राबर्ट जैसे मिलेंगे तो समझ सकोगी। यही अस्थिर बुद्धि का लक्षण है।

"ये अस्थिर बुद्धि वाले बहुत ही सुहावने शब्दों मे बताते रहते हैं कि जन्म से मरण पर्यन्त ही जीवन है। जीवन के सुख स्वर्ग के सुखों से भी अधिक रसयुक्त हैं। परन्तु अनुभवी लोग जानते हैं कि अन्त में वे क्लेश और दु:ख ही प्राप्त कराते है।"

सेठ महेश्वर प्रसाद एक व्यापारी वृत्ति का होने के कारण समाज और राज्य के विरोध में नहीं आना चाहता था। इस कारण गुरु जी की बात को सत्य समझता हुआ भी उसे व्यावहारिक नहीं मानता था। व्यवहार ही व्यापार का आधार है और व्यवहार का अर्थ वह समझता था, जिससे जीवन यात्रा सरलता से चलती जाए।

वह देख रहा था कि जब से लड़की को गर्भ की सूचना मिली है, वह वही कुछ कर रही है, जिसे वह व्यावहारिक मानता था। इस कारण वह लड़की से मतभेद रखते हुए भी उसके व्यवहार से प्रसन्न था।

सत्यवती भी लड़की के विचारों से मतभेद रखती हुई उसके व्यवहार को वैसा ही पाती थी, जैसा वह चाहती थी। वह इस बात से प्रसन्न थी कि लड़की ने गर्भपात नहीं कराया। वह सात महीने से क्लब नहीं गई। उसने अपने कार्यालय में अपने काम पर उपस्थित होने की तिथि नहीं लिखी। इससे वह भी लड़की के व्यवहार से सन्तुष्ट थी और भविष्य के विषय मे वह विचार करती थी कि उद्देश्यों में भेद होने पर भी व्यवहार अनुकूल हो रहेगा।

उसी रात सेठ जी ने अपनी पत्नी को एक अन्य बात बताई। उसने कहा, "मैं आज डाक्टर मिस रमज़ान से मिलने गया था। वह समझ रही है कि रेवा परसों

किसी समय भी प्रसव करेगी।

"मैं उसे पांच सौ रुपया पेशगी दे आया हूं और बच्चे की देखभाल का वचन ले आया हूं। मैं उस नर्स से भी मिल आया हूं जिसका प्रबन्ध डाक्टर ने बच्चे के पालन-पोषण के लिए किया है।

"परन्तु रानी! डाक्टर ने आज एक बात और कही है। वह बता रही थी कि कोई अवस्थी है, जो बच्चे को अपने संरक्षण में लेने के लिए कह रहा है।"

"क्यों?"

"वह कहता है कि होने वाले बच्चे का बाप वह है।"

"तो अभी तक वह कहां रहा है?"

"वह कहता था कि रेवा से मिलने के उपरान्त वह अपने कार्य से इग्लैण्ड चला गया था। अब वह बम्बई लौटा है और रेवा के विषय में टोह लेता रहा है। उसे सूचना मिली है कि रेवा डाक्टर रमजान से प्रसव करा रही है।"

"और डाक्टर ने क्या कहा?"

"डाक्टर ने अवस्थी को बताया है कि बच्चे का दावेदार एक अन्य भी है। रेवा ने तो उसे यह कहा है कि वह बच्चे को ठिकाने लगा दे। परन्तु मैंने तथा दूसरे दावेदार ने ही उसे ऐसा करने से मना कर दिया है। मैंने तो उसे यहां तक कहा है कि बच्चे की हत्या नहीं होगी। यदि उसने कुछ गड़बड़ की तो मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूंगा।

"बच्चा होने के उपरान्त मैं इस अवस्थी से मिलूंगा और बात कर लूंगा। मुझे यदि विश्वास हो गया कि बच्चे का पालन-पोषण वह कर सकेगा तो मुझे उसका विरोध करने में रुचि नहीं होगी।

"इस पर भी मैंने डाक्टर को कह दिया है कि बच्चे के होने तक उसे किसी प्रकार का वचन न दे। यह मैं देखूंगा कि बच्चा उसके पास रहे अथवा न रहे।"

"आपका व्यवहार ठीक ही है, परन्तु मैं विस्मय कर रही हूं कि आप निपट नास्तिक होते हुए भी इस प्रकार का विचार कैसे रखते हैं।"

"इसका एक कारण है।"

"क्या?"

"यह बताने की आवश्यकता नहीं। इतना तो तुम समझती ही हो कि पिछले सत्ताईस वर्ष के विवाहित जीवन में हम में किसी भी विषय पर मतभेद नहीं हुआ। तुम आस्तिक हो, भगवान का भजन करती हो और मैं ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता। परन्तु हमारे व्यवहार में सदैव अनुकूलता रही है। एक बार तुमने कहा था कि राजनैतिक जीवन मेरे अनुकूल नहीं होगा। मैंने तुम्हारी बात गलत समझी थी, परन्तु मैं एक वर्ष से अधिक लोकसभा का सदस्य नहीं रह सका था। अर्थात् मैं अनुभव से तुम्हारी बात को ठीक समझ वहां से त्याग-पत्र दे आया था।

"तब से आज तक हमारे जीवन कभी भी एक दूसरे को काटते दिखाई नहीं दिए।"

"हां, यह तो है।"

"इसका एक कारण है। उस पर फिर कभी विचार करेंगे। तब मैं बताऊंगा कि हम नास्तिक और आस्तिक क्यों एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते नहीं।"

सत्यवती, बच्चे के बाप बनने का एक अन्य प्रत्याशी देख, विस्मय कर रही थी कि यह बच्चे के बाप के कर्मफल प्रकट हो रहे हैं अथवा बच्चे की मां के। जब वह कुछ समझ नहीं सकी तो चुप कर सो गई। उस दिन की विचार दिशा से वह सर्वथा सन्तुष्ट थी। इसी कारण गहरी नींद सोई और नियम से प्रातः चार बजे उठी और अपने नित्य कर्मों में लग गई।

जिस दिन रेवा डाक्टर के 'नर्सिंग होम' में जाने वाली थी, सरोजिनी उससे मिलने आ पहुंची। वह जब भी रेवा से मिलने जाती थी, उससे पृथक में उसके सोने के कमरे में जाकर मिलती थी। सरोजिनी ने कभी रेवा की मां से बात करने का यत्न नहीं किया था।

आज नित्य की अपेक्षा कुछ विलक्षण हुआ। सरोजिनी और रेवा दोनों कमरे से इकट्ठी निकलीं। रेवा का सूटकेस सरोजिनी हाथ में लटकाए हुए थी। दोनों वहां आई जहां सत्यवती बैठी थी। रेवा ने कहा, "मां! मैं जा रही हूं और छः-सात दिन बाद मिलूंगी।"

"और यह भी तुम्हारे साथ जा रही है!"

"हां, यह सरोजिनी बहन मेरे साथ ही वहां रहेगी। यह अकेली हैं और मेरे लिए यह कष्ट कर रही हैं।"

सत्यवती ने कृतज्ञता भरी दृष्टि से सरोजिनी की ओर देखा तो सरोजिनी ने एक भी शब्द कहे बिना हाथ जोड़ नमस्कार की और रेवा के साथ ड्राइंग रूम से बाहर चली गई।

उसके चले जाने के उपरान्त सेठ जी ऊपर आए और पूछने लगे, "रेवा गई है?"

'जी!"

"मैंने ही उसकी एक सहेली को उसके साथ रहने पर उत्साहित किया है। दोनों एक ही क्लब की सदस्या हैं। परन्तु वह मेरे विचारों की ही है। मैंने उसे बच्चे की रक्षा के लिए वहां रहने पर नियुक्त किया है।"

डाक्टर रमजान के लिए यह प्रबन्ध नया नहीं था। जब रेवा गर्भपात के लिए उसके पास आई थी तो वह उसे एक आवारा लड़की समझ उसको गर्भपात से मना कर रही थी। इसमें उसका एक अपना मतलब था। वह चाहती थी कि रेवा के बच्चा होने पर वह बच्चे की परवरिश एक मुसलमानी यतीमखाने में करा

देगी। इस प्रकार हज़रत सुलह-उल-इस्लाम की उम्मत में वृद्धि होगी।

जब सेठ जी ने बच्चे की रक्षा के लिए उससे सौदेबाज़ी की तो भी वह प्रसन्न थी, क्योंकि सेठ जी ने उसे बच्चे की परवरिश के लिए खर्च देना स्वीकार किया था। साथ ही डाक्टर का यह इरादा था कि बच्चे के पालन का खर्च सेठ जी से ले ले, परन्तु बच्चे को मुसलमान बनाने का इन्तज़ाम भी करे।

परन्तु अब बीच में एक अवस्थी टपक पड़ा था। यह अवस्थी बम्बई की एक व्यापारिक कम्पनी का इग्लैण्ड और अमेरिका में प्रतिनिधि था। वैसे वह 'बॉम्बे सिटिजन्स क्लब' का सदस्य था। वहीं रेवा से उसकी भेंट हुई थी। रेवा देशपाण्डे के साथ आई थी और अवस्थी देशपाण्डे का परिचित था। दोनों मिले तो उसने दोनों को अपनी ही मेज़ पर चाय का निमन्त्रण दे दिया। वह रेवा की ओर आकर्षित हुआ और बाद में दोनों का सम्बन्ध बन गया।

अगली बार अवस्थी इंग्लैण्ड से भारत आया तो रेवा से भेंट करने वह पुनः क्लब मे जा पहुंचा। क्लब में रेवा तो नहीं मिली, परन्तु देशपाण्डे मिल गया। दोनों एक ही मेज़ पर बैठ चाय पीने लगे।

बातों ही बातों में अवस्थी ने पूछा, "देशपाण्डे! स्मरण है पिछली बार मैं तुमसे इसी क्लब मे मिला था तो तुम्हारे साथ एक लड़की थी और मैं उसे तुम्हारी संगत से भगा कर अपनी संगत में ले गया था।"

"अच्छी तरह याद है। उसके साथ तो एक दुर्घटना हो गई है।"

"क्या हुआ है?"

"उसके गर्भ ठहर गया था। वह अविवाहित थी। इससे कार्यालय में उसकी बदनामी हुई। तब उसे सस्पेण्ड कर दिया गया था। हमें उसके लिए बहुत यत्न करना पड़ा था। अब वह बहाल तो हो गई है, परन्तु इन्हीं दिनों उसके बच्चा होने वाला है।"

"ओह! और वह कहां है?" अवस्थी ने पूछ लिया।

"वह है तो अपने माता-पिता के घर में। परन्तु हमारे क्लब की एक सदस्या सरोजिनी उससे मिलती है।"

कुछ विचार कर अवस्थी ने कहा, "मैं उस लड़की से मिलना चाहता हूं।"

"क्या काम है?"

"मुझे सन्देह है कि उसकी होने वाली सन्तान मेरी ही है। इसका निश्चय कर मैं उस सन्तान का चार्ज लेना चाहता हूं।"

"हम लोग उसके घर पर नहीं जाते। वह प्रसव के समीप ही है। यदि तुम मिलना चाहते हो तो सरोजिनी से बात कर लो।"

"ठीक! मुझे उससे ही मिला दो।"

देशपाण्डे ने उसकी सरोजिनी वाडेकर से भेंट करा दी। अवस्थी ताज होटल

में ठहरा हुआ था। सरोजिनी उसे वहां ही मिलने आई।

सरोजिनी से अवस्थी को पता चला कि रेवा डाक्टर रमज़ान के नर्सिंग-होम में अगले बृहस्पतिवार को प्रसव करने जा रही है।

जब कैलाशनाथ को प्रसूता के प्रसव की तारीख विदित हुई तो उसने हिसाब लगाया और यह निश्चय कर कि वह बच्चा उसका है, वह डाक्टर से मिलने जा पहुंचा।

डाक्टर समझती थी कि सेठ महेश्वर प्रसाद की सन्तान रेवा के पेट में है। वह नहीं जानती थी कि रेवा उसकी लड़की है। इस कारण उसने अवस्थी को बताया कि बच्चे का एक अन्य दावेदार यहां आता है और वह बच्चे को लेने का प्रबन्ध कर चुका है।

"परन्तु बच्चा तो मेरा है?" अवस्थी का कहना था।

"मैं तुम दोनों को मिला देती हूं। तुम परस्पर निश्चय कर लो।"

इस प्रकार सेठ महेश्वर प्रसाद और अवस्थी में भेंट हो गई।

सेठ ने अपना रेवा से सम्बन्ध तो नहीं बताया। उसने केवल यह कहा कि मैं इस बच्चे में रुचि रखता हूं और इसके पालन-पोषण का प्रबन्ध कर रहा हूं।

"और मैं इसका 'नैचुरल फादर' होने से इसके पालन-पोषण का अधिकार चाहता हू।"

"तो बच्चे की मां से मिलकर फैसला कर लो?" सेठ जी ने कहा।

"परन्तु डाक्टर कहती है कि उसने तो बच्चे की हत्या करने के लिए कह दिया है। इसके लिए बच्चे की मां उसे भारी रकम देने वाली है।"

सेठ को एक बात सूझी। उसने कहा, "देखो मिस्टर अवस्थी! बच्चा अभी दो-तीन दिन में जन्म लेने वाला है। उसको पैदा होने दो। उसे देख लो और यदि फिर भी उसका अपनी सन्तान के रूप में पालन करना चाहो तो प्रबन्ध हो सकेगा। बच्चे की मां को पता नही चलेगा।

"जहां तक मैं जानता हूं, वह अपने पीछे बच्चे को जीवन भर लगा रहने नहीं देना चाहती।"

इस प्रकार प्रबन्ध हुआ तो सेठ जी ने अपनी पत्नी सत्यवती को भी यह प्रबन्ध बता दिया।

7

निश्चित तारीख रात के दस बजे रेवा को प्रसव हुआ और उसने एक सुन्दर लड़के को जन्म दिया।

बच्चे के जन्म के उपरान्त रेवा ने सरोजिनी से पूछा, "क्या हुआ है?"

"मेल चाइल्ड।"
"कैसा है?"
"रेवा! अभी तो बिल्कुल 'बलूंगड़ा' प्रतीत होता है।"
"मैं उसे देखना चाहती हूं।"
"डाक्टर उसे अपने साथ ले गई है।"
"उसे कहो कि वह मुझको दिखाने के उपरान्त ही उसे 'डिस्पोज़ ऑफ' करे।"
सरोजिनी गई और डाक्टर को बुला लाई। रमज़ान आई तो रेवा ने पूछा, "बच्चा कहां है?"
"वह तो वहां भेज दिया है, जहां आपने कहा था।"
"पर मुझे दिखाया तो होता।"
"आपने तो कहा था कि उसे ठिकाने लगाना है और रजिस्टर में लिख देना है कि मरा हुआ बच्चा हुआ है।"
रेवा का यही आदेश था। इस कारण वह चुप कर रही।
जब डाक्टर चली गई तो सरोजिनी ने कहा, "रेवा! तुमने यह ठीक नहीं किया।"
"क्यों?"
"तनिक स्वस्थ हो जाओ तो बताऊंगी। मैंने एक दिन कहा भी था कि यद्यपि मुझे विवाह करने का दुःख था, परन्तु पुत्र होने की प्रसन्नता है।
"अब मेरा लड़का तेरह वर्ष का है। मिलिटरी अकादमी में आठवीं श्रेणी में पढ़ता है। मैं उसे पुणे मिलने जाया करती हूं और मिलकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है। बहुत प्यारा लगता है।"
रेवा ने मुख मोड़ लिया। इसका अभिप्राय यह था कि सरोजिनी से वह सहमत नहीं है।
बच्चा अभी नर्सिंग होम में ही था और उसे सेठ जी और अवस्थी दोनों ने देखा था। इस पर दोनों प्रत्याशियों में बात होने लगी। दोनों ताज होटल में बात करने जा पहुंचे थे।
वहां चाय पीते हुए सेठ ने पूछा, "आप बच्चे को किसलिए लेना चाहते हैं?"
"इसलिए कि मुझे विश्वास है कि वह मेरा ही है।"
इस पर सेठ ने कहा, "देखो अवस्थी! मैं रेवा का पिता हूं। मैं जीव-हत्या को घोर पाप मानता हूं। इस कारण लड़की को इस पाप से बचाने का मैं यत्न कर रहा हूं। परन्तु तुम्हारे पास बच्चे के पालन-पोषण के साधन क्या हैं, यह मुझे विदित होने चाहिए।"
"मेरी पत्नी लन्दन में है। मैं इसे वहां ले जाऊंगा।"
"और तुम्हें विश्वास है कि वह इस बच्चे का पालन करेगी? उसकी अपनी

कोई सन्तान है क्या ?"

"हां ! एक लड़की है । मेरे कोई लड़का नहीं । इस कारण मुझे विश्वास है कि वह इसे पाकर प्रसन्न होगी ।"

सेठ जी ने कुछ विचार कर कहा, "देखो अवस्थी ! मैं एक राय देता हूं । इस बच्चे को यहां ही रहने दो । मैंने एक वर्ष तक तो इस डाक्टर से ही प्रबन्ध किया है । तत्पश्चात् मैं इसे अपने पास ले जाऊंगा । मेरी पत्नी इसे अपना नाती मान इसका स्नेह पूर्वक पालन करेगी । तुम जब भी भारत आया करोगे, इस बच्चे से मेल-मुलाकात कर सकोगे । जब वह इस योग्य हो सकेगा कि स्वयं निश्चय कर सके कि वह किसके पास रह सकेगा, तब हम उस पर छोड़ देंगे ।"

इस पर अवस्थी चुप कर गया । सेठ महेश्वर ने यह भी बता दिया कि रेवा के विचार में बच्चे की हत्या हो चुकी है और वह उसे इस भ्रम से बाहर करना भी नहीं चाहता ।

"यह क्यों ?" अवस्थी ने पूछा ।

"यह इसलिए कि मैं अपने विचार किसी पर थोपना नहीं चाहता । वह निःसन्तान रहना चाहती है तो रहे । मैं उत्पन्न हुए की हत्या पाप समझता हूं ।"

यद्यपि अवस्थी इस सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करता था, परन्तु वह एक धनी व्यक्ति को अपनी ही लड़की को खुली छुट्टी देते देख उसकी प्रशंसा ही कर सका ।

अवस्थी ने कह दिया, "अब मुझे यह विश्वास हो गया है कि आपके हाथ में लड़के का जीवन बन सकेगा । इससे मैं आश्वस्त हूं । मैं दो-चार दिन में लन्दन वापस जा रहा हूं । अगली बार जब आऊंगा तो आपसे मिलूंगा और बच्चे के विषय में आपसे बात करूंगा ।"

रेवा जब प्रसूति गृह से आई तो उसको और सरोजिनी को यही बताया गया था कि बच्चा जीवित नहीं है ।

सेठ जी ने डाक्टर रमज़ान के द्वारा ही एक नर्स को अपनी सेवा में ले लिया था और वह बच्चे की देख-रेख करने लगी थी ।

जिस दिन रेवा घर लौटी, सरोजिनी वाडेकर उसके साथ थी । सत्यवती ने सरोजिनी को बहुत-बहुत धन्यवाद किया और साथ ही कह दिया, "यदि किसी प्रकार की, किसी भी काम में हम तुम्हारी सहायता कर सकें तो निस्संकोच कहना । तुम मुझे अपनी लड़की समान ही लग रही हो ।"

सरोजिनी ने कह दिया, "यह ठीक है । परन्तु माता जी ! यह बच्चे की हत्या करा कर आपने ठीक नहीं किया ?"

"यह हमने नहीं किया । हमसे पूछे बिना हुआ है ।"

इस समय तक रेवा और सरोजिनी सेठानी के पास सोफा पर बैठ गई थीं ।

रेवा मां के एक तरफ थी और सरोजिनी दूसरी तरफ।

सत्यवती ने घंटी बजाई तो पाचक आ गया। सत्यवती ने कहा, "शर्बत बना लाओ। देखो, खूब ठण्डा हो। बिटिया के होंठ सूख रहे हैं।"

"मुझे अपने घर से गए आज सात दिन हो गए हैं। मैं वहां की सुध लेना चाहती हूं।"

"वहां कौन है जिसकी सुध लेने जा रही हो?"

"घर पर कोई नहीं। परन्तु मेरी डाक वहां आती है और उसकी ही सुध लेनी है। उसमें मेरे लड़के का पत्र भी हो सकता है?"

"ठीक है। शर्बत पी लो और फिर अपनी डाक की सुध ले लेना और यदि मेरी एक बात मानो तो कुछ दिन तक रेवा के साथ यहीं रह जाओ।"

इस प्रस्ताव पर मिसेज वाडेकर मां-बेटी दोनों का मुख देखने लगी।

सत्यवती उत्सुकता से रेवा के मुख पर देखने लगी थी। मां के प्रस्ताव का उत्तर रेवा ने ही दिया, "मां! बात तो ठीक है, परन्तु पिता जी से पूछ लो। यदि उनको कोई आपत्ति न हो तो मैं इस प्रस्ताव को पसन्द करूंगी। केवल कुछ दिन के लिए ही नहीं, वरन् जीवन काल के लिए मैं सरोजिनी बहन को यहां रखना चाहूंगी।"

"पर तुम्हारे पिता का इससे क्या सम्बन्ध है? वह इसे अपनी दूसरी लड़की मानकर इसका मान करेंगे।"

"परन्तु मां! यह गुरु जी की चेली है। यह पुरुष को पुरुष और स्त्री को स्त्री ही समझती है। मुझे तो इस सम्बन्ध में कुछ भी आपत्तिजनक प्रतीत नहीं होता। तुम अपनी बात समझ लो।"

सरोजिनी मां-बेटी में यह नोंक-झोंक सुन रस लेने लगी थी। उत्तर सत्यवती ने ही दिया। उसने कहा, "रेवा! सिद्धान्त रूप में तुम्हारे पिता यह मानते हैं कि यदि पति-पत्नी सम्बन्ध स्थायी न हो सकें तो मनुष्य का कल्याण होगा, वह तो यह भी समझते हैं कि यदि पक्षियों की भांति मनुष्य के पंख लग जाएं तो बहुत आनन्द आए। परन्तु वह जानते हैं कि प्रकृति ने मनुष्य की सीमाएं बांधी हैं और एक सीमा यह भी है कि पुरुष-स्त्री का सम्बन्ध स्थायी हो।"

अब सरोजिनी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "माता जी! यह उपमा उपयुक्त नहीं। पंख तो मनुष्य को लग नहीं सकते, परन्तु पुरुष-स्त्री मे सम्बन्ध अदल-बदल हो सकता है।"

"देखो बेटी! उपमा तो सदा एकअंगीय ही होती है। परन्तु तुमने इसमें समानता का विचार नहीं किया। तुमने वही पक्ष देखा है जिसमें दोनों बातों में भेद है।

"दोनों में सांझापन इस विषय में है कि बिना पंख के उड़ने वाला गिरकर

अंग-भंग कर सकता है। इसी प्रकार बिना पति के सन्तान हो तो वही कुछ होता है जो रेवा के साथ हुआ है। यह सात महीने तो घर से बाहर नहीं निकली और अब एक बेकसूर निरीह बालक की हत्या कर आई है।"

सरोजिनी को इस तुलना से कंपकंपी हो उठी। रेवा ने पूछा, "यह जो कुछ हुआ है, वह यदि कुछ अनुचित है तो इसलिए कि सरकार और समाज इसको अनुचित मानता है। परन्तु मां! क्या यह समाज और सरकार का किसी के निजी जीवन में अनुचित हस्तक्षेप नहीं है?"

इस उत्तर की अयुक्तता तो वाडेकर भी समझ गई। परन्तु इस समय पाचक एक बड़े जग में अनानास का शर्बत बना लाया था। उसमें बर्फ के टुकड़े तैरते दिखाई दे रहे थे। इस कारण वार्तालाप बन्द हो गया और सत्यवती ने तीनों के लिए गिलास भर दिए और वे पीने लगीं।

पीते हुए सरोजिनी ने कहा, "माता जी! मैं अभी तो घर जा रही हूं और सायंकाल तक लौटूंगी। दो-चार रात तो रेवा के पास रहूंगी। सदा के लिए रहने के प्रस्ताव पर तो ठण्डे दिल से विचार करने की बात है।"

सरोजिनी ने शर्बत के दो गिलास पिए और उठ खड़ी हुई।

वह गई तो सत्यवती ने कहा, "रेवा! तुम अपने पिता जी के विषय में बहुत ही हीन विचार रखती हो। क्या तुमने उनमें किसी प्रकार का दोष देखा है?"

रेवा उत्तर देने ही वाली थी कि सेठ महेश्वर प्रसाद रेवा का सुख-समाचार लेने आ पहुंचा। सेठ ने पूछा, "सुनाओ रेवा! कैसा अनुभव होता है?"

"जाने के समय से बहुत हल्का अनुभव कर रही हूं। जैसे बहुत बड़ा बोझ उतारकर फेंक आई हूं।"

"और मन कैसा लग रहा है?"

"वह तो शरीर से भी अधिक हल्का है। अभी शरीर में दुर्बलता है। परन्तु मन तो पहले से अधिक बलयुक्त हो गया है।"

"मन क्या कहता है? क्या कार्यालय में सेवा कार्य के लिए जाओगी?"

"नहीं पिता जी! अब सेवा कार्य नहीं करूंगी। मुझे अब समझ आ रहा है कि कार्यालय में सेवा और पति की गृहिणी बनने में अन्तर नहीं। दोनों में स्थायित्व समान रूप में अस्वाभाविक है।"

"यद्यपि युक्ति लंगड़ी है, परन्तु परिणाम ठीक ही है। मेरा मतलब है, तुम अब नौकरी पर नहीं जाओगी तो ठीक ही करोगी।

"परन्तु काम क्या करोगी?"

यह प्रश्न विचारोत्पादक था। प्रश्न था दफ्तर में सेवा कार्य नहीं करेगी तो दिन भर क्या किया करेगी?

वह आंखें मूंद विचार करने लगी। इसपर सेठ जी खिलखिला कर हंस पड़े।

उनकी हंसी की आवाज़ सुनकर रेवा ने आंखें खोल प्रश्न-भरी दृष्टि में उनकी ओर देखा। सत्यवती भी मुस्करा रही थी, परन्तु वह कुछ बोली नहीं।

आखिर रेवा ने कहा, "मैंने अभी विचार नहीं किया कि दिन-भर क्या किया करूंगी।"

"बहुत देरी कर दी है विचार करने में। साढ़े सात मास में भी तुम विचार नहीं कर सकी कि इस प्रसव के उपरान्त क्या करना है?

"देखो रेवा! यदि कहो तो मैं सुझाव दूं?"

"हां, पिता जी! कहिए।"

"मेरी राय है कि तुम दो मास के लिए हवा-पानी बदलने के लिए कहीं चली जाओ। यह मौसम दक्षिण में बड़ा सुहावना होता है। चाहो तो कन्याकुमारी चली जाओ। वहां मेरे एक मित्र का बंगला खाली पड़ा है। वह तुम्हें मिल जाएगा और अपनी सहेली सरोजिनी देवी को साथ ले जा सको तो दो मास में पुनः हट्टी-कट्टी होकर लौट आओगी। तब तुम्हारी मनःस्थिति को जानकर काम बता दूंगा।"

रेवा ने कहा, "सरोजिनी से पूछना होगा?"

"हां, पूछ लो। उसको एक पैसा भी व्यय नहीं करना पड़ेगा। वह चाहे तो अपने पुत्र को भी वहां साथ ले जा सकेगी। आजकल स्कूल में छुट्टियां होने वाली हैं।"

"ठीक है। सरोजिनी सायंकाल तक आएगी तो पता करूंगी। वैसे सागर तट पर जाकर स्वास्थ्य लाभ शीघ्र हो सकेगा।"

सायंकाल के अल्पाहार के समय सिद्धेश्वर भी आया हुआ था। उसने बहन को दुर्बल देखा तो कह दिया, "दीदी! बहुत दुर्बल हो गई हो?"

रेवा ने मुस्कराते हुए कहा, "यह सब डाक्टर की करामात है।"

"यह दुर्बल करना भी कोई करामात हो सकती है।"

"हां! मोटे व्यक्ति तो इसके लिए लाखों रुपये खर्च करने के लिए तैयार रहते हैं।"

"तब तो परमात्मा का धन्यवाद है कि मैं मोटा नहीं हूं। और दीदी! अब घी, मक्खन की चिकनी वस्तुएं मत खाया करना। नहीं तो फिर मोटी हो जाओगी।"

मां कुछ समझाने लगी थी कि सरोजिनी आ गई। उसे आया देख रेवा ने शरारत भरी दृष्टि में कह दिया, "माता जी ने इन सरोजिनी बहन को इस घर में आकर रहने का स्थायी निमन्त्रण दे दिया है।"

"सत्य?" सेठ जी ने प्रश्नभरी दृष्टि से पत्नी की ओर देखकर पूछ लिया।

सत्यवती ने बात बदल दी, "परन्तु पहले तो कन्याकुमारी का कार्यक्रम विचार करना है।"

"हां !" रेवा ने भी बात बदल सरोजिनी को बताया, "पिता जी का सुझाव है कि मैं और तुम दो मास के लिए कन्याकुमारी के समुद्र तट पर स्वास्थ्य-लाभ के लिए जाकर रहें।"

"पर वीरभद्र को स्कूल से छुट्टियां होने वाली हैं और वह बम्बई में आने वाला है !"

"वह भी हमारे साथ चल सकता है।"

"देख लो ! मैं तैयार तो हूं, परन्तु रेवा ! पुत्र के सामने मैं न तो स्वयं को और न ही तुम्हें कुछ अनियमित बात करने दूंगी।"

रेवा ने कहा, "मैं अभी अपने को स्वतन्त्र जीवन चलाने के योग्य नहीं समझती। दो मास की सैर से स्वास्थ्य में बहुत लाभ पहुंच जाएगा।"

इस प्रकार बात बन गई। सरोजिनी ने लड़के को तार दे दिया, "मैं कल पुणे आ रही हूं। मेरे साथ कन्याकुमारी चलने के लिए तैयार रहो।"

अगले दिन रेवा और सरोजिनी कन्याकुमारी के लिए तैयार कर दी गईं।

8

रेवा अभी बम्बई से बाहर ही थी कि उसके सरकारी कार्यालय से उसको पहले पत्र का 'रिमाइण्डर' आया।

पत्र सेठ जी ने अपने कार्यालय में प्राप्त किया था। वह बन्द पत्र को ही लेकर सायंकाल चाय के समय ऊपर आए। मां और लड़का जब चाय के लिए बैठे तो पिता ने लड़की का सरकारी पत्र दिखाते हुए कहा, "मैं समझता हूं इसको रेवा के पास भेज देना चाहिए।"

"पढ़कर देखिए कि इसमें क्या लिखा है ?"

"मैं यह उचित नहीं समझता। उसका पत्र खोलना मैं उचित नही समझता और फिर राय भी बिन मांगे नही देनी चाहिए।"

"मैं इसमें कोई हानि नहीं समझती ?"

"नहीं रानी ! सम्भवत: उसको पूछा गया हो कि वह कब तक काम पर आएगी ? मैं इसमें अपना झांकना और उसे राय देना गलत समझता हूं। हां, यदि वह पूछे तो अवश्य राय दूंगा।"

सत्यवती समझती तो यही थी, परन्तु मां की उत्सुकता पर नियंत्रण नहीं कर पा रही थी। पति के सम्मुख बैठी हुई बोली, "तो, इसे एक बड़े लिफाफे में डाल साथ एक पत्र लिखकर भेज दीजिए।"

"वह पत्र तुम लिख दो। उसमें पूछ सकती हो कि इस सरकारी पत्र को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत करे।"

"हां, यह ठीक है।"

सत्यवती ने एक पत्र रेवा को लिख दिया और वह भी सेठ जी को दे दिया।

पत्र गया, परन्तु इसका उत्तर वहां से केवल यह आया, "हम दोनों यहां बहुत मजे मे हैं और आप द्वारा दी गई दो महीने की छुट्टी को पूरा भोगकर ही लौटने का हमारा विचार है।"

रेवा के पत्र पर सेठ जी का कहना था, "इससे मैं समझा हूं कि वह अब सरकारी सेवा मे नहीं जा रही।"

"मुझे भी कुछ ऐसा ही समझ आया है। परन्तु अब उसके लिए कुछ काम-धन्धा ढूढना पड़ेगा। वैसे मैं एक औरत के लिए सर्वश्रेष्ठ कार्य तो घर गृहस्थी का पालन ही समझती हूं।"

"हां! मैं भी यही समझा हूं। परन्तु यदि सर्वश्रेष्ठ कार्य उपलब्ध न हो तो दूसरे दर्जे का कार्य ही ढूंढ लेना चाहिए।"

"दूसरे दर्जे का कार्य एक औरत के लिए है बच्चों का पालन करना। इसे भी वह अस्वीकार कर चुकी है।"

सेठ जी ने कुछ विचार कर कहा, "कदाचित् यह काम उसको अब पसन्द आ जाए।"

"अब क्या बात हुई है?"

"सरोजिनी की दिन-रात की संगत का प्रभाव होना चाहिए। वह स्वयं पहले नर्सिग होम मे और अब स्वास्थ्य लाभ के काल मे उसकी सेवा करती रही है।"

"हां, उसकी इस अभिरुचि को देखकर ही मैं उसे सदा के लिए अपने परिवार का अंग बनने का निमन्त्रण दे बैठी थी। मुझे उसका व्यवहार बहुत पसन्द आया है।

"सर्वश्रेष्ठ कार्य पति की सेवा वह अब कर नही सकती, पति का देहान्त हो जाने के कारण। मैं समझी हूं कि एक स्त्री के दूसरे दर्जे के कार्य वह करने लगी है।"

"परन्तु तुम्हारी लड़की ने इसका अभिप्राय कुछ दूसरा ही समझा था।"

"हां! उसने मेरे सामने ही बताया था कि वह मेरी सौतन बन सकती है। वह आपसे भी व्यंग के रूप मे यही कहने वाली थी कि मैंने बात बदल दी थी।"

"और तुम ऐसी सम्भावना समझती हो क्या?"

"यह तो विचार आया था कि सरोजिनी आपसे सम्बन्ध बनाने का यत्न करे। परन्तु मुझे आप पर सन्देह नहीं। पिछले पच्चीस वर्ष का आपके बारे में मेरा अनुभव आपसे ऐसी आशा नही करता।"

"परन्तु मिठाई सामने पड़ी देख मन ललचा भी सकता है?"

"आशा तो नहीं, परन्तु यदि आप ऐसा इस आयु में करेंगे तो मुझे विधवा का

सा जीवन व्यतीत करने की तैयारी करनी पड़ेगी। मैं समझती हूं कि आप अपना शेष जीवन इस जलती कामाग्नि में हवन कर देंगे।"

"मैं समझता हूं कि मैं इतना मूर्ख नहीं हूं।"

"तब तो मैं अपना निमन्त्रण पुनः तरोताजा कर सकती हूं?"

"मैं कुछ और विचार करने लगा हूं।"

"क्या?"

"यही जो तुमने एक औरत का दूसरे दर्जे का काम बताया है, उसका प्रबन्ध रेवा के लिए कर दूं।"

"कैसे करेंगे?"

"मैं एक नर्सिंग होम यहां मैरीन ड्राइव अथवा जहां कहीं अच्छा-सा स्थान मिले खोल दूं। रेवा को उसका अध्यक्ष बना दूं और उसके अधीन दो डाक्टर और कुछ नर्सें नौकर रख दूं।"

"योजना ठीक है। यदि करने वाले को इसके करने की अक्ल हो तो?"

"तो एक एम० ए० पास और एक बच्चे की मां को इतना बुद्धिमान नहीं समझतीं?"

"मैं उसे सर्वथा अनपढ़ मानती हूं।"

"और तुम क्या पढ़ी हो?"

"मैंने अपने जीवन में भगवद्गीता इक्कीसवी बार पढ़ी है और उसपर निरन्तर चिन्तन कर रही हूं। मैं इसकी पढ़ाई को एम० ए० की पढाई से अधिक समझती हूं।"

सेठ मुस्कराया और अपने मन में इस नर्सिंग होम के विचार को परिपक्व करने लगा।

इसके उपरान्त सेठ महेश्वर प्रसाद और सत्यवती में पुनः बात नहीं हुई। इस विषय पर विचार तब हुआ जब रेवा और सरोजिनी बम्बई से लौटी। सरोजिनी का लड़का वीरभद्र पुणे चला गया था। उसकी छुट्टियां समाप्त हो रही थीं।

रेवा जब लिफ्ट से ऊपर घर के फ्लैट पर चढ़ने लगी तो सिद्धेश्वर ने देख पिता जी को बता दिया, "पिता जी! दीदी आ गई है।"

"ठीक है। तुम ऊपर चले जाओ और उसके स्वास्थ्य का समाचार पूछो और मैं पीछे जाऊंगा।"

रेवा और सरोजिनी ऊपर पहुंची तो मां ने दोनों को गले से लगा प्यार किया और फिर अपने समीप बिठा, पूछने लगी, "सरोजिनी! यह प्रवास कैसा रहा?"

"माता जी! बहुत बढ़िया। मैं समझती हूं रेवा बहन को भी बहुत रुचिकर लगा है।"

इस समय सिद्धेश्वर आ गया और दीदी को हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछने लगा, "दीदी ! अब तो तुम पुनः हट्टी-कट्टी प्रतीत होने लगी हो।"

इस पर तीनों स्त्रियां हंसने लगीं। सिद्धेश्वर ने कहा, "पिता जी को मैं कह रहा हूं कि अब रेवा दीदी को मेरे स्थान पर काम पर लगा लें और मैं भी दो महीने की छुट्टी पर जाऊंगा।"

"कहां जाओगे ?"

"पहले छुट्टी मिले तब छुट्टी मनाने का स्थान ढूंढूंगा।"

"पर मैं एक व्यापारिक संस्था में काम नहीं करूंगी।"

"तब तो मुझे छुट्टी नहीं मिल सकेगी ?"

"क्यों ? जब तुम पढ़ते थे तो पिता जी के कारोबार में कौन सहायता करता था ?"

"यह ठीक है, परन्तु दीदी ! एक वर्ष में पिता जी ने काम बढ़ा दिया है और अब मेरी सहायता को वह छोड़ नहीं सकते।"

"नहीं भैया ! मैं व्यापार नहीं करूंगी। औरतें व्यापार नहीं करतीं।"

सरोजिनी हंस पड़ी। हंसते हुए कहने लगी, "देखो भैया ! औरतें दान-दक्षिणा करती हैं। व्यापार में तो जो कुछ दिया जाता है, उस पर लाभ भी लिया जाता है।"

उत्तर सत्यवती ने दिया, "परन्तु इस घर में तो व्यापारी पुरुष बिना प्रतिकार के भी देते हैं। रेवा ! तुम बताओ, तुम अपने पिता और भाई को क्या प्रतिकार देती हो, उसका जो वे तुम्हारे लिए कर रहे हैं।"

"पर मां ! मैंने उनसे कुछ मांगा तो है नहीं ?"

"यही तो कह रही हूं, मांगने पर दिया जाता तो देने की कुछ महिमा न रहती। और मांगने वाली को मिलने पर तुष्टि ही प्रतिकार हो जाता है। यहां तो बिना मांगे मिला है।"

"क्या मिला है ?"

"घर पर रहने और रक्षा का स्थान, खाने-पीने का खर्च, पढ़ाई और पुस्तकों का खर्च, तदनन्तर निवास और सुरक्षा, प्रसव और सैर-सपाटे। यह सब तो तुमको बिना मांगे और तुम से बिना किसी प्रकार का प्रतिकार के मिल रहा है। मांगने पर दिया जाता तो तुमको सन्तुष्ट करने के लिए होता।"

अब सरोजिनी ने कह दिया, "तो माता जी ! किसलिए दिया जा रहा है ?"

इस समय पाचक गौरीशंकर आया और पूछने लगा, "माता जी ! चाय लाऊं अथवा शर्बत।"

सत्यवती सरोजिनी का मुख देखने लगी। सरोजिनी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "अब आप इतना कुछ बिना मांगे दे रही हैं तो यह भी जो इच्छा हो, दे

दीजिए।"

इस पर सिद्धेश्वर समेत सब हंसने लगे। बात सिद्धेश्वर ने कह दी, "पाण्डे ! कॉफी लाओ।"

इस पर सब हंसने लगे। रेवा ने कहा, "यह कहना भी तो मांगना है ?"

"नहीं," सत्यवती ने कहा, "सिद्धेश्वर अब उपार्जन करने वालों में है। इस कारण यह मांग नहीं रहा। यह दे रहा है।"

"बताओ सिद्धेश्वर ! यह तुम किसलिए दे रहे हो ?" सरोजिनी ने पूछ लिया।

"दीदी ! मेरा चित्त करता है कि जो वस्तु मुझे प्रिय हो, उसे मैं दूसरों को भी दूं।"

"पर क्यों ?"

"जैसा मुझे स्वाद आता है, वैसा ही दूसरों को देकर चित्त प्रसन्न होता है। दीदी ! उपार्जन कर तिजोरी में रखने में आनन्द नहीं आता। उसे दूसरे को देने में आनन्द आता है।"

"यह तुमको मास्टर ने सिखाया है ?"

"नहीं ! पिता जी ने एक दिन बताया था। तब से मैंने इसको व्यवहार में लाकर अनुभव भी किया है।"

रेवा को यह सब वार्तालाप विचित्र लग रहा था। उसने ऐसा कभी विचार भी नहीं किया था। सिद्धेश्वर ने दो बातें कही थीं। एक यह कि उपार्जन किया हुआ देने के लिए होता है। अन्यथा, उपार्जन का कुछ अर्थ ही नहीं।

आज तक रेवा यह समझी थी कि उपार्जन अपने भोग के लिए किया जाता है। अतः विचाराधीन यह था कि अपना यौवन उसका अपना अर्जित है और वह उसके अपने भोग के लिए है। यदि अर्जित देने के लिए है तो फिर वह किसको दे ? यही प्रश्न उसके मस्तिष्क में उस समय से आ रहा था जब से वह सज्ञान हो यौवन की मांग को समझने लगी थी। इसे अपने लिए समझ, वह इसे वहां प्रयोग करती थी, जहां चाहती थी।

"कारण मैं नहीं जानती। परन्तु रेवा बहन, वह जब प्रसन्न होता हो तो मेरे मन में भी प्रसन्नता प्रस्फुटित होती है।"

कॉफी समाप्त की तो सिद्धेश्वर नीचे कार्यालय में चला गया। सरोजिनी ने कहा, "माता जी ! अब रेवा बहन सब प्रकार से स्वस्थ है। इस कारण मैं समझती हूं कि मुझे अपने घर जाना चाहिए।"

इस पर रेवा ने मां को कहा, "मां ! तुम तो कहती थी कि सरोजिनी बहन यहां ही रहना आरम्भ कर दें।"

"हां ! मेरा वह प्रस्ताव तो अभी तक है। वह मैं दुहराने ही वाली थी। परन्तु

यह विचार कर रही थी कि इसकी डाक इसके घर पर एकत्रित हो रही होगी। मैं उसीके लिए इसे जाने देना चाहती हूं। क्यों सरोजिनी बेटी ! क्या विचार है ?"

"बात यह है कि आपका निमन्त्रण तो स्वीकार तब ही कर लिया था। परन्तु मैंने रहना रेवा के साथ है। इस कारण इसके निमन्त्रण के बिना नहीं रह सकती।"

"पर अब मैं ही तो कह रही हूं। मुझे पिछले अढाई महीने से इसके साथ रहते-रहते सुख अनुभव होने लगा है। इसीलिए माता जी को इनके निमन्त्रण की याद दिलाई है।"

"अब बताइए माता जी ?" सरोजिनी का प्रश्न था।

"मैं समझती हूं कि तुम अपना मकान खाली कर यहां चली आओ, जिससे पुनः वहां जाने की बात ही न रहे।"

"परन्तु माता जी !" सरोजिनी ने गम्भीर हो कहा, "बाद में रेवा के पिता जी तथा भैया ने मेरे यहां रहने पर आपत्ति की, तब क्या होगा ? एक बार मकान छोड़ा तो फिर दुबारा वैसा मकान मिलना सम्भव नहीं।"

"सरोजिनी ! मैंने रेवा के पिता और भाई से इस विषय में पूछा हुआ है। इस पर भी मेरी राय यह है कि मकान खाली कर आओ। परन्तु उसकी ताली अपने पास रखो। यहां दो-चार महीने रहकर और यहां के रहने वालों के व्यवहार को देखकर चाबी मालिक को लौटाना।"

"और वहा का सामान कहां रखूं ?"

"कबाड़िये की दुकान पर। यदि ईश्वर के कोप के कारण कभी यहां से जाना पड़ा तो जो कुछ इन दिनों बचत कर रही हो और आगे बचत करोगी, उससे अच्छा फर्नीचर बनवा सकोगी। फोकट में फर्नीचर अच्छा और समयानुसार बन जाएगा।"

सरोजिनी को समझ आ गई कि वह एक व्यापारी की पत्नी से बात कर रही है। इस कारण वह मान गई। एक बात वह जान गई थी कि ये लोग कुछ भावुक भी है। इस कारण उसने जाते हुए कहा, "मैं अपना सूटकेस यहीं छोडकर जा रही हूं। घर की सुध ले, रात यही रहने आऊंगी। यदि तब तक आपने यही निश्चय किया जो अब कह रही है तो फिर यहां ही रह जाऊंगी।"

सरोजिनी अभी जाने के लिए उठी ही थी कि सेठ जी आ गए।

"क्यों ? किधर जा रही हो ?" सेठ जी ने सरोजिनी को उठते देख पूछ लिया।

'तनिक अपने घर अपनी डाक इत्यादि की सुध लेने जा रही हूं।"

"और अभी लौट आओगी न ?"

"माता जी चाहती हैं कि अभी लौट आऊं।"

"हां ! और मैं भी यही चाहता हूं। रात तुम आओगी तो रेवा के भविष्य के विषय में भी विचार करना है और इसके भविष्य में मुझे तुम भी खड़ी दिखाई देती हो।"

"तब तो अवश्य ही आना चाहिए।"

वह फ्लैट से नीचे उतर गई।

उसके चले जाने पर सेठ जी ने रेवा से पूछा, "तुम इस प्रबन्ध से कैसा अनुभव करती हो?"

"पिता जी ! मेरे भविष्य में आपको वह कहां खड़ी दिखाई दे रही है, आपने नहीं बताया। इस कारण उसके विषय में कैसे कुछ बता सकती हूं?"

सत्यवती ने सेवक को पति के लिए भी एक प्याला कॉफी लाने को कह दिया। सेठ जी ने बैठते हुए कहा, "यह सिद्धेश्वर तो पिछले जन्म का कोई बड़ा व्यापारी प्रतीत होता है। एक वर्ष भी नहीं हुआ, उसे मेरे साथ काम करते हुए और वह इसमें ऐसे विचरने लगा है जैसे बतख जल में तैरने लगती है।

"मैंने भी उसकी प्रवृत्ति देख काम को विस्तार दिया है और ऐसे समझ आ रहा है कि इस वर्ष आय में सब देय देकर तीस से चालीस प्रतिशत वृद्धि होगी।"

"हां !" रेवा ने कह दिया, "सिद्धेश्वर भी कुछ ऐसा ही कह रहा था।"

"सिद्धेश्वर की बातों से प्रोत्साहित होकर मेरे मन ने एक कल्पना की है और उसीमें मैं रेवा और सरोजिनी को साथ-साथ खड़ी देखता हूं।"

"पिता जी ! मैं समझी नहीं।" रेवा का प्रश्न था।

"देखो रेवा ! खाली इन्सान शैतान का घर हो जाता है और आजकल सरकारी कर्मचारी दिन के बहुत ही कम अंश भर काम करते हैं।

"सरकार ने एक-एक क्लर्क के काम के लिए तीन-तीन, चार-चार क्लर्क रखे हुए हैं। इस कारण मैं अनुभव करता हूं कि प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का मन शैतान का कारखाना बना हुआ है। भारत की वर्तमान बीमारी का भारी कारण यही है।

"अब जब रेवा सरकारी सेवा नहीं करती तो शैतान के पंजे से यह छूट गई है। इस पर भी कुछ काम तो करना ही चाहिए। मैंने इसके योग्य कुछ विचार किया है।"

"क्या ?" रेवा ने पूछ लिया।

सत्यवती तो पति के विचारों को जानती थी। इस कारण मुस्कराती हुई चुप रही।

सेठ जी ने कहा, "मैंने मातुंगा में एक विशाल भवन बनवाने का विचार किया है। उसमें मैं एक नर्सिंग होम खोलना चाहता हूं। उसमें केवल प्रसूता स्त्रियों के प्रसव का ही प्रबन्ध हो, ऐसा मेरा विचार है। उसका शुल्क बहुत कम

हो जिससे अति निर्धन भी उसका लाभ उठा सकें। रेवा उस संस्थान की अध्यक्षा हो। सरोजिनी वहां की प्रबन्धक हो। डाक्टर और नर्सें वहां इनके अधीन हों।

"मैं कल्पना कर रहा हूं कि उस नर्सिंग होम में आरम्भ में एक सौ बिस्तर का प्रबन्ध करूं और फिर आवश्यकता पड़े तो वहां और भी वृद्धि हो सके।"

इतना बताकर सेठ जी रेवा का मुख देखने लगे।

रेवा मन मे इस योजना की प्रतिक्रिया पर विचार कर रही थी। अपने विषय में कुछ भी कहने से पहले उसने पूछ लिया, "आप यह काम क्यों करेंगे?"

"अपने उपार्जित धन की सद्गति करने के लिए।"

"अन्य कोई उपाय नहीं रहा?"

"उपाय तो और भी हैं। परन्तु डाक्टर रमजान के नर्सिंग होम को देख विचार आया है कि इस प्रकार की योजना से निर्धन वर्ग को बहुत लाभ पहुंचेगा।"

"परन्तु उनको लाभ पहुंचाना आवश्यक है क्या?"

"यह तो उनको विचार करना चाहिए जो वहां प्रसव के लिए आएंगी। यदि वहां किसी को लाभ प्रतीत नहीं हुआ तो मेरे 'बैड' खाली रह जाएंगे और फिर मैं उनकी संख्या कम कर दूंगा अथवा इस संस्थान को ही बन्द कर दूंगा।"

"मैं समझती हू कि आप एक महान् पाप कर्म मे सहायक होंगे?"

"किस पाप कर्म में?"

"जनसंख्या की वृद्धि में।"

"मैं इसमें कैसे उत्तरदायी हूंगा? मैं तो अपने घर में और अधिक सन्तान उत्पन्न नहीं कर रहा। जो पैदा करते हैं, उनमें मेरा सहयोग भी नहीं है। मैं तो जो मा के पेट मे पल रहा होगा, उनकी सेवा का काम करूंगा। बनाना पाप अथवा पुण्य हो सकता है। बने हुओं की रक्षा करना अथवा उनकी सेवा करना तो पुण्य के अतिरिक्त हो ही नहीं सकता?

"देखो रेवा! तुमने अपने पेट में बच्चा बनाया और फिर उसकी हत्या करा दी। इसका पाप-पुण्य, जो कुछ भी समझो, तुम्हारा है। परन्तु सरोजिनी की सेवा और मेरा धन व्यय करना तो पुण्य ही है। इसका तुम्हारे अथवा किसी के भी निर्माण अथवा हत्या से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"पर आप 'सरप्लस' पैदा होने वालों को मरने क्यों नहीं देते?"

"यह मेरे मन की बात है। किसी के बच जाने से मेरी रोटी कम नहीं होती। इस कारण मुझे इसकी चिन्ता नहीं।"

"परन्तु हमारी सरकार को तो चिन्ता है!"

"मुझे तुम्हारी सरकार की मैनेजरी नहीं करनी। उन्होंने अपनी योजनाएं बनाते हुए मुझसे कभी पूछा नहीं। कुछ मूर्ख घटनावश पैदा हो गए हैं, वे चाहते हैं कि और अधिक आने वालों को इस ससार में आने की स्वीकृति न दी जाए। यह

इन मूर्खों को और मुझे भी इस संसार में आने से पहले विचार करना चाहिए था अथवा इनके माता-पिता को विचार करना चाहिए था !"

"वे कैसे विचार करेंगे ?"

"पुरुषों को स्त्री की संगत की इच्छा न करने से और स्त्रियों को पुरुष की संगत की इच्छा न करने से। इसमें मैं अथवा नर्सिंग होम कहां आ गया ?"

रेवा ने मुस्कराते हुए कहा, "काम तो आपने अच्छा विचार किया है ?"

"तो तुम को पसन्द है ?"

"पर मैं आने वाली औरतों के सन्तान निरोध का प्रचार करने की छूट चाहूंगी।"

"हां ! वह तुम कर सकोगी; परन्तु मैं अपने नर्सिंग होम में केवल मैटर्निटी वार्ड ही चलाने का विचार रखता हूं। शेष मैं न तो सन्तान निर्माण करने का प्रबन्ध कर रहा हूं, न ही नसबन्दी का प्रबन्ध कर रहा हूं।"

"पर मैं इस बात का प्रचार तो कर सकूंगी ?"

"प्रचार तो कोई भी कर सकता है। बहुत लोग कर रहे हैं। हमारी अपनी सरकार भी यत्न कर रही है। तुम भी उनमें सम्मिलित हो सकोगी। परन्तु उस मैटर्निटी होम में गर्भ-निरोध के उपायों का प्रबन्ध नहीं होगा।"

"मुझे स्वीकार है।" रेवा ने कहा।

"बहुत खूब ! मैं समझता हूं रेवा इन दो महीनों में कुछ तो अक्ल सीख आई है।"

मां हंसने लगी। उसने कहा, "मैं इसकी सहेली से इस विषय में बात कर विचार करूंगी।"

"मां ! मैं उसे राज़ी कर लूंगी।"

"ठीक है। तुम ही बात कर लेना। यदि वह तुम्हारे कहने पर नहीं मानेगी तो फिर मुझे कहना, मैं भी यत्न कर दूंगी।"

9

अब सेठ वेग से अपने मन की योजना को रूप देने लगा। सरोजिनी के लिए सेठ महेश्वर प्रसाद के फ्लैट में एक कमरा खाली कर दिया गया। यह कमरा रेवा से पृथक था, परन्तु बगल में ही था। सरोजिनी का विचार था कि उसे रेवा के कमरे में ही ठहराया जाएगा, परन्तु जब उसे पृथक कमरा दिया गया तो सरोजिनी ने पूछा, "मुझे तुम्हारी मां ने तुम्हारे कमरे में ही रखने का प्रबन्ध क्यों नहीं किया ?"

"मैं समझती हूं कि तुम को पिता जी से व्यवहार रखने में सुविधा देने के लिए।" रेवा ने मुस्कराते हुए कहा।

"और मैं समझती हूं कि तुम्हारे कमरे में तुम्हारे होने वाले पति की गुंजाइश रखने के लिए।"

"मैं तो विवाह नहीं करूंगी !"

"और पूर्व की भांति 'मैन हंटिंग' चलेगी ?"

"हां, आवश्यकता अनुभव हुई तो।"

"और पहले की भांति गर्भ ठहर गया तो नौ महीने छुपकर और फिर एक बेकसूर की हत्या, यही न ?"

"तो तुम इसे पसन्द नहीं करती ?"

"देखो रेवा ! बच्चा तुम्हारे पैदा हुआ और उसकी हत्या तुमने की, परन्तु मेरे मन में यह बात उत्पन्न हुई है कि यह भारी भूल थी। या तो तुम्हें विवाह कर लेना चाहिए, अन्यथा पुरुष संगत नहीं करनी चाहिए। मैं भी गर्भ निरोधक उपाय प्रयोग करते-करते थक गई हूं। यदि कहीं मेरे गर्भ ठहर गया तो मैं उसकी हत्या नहीं करूंगी।"

"क्यों ?"

"मुझे वीरभद्र बहुत प्यारा लगता है। यदि मैं भी उसकी हत्या कर देती तो जो सुख तथा सन्तोष मुझे उसे देखकर होता है, वह न हो सकता।"

"पर ऐसी प्रथा क्यों न चलाई जाए कि माताओं के पुत्र-पुत्रियां हों और पिता अदृश्य हों।"

"तब तो पुरुषों के लिए बहुत मजेदार जीवन हो जाएगा। यह ऐसे ही हो जाएगा जैसे किसी दयालु राजा ने फलोद्यान लगा दिए हों और पकने पर जो चाहे, उखाड कर खा ले। तब तो मुझे स्त्री होने पर क्रोध आने लगेगा।"

इस विचार पर रेवा मौन हो गई। सरोजिनी ने रेवा की मां से भी कहा, "मुझे रेवा के साथ ही कमरे में क्यों नहीं ठहरा दिया गया ?"

सत्यवती का कहना था, "देखो बेटी ! मैं चाहती हूं कि तुम इस घर में रहती हुई सब प्रकार से स्वतन्त्र और सुखी रहो। उतनी स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचारिता तो नहीं हो सकती, जितनी तुम्हे अपने फ्लैट पर थी। वहां तुम अपने पुरुष मित्रों को बुला उनसे मनोरंजन कर सकती थी, परन्तु यह यहां नहीं हो सकेगा। इसके अतिरिक्त और सब प्रकार की सुख-सुविधा तुम्हे प्राप्त होगी।"

"मैं अब उस जीवन को नापसन्द करने लगी हूं।"

"यह तुम्हारे विचार करने की बात है। तुम सज्ञान हो और अपने भले-बुरे के विषय मे स्वतः विचार कर सकती हो।"

रेवा ने मंत्रालय को लिख दिया कि वह अब सरकारी सेवा मे रुचि नहीं रखती। इस कारण अपनी सेवा से पृथक करने के लिए आधा वेतन, जो उसका बनता था, नहीं लिया। यह समाचार देशपाण्डे क्लब में लाया।

वह नियम से प्राय: सायं छ: बजे क्लब में पहुंच जाया करता था और आज जब वह क्लब पहुंचा तो सबसे पहले वृन्दावन माधव उसे मिला। देशपाण्डे ने माधव को बता दिया, "आज रेवा का समाचार कार्यालय में आया है।"

"तो वह सागर तट से लौट आई है ?"

"अवश्य आ गई होगी। पत्र मे उसने लिखा है कि वह अब सरकारी नौकरी पर नहीं आएगी।"

"क्यों ?"

"उसने लिखा है कि उसे अब नौकरी में रुचि नहीं रही। सेक्रेटरी ने मुझे उसका पत्र दिखा कर आज्ञा दी कि उसके स्थान पर अस्थायी रूप में काम करने वाले क्लर्क को स्थायी कर दिया जाए।"

माधव ने कहा, "मैं समझ रहा हूं, उसकी कहीं सगाई हो गई है।"

"परन्तु वही तो इस क्लब की जन्मदाता है !"

देशपाण्डे ने कहा, "मुझे स्मरण है कि एक दिन वह स्वयं ही मुझसे पूछने लगी, 'मिस्टर देशपाण्डे ! पत्नी क्या करती है ?'

"मैंने पूछा, 'रेवा जी ! किसलिए पूछ रही है ?'

"वह मुस्कराई और चाय का घूंट भरकर बोली, 'मैं जानना चाहती हूं कि कितने बच्चे बना चुकी है वह ?'

"मुझे मजाक सूझा। मुझे ज्ञात था कि वह अभी मिस रेवा है। वह स्वयं भी अभी मिसेज नही बनी। इस कारण मैंने कह दिया, 'वह उतने ही बच्चों की मां है जितनों की आप हैं। वह अभी मां के घर में ही मां-बाप की रोटियां तोड़ रही है।'

"परन्तु वह कहने लगी, 'अर्थात् अभी आप अविववाहित हैं ?'

"मैंने अब कुछ गम्भीर हो कहा, 'हां, समाज की दृष्टि में अभी अविवाहित ही हूं और कदाचित् मैं अविवाहित ही रहूंगा। विवाह एक बन्धन है।'

"इस पर कहने लगी, 'मैं भी ऐसा ही समझती हूं।'

"इसके उपरान्त हम में कई बार इस विषय पर बात हुई। यह 'फ्री-लांसर्ज क्लब' बनाने का प्रस्ताव उसका ही था।"

"मुझे स्मरण है," माधव का कहना था, "मैं एक दिन रेवा जी को अपने घर पर ले गया था और वह मेरी स्त्री से परिचित हो गई और उसने एक घंटे के लिए मुझे उससे उधार मांग लिया।

"मेरी पत्नी रेवा की बात को हंसी-हंसी ही समझती रही। परन्तु जब एक घंटा भर हम एकान्तवास कर चुके तो वह आई और जिसे वह हंसी समझती थी, वह सम्पन्न हुआ देख चकित रह गई।

"पीछे मेरी पत्नी ने पूछा, 'क्या दिया है आपने इसको ?'

"मैंने बताया, 'यह लखपति की लड़की है और दस-बारह सौ रुपया महीना वेतन पाती है। यह मोल पर बिकने वाली नहीं।'

"इस पर पत्नी ने पूछा, 'तो इसने आपको मोल पर लिया था? क्या भाड़ा दिया है उसने आपको?'

"मैंने पत्नी को क्लब का परिचय दिया तो वह बोली, 'आपकी क्लब में हत्याएं होंगी, बलात्कार होंगे और मुक्का-मुक्की होगी।'

"अभी तक उसकी दो बातें तो सिद्ध हो चुकी हैं। हमारे क्लब में दो हत्याएं हो चुकी हैं। एक तो रावर्ट ने अपनी पत्नी की हत्या की है और दूसरा एक मेहता था। वह और जोशी रेवा के लिए परस्पर लड़ पड़े थे। मेहता मारा गया था और जोशी देश छोड़ भाग गया है।

"अभी बलात्कार तथा मुक्का-मुक्की की घटना नहीं हुई।"

"मैं समझता हूं कि रेवा बच्चे को जन्म दे स्वस्थ हो विवाह कर रही है।"

"पता करना चाहिए।"

"कैसे पता करेंगे?"

"मैं समझता हूं कि सरोजिनी को उसके घर भेजकर पता करना चाहिए कि वह क्या करने वाली है?"

इस पर माधव ने यह सूचना दे दी कि वह भी रेवा के साथ कन्याकुमारी गई हुई थी।

"तो आप उसकी टोह लेते रहे हैं?"

"हां! एक दिन सरोजिनी जी के घर पर गया था। उनकी डाक का डिब्बा चिट्ठियों से भरा हुआ था और घर को ताला लगा था।

"मैंने नीचे के फ्लैट वाले से पता किया तो उसने बताया कि वह अपनी एक सहेली के साथ कन्याकुमारी गई हुई है। बस, मैं समझ गया। इस पर मैं एक दिन रेवा के पिता से मिलने गया था। मैंने यह प्रकट करते हुए कि मैं कार्यालय में उसका परिचित हूं, पूछा कि वह आजकल कार्यालय में क्यों नहीं आती?

"इस पर वह हंस पड़े और बोले, 'माधव जी! आप कब से सरकारी दफ्तर में सेवा कार्य करने लगे हैं। क्या तस्करी का काम ढीला पड़ रहा है?'

"सेठ जी की जानकारी पर मैं भी हंस पड़ा और बोला, 'मैं रेवा जी का एक ईमानदार मित्र हूं। इसी कारण उनके विषय में पूछने आया हूं।'

"इस पर सेठ जी ने मुस्कराते हुए पूछा, 'ईमानदार के क्या मतलब हैं?'

"मेरा मतलब यह है कि मैं क्लब में उनका मित्र हूं।"

"इस पर सेठ जी ने बताया, 'मैं क्लब के विषय में सब कुछ जानता हूं। इस पर भी मैं मना नहीं करता। यह इस कारण कि रेवा अब बाईस वर्ष से ऊपर हो चुकी है। यह एम० ए० पास कर दोनों प्रकार से स्वतन्त्र हो चुकी है। शिक्षा के

विचार से भी और आयु तथा कानून के विचार से भी। इस कारण मैं सब कुछ जानता हुआ भी उसको कहीं, कभी भी जाने से मना नहीं कर रहा।

'इन दिनों वह स्वास्थ्य लाभ करने के लिए कन्याकुमारी गई हुई है। इस महीने के अन्त तक आने वाली है।'

माधव का कहना था, "सरोजिनी के फ्लैट पर चलना चाहिए। वहां से सब सूचना लेकर ही आगे का कार्यक्रम बनाएंगे।"

दोनों क्लब से टैक्सी करके सरोजिनी के फ्लैट पर जा पहुंचे। वह वहां नहीं थी। फ्लैट को ताला लगा था। अब पहले से भिन्न डाक का डिब्बा भी खाली था। माधव ने इस बार भी पड़ोसियों से पता किया तो पता चला कि वह सेठ महेश्वर प्रसाद जी के मकान पर रहती है। इस पर भी फ्लैट उसने अभी छोड़ा नहीं है।

तब माधव और देशपाण्डे सेठ जी के मकान पर जा पहुंचे।

सायंकाल सात बज रहे थे। घर पर कोई नहीं था। नया चौकीदार था। उसने बताया कि सेठ जी अपने परिवार के साथ इस समय घूमने जाया करते हैं।

"और उनके घर में जो मिसेज़ वाडेकर आकर रहने लगी हैं?" देशपाण्डे ने पूछा।

"वह और सेठ जी की लड़की दोनों मातुंगा में जाया करती हैं। वहां से लौटी नहीं।"

"वहां क्या काम है?"

"यह मुझे पता नहीं। सेठ जी दिन के समय जाते है और उनकी लड़की तथा सरोजिनी देवी मध्याह्नोत्तर तीन बजे जाती हैं।"

"कब से जा रही हैं?"

"एक महीने के लगभग हो गया है।"

दोनों, माधव और देशपाण्डे, एक-दूसरे का मुख देखने लगे।

वहां से क्लब को लौट गए और उन्होंने क्लब के चेयरमैन से मिलकर कार्यकारिणी की बैठक बुलाने का प्रबन्ध कर लिया। रेवा और सरोजिनी दोनों उसकी सदस्या थीं। यद्यपि रेवा को क्लब में गए एक वर्ष के लगभग हो चुका था, इसपर भी उसने अभी तक कार्यकारिणी की सदस्यता से त्यागपत्र नहीं दिया था।

परिणाम यह हुआ कि अगले दिन ही कार्यकारिणी की बैठक की सूचना रेवा और सरोजिनी दोनों को सेठ जी की मार्फत मिली। सेठ जी मातुंगा में नर्सिंग होम के बन रहे भवन को देखने गए हुए थे। सिद्धेश्वर ने पिता के आने पर दोनों पत्र उनको दे दिए। लिफाफों के बाहर 'बॉम्बे सिटीज़न्स क्लब' का नाम छपा हुआ था।

सिद्धेश्वर ने पत्र देकर पिता के मुख पर देखा तो सेठ जी ने कह दिया, "यह मैं लंच के समय स्वयं उनको दे दूंगा।"

"मैं तो इनको फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंकने वाला था।"

"क्यों ?"

"पिता जी ! ये पत्र क्लब से आए हैं।"

"तो क्या हुआ ?"

"दीदी फिर क्लब में रुचि लेने लगेगी ?"

"तो ले ! मैं इसमें क्या कर सकता हूं ?"

"आप पत्रों को जला दीजिए।"

"तो क्लब वाले उससे सम्पर्क का कोई और साधन ढूंढ़ लेंगे ?

"देखो सिद्धेश्वर ! मैं तुम्हारी बहन का कोतवाल नहीं हूं। उसका पिता तो हूं, परन्तु एक वयस्क लड़की पर, पिता का कुछ भी अधिकार नहीं होता ?"

"तो यह ठीक हो रहा है क्या ?"

"ठीक गलत की बात मैं नहीं कह रहा था। एक वस्तुस्थिति की बात बता रहा हूं। वैसे मैंने उसे तब से आजादी दे रखी है जब से वह कालेज में भरती हुई थी। मैं उसे सम्मति अवश्य देता हूं, वह भी जब वह पूछती है और अब तो वह अपने अधिकार से स्वतन्त्र है।"

"तो मैं भी स्वतन्त्र हूं ?"

"एक विचार से हो। यद्यपि तुम अभी वयस्क नहीं हुए। तुम्हारी आयु अभी अट्ठारह वर्ष की हुई है। परन्तु मेरी दृष्टि मे तुम स्वतन्त्रता से विचर सकते हो।"

"तो मेरा भी विवाह कर दीजिए ?"

"देखो सिद्धेश्वर ! मेरे पिता का देहान्त हुआ तो मैं अविवाहित था। मैं बम्बई मे काम ढूंढ़ने चला आया था। जब कुछ आय होने लगी तो गांव में जाकर मैंने अपने पुरोहित जी को कहा कि मैं विवाह करूंगा। इस पर वह तुम्हारी मां के पिता को मेरे पास ले आया। उसने मुझे पसन्द किया तो फिर अपनी लड़की का मुझसे विवाह कर दिया। विवाह में प्रेरक मेरा व्यवसाय हुआ था।

"अब भी वैसा ही होगा। परन्तु मेरी राय मानो तो तुम अभी तीन वर्ष तक ठहरो। जब इक्कीस वर्ष से ऊपर हो जाओगे तो विवाह कर लेना। उस समय यदि मेरी सहायता मांगोगे तो मैं वैसे ही सहायता कर दूंगा जैसे हमारे पुरोहित ने मेरी सहायता की थी।

"रेवा ने जब एम० ए० उत्तीर्ण किया तो मैंने उससे पूछा था, 'अब विवाह करोगी ?'

"उसने कहा था कि मुझे इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वह अपना प्रबन्ध स्वयं कर लेगी। मैं चुप कर गया। मुझे उसके विषय मे तब ही पता चला जब वह गर्भवती हो चुकी थी।

"इस पर भी मैं समझता था कि वह सज्ञान है और मुझे बिना उसके सहायता

मांगे, हस्तक्षेप नही करना चाहिए। मैंने उसके व्यवहार में हस्तक्षेप नहीं किया।"

"और दीदी यह जानती है?"

"नही, उसको यही बताया है कि बच्चा मर चुका है।"

सिद्धेश्वर को पिता पांच सौ रुपये महीना भत्ते के रूप में देता था। इसके अतिरिक्त भोजन-वस्त्र इत्यादि का खर्च तो घर पर ही होता था। इस कारण वह अपना पूर्ण वेतन बैंक में जमा कर रहा था। उसके पास छः हज़ार के लगभग एकत्रित हो गया था।

एक दिन पिता ने उससे पूछा, "सिद्धेश्वर! कितने जमा कर लिए हैं?"

"पिता जी! छः हज़ार के लगभग हैं।"

"ठीक है। इसमें से पांच हज़ार रुपये व्यापार में लगा दो।"

"आपके व्यापार में?"

"नही! उसमें पत्तीदार तो तुम हो ही। मेरा अभिप्राय है पोर्ट ट्रस्ट के हिस्से खरीद लो।"

सिद्धेश्वर अभी तक शेयर का व्यापार जानता नहीं था। इस कारण अगले दिन ही उसने दलाल को कहा और पोर्ट ट्रस्ट के पचास हिस्से खरीद लिए।

जिस दिन क्लब के पत्र आए थे, मध्याह्न के समय खाना लेते हुए सेठ जी ने दोनों पत्र लड़कियों के सम्मुख रख दिए। सरोजिनी ने लिफाफे पर पता पढ़ा और फिर पत्र को मेज पर एक ओर रख दिया। परन्तु रेवा अपनी उत्सुकता नियंत्रण में नहीं कर सकी।

उसने पत्र खोलकर पढ़ा और फिर सरोजिनी के सामने रखते हुए कहा, "अपने क्लब की कार्यकारिणी की कल मीटिंग है।"

"तो तुम जाना चाहती हो?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"क्लब में मेरी रुचि नहीं रही।"

इस पर सेठ जी ने कहा, "यदि यह अरुचि कुछ सोच-विचार का परिणाम है तो क्लब वालों को लिख दो जिससे बेचारे व्यर्थ की भाग-दौड़ न कर सकें।"

"तो ये बेचारे हैं?"

"एक दिन एक माधव नाम का स्मगलर मुझसे तुम्हारे विषय में पूछने आया था। तब तुम कन्याकुमारी गई हुई थी। मैंने उसे बता दिया था।"

"वह हमारी कार्यकारिणी का मंत्री है।"

"तो उसे लिख दो और यदि लिखकर कुछ नही देना चाहती तो वहां जाकर त्याग-पत्र दे आओ।"

"मैं चाहती थी कि आपके नर्सिंग होम की योजना का अनुभव प्राप्त कर लूं,

तब उनको लिखूं।"

"परन्तु इसे तो चलने में दो वर्ष लगेंगे। अभी तो भवन की नीव भी नहीं भरी गई। भवन बन जाने पर फर्नीचर और फिर कर्मचारी ढूंढ़ने होंगे। तदनन्तर मैं विज्ञापन दूंगा और आशा करता हूं कि उसके उपरान्त काम पूरे वेग से चलने में दो वर्ष लगेंगे। इतनी देर तक इन बेचारों को अधर में लटकते नहीं छोड़ना चाहिए।"

"तो आपको इन पर दया आ रही है?"

"दया नहीं। मैं एक दिशा विशेष में जा रहा हूं। मैं जानता हूं कि उनकी दिशा, जिस ओर वे जा रहे हैं, घोर नरक की ओर है। इस पर भी मैं स्वयं, न तुम को बांधना चाहता हूं, न ही उनको।"

"पर यह क्यों?"

"यह इस कारण कि मैं मनुष्य को कर्म करने और कर्मफल भोगने में स्वतंत्र समझता हूं। उन कर्मों में बाधक होना सहज नहीं। न ही किसी दूसरे का।"

"परन्तु पिता जी!" रेवा ने कहा, "आपने मेरे विषय में तो अपना दिमाग खराब किया है!"

"नहीं। बिल्कुल नहीं। मैंने तुम्हारी गाड़ी को रुकते देखा तो उसको चालू रखने में तुम्हारी सहायता अवश्य की है। इस पर भी तुम जानती हो कि तुम्हारी स्वीकृति से ही हस्तक्षेप किया है।"

बात सरोजिनी ने कही, "मैं समझती हूं कि पिता जी का कहना ठीक है। वे लोग अच्छे हैं अथवा बुरे हैं, उसका फल उनको मिलेगा और यदि कोई बाहरी व्यक्ति इसमें हस्तक्षेप करेगा तो वह भी उनके काम में जिम्मेदार हो जाएगा।"

"मैं समझी नहीं।" रेवा ने ग्रास मुख में डालते हुए कहा।

उत्तर सरोजिनी ने ही दिया, "उस दिन माता जी कह रही थीं कि अकर्म भी कर्म ही होता है। उन्होंने बताया था कि चोर को चोरी करने दी जाए तो ऐसा करने वाला पाप का भागीदार बन जाता है।"

"हां!" सेठ जी ने कहा, "पर कर्म को रोकना और कर्म से पृथक रहना भिन्न-भिन्न बातें हैं। अकर्म वहीं तक ठीक है जहां तक विकर्म में बाधक हो।

"अब देखो! मैं तुम्हारी क्लब का सदस्य नहीं हूं। क्लब विकर्म कर रही है। मैं उसमें सम्मिलित नहीं हो रहा। यह अकर्म है। परन्तु क्लब को भंग करने में सम्मिलित हो जाऊंगा। कारण यह कि विकर्म का विरोध न करना, विकर्म की सहायता करना है।"

खाने के उपरान्त ही रेवा ने और सरोजिनी ने क्लब से त्याग-पत्र लिखकर भेज दिया।

द्वितीय परिच्छेद

मनुष्य की बुद्धि की यह विलक्षणता ही है कि वह अपने विषय में चिन्तन करता हुआ कभी-कभी मिथ्या मार्ग पर चल पड़ता है। जब लोग उसका मान कर रहे होते हैं तो वस्तुत: वे ही मान में वृद्धि कर रहे होते हैं।

शिष्य गुरु के चरण स्पर्श करता है, गुरु समझता है कि शिष्य उसका मान कर रहा है। परन्तु वास्तव में, शिष्य अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहा होता है।

यह ठीक है कि स्वार्थ सिद्धि में वह धोखा खा जाता है। वह समझता है कि गुरु के चरण स्पर्श से गुरु प्रसन्न होंगे और उसे आशीर्वाद देंगे जिससे उसका कल्याण होगा।

कभी वह समझता है कि गुरु उसके व्यवहार से प्रसन्न होते हैं तो अन्य देखने वाले उसे गुरु जी का अनन्य सेवक समझ, उसको भी बड़ा व्यक्ति मानने लगे हैं। उसे गुरु का प्रियजन समझ वे उसकी प्रतिष्ठा करने लगे हैं।

कभी वह समझता है कि जब वह अन्य सेवकों की अपेक्षा गुरु महाराज की अधिक सेवा कर रहा है तब गुरु जी उसका मान अन्य सेवकों से अधिक करेंगे। इस प्रकार कई प्रकार से वह अपने को लाभ में समझ रहा होता है।

वास्तव में कौन लाभ में है और कौन हानि में, वह, इस सेवा-प्रशंसा से पृथक बात है।

न तो सेवक की सेवा से गुरु का कल्याण होता है, न ही सेवक को लाभ प्राप्त होता है। वास्तविक हानि-लाभ उस मन की अवस्था से होता है जो मनुष्य की उस समय होती है, जब वह कर्म कर रहा होता है।

गुरु के मन की अवस्था क्या होती है, जब सेवक उसकी जय-जयकार करते हैं ? मन की यह अवस्था ही उसके कल्याण अथवा अकल्याण में योगदान देती है।

यही अवस्था सेठ जी के गुरु की थी। एक सामान्य विश्वविद्यालय का प्राध्यापक जब अपनी मधुर वाणी, सुन्दर रूप-रेखा और विश्वविद्यालय में दूसरों की प्रशंसा से प्रभावित आचार्य सोमेश्वर समझ बैठा कि वह महान् व्यक्ति है।

प्रशंसा तो उन गुणों के कारण ही थी जो परमात्मा ने पूर्वजन्म के कर्म के फलस्वरूप दिए थे। आचार्य की मधुर वाणी, गम्भीर हाव-भाव, सुन्दर भव्य स्वरूप जन्म से ही उनको प्राप्त हुए थे। बुद्धि भी पूर्वजन्म के कर्मों से मिली थी। परन्तु इन गुणों के कारण जब उनकी प्रशंसा होने लगी तो आचार्यवर समझने लगे कि यह उनके श्रेष्ठ विचारों के कारण है। उनके विचार संसार में प्रचलित प्रथाओं

से विलक्षण बनते गए। वह यही समझते थे कि जो कुछ उनके मन में प्रस्फुटित होता है, वह उनका विचारित मत है।

उनकी वाणी की मिठास में उनके विचार भी लोगों को मधुर लगने लगे और जो उनको एक बार सुन लेता वह उन पर लट्टू हो जाता।

एक दिन गुरु जी कह बैठे कि मनुष्य प्रकृति के गुणों के अधीन कर्म करता है और प्रकृति अपने नियमानुसार कर्म करती है। अतएव प्रकृति की प्रेरणा से कार्य ठीक ही होता है।

उनका अभिप्राय था कि विवाह-प्रथा समाज-निर्मित है। यह स्वाभाविक अर्थात् प्राकृतिक आयोजन नहीं है। अतः यह व्यर्थ का बन्धन है। प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध होने से मनुष्य की प्रकृति पर बन्धन है।

उनका कहना था कि विवाह प्रथा कृत्रिम है, हानिकारक है। मनुष्य को प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध व्यवहार करने में लीन करती है।

गुरु जी ने तो अपनी धुन में यह कह दिया और इसका भयंकर परिणाम निकला। उनके इस कथन की ओट में उच्छृंखलता को आश्रय मिल गया।

जिन दिनों बम्बई में 'स्वतंत्र योद्धाओं' की क्लब उसकी स्थापना करने वाली के निकल जाने पर डावांडोल स्थिति में थी, उन्हीं दिनों प्राकृतिक नियमों का पालन करने वाले गुरु के एक सेवक की पत्नी गुरु-आश्रम में ही गुरु जी के पास आ पहुंची।

श्री गुरु सोमेश्वर अपने प्रात:काल के ध्यान-धारणा-समाधि से अवकाश पा दूध लेने लगे थे कि संतोष बाई उनके समाधि गृह के द्वार पर खड़ी हो पूछने लगी, "महाराज! भीतर आ सकती हूं।"

"हां, आ जाओ। क्या नाम है?"

"महाराज! माता-पिता ने नाम संतोष रखा हुआ है, परन्तु पतिदेव असंतोषी ही समझते हैं।"

"और तुम क्या समझती हो?"

"एक नारी और उसमें एक जीव जो न पुरुष है, न स्त्री। न सन्तुष्ट है, न असन्तुष्ट। वह अप्रसन्न भी नहीं। हां, कुछ कष्ट में है।"

"क्या कष्ट है?"

"भगवन्! आप अपना जूठा दूध एक चम्मच भर दे दें तो स्वयं को कृत्य-कृत्य हो गई समझूंगी।"

"इस मेरे जूठे दूध में क्या गुण है?"

"आपके अधर लगे होंगे और उनका रसास्वादन दूध के माध्यम से प्राप्त हो जाएगा।"

"बहुत भोली हो संतोष बाई! बातें करते हुए मेरे मुख के श्वास इस वायु

द्वारा तुम्हारे मुख में पहुंच रहे है। क्या उसका रसास्वादन नहीं हो रहा ?"

"हां, महाराज ! कुछ तो इस कमरे में आते ही रस मिलने लगा है, परन्तु दूध वायु से अधिक स्थूल और अनुभव योग्य है और उससे भी अधिक स्थूल और समीप आपके अधर है। इतनी धृष्टता मैं नहीं कर सकती कि अपने इन अधरों से आपके अधरों को दूषित करूं।"

गुरु जी ने अपने आसन के समीप रखी घंटी का बटन दबाया तो बाहर द्वार पर घंटी बजी। सेवक आया तो गुरु जी ने कहा, "माधो ! एक कटोरा लाओ।"

माधव गया तो गुरु जी ने कहा, "तुम्हारी इच्छा की पूर्ति कर रहा हूं।"

स्त्री ने आगे झुककर माथा भूमि पर लगा प्रणाम कर दिया।

माधो एक चांदी का प्याला ले आया। गुरु जी ने दो घूंट दूध कटोरे में डाल कर कहा, "देवी ! इसका पान करो और अपनी अभिलाषा की पूर्ति का अनुभव करो।"

स्त्री मुस्कराई और कटोरा हाथ में ले दूध पी गई। गुरु जी ने पूछ लिया, "प्रसन्न हो ?"

"हां, महाराज ! अब आपकी सेवा में उपस्थित होने का वर्णन करती हूं।

"आपके एक शिष्य सुन्दरम् मणि हैं। मैं उनकी पत्नी हूं। पिछले वर्ष ही विवाह कर आई थी और विवाहित सुख अभी एक पखवारा भर ही भोग किया था कि मेरे पति ने मेरा त्याग कर दिया।

"मैंने उनसे पूछा कि मैंने क्या अपराध किया है। वह कहते हैं कि अपराध हमारे माता-पिता तथा पुरोहित ने किया है। वह यह कि उन्होंने हम दोनों का विवाह कर दिया है। उनका कहना था कि विवाह दासता का सूचक है। इस कारण उन्होंने इस दासता से छूटने के लिए मेरा त्याग किया हुआ है।"

"महामूर्ख है वह।"

"महाराज ! आपके शिष्य हैं। मैं तो उनकी बात को समझ नहीं सकी। मैंने कहा था कि वह मुझे अविवाहिता कुमारी समझ लें। परन्तु वह कहते हैं कि ऐसा वह समझ नही सकते। वे मेरे पिता के घर पर बारात लेकर गए थे। उसको किस प्रकार भूल सकते है ?

"वह मुझे तलाक देना चाहते हैं, परन्तु वकील कहता है कि तलाक का कुछ कारण बताना पड़ेगा। यदि वह दुराचारी हो, तब ही विवाह टूट सकता है।"

इस पर गुरु जी ने पूछ लिया, "और वह सुन्दरम् दुराचारी नहीं है क्या ?"

"भगवन् ! मैं उनको दुराचारी नहीं कह सकती।"

"देखो देवी ! यह विवाह की प्रथा मानव जीवन को हानि ही पहुंचाती है।"

"मैं भी ऐसा ही अनुभव करती हूं। परन्तु भगवन् ! मैं वह कुछ नही कर सकती जो वह कर रहे है ?"

"क्या कर रहे हैं ?"

"वह तितलियों के पीछे भागते फिरते है। परन्तु मैं भंवरों के पीछे नही भाग सकती। भंवरे तो डंक भी मार सकते है। साथ ही मैं स्त्री होने से यह भाग-दौड़ नही कर सकती।"

"तो तुम हमारे आश्रम मे रह जाओ। तब तुम्हें किसी के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"तो महाराज ! मुझे अपने आश्रम में स्थान दे दीजिए। मैं पति का घर छोड़ यहां आ सकती हूं।"

इस पर गुरु जी ने पुनः घंटी का बटन दबाया। उनका निजी सेवक माधो आया तो गुरु जी ने कहा, "सुनन्द को बुलाओ।"

सुनन्द आश्रम का मुख्य प्रबन्धक था। वह आया तो गुरु जी कहने लगे, "इस स्त्री को एक कमरा दे दो। यह यहा रहेगी और साधना सीखेगी।"

सुनन्द सहाय ने सन्तोष बाई को कहा, "आओ देवी !"

सन्तोष बाई सुनन्द के साथ चल दी। उसके चले जाने के उपरांत गुरु जी विचार करने लगे कि उनके विचारों का प्रसार होने लगा है।

उस दिन प्रवचन के समय गुरु जी ने कहा—प्रकृति अति बलवान है। प्रकृति, इसके नियम भंग करने वालों को क्षमा नही करती। क्षमा का विचार मूर्खतापूर्ण है। क्षमा करना पाप है। प्रकृति किसी को क्षमा नहीं करती।

प्रकृति के नियमों को जानना और समझना ही धर्म है। उनका पालन ही सद्व्यवहार है। प्रकृति में विवाह की प्रथा का चलन नहीं है। यदि ऐसा होता तो 'ऐटम' परस्पर मिल जाते तो फिर पृथक न हो सकते।

जब 'क्लोरीन' और 'हाईड्रोजन' मिलकर 'हाईड्रोक्लोरिक ऐसिड' बनाते हैं तो फिर वह बनी ही रहती है। उसके अणु टूटते नही। परन्तु ज्योंही कोई प्रबल ऐटम समीप आता है तो क्लोरीन के ऐटम हाईड्रोजन को छोड़ पृथक हो जाते हैं। लोहे का ऐटम समीप आने पर क्लोरीन हाईड्रोजन को छोड, उसके साथ चली जाती है।

इस प्रकार आध घंटा भर धारा प्रवाह प्रवचन होता रहा। तदनन्तर गुरु जी उठ खड़े हुए।

उसी सायंकाल सुन्दरम् मणि आश्रम में आया और सुनन्द से पूछने लगा, "सुनन्द जी ! मेरी पत्नी आज प्रातःकाल आश्रम मे आई थी और फिर घर नहीं लौटी।"

"क्या नाम है उसका ?"

"सतोप बाई।"

"हां, इस नाम की एक स्त्री अपने आश्रम में अभी है और रूम नम्बर ग्यारह

में ठहरी हुई है।"

"क्यों ?"

"गुरु जी की आज्ञा है।"

"मैं उससे मिल सकता हूं क्या ?"

"हां ! यह आश्रम है, जेलखाना नहीं। कोई किसी समय भी किसी से मिल सकता है।"

सुन्दरम् उठा और सन्तोष बाई से मिलने चल पड़ा। ग्यारह नम्बर के कमरे का द्वार भीतर से बंद था। उसने थपकी दी तो द्वार खुला और सुन्दरम् को पत्नी खड़ी दिखाई दे गई। पत्नी ने पति को देख मुस्कराते हुए पूछा, "तो आप आ गए हैं ?"

"यहां क्या हो रहा है ?"

"मैं गुरु जी की शरण में आ गई हूं।"

"यह तो ठीक किया है, परन्तु उन्होंने तुम्हें स्वीकार कर लिया है ?"

"मैं यह जानना नहीं चाहती, न ही जान सकती हूं। वह एक महान् व्यक्ति हैं। उनके दस पग दूर बैठ श्वासों से ही इतना रसयुक्त अनुभव हुआ है कि जीवन आनन्दमय हो गया है।"

"तो तुम यहां सुखी हो ?"

"जी !"

"तुम घर से क्या कुछ उठा लाई हो ?"

"केवल दो रुपए लाई हूं। वह भी इस कारण कि यदि गुरु जी मेरे मन की व्यथा को न समझ सकें तो विष खरीदकर खा सकूं।"

"तो रखो। कभी आवश्यकता पड़ेगी तो मोल लेकर खा लेना।"

2

सुन्दरम् के मन की अवस्था अस्थिर हो रही थी। एक वर्ष से वह बेलगाम ही घूम रहा था। एक बात का उसे संतोष था कि जब भी वह अपनी खोज में सफल होता था तो उसे एक नवीन साथी मिलता था, परन्तु एक वर्ष की आवारागर्दी के उपरान्त वह समझा था कि इस नवीनता को पाने के लिए उसे परिश्रम, छल, कपट और व्यय बहुत करना पड़ा है और फिर उस दिन से पहली रात तो उसे घोर यंत्रणा को सहन करना पड़ा था।

वह स्थानीय स्टेशन का इंचार्ज था। पिछली सायं वह अपने कार्यालय के एक क्लर्क बसन्तकुमार की पत्नी के साथ रात व्यतीत करने का निश्चय कर उसके घर पहुंचा था। बसन्तकुमार की स्टेशन पर ड्यूटी सायं आठ बजे से प्रातः चार बजे

तक थी। इस कारण सुन्दरम् ने बसन्तकुमार के लॉज में संदेश भेजा था कि वह रात नौ बजे आएगा। बसन्तकुमार की पत्नी मानसी ने संदेश का उत्तर नहीं भेजा था। पहले भी जब उत्तर नहीं आता था तो वह समझ लेता था कि उसका प्रस्ताव स्वीकार है।

रात नौ बजे वह बसन्तकुमार के घर गया तो मानसी उसे पिछले कमरे में ले गई और वहां बैठाकर बोली, 'बाबू अभी गया नहीं। जाएगा तो मैं आऊंगी। अभी इसी कमरे में बैठो।"

सुन्दरम् को उस कमरे में बैठाकर मानसी ने कमरे का द्वार बंद कर बाहर से ताला लगा दिया। सुन्दरम् ने समझा कि यह उसकी रक्षा के लिए है, परन्तु वह अपने कमरे में बैठा तो बैठा ही रह गया। बहुत रात गए तक द्वार खुलने की प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु द्वार नहीं खुला। वह प्रतीक्षा करते-करते थक कर सो गया। अगले दिन, दिन चढ़ने पर द्वार खुला तो मानसी ने सहज भाव में कह दिया कि उसका पति आज अपनी ड्यूटी किसी अन्य से बदल रात भर घर पर ही रहा है। अभी-अभी स्नान करके गया है तो आपको निकाल सकी हूं।

इस पर सुन्दरम् अति लज्जित घर पहुंचा। उसकी पत्नी संतोषी घर पर नहीं थी। घर को ताला लगा था। उसने ताला तोड़ा और घर में गया तो उसके बैठने के कमरे में एक तिपाई पर एक कागज़ की स्लिप पर लिखा था, "मैं आपके गुरू जी के पास जा रही हूं।"

इससे निश्चिन्त हो सुन्दरम् ने स्नानादि किया। स्वयं चाय इत्यादि बनाई और पीकर वह अपनी ड्यूटी पर आठ बजे चला गया। इस दिन वह स्टेशन पर पहुंचा तो बसन्तकुमार को स्टेशन की खिड़की पर टिकट बेचते देख उसके पास आ गया और उससे पूछने लगा, "बसन्तकुमार। तुम्हारी ड्यूटी तो रात के समय थी।"

"जी। मैंने आज दूसरे बाबू से अदला-बदली कर ली है।"

सुन्दरम् ने यह पता इस कारण किया था कि वह उसकी पत्नी मानसी के कथन की परीक्षा करना चाहता था। इस उत्तर पर निश्चिन्त हो वह अपने काम पर जा बैठा। बारह बजे वह भोजन के लिए घर गया तो संतोष बाई अभी नहीं लौटी थी। इस कारण उस समय चावल और दाल बना पेट भर खाकर पुनः ड्यूटी पर चला गया। उसके मन में विचार आया था कि संतोष बाई का पता आश्रम में जाकर करना चाहिए, परन्तु उसे ड्यूटी पर भी जाना था। इस कारण वह पहले रेलवे स्टेशन पर गया। अपने असिस्टेंट को अपने स्थान पर काम करने के लिए कह स्वयं आश्रम को चल पड़ा।

जब सन्तोषबाई मिली और उसको यह कहते सुना कि वह वहां पर प्रसन्न है, क्रोध से उबलता हुआ उसके कमरे से निकल गया। अपने आप से असन्तुष्ट कमरे

के बाहर बरामदे में खड़ा वह विचार करने लगा कि अब क्या करे। इस समय बगल के कमरे में से एक दम्पति निकले और जब पत्नी द्वार को ताला लगाने लगी तो पति ने सुन्दरम् को बगल के कमरे के बाहर परेशानी में खड़े देख हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछ लिया, "आप इस कमरे में ठहरे है ?"

पहले तो सुन्दरम् इस कथन का अर्थ ही नहीं समझा। फिर समझा तो उसके मुख से निकल गया, "नही।"

इतने मे उसकी पत्नी भी कमरे को ताला लगा वहां आ गई। उसने सुन्दरम् की 'नही' सुनकर कह दिया, "मैं विस्मय कर रही हूं कि यह अकेली स्त्री किस कारण यहां ठहरी हुई है।"

"तो गुरु जी से पता कराएं ?" सुन्दरम् ने कह दिया।

इस पर पुरुष को सदेह हुआ कि यह कोई आवारा व्यक्ति इस युवती के पीछे-पीछे वहां आया है। उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा, "और तुम यहां किस कारण खड़े हो ?"

"यह भी गुरु जी महाराज से पता करो।"

यह दम्पति पजाब में अमृतसर के रहने वाले थे। एक दक्षिणी की उद्दण्डता को देख उसने कह दिया, "ठीक है। चलो, गुरुजी के सामने ही बताना कि यहां क्यों खड़े हो ?" पजाबी ने सुन्दरम् को गर्दन से पकड़ा और उसे धकेल कर मुख्य भवन की ओर ले चला।

मार्ग मे ही सुन्दरम् ने बताया, "भाई ! ठहरो ! मैं बताता हूं कि मैं वहां क्यों खड़ा था।"

वह पंजाबी हंस पड़ा और खड़ा होकर बोला, "हां, बताओ। क्या कहते हो ?"

"यद्यपि मैं यह आपका अधिकार नहीं समझता कि मुझसे पूछें, परन्तु "समरथ को न दोष गुसाईं" वाली बात देख बताता हूं।

"यह औरत मेरी पत्नी है और मुझसे रूठकर यहां आ गई है।"

"परन्तु वह औरत तो रूठी हुई प्रतीत नहीं होती। वह तो बहुत ही प्रसन्न दिखाई देती है ?"

"पर मैं सत्य कहता हूं। आप उससे ही पूछ सकते हैं।"

"मुझे विश्वास नही आ रहा। चलो, उससे अपनी बात का समर्थन करा दो।"

तीनों कमरों की ओर पुनः लौट आये। कमरे के बाहर झगड़ा होता देख संतोष बाई अपने कमरे से निकल अपने पति को गर्दन से पकड़े धकेल कर कार्यालय की ओर ले जाते देख रही थी।

एकाएक पजाबी दम्पति और अपने पति को लौटते देख वह खिलखिलाकर

हंस पडी।

सुन्दरम् और दम्पति इस हंसती हुई संतोष बाई के सामने आए तो संतोष ने ही पजाबी से पूछा, "भाई साहब। क्या अपराध किया है इन्होंने जो इनको गर्दन से पकड़े लिए जा रहे थे ?"

"मैंने इसे कोई बदमाश समझा था। यह बता नहीं रहा था कि यहां यह क्यों खड़ा है। जब मैंने इसे गर्दन से पकड़ा तो बोला कि वह आपका पति है। इसके कहने पर आप से पूछने चला आया हूं।"

"यह है तो मेरे पति ही। इस पर भी यह किसी अच्छी नीयत से यहां नहीं आए थे। यह मुझे गाली देकर कमरे से निकले थे कि आप से इनकी भेंट हो गई है।"

"तो तुम रूठ कर घर से आई हो ?" पजाबिन स्त्री ने पूछ लिया।

"नहीं, वरन् यह मुझसे एक वर्ष से रूठे हुए है। इस कारण मैं इनका घर छोड़ आई हूं। गुरु जी ने मुझे इस कमरे में रहने की स्वीकृति दी है।"

"तो यह बात है ?" पजाबी पुरुष ने कहा।

पति-पत्नी के झगड़े मे न पडने के लिए दोनों को वहां छोड़ पंजाबी दम्पति अपने काम पर चला तो सुन्दरम् भी उनके साथ चल पड़ा। इस पर पंजाबी स्त्री ने कहा, "यह ठीक ही प्रतीत होता है कि आप उससे रूठे हुए हैं।"

सुन्दरम् ने साथ चलते-चलते कहा, "जी नही। यह इस प्रकार नहीं है। मैंने पत्नी को विवाह बधन से मुक्त कर उसे स्वतन्त्रता दे दी है। गुरु जी का कहना है कि विवाह दासता का लक्षण है। इससे समाज में ह्रास हो रहा है।"

"ओह। तो आप इसे सत्य मानते है ?"

"गुरु जी ऐसा ही मानते है और मैं उनका शिष्य हूं।"

"परन्तु वे एक मनुष्य हैं और मनुष्य भूल भी कर सकता है।"

"नहीं भाई। वह परमात्मा के अवतार हैं। वैसे ही जैसे राम और कृष्ण थे। मैं समझता हूं उनसे भी बड़े।" सुन्दरम् ने गर्दन सीधा कर चलते हुए कहा।

"सुनो भई। कितने भी बड़े अवतार हों, वह हैं तो मनुष्य ही। मैंने कल उनसे पूछा था कि वह कहां के रहने वाले हैं।

"उन्होंने अपने गांव का नाम बताया, अपनी शिक्षा का परिचय दिया और फिर इस आश्रम की स्थापना का इतिहास बताया।

"मैंने पूछा था कि वह बहुत बुद्धिमान है। क्या वह बता सकेंगे कि उनकी कितनी आयु है।

"इस पर उन्होंने बताया कि वह एक सौ वर्ष तक जीने की आशा तो करते हैं।

"इसका अभिप्राय यह है कि वह जानते हैं कि एक दिन उनका निधन भी

होगा। जो पैदा होता है और मरता है, वह पूर्ण रूप से परमात्मा नहीं हो सकता और जो पूर्ण नही, वह भूल भी कर सकता है।"

सुदरम् पंजाबी की बात सुन गम्भीर विचार में चलता गया। पंजाबी ने अपना कहना जारी रखा, "अवतार तो हम सब है। परमात्मा सर्वव्यापक होने से सब में विद्यमान है। मुझ में भी और तुम में भी।"

अब सुन्दरम् ने पूछ लिया, "वह हमारे शरीर में बैठा हुआ क्या कर रहा है?"

"जीवित शरीर का पालन कर रहा है। मरने पर शरीर का विघटन करेगा। देखो, मरने पर शरीर टूट-फूटकर विनष्ट होने लगता है। यह टूट-फूट परमात्मा ही करता है।"

सुन्दरम् हंस पड़ा। इस समय वह आश्रम के बाहर निकल रेलवे स्टेशन की ओर पैदल ही चल रहे थे।

पजाबी ने कहा, "तुम अनपढ़ मालूम होते हो। देखो, प्रकृति तो स्वयं हिल-डोल नहीं सकती। इस कारण जब मनुष्य मरते है, यदि इसका विघटन करने वाला कोई न हो तो शरीर जैसा मरने पर हो, वैसा ही सदियों तक पड़ा रहे। इस कारण शरीर का विघटन करने वाला परमात्मा ही है।"

"हमें तो कोई दिखाई नहीं देता?"

"मैंने कल इन गुरु जी को भी यही बात कही थी। उन्होंने कहा था कि यह प्रकृति का गुण है। मेरा कहना था कि एक बहुत बड़े साइंसदान ने यह कहा है कि प्रकृति का कोई भी कण यदि ठहरा है तो ठहरा ही रहता है और यदि चलता है तो चलता ही रहता है, वह दिशा नहीं बदल सकता। यदि यह प्रकृति ऐसी है तो मनुष्य में यह परिवर्तन क्यों कर होता है?

"इस पर गुरु जी उचित उत्तर नही दे सके। उन्होंने हंस कर बात बदल दी। मैं समझता हूं कि इस विषय में गुरु जी कुछ नहीं जानते। जो बात हम नित्य देखते हैं, वह उसको मानने से इन्कार कर रहे हैं।"

"इस पर भी आप उनके आश्रम मे ठहरे हैं?" सुन्दरम् ने पूछा।

"मैं तीन दिन से यहां ठहरा हुआ था और जिस कामना से आया था, उसको पूरा न होते देख निराश हो यहां से लौट रहा हूं।"

"किस कामना से आए थे?"

"बीसियों ग्रन्थों को लिखने वाले एक विद्वान् से कुछ सीखने की इच्छा थी, परन्तु वह तो जो एक सिद्ध बात है, उसको भी गलत कहकर अपनी अल्पज्ञता बता रहे थे।"

इस समय वे स्टेशन के द्वार पर जा पहुंचे। पंजाबी और उसकी पत्नी खड़े हो गए और सुन्दरम् से बोले, "मुझे अपनी सीटें रिजर्व करानी हैं।" इतना कह

उसने हाथ जोड़ दिए। अभिप्राय यह है कि वह उससे छुट्टी मांग रहा है।

सुन्दरम् मुस्कराता हुआ कहने लगा, "इसमें मैं आपकी सहायता कर सकता हूं। आइए, मैं यहां का स्टेशन मास्टर हूं।"

सुन्दरम् इस पंजाबी दम्पति को लेकर अपने कमरे में चला गया और रिज़र्वेशन क्लर्क से बोला, "इनको दो फर्स्ट क्लास बर्थ चाहिएं।"

रिज़र्वेशन क्लर्क ने रजिस्टर खोलकर पूछा, "कहां जाना है?"

"अमृतसर। कल के लिए चाहिएं।"

"नाम?"

"मिस्टर एण्ड मिसेज़ रामकृष्ण भण्डारी।"

सुन्दरम् ने कह दिया, "देखो, कोई कूपे हो तो इनको मिलना चाहिए।"

क्लर्क ने दाम गिने और मांगे तो रामकृष्ण ने जेब से नोट दिए। टिकट और रिज़र्वेशन कार्ड लेकर भण्डारी ने सुन्दरम् से कहा, "आपसे मुलाकात कर बहुत लाभ हुआ है। मैं तो आपकी गर्दन पकड़ दो चार घूंसे लगाने वाला था।"

तीनों हंसने लगे। इस पर भण्डारी की पत्नी ने कह दिया, "अपनी पत्नी से मिलकर सुलह कर लीजिए।"

सुन्दरम् हंस पड़ा।

रामकृष्ण भण्डारी और उसकी पत्नी सुभद्रा आश्रम को लौट पड़े। मार्ग में पत्नी ने कहा, "मैं तो कल ही गुरु जी की बातें सुनकर समझ गई थी कि यह कोई महा-ओजस्वी परन्तु महामूर्ख विद्वान् है।"

रामकृष्ण हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "यह ढोल का पोल ही निकला है।"

"परन्तु देखिए न! हिन्दू समाज इसको मान देता है। इनकी पुस्तकें खूब बिकती हैं।"

"हिन्दू क्या, विदेशों के लोग भी इस आश्रम की यात्रा करने लगे हैं।"

"परन्तु उनको तो मैं हिन्दुओं से भी अधिक मूर्ख मानती हूं। यदि यह कहूं कि उन्होंने ही भारतीयों को मूर्ख बनाया है तो अधिक ठीक होगा।"

वे दोनों आश्रम में पहुंचे तो सायंकालीन प्रवचन समाप्त हो चुका था। सब आश्रमवासी केन्द्रीय भवन में एकत्रित थे। भवन में गुरु जी एक उच्च आसन पर मौन बैठे थे। प्रवचन के उपरान्त यह आदेश था कि सब पांच मिनट तक मौन बैठें और प्रवचन पर चिन्तन करें।

पांच मिनट के उपरान्त लाउड स्पीकर में बहुत धीमे स्वर में शहनाई बजने लगी थी। यह इस बात का संकेत था कि प्रार्थना समाप्त हुई।

सब उठ खड़े हुए और उपस्थितगण गुरु जी के चरण स्पर्श करने के लिए आगे आने लगे। गुरु जी आसन से उठ भूमि पर आ खड़े हुए थे।

रामकृष्ण भंडारी ने पत्नी को कहा, "मैं इसी समय इनसे विदा मांग लेता हूं।"

इस कारण दोनों भक्तों की भीड़ छंटती देखते रहे। लोग चरण स्पर्श कर भवन से निकल रहे थे।

जब प्राय: लोग चले गए और केवल गुरु जी के निजी सेवक ही वहां खड़े रह गए तो रामकृष्ण भण्डारी पत्नी सहित आगे बढ़ा।

सन्तोष बाई वहां अभी भी खड़ी थी। गुरु जी उससे पूछ रहे थे, "देवी! क्या चाहती हो?"

"महाराज! जो चाहती हूं, वह पा रही हूं। मेरा अभिप्राय है आपके दर्शन।"

"ठीक है। यह दुर्लभ नहीं।"

इस समय भण्डारी ने आगे बढ़कर कहा, "महाराज! मैं कल प्रातःकाल की गाड़ी से लौट रहा हूं।"

"तो बस?"

"हां, महाराज! तृप्त हो गया हूं।"

"बहुत अच्छी बात है। जब चाहो, आ सकते हो।"

इतना कह गुरु जी अपने कमरे की ओर चल पड़े। भण्डारी और उसकी पत्नी सुभद्रा अपने कमरे की ओर चले तो संतोष बाई उनके साथ चल पड़ी।

"तो आप जा रहे हैं?"

"हां, बहन! वह तुम्हारा पति तो एक सज्जन व्यक्ति ही है। उसने हमारे लिए रेल के डिब्बे में एक कूपे रिज़र्व करवा दिया है।"

"हां, वह है तो सज्जन ही। केवल वह पत्नी से व्यवहार करना नहीं जानता।"

"तो तुम को उसकी संगत प्राप्त नहीं होती?"

"वह तो पशुओं को भी प्राप्त हो जाती है। मैं उसकी लालसा नहीं करती। मैं तो सहचारिता की अभिलाषा करती हूं।"

"और वह तुम यहां इस आश्रम में सीखने आई हो?

संतोष बाई ने मुस्कराते हुए कहा, "सीखने नहीं, घरवाले को सिखाने! मैं तो व्यवहार को जानती हूं। वह नहीं जानते कि घर गृहस्थी कैसे चलती है।"

इस समय वह अपने कमरे में पहुंचे तो सुभद्रा ने पति को कहा, "आप चलिए! मैं इस बहन जी से अपना परिचय बढ़ाना चाहती हूं।"

पति अपने कमरे में चला गया। सुभद्रा संतोष बाई के साथ उसके कमरे में आ गई।

संतोष बाई समझ नहीं सकी थी कि वह किस प्रकार परिणाम [illegible]।

सुभद्रा ने देखा कि पलंग था, पलंग पर गद्दा भी था, परन्तु उस पर [illegible] इत्यादि नहीं थी। न ही किसी प्रकार के कपड़े इत्यादि के लिए [illegible]।

कमरे में एक मेज और एक कुर्सी थी और इस पर सुभद्रा ने कुर्सी पर बैठते हुए संतोष बाई को पलंग पर बैठने के लिए कह दिया।

जब वह बैठी तो सुभद्रा ने कह दिया, "तो तुम घर से अपने वस्त्रादि लेकर भी नहीं आई ?"

"मैं आई तो थी गुरु जी से अपने घरवाले की शिकायत करने। वह उनके शिष्य हैं। परन्तु यहां पहुंची तो गुरु जी ने यही रह जाने की स्वीकृति दे दी। मैंने समझा कि अभी तो यहीं रहूंगी। कल जाकर अपने वस्त्रादि ले आऊंगी।"

सुभद्रा ने कहा, "देखो बहन ! एक भली स्त्री की भांति अपने पति के घर चली जाओ। यह स्थान एक भली स्त्री के अकेले रहने का नहीं है।

"गुरु जी के विषय में तो मैं कुछ नहीं कहती, परन्तु यहां आश्रम में रहने वाले मुझे कुछ ठीक प्रकार के व्यक्ति प्रतीत नहीं हो रहे।"

"कैसे जाना है यह ?"

"तुम भी मेरी भांति जब बच्चों की मां बन जाओगी तो यह रहस्य जान लोगी कि कैसे पुरुषों की मानसिक अवस्था का दर्शन किया जाता है।"

सतोष बाई सुभद्रा का मुख देखती रह गई। उसे मौन अपनी ओर देखते हुए सुभद्रा ने उठते हुए कह दिया, "मेरी राय मानो और अभी पति के घर चली जाओ। यदि वहां घर में ताला लगा है तो उसे तोड़ भीतर चली जाओ। वह तुम्हारा घर है। तुम्हें वहां रहने से कोई मना नहीं कर सकता। यह घर पराया है। यहां तो कभी भी तुम्हें निकल जाने के लिए कहा जा सकता है।"

"तो वह मेरा घर कैसे है ?"

"तुम्हारा उससे विवाह नहीं हुआ था क्या ?"

"हुआ था। वेद मन्त्र पढ़े गए थे और रीति-रिवाज पालन किए गए थे।"

"वह इसलिए तो किए गए थे कि एक पराए घर की लड़की को उस घर की स्वामिनी बनाया जाए।"

"पर यह गुरु जी तो कहते हैं कि विवाह की रस्म तो दासता है।"

"वह मूर्ख है। उसकी दृष्टि में विवाह का अर्थ पति-पत्नी की वासना तृप्ति मात्र ही है। परन्तु यह तो पशु बिना विवाह के भी करते हैं। मनुष्यों में भी ऐसा करते हैं।

"वह समझते नहीं कि वासना तृप्ति तो गौण है। वास्तविक बात यह है कि पुरुष स्त्री की इच्छा करता है। इस कारण स्त्री को पति के घर की स्वामिनी बनाने के लिए वे रीति-रिवाज बनाए गए हैं।"

सतोष बाई मुख देखती रह गई। सुभद्रा उठ खड़ी हुई और बोली, "एक भली औरत की भांति यहां से भाग जाओ और अपने पति के घर में जबरदस्ती घुस जाओ।"

"पर वह मेरी हत्या भी कर सकता है ?"

"हत्या तो कहीं भी हो सकती है। पर यहां तुम्हारी रक्षा करने वाला कोई

नहीं है और वहां तुम्हारा उससे विवाह बन्धन तुम्हारी रक्षा करेगा।

"कोई भूल कर सकता है और वह भूल तो कहीं पर कोई भी कर सकता है। परन्तु किसी चलती-फिरती स्त्री की रक्षा का अधिकार पति को मिला है, अन्य किसी को नहीं मिला।"

सुभद्रा हाथ जोड़ नमस्कार कर कमरे से निकल अपने पति के कमरे की ओर चली गई। सतोष बाई उसकी बातों का अर्थ समझने का यत्न करती हुई वहीं पलंग पर बैठी रह गई।

वह कितनी ही देर तक अपने आसपास की स्थिति को भूले हुए विचार करती रही। उसका ध्यान भग हुआ जब कमरे के द्वार पर एक पुरुष ने खड़े हो कहा, "देवी ! गुरु जी स्मरण कर रहे है।"

संतोष बाई ने देखा कि यह गुरु जी का सदेश लाने वाला कौन है। वह गुरु जी का वह सेवक नहीं था जिसे माधो कहकर पुकारा गया था। इस कारण उसने पूछा, "तुम कौन हो ? तुमको पहले देखा नही ?"

"आप जब गुरु जी से मिलने आएंगी तो मैं वहां मिलूंगा।"

"बहुत अच्छा ! तुम चलो, मैं अभी आती हूं।"

वह सेवक चला गया। परन्तु संतोष बाई के मन में सुभद्रा की बात चक्कर काट रही थी। एकाएक वह उठी और कमरे से निकल, कमरे का द्वार बन्द कर आश्रम से बाहर को चल दी।

3

सुन्दरम् की आज डबल ड्यूटी थी। ए० एस० एम० को उस रात आवश्यक कार्य था और सुन्दरम् उसके स्थान पर ड्यूटी देना स्वीकार कर चुका था। अतः डबल ड्यूटी समाप्त कर प्रातः चार बजे वह स्टेशन से निकल अपने क्वार्टर पर गया। पिछले दिन जाते समय वह क्वार्टर पर एक नया ताला लगा आया था। उस ताले की चाबी जेब से निकाल वह ताले को ढूंढ़ने लगा। ताला नहीं था। क्वार्टर का द्वार भीतर से बन्द था। एक क्षण तक वह विस्मय में खड़ा विचार करता रहा। उसे तुरन्त समझ आ गया कि सतोष बाई भीतर है। उसने द्वार पर थाप दी। भीतर से आवाज आई, "ठहरिए।"

एक क्षण उपरान्त द्वार खुला और संतोष बाई एक ओर खड़ी होकर पति को भीतर आने के लिए मार्ग देते हुए बोली, "मैं यही आशा कर रही थी।"

"क्या आशा कर रही थी ?"

"कि आप डबल ड्यूटी पर हैं और चार बजे प्रातःकाल आएंगे। इस कारण मैंने उठकर चाय तैयार कर रखी है।"

सुन्दरम् हंस पड़ा और बोला, "तो यह शिक्षा गुरु जी से प्राप्त कर आई हो?"

"जी! गुरु जी ने कहा है कि मेरा घर यही है। मेरे विवाह में यही निश्चय हुआ था कि मैं इस घर में रहूंगी। इस कारण यहां आ ताला तोड़ रहने लगी हूं।"

"तो पाच रुपये का ताला तोड़ डाला?"

सुन्दरम् हस पड़ा और बोला, "गुरु जी धन्य हैं। वह सबको उसके अनुसार ही शिक्षा देते है।"

"हां!"

इस समय तक दोनों क्वार्टर की बैठक में आ बैठे थे। वही बिजली की केतली मे पानी उबल रहा था और तिपाई पर चाय के बर्तन पड़े थे।

सन्तोष बाई ने चाय की पत्ती कैटल मे डाल उस पर उबलता जल डालकर कहा, "मै समझती हू आप अपनी यहां से बदली करा लीजिए।"

"क्यो?"

"यह गुरुधाम है। अति पवित्र स्थान है। हम पापियों को यहां नहीं रहना चाहिए।"

"परन्तु यहां आय खूब होती है। वेतन तो सात सौ रुपये ही मिलता है, परन्तु ऊपर की आय तो दो हजार रुपये मासिक से अधिक हो जाती है।"

"यही तो गुरु जी ने कहा है कि आपको ऊपर की आय इस पवित्र नगर मे रहते हुए नही करनी चाहिए।"

"मैं पूछूगा।"

इस समय सन्तोष बाई प्यालों मे चाय का पानी डाल, दूध, जो उसने पहले ही गरम कर रखा था, डाल चाय तैयार कर रही थी।

सुन्दरम् विचार कर रहा था कि उसे गुरु जी से यह आशा नही थी कि उसकी विवाहित पत्नी को उसके घर मे भेज देंगे।

परन्तु पिछली रात वह स्त्री की सगत की कामना करता हुआ अपने क्लर्क की पत्नी के पास गया था और वहां उसे रात बन्द कोठरी मे अकेले व्यतीत करनी पड़ी थी। इस रात वह स्टेशन पर गाड़ियों का आना-जाना देखता रहा था। इससे उसके मन में सन्तोष बाई को सेवा करते देख शरारत सूझी। वह पूछने लगा, "तो गुरु जी ने यह भी बताया है कि पति की सगत मे रहना चाहिए?"

"बिलकुल! मुझे तो गुरु जी ने यही बताया है।"

"तब ठीक है। चलो, दो-तीन घटे आराम कर लें।"

पति-पत्नी दिन के नौ बजे उठे और स्नानादि में लग गए। पति को पुनः बारह बजे अपने काम पर जाना था।

सुन्दरम् को स्टेशन से चार बजे अवकाश मिला। वह घर आने के स्थान पर गुरु जी के आश्रम को चल पड़ा। वहां आश्रम के कार्यालय में सुनन्द बैठा था।

सुन्दरम् वहां पहुंचा तो सुनन्द ने कहा, "तुम्हारी पत्नी यहां से भाग गई है ?"

"जी ! मुझे विदित है। मैं गुरु जी से मिलने आया हूं।"

"वह तो अब प्रार्थना के उपरान्त ही मिल सकेंगे।"

"तो मैं प्रतीक्षा करता हूं।"

सुनन्द सुन्दरम् का ध्यान छोड़ अपने काम में लग गया। सुन्दरम् प्रार्थना-भवन मे जा बैठा। वहां लोग आने लगे थे। वह भी उनमें जा बैठा।

ठीक छः बजे गुरु जी आए और एक संक्षिप्त सितार की धुन बजने के उपरान्त प्रवचन हुआ। प्रवचन का विषय था—प्रकृति, ईश्वर एक हैं। प्रकृति ही सब स्थान पर व्यापक है। इस कारण वह सबकी सांझी है। उसका प्रयोग उतना ही करना चाहिए जितना आवश्यक हो। आवश्यकता से अधिक प्रयोग करने वाला चोर होगा।

प्रवचन समाप्त हुआ। तब मौन चिन्तन हुआ। इसके उपरान्त शहनाई की धुन बजी और सभा समाप्त हुई। लोग चरण स्पर्श करने के लिए आगे बढ़ने लगे। सुन्दरम् सबसे पीछे वहां पहुंचा और चरण स्पर्श कर हाथ जोड़ खड़ा हो गया।

गुरु जी ने कहा, "मेरे निजी कमरे में जाओ।"

सुन्दरम् भीतर के कमरे में चला गया। गुरु जी दो मिनट पीछे वहां पहुंचे। आते ही उन्होंने पूछा, "पत्नी भाग गई है न ?"

"जी !" सुन्दरम् ने समझा कि गुरु जी कह रहे हैं कि आश्रम से भाग गई है। इस कारण उसने 'हां' में उत्तर दिया था।

गुरु जी ने आगे कहा, "मुझे विश्वास है कि वह बगल के कमरे वाला पंजाबी ही उसे भगा ले गया है ?"

इस समाचार से सुन्दरम् को विस्मय हुआ। उसे तो पता था कि वह उसके क्वार्टर में बैठी है। इस पर उसने यह विचार कर कि गुरु जी की और सूचना भी सुन ले, पूछा, "भगवन् ! वे कहां के रहने वाले हैं। मैं उनका पीछा करना चाहता हूं।"

"किसलिए ?"

"वह बलपूर्वक ले गए हों तो उनको पुलिस के हवाले कर दूं।"

"यहां आश्रम में तो बल प्रयोग के लक्षण दिखाई नहीं दिए। वह स्वेच्छा से ही गई प्रतीत होती है। हम समझते हैं कि उसका भी उद्धार हो गया है।"

सुन्दरम् समझ गया कि गुरु जी भी साधारण मनुष्यों की भांति अनुमान लगा कर बातें कर रहे हैं।

"तो महाराज ! वह आपको कहकर नहीं गई ?"

"नहीं। प्रातः हमने माधो को भेजकर पता किया तो पता चला कि तुम्हारी पत्नी का कमरा और उन पंजाबी दम्पति का कमरा खाली पड़े हैं।

"पंजाबी तो रात ही छुट्टी ले गया था, परन्तु तुम्हारी पत्नी चरण स्पर्श कर प्रार्थना सभा से गई थी।"

"तब भगवन्। मैं विचार करता हूं कि पुलिस में रिपोर्ट कर दूं?"

"व्यर्थ है। जब वहां से ऊब जाएगी तो पुनः तुम्हारे पास आ सकती है।"

सुन्दरम् ने हाथ जोड़ नमस्कार की और अपने घर को लौट गया।

सुन्दरम् घर पहुंचा तो पत्नी ने पूछा, "आज भी किसी के चक्कर में गए थे?"

"नहीं! आज मैं गुरु जी के आश्रम में प्रवचन सुनने गया था।"

सन्तोष बाई मुस्कराई और चाय बनाने लगी। वह रसोई घर में जाकर पानी गरम करने हीटर पर रखकर आ गई।

सुन्दरम् ने कहा, "मैंने गुरु जी का मन ही मन धन्यवाद किया है कि उन्होंने तुम्हें घर पर भेज दिया है।"

"उन्होंने कुछ कहा है क्या?"

सुन्दरम् हंस पड़ा और बोला, "वह कह रहे थे कि तुम एक बदकार औरत हो और आश्रम में ठहरे पंजाबियों के साथ भाग गई हो।"

"ओह! और आपने क्या कहा है?"

"मैंने कहा है कि मैं थाने में उन पंजाबियों के खिलाफ रिपोर्ट लिखाने जा रहा हूं।"

"तो फिर लिखाई है?"

इस पर दोनों हंसने लगे। सन्तोष बाई ने हंसते हुए कहा, "मैंने एक नया गुरु धारण किया है।"

"कौन?"

"वह जो आपको गर्दन से पकड़ गुरु जी के पास ले जा रहा था, उसकी पत्नी को।"

"ओह! तो उसने ही तुम्हें कल सायंकाल यहां भेजा था?"

'जी! और उसीने यह कहा था कि यह मेरा घर है। इसका ताला तोड़कर भी मैं भीतर घुस सकती हूं। यह अधिकार मुझे मेरे विवाह ने दिया है।"

"तो यह उसने कहा है?"

"हां!"

"मैं समझता हूं कि वह मेरे गुरु से अधिक बुद्धिमान है। मेरे गुरु तो यह समझ रहे हैं कि उसका पति तुमको भगाकर पंजाब ले गया है।"

"आपके गुरु तो मुझे नहीं जचे।"

"तो आज भोजन क्या बनेगा?" सुन्दरम् ने बातों का विषय बदलते हुए कहा।

"जो कहो। परन्तु पहले चाय ले लो। फिर भोजन की बात करेंगे।"

"हां, शीघ्र ही सो जाना चाहिए। रात के चार बजे मेरी ड्यूटी है।"

"तीन वर्ष की नौकरी में उन्नीस-बीस हज़ार तो बैंक में है ही और भी काफी है।"

"आप छुट्टी कितनी ले सकते हैं ?"

"किसलिए पूछ रही हो ?"

"हमें किसी तीर्थ स्थान पर जाकर अपने मन की मैल साफ करनी चाहिए।"

"तो तुम्हारे मन में मैल जम रही है ?"

"तभी तो आपके गुरु जी की शरण में पहुंची थी। मेरे ज्ञान चक्षु उस पंजाबिन ने खोल दिए हैं।"

सुन्दरम् विचार कर रहा था कि यहां से भागने की क्या आवश्यकता है ? परन्तु वह भी समझ रहा था कि गुरु जी तो एक सामान्य स्त्री से भी कम बुद्धि रखते हैं।

वह गुरु जी को भगवान् का अवतार समझ रहा था। उसे भण्डारी ने कहा था कि एक मनुष्य परमात्मा हो ही नहीं सकता। जो पैदा होता है और मरता है, वह परमात्मा का अवतार नहीं होता।

एक बात रामकृष्ण भण्डारी ने यह भी कही थी कि परमात्मा तो सब प्राणियों में रहता है। जब तक प्राणी जीवित रहता है, वह उसके शरीर की पालना करता है और जब मनुष्य मर जाता है तो वह उसके शरीर के विघटन में लग जाता है और प्रकृति स्वय तो हिलती-डुलती नहीं।

ये सब बातें तो गुरु जी नहीं मानते थे। तब क्या ठीक है और क्या गलत, इसे किस प्रकार जाने ? इस कारण उसने कहा "देखो देवी ! मैं तीर्थ स्थान पर जाने का कुछ भी अर्थ नहीं समझता। वहां मेरे मन का संशय दूर कौन करेगा ? यह बुद्धि की बात है और स्नान करने से बुद्धि न घुलती है, न गंदली होती है।"

"बुद्धि तो किसी ज्ञानवान् की शरण में जाने से निर्मल होती है।" सन्तोष बाई का कहना था।

चाय लेते हुए सुन्दरम् ने कहा, "यहां से तो चलना ही चाहिए, यह मैं समझ गया हूं। परन्तु किसी तीर्थ स्थान पर जाने से क्या होगा ? जल से शरीर ठण्डा अथवा गरम होगा, परन्तु बुद्धि तो जल से अछूती ही रहती है। किसी ज्ञानवान् के पास जाएं तो कुछ लाभ भी होगा।"

"सुना है," सन्तोष बाई ने कह दिया, "तीर्थ स्थानों पर साधु-सन्त, महात्मा बहुत रहते हैं। उनमें कोई तो हमारे मन का संशय निवारण कर सकेगा ?"

"ठीक है, पता करता हूं कि ये महापुरुष कहां मिल सकते हैं। साथ ही छुट्टी लेने में भी कुछ समय लगेगा।"

"छुट्टी की प्रार्थना तो कर ही दीजिए और मैं पता करती हूं कि किस स्थान
[जाना ठीक रहेगा। मेरी एक सखी है, मानसी। वह आपके स्टेशन बाबू की
नी है। वह और उसका पति पिछले वर्ष तीर्थ यात्रा पर गए थे। उसे पूछूंगी।"
सुन्दरम् मानसी का नाम सुन हंस पड़ा। सन्तोष बाई पति को हंसते देख
स्मय से उसका मुख देखने लगी। जब वह हंस चुका तो पत्नी ने पूछा, "हंसे
सलिए हैं?"
"वह महात्माओं के विषय में क्या जानती है?"
"वह काफी ज्ञान-ध्यान की बातें करती रहती है।"
सुन्दरम् ने हंसते हुए कहा, "वह ज्ञानी है? यह मुझे आज ही पता चला है।"
"तो आप उसको जानते हैं?"
सुन्दरम् ने विचार किया कि मानसी से अपना परिचय बताए अथवा नहीं।
कारण वह मौन पत्नी का मुख देखता रह गया।
सन्तोष बाई ने पूछ लिया, "क्यों, क्या बात है? चुप क्यों कर गए?"
आखिर सुन्दरम् बोला, "देखो देवी! मैं एक बात बताता हूं, परन्तु किसीसे
हना नहीं। वह यह कि मैंने तुम्हारी सहेली को पिछले कुछ महीनों में लगभग
च सौ रुपया दिया है।"
"क्यों दिया है?"
"उसे तुम्हारा स्थानापन्न बनाने के लिए। जब भी मैं उसके पास जाता हूं,
कुछ न कुछ भेंट देता ही हूं।"
"आपने मुझे कभी कुछ नहीं दिया?"
"मैं समझता हूं कि नहीं दिया तो ठीक ही किया है। रुपया देने से उसकी
तिष्ठा मेरे मन में नहीं रही।"
"और मेरे प्रति प्रतिष्ठा आपके मन में है?"
"प्रतिष्ठा तो थी। अब कल से तो बहुत बढ़ गई है। उसे तो मैं वेश्या
झता हू।"
संतोष बाई अपनी सहेली को ऐसा नहीं समझती थी। जब भी वह मिलती
, साधु-सन्त, महात्माओं की बातें ही किया करती थी। इससे वह पति का मुख
ती रह गई।
"छोड़ो इस बात को।" पति ने कहा, "भोजन की व्यवस्था होनी चाहिए।"
"आज कहीं होटल में खाना चाहिए।"
"तो चलो, बाजार में खा लेंगे।"
इसके उपरान्त सुन्दरम् गुरु जी के आश्रम को पुनः नहीं गया। सुन्दरम् ने दो
स की छुट्टी के लिए प्रार्थना कर दी। उसने बताया कि उसकी मां बीमार है
र वह उसकी सेवा के लिए जाना चाहता है।

जिस दिन उसने यह प्रार्थना-पत्र भेजा, उसी दिन घर आकर पत्नी को बताया कि उसने अपने पत्र में छुट्टी मां की सेवा के लिए मांगी है।

"परन्तु आपकी मा हैं क्या ?"

सुन्दरम् हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "मेरी मौसी है। उसे ही मैं माता कहता हूं और वह स्वस्थ ही होनी चाहिए थी। मेरी मां से वह दो वर्ष छोटी है।"

"तो आपने यह झूठ किसलिए बोला है ?"

"इससे छुट्टी मिल सकती है ?"

"तब तो मैं आपकी छुट्टी का भोग नहीं करूंगी ?"

"क्यों ?"

"आपके झूठ की मैं भी दोषी हो जाऊंगी। जो कुछ उसका दण्ड आपको मिलेगा, वही मुझे भी मिलेगा।"

"परन्तु यह दण्ड कौन देगा ?"

"जो भी हो। आप ही कहा करते हैं कि प्रकृति ही दण्ड देती है। मेरे माता-पिता और मानसी कहा करती हैं कि परमात्मा दण्ड देता है। यह तो मैं जानती नहीं कि वह कैसा है। परन्तु मैं यह जानती हूं कि दण्ड मिलेगा।"

"अच्छा, अपनी सहेली से पता करना कि यह दण्ड कौन देगा और उसने जो कर्म किया है, उसका दण्ड कौन देगा ?"

"तो मैं उसे बता दूं कि उसके कर्म के आप भी भागीदार हैं ?"

"हां, बता सकती हो। मैं समझता हूं कि अब मैं उसके पास नहीं जाऊंगा। इस कारण उसके नाराज होने की चिन्ता नहीं।"

"तब तो मैं उससे पूछूंगी ?"

"क्या पूछोगी ?"

"यही कि झूठ बोलने का दण्ड कौन देता है और वह आपसे सम्बन्ध की बात अपने पति से बताती है अथवा उसके सामने सती-साध्वी बनी रहती है। इस फरेब का फल उसे कौन देता है ?"

सुन्दरम् हंस पड़ा और हंसते हुए बोला, "ठीक है, पूछना। और फिर मुझे बताना, क्या कहती है वह ?"

4

लगभग पन्द्रह दिन के उपरान्त संतोष बाई की भेंट मानसी से हुई। मानसी उसे उलाहना दे पूछने लगी, "तो तुमको इधर आने की फुरसत मिल गई है ?"

संतोष बाई ने कहा, "मुझे कुछ पेट में गड़बड़ प्रतीत होने लगी है। इस कारण आ नहीं सकी।"

"क्या गड़बड़ होने लगी है ?" मानसी ने समझा था कि संतोषी के दिन चढ़ गए हैं। परन्तु संतोष बाई ने बताया, "पेट में हवा बनती है, परन्तु भूख अधिक लगती है और जब खाने लगती हूं तो चित्त भर जाता है।"

"तो खाया-पिया उलटने को भी चित्त करता है ?"

"ऐसी कोई बात नही। जब नही खाती तो भूख लगने लगती है।"

"तब तो कुछ गम्भीर रोग है। किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए।"

"वह तो दिखा रही हूं। अपने रेल के हस्पताल में गई थी। वहां लेडी डाक्टर ने देखा और यही प्रश्न किया था। वह भी यही समझी थी, जो तुम समझी हो। परन्तु मैंने उसे विश्वास दिलाया है कि मेरे बच्चा नहीं है।"

"तो तुम्हें विश्वास है कि नही है ?"

"जब मैं अपने पति की संगत में जाती ही नहीं तो यह कैसे हो सकता है ?"

"पति की संगत में क्यों नही जाती ?"

"उसे आप जैसी बहनों से अवकाश मिले तब मेरे पति काम कर सकते हैं ?"

"क्या मतलब ?" मानसी ने घबराकर पूछा।

"मानसी ! बहुत बनो नही। मैं सब जानती हूं। जब भी वह तुम्हारे पास आते है तो तुम्हें देने के लिए रुपए मुझसे ही मांग कर लेते हैं।"

"तो वह अपना पैसा तुम्हारे पास रखते हैं ?"

"हां ! वह सब जो अनियमित होती है। वेतन में से तो रोटी-पानी भी मुश्किल से चलती है।"

"तो बहुत कुछ जमा कर रखा है ?"

"हां ! इस विषय में ईश्वर की कृपा है।"

"तो वह यह सब कुछ बक गए हैं ?"

"हां, यह भी कि कुछ दिन हुए तुमने उनको एक अन्धेरी कोठरी मे बंद कर रखा था।"

इस पर तो मानसी हस पड़ी। हंसते हुए बोली, "अब विश्वास आया है कि तुम पति की सब बातें जानती हो।"

"हां, मैं तो सदा विस्मय किया करती हूं कि तुम वह सब धर्म-कर्म की बातें कैसे कर सकती हो और अपने पति से झूठ कैसे बोलती होगी ?"

इस पर तो मानसी खिलखिलाकर हंसी। हंसकर उसने कहा, "मेरे श्रीमान् मेरी सब बातें जानते है। यहां तक कि उनको उस रात बड़े बाबू का बंगले के कमरे में रात भर बन्द रहना भी पता था।"

इस पर संतोष बाई भी हस पड़ी। उसने कहा, "तुम्हारे पति बहुत मजेदार हैं जो तुम्हारी बात का बुरा नही मानते ?"

"वह भगवान सोमेश्वर के शिष्य हैं और तुम्हारे पति भी तो उनके शिष्य हैं ? उनका कहना है कि पुरुष-स्त्री सम्बन्ध के लिए विवाह बन्धन की आवश्यकता नहीं। विवाह बन्धन तो मानव समाज को हीन बनाता है।"

"यह सब मुझे विदित है।" संतोष बाई ने कह दिया, "यद्यपि मुझे उनके इस सिद्धान्त से सुख मिलता है। मैं पति की दासता से बची रहती हूं। इस पर भी मैं गुरु जी की चेली नहीं हूं।"

"चेली तो मैं भी नहीं हूं। मैं तो उनकी इस छूट का लाभ उठाती रहती हूं ?"

"और तुम्हारे पति तुम्हारी इस छूट को बुरा नही मानते ?"

"वह न तो इसे पसन्द करते हैं, न ही नापसन्द।"

संतोष बाई ने कह दिया, "मैं गुरु जी को महामूर्ख मानती हूं। इसी कारण उनकी इस मूर्खतापूर्ण बात का लाभ नहीं उठाती। केवल इसलिए कि मैं मूर्ख नहीं।

"इस पर भी मैं अपने पति के व्यवहार पर आपत्ति नहीं करती। हां, मैंने उनको कह रखा है कि मैं उनकी संगत मे नहीं आऊंगी, जब तक वे एक महीना भर निर्मल होकर नही रह सकेंगे।"

"ऐसे वह हैं नही। यही कह रही हो न ?"

"हां, मानसी ! इसलिए मैं कह रही हूं कि मेरे पेट मे बच्चा नहीं है। किसी प्रकार का पाचन-क्रिया में दोष है।"

मानसी ने कुछ विचार कर कह दिया, "मुझ पर ईश्वर की कृपा है कि न तो मुझे कोई रोग है, न ही किसी बच्चे के आने के लक्षण दिखाई देते हैं।"

"मैं तो आज यह जानने आई हूं कि तुम धर्म-कर्म की बातें करती रहती हो। एक स्वामी जी की बात भी कह रही थी। मैं चाहती हूं कि उनमें से किसी से अपने घर वाले को मिला दो, जिससे गुरु जी का भूत उनके सिर पर से उतर जाए।"

"वह साधु बेचारे क्या उत्तर दे सकेंगे ? जब कुछ जवानी ढलेगी तो अपने आप समझ जाएंगे।"

"तो तुम भी गुरु सोमेश्वर की बातें करने लगी हो ?"

"मैं उनके प्रवचन सुनने कभी नही गई ?"

"जाती तो मैं भी नही। हां मेरे श्रीमान् सुनाया करते हैं। मैं उनको गलत मानती हूं। इसी कारण उनको किसी ज्ञानी सन्त-महात्मा के पास ले जाना चाहती हूं जिससे इन गुरु जी का प्रभाव समाप्त हो जाए।"

"सब व्यर्थ है।"

इस भेंट का एक परिणाम यह हुआ कि मानसी संतोष बाई के रहते ही उसके घर जाने लगी और एक दिन उसने उसके पति को अपने घर पर आने का निमंत्रण

दे दिया। परन्तु सुन्दरम् ने स्पष्ट कह दिया कि उसने अपने पूर्व जीवन को छोड़ दिया है।

स्टेशन मास्टर साहब की छुट्टी मजूर हुई, परन्तु उससे पहले ही संतोष खाया-पिया उलटने लगी थी। जब इस बात का ज्ञान मानसी को हुआ तो वह सतोष बाई को बधाई देने आई।

हंसी-हंसी में उसने कह दिया, "तो तुम मेरे सामने झूठ बोलती हो कि तुम्हारा उनसे सम्बन्ध नही बना।"

"जब कहा था, तब यह सत्य था, परन्तु यह बात तो उनके तुम्हारी संगत छोड एक महीने से ऊपर हुआ, तब ही हो सकी थी।"

"खैर, एक बात तो हुई है कि तुम अब एक पालतू जानवर की भांति हो गई हो।"

"पालतू तो पहले भी थी। खाना-पीना इनकी कमाई से ही चलता था। हां, अब एक अन्तर यह हुआ है कि पहले जानवर थी और अब इनकी पत्नी का कार्य करने लगी हूं। मैं अपनी उन्नति हो गई अनुभव करती हूं।"

मानसी ने बात बदल दी, "स्टेशन मास्टर साहब की छुट्टी मंजूर हो गई है?"

"हां, परन्तु अभी उनसे चार्ज लेने कोई नही आया।"

"इनके अधीन आनन्द बाबू की पदोन्नति होने वाली है।"

"जो भी हो, हमें इससे कुछ सरोकार नही। मेरे श्रीमान् तो यत्न कर रहे हैं कि उनकी बदली किसी अन्य स्टेशन पर हो।"

"क्यों?"

"यहां एक वो गुरु सोमेश्वर हैं और दूसरे मानसी देवी हैं। इन दोनों से बचकर रहने के लिए इनको नित्य स्मरण कराना पड़ता है कि प्रलोभनों में फंसने वाले बुरे कर्मफल से बच नहीं सकेंगे।"

"यह तो इनके गुरु जी भी मानते हैं।"

संतोष बाई ने कह दिया, "परन्तु वह तो एक जन्म और दूसरे जन्म का परस्पर सम्बन्ध मानते ही नही।

"वह कहते हैं कि पूर्ण ससार प्रकृति का रूप-रूपान्तर ही है। जब एक रूप टूटता है तो वह प्रकृति का अश मूल प्रकृति में मिल जाता है। प्राणी शरीर में परमाणु समूह का कौन परमाणु किधर जाता है, कहा नही जा सकता। इस कारण नए शरीर मे जो परमाणु आए हैं, वे पहले किस-किस शरीर का अंग रहे हैं, कैसे बताया जा सकता है? इस कारण एक जन्म के कर्मफल दूसरे जन्म में जाते हैं, किसने देखे हैं?

"उनका कहना है कि समाज ने कर्मफल रूपी एक छलना बना रखी है। क्योकि मनुष्यों की संख्या में वृद्धि हो रही है। जब भी कोई दम्पति दो से अधिक

बच्चे पैदा करते हैं, वह सामाजिक विषमता में वृद्धि करता है। समाज इसको रोकने के लिए नियम बनाता है। मनुष्य नियमों को भंग करने का यत्न करता है। समय पाकर समाज में विषमता आती है।"

"इसका इलाज एक ही है कि बच्चे उत्पन्न न किए जाएं। वासना और उसकी तृप्ति तो एक स्वभाव है। इससे यदि सन्तान न हो तो समाज की कठिनाईयों का निवारण हो सकता है। इस कारण वासना तृप्ति करते हुए बच्चों से बचा जाए।"

इस पर मानसी का कहना था, "मैं इसका प्रभाव अपने में देख रही हूं। मेरा विवाह हुए पांच वर्ष हो चुके हैं और मेरे कोई सन्तान नहीं।"

संतोषी बाई इसे ठीक नहीं समझ रही थी।

सुन्दरम् की छुट्टी तो मंजूर हो गई थी, परन्तु यह भी आज्ञा थी कि उसके स्थान पर नियुक्ति की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

इस काल में सुन्दरम् ने भारत भर में यात्रा का सर्क्युलर टिकट बनवा लिया। त्रिवेन्द्रम से लेकर उत्तर में जम्मू तक और पूर्व में द्वारिका से लेकर गोहाटी तक भ्रमण की उसकी योजना थी।

सुन्दरम् का स्थानापन्न आने में देरी हो रही थी। इससे एक लाभ भी हुआ। वह यह कि संतोष बाई की पाचन क्रिया ठीक हो गई और वह यात्रा करने के योग्य हो गई थी।

आखिर आज्ञा आई कि बन्सत कुमार को चार्ज देकर वह जा सकता है। आज्ञा आते ही उसने चार्ज दिया और बम्बई से टूअर आरम्भ का विचार बना लिया।

बम्बई में सेठ महेश्वर प्रसाद से परिचय था। परिचय गुरु आश्रम में ही हुआ था। सेठजी ने औपचारिक रूप में उसे बम्बई आने का निमन्त्रण दे दिया था। अतः सुन्दरम् बम्बई पहुंचा तो एक होटल में ठहर वह सेठ जी को टेलीफोन कर वहां पत्नी सहित जा पहुंचा।

सेठ जी के नर्सिंग होम का भवन तैयार हो चुका था। इसमें फर्नीचर और यन्त्र इत्यादि लगवाए जा रहे थे। अब वहां कार्य के निरीक्षण के लिए रेवा और सरोजिनी ही जाया करती थीं। वे प्रातः आठ बजे वहां जाती थीं और मध्याह्न के खाने से पूर्व लौट आती थीं।

सेठ जी ने एक डाक्टर मिसेज़ पंडित वहां नियुक्त कर दी थी, जो यंत्रों को लगवा रही थी।

रेवा और सरोजिनी घर लौटी ही थी कि सुन्दरम् और संतोष बाई सेठ जी से मिलने आ पहुंचे। सेठ जी ने अपनी पत्नी को पहले ही सूचना दे रखी थी कि एक दम्पति उनके घर मध्याह्न के भोजन पर आ रहे है। इस कारण सत्यवती उनकी

प्रतीक्षा ही कर रही थी। रेवा आई तो उसने लड़की को कह दिया, "जल्दी भोजन के लिए तैयार हो जाओ। घर मे मेहमान आने वाले हैं।"

"कौन है?" रेवा का प्रश्न था।

"मैं नही जानती। सेठ जी के कोई परिचित हैं और उनकी पत्नी भी है।"

"और मैं भी उनमें बैठू अथवा नहीं?" सरोजिनी ने पूछ लिया।

"क्यों नही? मैं किसी को मना नहीं कर रही।"

अभी रेवा इत्यादि तैयार होकर नहीं आई थी कि सेठ जी और सिद्धेश्वर, सुन्दरम् और सतोष बाई को लेकर आ गए।

उन्हे ड्राइग रूम मे बैठाते हुए सेठ जी ने पहला ही प्रश्न किया, "भाई! तुमने अपने विवाह पर हमे नही बुलाया?"

सुन्दरम् ने कहा, "बात यह थी कि गुरु जी सिद्धान्ततः विवाह के विरुद्ध हैं। इस कारण मैं नही जानता था कि गुरु जी का कोई भी शिष्य मेरे विवाह को पसन्द भी करेगा या नही? इसी कारण आश्रम के साथियों को भी मैं निमत्रण नहीं दे सका।"

सत्यवती समझ गई कि यह मेहमान भी गुरु के शिष्य हैं। उसने पूछ लिया, "तो आपने गुरु जी की राय की अवहेलना कर विवाह किया है?"

"मैंने इस विषय मे उनसे पूछा ही नहीं। विवाह के उपरान्त ही उनको बताया था कि मैंने शादी कर ली है।

"विवाह के बाद मैं गुरु के चरण स्पर्श कराने के लिए इसे एक बार ले गया था। पीछे यह वहां एक बार ही गई थी और वह भी आज से तीन मास पूर्व।"

इस समय रेवा और सरोजिनी भी आ गई और यह सब खाने के कमरे में चले गए।

सेठ जी ने सुन्दरम् से रेवा और उसकी सहेली सरोजिनी का परिचय करा दिया।

इस पर सरोजिनी ने कह दिया, "मैं इन बाबू साहब को जानती हूं। कई बार गुरु आश्रम मे इनके दर्शन हुए हैं।"

"तो आप भी गुरु जी की शिष्या हैं?" सुन्दरम् ने पूछ लिया।

"मेरे पति थे। उनका देहान्त हो चुका है। उनके निधन के उपरान्त मैं वहां नहीं गई।"

"परन्तु आप निष्ठावान शिष्य सिद्ध नही हुए?" रेवा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"निष्ठावान का क्या मतलब?" सेठ जी ने प्रश्न किया।

"जैसी मैं?" रेवा ने मुस्कराकर कहा।

सेठ जी ने ही बात कही, "परन्तु तुम तो वहां केवल एक ही बार गई थीं,

जबकि सुन्दरम् जी वहां नित्य जाया करते थे।"

"इस पर भी मैं उनके उपदेशों पर चलती थी?"

"तो अब चलना छोड़ दिया है?"

"हां, क्योंकि व्यवहार में उनकी बात गलत सिद्ध हुई है।"

"ओह!" अनायास ही सुन्दरम् के मुख से निकल गया।

रेवा की बात की व्याख्या सत्यवती ने कर दी। उसने कहा, "मैं सेठ जी के साथ आश्रम के वार्षिक उत्सव पर वहां जाया करती थी और जब-जब भी जाती थी, गुरु जी के प्रवचन बहुत ध्यान से सुनती रहती थी। उनकी वाणी अति मधुर और प्रभावपूर्ण है, परन्तु उनके कथन की गहराई में जाएं तो कुछ तत्त्व प्रतीत नहीं होता था।

"मैं तो समझती हूं कि उनका सिद्धान्त ही अयुक्त है। वह इस जगत् के मूल में एक ही तत्त्व मानते हैं और वह तत्त्व है प्रकृति। वे नास्तिक नहीं अर्थात् शून्य से ही सब कुछ बना हुआ और विघटन होने पर पुनः शून्य में ही विलीन होने वाला नहीं मानते। वह एक मूल तत्त्व को ही मानते हैं।

"इस मिथ्या आधार पर ही वह युक्ति करते हैं और मिथ्या आधार पर निर्मित भवन भी मिथ्या ही बन रहा है।

"मैं समझती हूं कि जगत् में कर्म करने की स्वतन्त्रता केवल एक तत्त्व को है और वह तत्त्व अपने किए का फल भोगता है। वह तत्त्व अनादि, अक्षर, अव्यय है। वह सदा से है और सदा रहेगा।

"ऐसा मानने से ही उसके पुनर्जन्म का ज्ञान होता है और फिर जन्म से अपाहिज तथा मूर्ख अथवा ओजस्वी तथा बुद्धिमान होने की बात समझी जा सकती है।

"जब ऐसा है तो कर्म करने में सावधानी की आवश्यकता है। सावधानी किसी निश्चित आधार पर होती है। उस सावधानी और निश्चित आधार के लिए ही विद्वान् लोगों ने जीवन के लिए नियम-उपनियम बनाए हैं। यह संयम, शादी और सन्तानादि सब उस सावधानी और नियम के ही लक्षण हैं।"

भोजन के सम्पूर्ण समय सत्यवती ही ज्ञान, धर्म और कर्म की प्रेरक कामनाओं पर बताती रही। बीच-बीच में संतोष बाई प्रश्न पूछती तो सत्यवती बताने लगती थी।

जब भोजन समाप्त हुआ तो सुन्दरम् ने अपना कार्यक्रम बताया। उसने कहा, "मैं इनको दो दिन बम्बई दिखाकर अहमदाबाद, द्वारिका, सोमनाथ इत्यादि स्थानों पर होता हुआ उदयपुर, जयपुर और दिल्ली पहुंचूंगा।

"वहां से एक विचार है कि सिक्खों के स्वर्ण मन्दिर को देखने जाएं और दूसरा विचार है कि दिल्ली से सीधा जम्मू और श्रीनगर चले जाएं।"

5

जिस दिन सुन्दरम् और सतोष सेठ महेश जी के घर खाना खा गए थे, उसी दिन सायकाल सेठ जी ने पत्नी को कहा, "मैं समझता हूं कि अब रेवा के बच्चे को घर में ले आना चाहिए।"

"हां!" सत्यवती ने कहा, "वह अब एक वर्ष का हो चुका है। अवश्य ही अपने चारों ओर के वातावरण को अनुभव करने लगा होगा।"

"मैं तो उसे बीच-बीच मे देखने जाता रहा हूं। एक गुजराती प्रौढ़ावस्था की स्त्री उसका पालन कर रही है। वह वुरली में रहती है।

"वह समझती है कि बच्चा मेरा किसी अन्य स्त्री से है। इसी कारण मैं उसका खर्चा दे रहा हूं।"

सत्यवती ने कह दिया, "मैं समझती हूं कि पहले बच्चे और दाई, दोनों को इस घर में ले आइए। फिर धीरे-धीरे दाई की छुट्टी कर दीजिएगा।"

"मेरी योजना कुछ और है?"

"क्या?"

"मैं बच्चे को और उसकी दाई को कल यहां ले आऊं तो फिर उसका नामकरण सस्कार कर दूं। उसे अपना लड़का घोषित कर दूं। तब कमला को छुट्टी दे दूं।"

सत्यवती ने मुस्कराते हुए पूछा, "यह है तो ठीक, परन्तु लोग क्या कहेंगे कि लड़के की मां कौन है? लड़के हवा में नहीं बनते।"

"इस विषय में कुछ नही बताऊंगा। सम्बन्धियों और मित्रों को अपने-अपने अनुमान लगाने दूंगा।

"कमला को घर पर रखने से प्रायः लोग यह समझेंगे कि यह मुझसे कमला का पुत्र है। लोगों को समझने दूंगा।"

"इससे बदनामी तो होगी ही?"

"हां, परन्तु लड़की के इस झमेले में फंस जाने पर तो बदनामी और भी अधिक होती?"

सत्यवती चुप कर गई।

सेठ जी आज सत्यवती के साथ भ्रमण के लिए नही गए। सायंकाल भ्रमण के लिए दोनों इकट्ठे जाया करते थे। रेवा, सरोजिनी पृथक घूमने जाया करती थी। वे अब क्लब नही जाती थीं। सेठ और सेठानी वुरली रेवा के बच्चे को देखने चले गए।

एक बार सरोजिनी ने कहा भी था कि कभी 'बॉम्बे सिटीज़न्स क्लब' की सूरत तो देखनी चाहिए।

रेवा का कहना था, "मेरी क्लब में रुचि नहीं है और वहां होने वाले कार्यक्रमों से तो घृणा ही हो गई है।"

सरोजिनी ने हंसते हुए कहा, "तो विवाह कर लो।"

रेवा ने भी हंसते हुए कह दिया, "सरोजिनी बहन ! तुम मुझसे आयु में बड़ी हो। पहले तुम करो। फिर खरबूजे को देख खरबूजा रंग पकड़ सकता है।"

सरोजिनी बोली, "मेरे तो लड़का है। उसके कारण मैं दूसरा विवाह नहीं करना चाहती।"

रेवा चुप कर गई और सरोजिनी ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं समझती हूं कि पहले दस-बारह कमरे तैयार करवा लें और फिर नर्सिंग होम का काम आरम्भ कर दें।"

"मैं समझती हूं कि पहले हमारे रहने के क्वार्टर यहां बन जाएं और हम उनमें रहना आरम्भ कर दें। पीछे ही नर्सिंग होम का उद्घाटन हो।"

पुन: सरोजिनी ने बात बदलते हुए कहा, "मैं आजकल मक्खियां मार रही अनुभव करती हूं?"

"परन्तु भवन और साजो-सामान फिट हो रहा है यह तो हम देख रही हैं। यह मक्खियां मारना नहीं कहा जा सकता।"

"मिसेज़ पण्डित कैसी लगी ?" सरोजिनी का प्रश्न था।

"मिस रमज़ान से तो भली प्रतीत होती है। मैं एक दिन उसके क्लीनिक में गई थी। वह रोगियों को दवाई से अधिक उपदेश देती रहती है।

"उस दिन मैंने एक गर्भवती से उसकी बातचीत सुनी थी। वह आधा घंटा-भर रोगिणी को समझाती रही थी। जब रोगिणी चली गई तो मैंने पूछा, 'डाक्टर ! आपने औषधि तो दी नहीं ?'

'दी है।' वह कहने लगी।

"मैंने कहा, 'मैंने देते देखा नहीं।'

"उसने कहा, 'औषधि मानसिक है जो दिखाई नहीं देती।'

सरोजिनी ने कहा, "कुछ दिन हुए बहुत प्रातःकाल एक डाक्टर आई थीं। मैं वहां खड़ी थी। वह मुझसे पूछने लगी, 'आप भी इस संस्थान में कुछ काम करेंगी ?'

"मैंने बताया, 'मुझे तो अभी तक एक ही काम बताया गया है। वह रेवा देवी पर लगाम लगाए रखना है।'

'यह काम किसने नियत किया है ?' उसने पूछ लिया।

"मैंने बताया, 'नियुक्ति तो माता सत्यवती जी ने की है, परन्तु प्रेरणा सेठ जी ने दी है।' इस पर वह हंस पड़ी और चुप रही।"

अगले दिन से रेवा और सरोजिनी नर्सिंग होम से नित्य की भांति जब मध्या-

द्वोपरान्त साढ़े बारह बजे लौटीं तो सत्यवती, एक वर्ष की वयस् के एक बच्चे को गोदी में ले बोतल से दूध पिला रही थी। रेवा और सरोजिनी उसे देखती ही रह गईं। बच्चे की दाई कमला समीप ही सोफे पर बैठी थी।

"मां! यह कौन है?" रेवा ने पूछा।

"तुम्हारे पिता जी ने इसे गोद लिया है।"

"कब?"

"आज ही, परन्तु गोद लेने की रस्म अगले सप्ताह रविवार को कर रहे हैं।"

"और पिता जी इसे कहां से उठा लाए हैं?"

"इसकी मां इसको जन्म दे, इसके पालन-पोषण से बचने के लिए इसे फेंक गई थी। तुम्हारे पिता जी ने इसे, उस समय ही एक स्त्री को जिसे वह जानते थे, पालन-पोषण के लिए दे दिया था।

"कल मैं इसे देखने गई थी। मैंने ही इसे यहां लाने का सुझाव दिया है और इसे गोद ले लेने की बात कही है।"

रेवा अपने कमरे में गई तो सरोजिनी भी उसके कमरे में चली आई।

रेवा ने समझा कि वह कुछ कहने आई है। इस कारण उसने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। सरोजिनी ने कहा, "बच्चे को देखा है?"

"हां! मुझे स्मरण आ रहा है कि सिद्धेश्वर जब एक वर्ष का था, तब ऐसा ही लग रहा था।"

"परन्तु सिद्धेश्वर तो अपनी मां से मिलता-जुलता है।" सरोजिनी ने कहा।

"परन्तु है तो पिता का ही पुत्र। उसका कुछ तो सहयोग उसके बनने में है ही। मुझे वही सहयोग इस बच्चे के बनने में दिखाई दे रहा है।"

"अर्थात् वह तुम्हारा सौतेला भाई है।"

"हां!"

"तब तो तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए?"

"मैं पिता जी को इतना शूर-बहादुर नहीं समझती थी। मेरा मतलब है—'फ्री-लांसर्ज़'। परन्तु वह तो इस समय अढ़तालीस वर्ष के प्रतीत होते हैं और इस अवस्था में तो यह सम्भव प्रतीत नहीं होता।"

"आज भारत में सब कुछ सम्भव है।"

रेवा को संतोष नहीं हुआ।

शेष बात भोजन करते हुए हुई। आज भोजन की मेज़ पर कमला भी बैठी हुई थी। बच्चा दूध पीकर सो रहा था।

बात सिद्धेश्वर ने ही आरम्भ की, "दीदी!" उसने कहा, "घर में आए नए प्राणी को देखा है?"

"देखा है, परन्तु पसन्द नहीं आया।"

"क्या पसन्द नहीं आया ?" सिद्धेश्वर ने ही पूछा।

"उसका इस घर में आना। लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनाएं करने लगेंगे।"

बातों का सूत्र सत्यवती ने हाथ में लेते हुए कहा, "तो हमारा जीवन लोगों की कल्पनाओं के अधीन चलेगा ?"

"हां ! समाज जो है।"

"मैं उसे मानती हूं और उसके लिए हमने निश्चय किया है कि आगामी रविवार इस बच्चे का नाम रखा जाए और सेठ जी इसे गोद लेने की रस्म अदा करें।"

"पर मां ! गोद में बच्चा तब लिया जाता है जब अपनी सन्तान न हो। पिता जी की दो सन्तान तो पहले ही हैं।"

"यह किसी नियम में नहीं कहा कि सन्तान वाले गोद नहीं ले सकते। साथ ही यह तो धर्मार्थ ही है। जैसे तुम्हारा नर्सिंग होम है। भला, यह कहा कहा है कि एक करोड़पति की लड़की जो डाक्टरी भी नहीं पढ़ी, नर्सिंग होम चलाए।'

"मां ! यह तो बेकार बैठने के स्थान पर कुछ काम करने का मार्ग है।"

"यही बात तुम्हारे पिता कर रहे हैं। वह अपनी बेकार पड़ी जायदाद का सदुपयोग कर रहे हैं।"

"परन्तु दीदी ! बच्चा सुन्दर नहीं है क्या ?" सिद्धेश्वर ने पूछा।

"पर सब सुन्दर दिखाई देने वाले बच्चे गोद ही लेने चाहिए ?"

अब पुनः सत्यवती ने कहा, "यह गोद लेने की बात बच्चे के भविष्य से संबंध रखती है। यदि कहीं तुम्हारे पिता अपनी सम्पत्ति की वसीयत न कर गए तो तुम इसको कुछ भी लेने नहीं दोगी। तुम पर रोक लगाने के लिए यह गोद लेने की रस्म की जा रही है।"

"मैं तो वैसे ही पिता जी की सम्पत्ति से फारखती लिख दूंगी।"

"वह तो अब भी लिख सकोगी। यह गोद लेने के उद्देश्य में बाधक नहीं होगा।"

रेवा चुप कर रही। भोजन चुपचाप होता रहा। सेठ महेश्वर चुपचाप भोजन करता रहा। उसने इस वाद-विवाद में भाग नहीं लिया।

इस पर भी बात भोजनोपरान्त एक घंटा विश्राम के समय हुई। सेठ ने मुस्कराते हुए कहा, "रेवा के मनोद्‌गार उसके मन की छुपी अन्तर्योजना को ही प्रकट कर रहे हैं।"

"हां !" सत्यवती का कहना था, "हमें इस बच्चे की सुरक्षा के लिए इससे सावधान रहना चाहिए।"

"मैं इससे उलट बात की आशा कर रहा हूं।"

"क्या ?"

"यह स्वयं बच्चे को गोद लेने की ओर चल रही है।"

"हो सकता है और नहीं भी हो सकता। मानव मन एक पहेली है। सबके मन पर एक ही घटना की भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाएं होती हैं। इस भिन्नता का कारण जहां पूर्व संचित ज्ञान होता है, वहां मन की अपनी क्रियाशीलता भी होती है।"

सत्यवती ने आगे कहा, "एक युवक तथा युवती का विवाह करना उसकी स्थिर बुद्धि के कारण होता है। वासना तृप्त होने के उपरान्त उसके चित्त को शान्ति प्राप्त होती है।"

"यह तो तुम वही बात कह रही हो जो गुरु जी कहते हैं।"

"परन्तु इस पर भी भेद है। वासना तृप्ति के उपरान्त मन पर दबाव कम हो जाता है; मन और इन्द्रियां थक जाती हैं। तब मनुष्य समाधि में नही वरन् सुषुप्ति अवस्था मे पहुंच जाता है।

"हमारे कुछ आचार्य मोक्षावस्था और सुषुप्ति अवस्था में समानता देखते हैं। आपके गुरु भी उसी श्रेणी के प्रतीत होते हैं।

"परन्तु ऐसा है नहीं। सुषुप्ति अवस्था में जीवात्मा निष्क्रिय हो जाता है और समाधि अवस्था मे अधिक सक्रिय होता है। यह अन्धकार और प्रकाशमान अवस्थाओं में अन्तर के कारण है।

"इस कारण वासना तृप्ति के उपरान्त समाधि नही वरन् सुषुप्ति अवस्था उत्पन्न होती है।"

सेठ जी पत्नी की बात को सुनते-सुनते सो गए। जब सत्यवती को यह पता चला तो वह बाहर आ गई।

बच्चा जाग पड़ा था और कमला उसे खिला रही थी। समीप सरोजिनी बैठी थी। वह कमला और बच्चे को परस्पर खेलते देख प्रसन्न हो रही थी।

सत्यवती ने देखा तो समझ गई कि मां होने के सुख की स्मृति उसके मन में उठ रही है। उसने अपने विचार की सत्यता जानने के लिए पूछ लिया, "सरोजिनी! कैसा लग रहा है बच्चा ?"

"वैसा ही जैसा वीरभद्र, जब एक वर्ष का था, लगा करता था।"

"ठीक है। मुझे भी सिद्धेश्वर की याद आ रही है।"

"मौसी! और यही बात रेवा के मन में भी आई थी।"

"स्मृति तो हम सबकी एक ही दिशा मे जा रही प्रतीत हुई है। परन्तु उस स्मृति की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न होती है।"

"यह शिक्षा की प्रेरणा से प्रतीत होती है।"

"क्यों सरोजिनी! तुम कितना पढ़ी हो ?"

"स्कूल फाईनल तक।"

"और मैं आठवीं श्रेणी तक पढ़ी हूं। मैं अपनी और तुम्हारी शिक्षा में विशेष अन्तर नहीं देखती। इस कारण इस विशेष घटना की प्रतिक्रिया भी समान रूप मे देख रही हूं। परन्तु रेवा एम० ए० तक पढ़ी है। बस, इसमें ही अन्तर है। यह अन्तर भी उसके कालेज में पढ़ते-पढ़ते ही दिखाई देने लगा था।"

"यदि शिक्षा का परिणाम है तब तो रेवा के भाव ठीक होने ही चाहिए ?"

"और तुम शिक्षा-शिक्षा में अन्तर नहीं मानतीं। मेरे विवाह के समय हमारे पुरोहित जी ने मुझे एक पुस्तक भेंट में दी थी। उसकी शिक्षा और रेवा की शिक्षा में अन्तर है। वह पुस्तक है—भगवद्गीता। उस पुस्तक की शिक्षा और रेवा के कालेज की शिक्षा मे दिशा-भेद है। तभी एक ही घटना का परिणाम भिन्न-भिन्न हुआ है।"

कमला, बच्चे की दाई, भोजन के समय मां-बेटी, बहन-भाई में तथा अब दोनों स्त्रियों में होने वाले वार्तालाप का अर्थ नहीं समझ रही थी। इस पर भी वह अपने को एक बाहरी व्यक्ति समझ इनकी बातों में तोल नहीं रही थी।

सत्यवती वहां से उठी और अपने निजी कमरे में चली गई। सत्यवती के चले जाने पर कमला ने सरोजिनी से पूछ लिया, "बहन जी ! आपका इस परिवार से क्या सम्बन्ध है ? आपकी रूप-रेखा इनसे नहीं मिलती।"

"तुम ठीक समझी हो।" सरोजिनी ने बताया, "मैं इन माता जी की लड़की की सखी हूं, इस कारण मैं उसके साथ रहती हूं। वैसे मैं इनकी जाति-बिरादरी मे भी नहीं हूं। मैं गुजरात की रहने वाली हूं। मेरा पति बम्बई कार्पोरेशन में चीफ इन्जीनियर था। उससे मेरा एक लडका है। वह पुणे में पढ़ता है। मैं इनके यहां रहती हूं।"

इस पर कमला ने साहस पकड़ पूछ लिया, "ये सब इस बच्चे के विषय में क्या चर्चा कर रहे है ?"

"लड़की कहती है कि बच्चे को गोद लेने से लोक निन्दा होगी। अर्थात् लोग समझेंगे कि यह बच्चा सेठ जी का है। इस कारण वह चाहती है कि बच्चे को गोद न लिया जाए।"

"तो वह क्या चाहती है ?"

"इस विषय में वह कुछ नहीं कहती।"

"अब मैं समझी हूं कि माता जी क्यों लड़की को मूर्ख बता रही थीं।"

"परन्तु क्या दुनिया के सब लावारिस बच्चे गोद ही लिए जाते हैं ?" सरोजिनी ने पूछ लिया।

"नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं है। परन्तु इस बच्चे में कुछ तो विशेषता है ही। तभी तो सेठ जी एक वर्ष से इसके पालन-पोषण पर दिल खोलकर खर्च करते रहे हैं और अब यहां परिवार में ले आए हैं।"

"क्या विशेषता समझी हो तुम इसमें ?"

"मेरे मन में तो बात स्पष्ट है कि यह बच्चा सेठ जी का बाहरी स्त्री से है। यदि सेठ जी का इससे सम्बन्ध न होता तो वे इसे किसी यतीमखाने में भरती करा देते और पचास-साठ रुपये महीना देकर इसकी सहायता कर देते।

"इन्होंने मुझको इस बच्चे की परवरिश के लिए नियुक्त कर रखा है और मैं समझती हूं कि मुझको भी बहुत अच्छा वेतन दे रहे हैं।

"यहां इस घर में भी हैं तो मुझे अपने परिवार के साथ बैठाकर भोजन कराया है अर्थात् मुझे घर की सेविका नहीं बनाया। इसका अभिप्राय यही है कि बच्चा सेठ जी का अपना है और उनको प्रिय है।"

सरोजिनी को समझ आया कि कमला ठीक कहती है। उसने कह दिया, "मैं समझती हू कि तुम ठीक कह रही हो, परन्तु इस अनुमान के ठीक और गलत के अतिरिक्त भी तो बच्चे को गोद लेने का विचार हो सकता है। मैं सेठ जी को विशेष बुद्धि का स्वामी समझती हूं और उसी बुद्धि के अधीन वे अपनी लड़की का साथ देने के लिए मुझे यहा घर में लाकर रखे हुए हैं और अब वह कई लाख रुपये व्यय कर एक नर्सिंग होम बना रहे हैं और मुझे भी उसमें लड़की के साथ रख रहे है।"

"हां! यह तो समझ रही हूं।" कमला ने कहा, "मुझे भी इन्होंने खुले हाथ से मेरी सेवा के लिए दिया है।"

बात समाप्त हो गई। बच्चा हंसने लगा था और ऊं-ऊं कर सरोजिनी का ध्यान अपनी ओर खींच रहा था।

कमला ने कहा, "यह आपकी गोदी में आना चाहता है।"

सरोजिनी ने उसे अपनी गोदी में ले छाती से लगा उसका मुख चूम लिया। बच्चा हसने लगा।

6

सेठ जी ने घर पर तो पण्डित को बुलाकर बहुत ही समीप के सम्बन्धियों के सामने गोद लेने की रीति-रिवाज पूर्ण कर ली। परन्तु उसी दिन इस उपलक्ष्य में उन्होंने एक बड़ी चाय पार्टी ताज होटल में दी। दो सौ व्यक्तियों को चाय-पानी देने का प्रबन्ध कर दिया। कमला वहां बच्चे के साथ उपस्थित थी। इस दावत में सत्यवती का भाई भी गांव से आमंत्रित था। वैसे वह ठहरा सेठ जी के घर ही था। परन्तु वह चाय पार्टी के उपरान्त गांव को लौट जाने वाला था। इस कारण उसने बहन को पृथक में ले जाकर पूछा था, "बहन! यह क्या तमाशा है?"

बहन तो सब कुछ जानती थी कि सेठ जी क्या कर रहे हैं। परन्तु वह सब कुछ

भाई को न बताने के लिए कहने लगी, "संसार में तमाशे के अतिरिक्त और है ही क्या ?

"भैया ! जो कुछ हम देखते हैं, वह तमाशा, मेरा अभिप्राय है, दिखावा ही तो है ?"

"तो तुम यह मानती हो," भाई ने पूछ लिया, "कि जो कुछ हो रहा है, वह वास्तविक नहीं। यह दिखावा ही है।"

"और भैया ! तुम भी तो यहां दिखावे के लिए ही आए हो ?"

"मैं तो निमंत्रण पढ़कर वास्तविक बात जानने आया था।"

"और कुछ जाना है ?"

"कुछ नहीं। सब सेठ जी की प्रशंसा ही कर रहे हैं। यह इस कारण नहीं कि उन्होंने एक माता-पिता विहीन बच्चे को गोद लिया है, प्रत्युत् इस कारण कि दावत में धन खुले हाथ व्यय किया है।"

"बस, यही दिखाने के लिए यह किया गया है और तुम यह जान गए हो।"

"पर मैं तो यह जानना चाहता हूं कि इस बच्चे की मां तो तुमको घर से नहीं निकाल देगी ?"

"इसका कोई लक्षण दिखाई नहीं देता। जहां तक विदित है, इसकी मां नहीं है।"

"और यह जो इसकी दाई है ?"

"वह एक भली विधवा औरत है। जाति की ब्राह्मण है और कर्म-धर्म में विश्वास रखती है।"

"बस, इसी का डर है।"

"भैया, डरने की बात नहीं। मेरे पांव यहां भली-भांति जमे हुए हैं। सिद्धेश्वर अब पिता के साथ व्यापार में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त मैं भी तो अकिंचन नहीं हूं। जीवन चलाने के लिए पर्याप्त धन मेरे अपने पास है।"

इससे सिद्धेश्वर का मामा आश्वस्त हो होटल से सीधा रेलवे स्टेशन को चला गया।

सबसे अधिक विस्मय रेवा को इस बात का था कि उसकी मां निश्चिन्त है। इसका कारण वह यह समझी थी कि मां विवेकी जीव है। वह आत्मा-परमात्मा के चक्कर में फंसी हुई अपने में ही केन्द्रित रहती है। उसकी दृष्टि घर से बाहर समाज में नहीं जाती।

दिन व्यतीत होने लगे। बच्चा घर के सब प्राणियों से हिल-मिल गया था। इस पर भी रेवा देख रही थी कि सिद्धेश्वर का बच्चे से अधिक स्नेह है और बच्चा भी सिद्धेश्वर के साथ सबसे अधिक प्रसन्न रहता था। यह एक समझ न आने वाली बात थी। वैसे बच्चा, जब वह उसके समक्ष होती, तो चलकर उसके पास

भी आने लगा था। वह स्वयं तो उसकी ओर ध्यान नहीं करती थी, परन्तु जब वह उसके घुटने के पास आ खडा होता तो विवश हो उसे प्यार करना पड़ जाता था।

बच्चे को गोद लेने की रस्म के तीन मास उपरान्त नर्सिंग होम का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन राज्य के एक मंत्री ने किया और मंत्री ने बताया कि सेठ महेश्वर प्रसाद जी ने दस लाख रुपए का भवन और साजो-सामान बनाकर यह 'होम' एक ट्रस्ट के अधीन कर दिया है। ट्रस्ट में दो स्त्रियां और एक सेठ जी स्वयं हैं। इस ट्रस्ट को यह प्रेरणा दी गई है कि अच्छे से अच्छा प्रबन्ध तथा डाक्टरी सेवा हो और लोगों से सामान्य व्यय ही लिया जाए। इतना कम जो एक सामान्य क्लर्क भी दे सके।

कमरे का किराया दो रुपए रोज था। सामान्य रूप में डाक्टर की सेवाएं और औषध बिना मूल्य। किसी विशेष डाक्टर की और औषध की आवश्यकता हो तो वह भी न्यूनातिन्यून मूल्य पर।

सेठ जी ने नर्सिंग होम को चालू रखने के लिए बीस लाख रुपए शेयरों के रूप में दिए थे। साथ ही वचन दिया था कि आवश्यकता पड़ने पर और भी धन दिया जा सकेगा।

इस प्रकार नर्सिंग होम का विवरण बताकर मंत्री महोदय ने उद्घाटन कर दिया।

नर्सिंग होम के ट्रस्ट में सेठ जी के अतिरिक्त रेवा और सरोजिनी देवी ही सदस्या थीं। स्थायी रूप में एक डाक्टर वहां रहने के लिए नियुक्त कर दी गई थी। नाम था—मृदुला पण्डित, एम० बी० बी० एस०।

ट्रस्ट की दोनों स्त्री सदस्या और डाक्टर नर्सिंग होम में ही रहने लगी थीं। सेठ जी अपने ही घर पर रहते थे। अब घर पर सत्यवती, कमला, जो बच्चे विश्वेश्वर की आया थी, और सेठ जी का लड़का सिद्धेश्वर—ये तीन प्राणी ही रहते थे।

सिद्धेश्वर की आयु इस समय बीस वर्ष की हो गई थी। तीन वर्ष से वह पिता के साथ काम कर रहा था। इन वर्षों में वह दो बार विदेश भ्रमण भी कर आया था।

बच्चे के विषय में सिद्धेश्वर जानता था कि वह उससे बहुत प्यार और स्नेह करता था। रेवा तो कभी ही घर पर आती थी।

एक दिन वह आई तो मां से बोली, "मां! मैं तुम से पृथक में बात करूंगी।"

उस समय कमला वहां बैठी थी। इस बात को सुनते ही कमला उठी और ड्राइंग रूम से निकल अपने कमरे में चली गई। विश्वेश्वर वहां सत्यवती की टांगों में खड़ा था। इस कारण सत्यवती ने पूछा, "इस बच्चे से भी पृथक बात करोगी क्या?"

"नहीं। इसकी आवश्यकता नहीं। यह बुद्धू क्या समझता है?"

"हां, तो बताओ।"

"मां! मैं विवाह करूंगी।"

"सत्य?" मां ने विस्मय में पूछा, "किससे?"

"डाक्टर मिसेज़ पण्डित के पुत्र निरंजन देव पण्डित से। वह भी डाक्टर हैं।"

"यह मै जानती हूं। परन्तु वह विधुर है।"

"तो क्या हुआ? मैं भी तो कुछ वैसी ही हूं।"

"और तुम्हारी उससे कुछ बात हुई है?"

"हां, मा! डाक्टर मिसेज़ पण्डित नें हम दोनों को आशीर्वाद दे दिया है।"

"तब मेरे लिए भी तो आशीर्वाद देने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नहीं रहा।"

"तुम पिता जी से कह दो।"

"कह दूंगी और मुझे विश्वास है कि वह आपत्ति नहीं करेंगे।"

"तब ठीक है। पिता जी से कहो कि मिसेज़ पण्डित से मिलकर विवाह का दिन निश्चित कर दें और विवाह का प्रबन्ध कर दें।"

"यह सब हो जाएगा। तुम बताओ कि विवाह कब चाहती हो?"

"मां! शीघ्रातिशीघ्र। बात यह है कि डाक्टर निरंजन गुरु जी के शिष्य नहीं हैं। वे विधि-विधान से विवाह किए बिना सम्बन्ध बनाने में विश्वास नहीं रखते।"

सत्यवती हंस पड़ी। हसते हुए बोली, "रस्सी तो जल गई है, पर बल नहीं गए।"

रेवा हंस पडी और बोली, "तो कब तक प्रबन्ध हो सकेगा?"

"रात तुम्हारे पिता से बात करूंगी और जैसा वह कहेंगे, वैसा ही करूंगी।"

"मैं समझी थी कि तुम मेरे इस निश्चय से उछल पड़ोगी और अभी पिता जी को यह शुभ सूचना देने के लिए व्याकुल हो उठोगी।"

"देखो रेवा! प्रसन्न तो मैं हूं। कदाचित् इस समाचार से भी अधिक कि सिद्धेश्वर भी विवाह के लिए कह रहा है, परन्तु यह विवाह, जीवन के कार्यों में प्रथम कार्य नहीं है।"

"प्रथम कार्य क्या है?"

"वर्तमान जीवन चलाना। विवाह तो चल रहे जीवन का रस भोग करना है। यह भी एक जीवन के सीमित अंग का भोग है। जीवन तो विवाह के पहले और पीछे भी रहता है।"

रेवा का उत्साह इस प्रकार ठंडा पड़ गया जैसे बहते जल पर बुलबुले बनकर

भी आने लगा था। वह स्वयं तो उसकी ओर ध्यान नहीं करती थी, परन्तु जब वह उसके घुटने के पास आ खड़ा होता तो विवश हो उसे प्यार करना पड़ जाता था।

बच्चे को गोद लेने की रस्म के तीन मास उपरान्त नर्सिंग होम का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन राज्य के एक मंत्री ने किया और मंत्री ने बताया कि सेठ महेश्वर प्रसाद जी ने दस लाख रुपए का भवन और साजो-सामान बनाकर यह 'होम' एक ट्रस्ट के अधीन कर दिया है। ट्रस्ट में दो स्त्रियां और एक सेठ जी स्वयं हैं। इस ट्रस्ट को यह प्रेरणा दी गई है कि अच्छे से अच्छा प्रबन्ध तथा डाक्टरी सेवा हो और लोगों से सामान्य व्यय ही लिया जाए। इतना कम जो एक सामान्य क्लर्क भी दे सके।

कमरे का किराया दो रुपए रोज़ था। सामान्य रूप में डाक्टर की सेवाएं और औषध बिना मूल्य। किसी विशेष डाक्टर की और औषध की आवश्यकता हो तो वह भी न्यूनातिन्यून मूल्य पर।

सेठ जी ने नर्सिंग होम को चालू रखने के लिए बीस लाख रुपए शेयरों के रूप में दिए थे। साथ ही वचन दिया था कि आवश्यकता पड़ने पर और भी धन दिया जा सकेगा।

इस प्रकार नर्सिंग होम का विवरण बताकर मंत्री महोदय ने उद्घाटन कर दिया।

नर्सिंग होम के ट्रस्ट में सेठ जी के अतिरिक्त रेवा और सरोजिनी देवी ही सदस्या थीं। स्थायी रूप में एक डाक्टर वहां रहने के लिए नियुक्त कर दी गई थी। नाम था—मृदुला पण्डित, एम० बी० बी० एस०।

ट्रस्ट की दोनों स्त्री सदस्या और डाक्टर नर्सिंग होम में ही रहने लगी थीं। सेठ जी अपने ही घर पर रहते थे। अब घर पर सत्यवती, कमला, जो बच्चे विश्वेश्वर की आया थी, और सेठ जी का लड़का सिद्धेश्वर—ये तीन प्राणी ही रहते थे।

सिद्धेश्वर की आयु इस समय बीस वर्ष की हो गई थी। तीन वर्ष से वह पिता के साथ काम कर रहा था। इन वर्षों में वह दो बार विदेश भ्रमण भी कर आया था।

बच्चे के विषय में सिद्धेश्वर जानता था कि वह उससे बहुत प्यार और स्नेह करता था। रेवा तो कभी ही घर पर आती थी।

एक दिन वह आई तो मां से बोली, "मां! मैं तुम से पृथक में बात करूंगी।"

उस समय कमला वहां बैठी थी। इस बात को सुनते ही कमला उठी और ड्राइंग रूम से निकल अपने कमरे में चली गई। विश्वेश्वर वहां सत्यवती की टांगों में खड़ा था। इस कारण सत्यवती ने पूछा, "इस बच्चे से भी पृथक बात करोगी क्या?"

"नहीं। इसकी आवश्यकता नहीं। यह बुद्धू क्या समझता है?"

"हां, तो बताओ।"

"मां! मैं विवाह करूंगी।"

"सत्य?" मां ने विस्मय में पूछा, "किससे?"

"डाक्टर मिसेज पण्डित के पुत्र निरंजन देव पण्डित से। वह भी डाक्टर हैं।"

"यह मैं जानती हूं। परन्तु वह विधुर है।"

"तो क्या हुआ? मैं भी तो कुछ वैसी ही हूं।"

"और तुम्हारी उससे कुछ बात हुई है?"

"हां, मा! डाक्टर मिसेज पण्डित ने हम दोनों को आशीर्वाद दे दिया है।"

"तब मेरे लिए भी तो आशीर्वाद देने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नही रहा।"

"तुम पिता जी से कह दो।"

"कह दूंगी और मुझे विश्वास है कि वह आपत्ति नहीं करेंगे।"

"तब ठीक है। पिता जी से कहो कि मिसेज पण्डित से मिलकर विवाह का दिन निश्चित कर दें और विवाह का प्रबन्ध कर दें।"

"यह सब हो जाएगा। तुम बताओ कि विवाह कब चाहती हो?"

"मां! शीघ्रातिशीघ्र। बात यह है कि डाक्टर निरंजन गुरु जी के शिष्य नहीं है। वे विधि-विधान से विवाह किए बिना सम्बन्ध बनाने में विश्वास नही रखते।"

सत्यवती हंस पड़ी। हसते हुए बोली, "रस्सी तो जल गई है, पर बल नहीं गए।"

रेवा हंस पड़ी और बोली, "तो कब तक प्रबन्ध हो सकेगा?"

"रात तुम्हारे पिता से बात करूंगी और जैसा वह कहेंगे, वैसा ही करूंगी।"

"मैं समझी थी कि तुम मेरे इस निश्चय से उछल पड़ोगी और अभी पिता जी को यह शुभ सूचना देने के लिए व्याकुल हो उठोगी।"

"देखो रेवा! प्रसन्न तो मैं हूं। कदाचित् इस समाचार से भी अधिक कि सिद्धेश्वर भी विवाह के लिए कह रहा है, परन्तु यह विवाह, जीवन के कार्यों में प्रथम कार्य नही है।"

"प्रथम कार्य क्या है?"

"वर्तमान जीवन चलाना। विवाह तो चल रहे जीवन का रस भोग करना है। यह भी एक जीवन के सीमित अंग का भोग है। जीवन तो विवाह के पहले और पीछे भी रहता है।"

रेवा का उत्साह इस प्रकार ठंडा पड़ गया जैसे बहते जल पर बुलबुले बनकर

मिट जाते हैं।

वह मध्याह्नोत्तर तीन बजे आई थी और समझ रही थी कि चाय के समय तो अवश्य ही बात होगी। परन्तु मां ने कह दिया, रात बात करूंगी। इसका अभिप्राय यह था कि वह पिता जी से घर के प्राणियों से पृथक में बात करेगी। वह क्यों ? वह समझ नहीं सकी थी। परन्तु वह जानती थी कि मां ने जो कुछ विचार कर यह कहा है, वह उससे बदल नहीं सकेगी। इस कारण चुप रही।

मध्याह्नोत्तर की चाय हुई और वह चाय के उपरान्त नर्सिंग होम में लौट गई।

वहां नर्सिंग होम में विवाह की चर्चा उसी दिन प्रातःकाल हुई थी। डाक्टर निरंजन देव पण्डित पहली सायंकाल मां से मिलने आया था। वह पहले भी आया करता था और कभी तो एक-आध घंटा मिलकर लौट जाया करता था और कभी रात मां के पास रह जाया करता था। पिछली सायंकाल वह आया था और रात मां के क्वार्टर में ही रहा था। इस दिन प्रातःकाल डाक्टर मृदुला पण्डित अपने काम पर जाने के स्थान पर रेवा, सरोजिनी के क्वार्टर पर आई। ये दोनों भी स्नानादि से निवृत्त हो अपने नियत कार्य पर जाने के लिए तैयार हो रही थीं।

रेवा का कार्य कार्यालय में था। उस समय पचास के लगभग प्रसूता नर्सिंग होम में ठहरी हुई थीं। उनमें बीस के लगभग परिचारिकाएं कार्य पर थीं। बारह सदा उपस्थित रहती थीं। इन बारह नर्सों की सहायता के लिए बारह ही सेविकाएं थीं। पचास प्रसूताओं के भोजन, औषधि, सेवकों, नर्सों की आवश्यकताओं का प्रबन्ध करने के लिए रेवा कार्यालय में आठ बजे पहुंच जाया करती थी। सरोजिनी कार्यालय से बाहर नर्सिंग होम में सफाई इत्यादि का प्रबन्ध देखती थी और प्रसूताओं से मिलकर उनकी आवश्यकताओं के विषय में देख-रेख करती थी।

पूर्ण भवन का प्रबन्ध भी सरोजिनी के अधीन था। दोनों सखियां वस्त्र पहने खड़ी-खड़ी ही चाय पी ले रही थीं कि डाक्टर मिसेज़ पण्डित आईं। दोनों ने हाथ जोड़ डाक्टर का अभिवादन किया और प्रश्नभरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगीं। डाक्टर ने कहा, "रेवा जी ! मैं आपसे एक बात करने आई हूं।

"तुम मेरे क्वार्टर में चलो तो बताऊंगी।"

दोनों विस्मय में मिसेज़ पण्डित का मुख देखने लगीं। डाक्टर ने ही कहा, "वह बात वहां ही बताई जा सकती है, यहां नहीं।"

इस समय तक रेवा ने चाय समाप्त कर प्याला तिपाई पर रखा ही था तो सरोजिनी ने कह दिया, "मैं अपने काम पर जा रही हूं।" इतना कह वह चल दी।

रेवा मिसेज़ पण्डित के साथ उसके क्वार्टर में जा पहुंची।

रेवा और सरोजिनी को ज्ञात नहीं था कि डाक्टर का लड़का रात मां के क्वार्टर में ही सोया है। इस कारण वह जब डाक्टर के साथ क्वार्टर के ड्राइंग रूम

में डाक्टर निरंजन देव के सम्मुख पहुंची तो तुरन्त समझ गई कि उसकी पेशी डाक्टर के लड़के के निमित्त की गई है।

रेवा पहले कई बार डाक्टर निरजन से मिल चुकी थी और उसे एक स्वस्थ व सुन्दर युवक जान उससे प्रभावित हो चुकी थी। परन्तु उसे विदित नहीं था कि वह विधुर है।

रेवा ने हाथ जोड़ निरंजन देव को नमस्कार कहा और प्रश्नभरी दृष्टि से मिसेज पण्डित की ओर देखने लगी।

मिसेज पण्डित ने ही बात कही, "यह निरंजन ही आप से कुछ कहना चाहता है।"

"हां, तो डाक्टर साहब! कहिए, क्या आज्ञा है?"

निरंजन देव ने मुस्कराते हुए कहा, "एक बात आप से जानना चाहता हूं। यदि आप नाराज न होने का वचन दें तो पूछ सकता हूं।"

"यदि वह कुछ मुझसे ही सम्बन्ध रखने वाली बात होगी तो नाराज नहीं हूंगी। मुझे अपने मान-अपमान की कभी चिन्ता नहीं हुई। हां, किसी दूसरे के विषय में पूछने पर बताने से इन्कार कर दूंगी। उसमें भी नाराज होने का कोई कारण नहीं हो सकता।"

"धन्यवाद! मैं आपके विषय में ही पूछना चाहता हूं कि इस समय आप छब्बीस वर्ष से ऊपर की आयु की हो गई हैं, क्या आप बता सकती हैं आपने अभी तक विवाह क्यों नहीं किया?"

रेवा हस पड़ी। हंसते हुए बोली, "इस प्रश्न की तो आवश्यकता ही नहीं थी। यह एक स्वभाविक बात ही है कि जब कोई सज्ञान लड़की विवाह नहीं कर सकी तो अभिप्राय यही है कि उपयुक्त पति नहीं मिला। ज्यों-ज्यों आयु और अनुभव बढ़ता जाता है, अभिलाषाएं, आकांक्षाएं बढ़ती जाती हैं और पति मिलना कठिन और कठिन होता जाता है।"

"तो किसी को रियायती अंक देकर ही स्वीकार क्यों नही कर लेती?"

रेवा ने मुस्कराते हुए कहा, "यह इस कारण कि आज तक किसी ने मुझे रियायती अंक देकर उत्तीर्ण किया नहीं।"

इस पर निरंजन देव हस पड़ा और हंसकर बोला, "यह इस कारण कि आपको रियायती अंक लेने की आवश्यकता है ही नही? इस कारण रियायती अंक तो आपको ही देने होंगे। देखिए, एक प्रत्याशी आपके सामने बैठा है और अंक दिए जाने की प्रतीक्षा कर रहा है।"

रेवा उसका मुख देखती रह गई। उसके मुख से आवाज नहीं निकली। निरजन देव मुस्कराता हुआ उसकी ओर देख रहा था। रेवा ने मिसेज पण्डित की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो वह कहने लगी, "मेरी अनुमति से ही यह प्रश्न

पूछा गया है।"

आखिर रेवा ने कहा, "डाक्टर ! आप क्या चाहती हैं ?"

"मैं तो तुम दोनों को धन-धान्य और लड़के-लड़कियों से सन्तुष्ट अपने घर में बैठे देखने का स्वप्न ले रही हूं।"

"तो मुझे अपनी मा से राय करनी होगी।"

"पर आप तो सज्ञान है ?" निरजन देव ने पूछ लिया।

"शरीर से, परन्तु कदाचित् बुद्धि से नही। अभी तक तो मैं विवाह न करने का निश्चय किए हुए थी। अब यह प्रस्ताव नया है। मैं स्वय नही जानती कि क्या उत्तर दूं ?"

"आपका मन क्या कहता है ?"

"मन तो यही चाहता है जो आपकी माता जी का कह रहा है। मन आपका हाथ पकड अभी आपके साथ चलने को कर रहा है। परन्तु इस अकस्मात् विचार का 'चेक-अप' कराने के लिए माता जी से राय करना चाहती हूं।"

"ठीक है, कर ले। मैं अपनी माता जी से कहूंगा कि वह भी उनसे मिल लें।"

इतना कह डाक्टर उठ खडा हुआ और माता जी तथा रेवा को हाथ जोड़ क्वार्टर से बाहर चल दिया।

इसके उपरान्त रेवा भी उठी, "मैं आज अपनी माता जी से मिलने जा रही हूं। यदि आपकी इच्छा हो तो आप भी मिल लें।"

इस भेंट के उपरान्त रेवा अपने कार्यालय को नहीं जा सकी। वह मन मे विचार करने लगी थी कि इसका परिणाम क्या वही होगा जो मिसेज पण्डित ने कहा है। वह यह कि घर मे बच्चों की लहर लग जाएगी।

उसका ध्यान विश्वेश्वर की ओर गया तो उसके मन मे यह विचार आया कि एक बच्चे से ही पिता जी के घर मे प्रकाश हो रहा अनुभव हुआ है। तो जब उसके घर में पांच-छ: होगे तो क्या होगा। इसकी वह कल्पना करने लगी।

वह अपने क्वार्टर में अपने बैडरूम में जा कल्पना के घोड़े दौड़ा रही थी। वैसे वह बहुत ही प्रसन्न थी। उसे तीन वर्ष हो चुके थे पुरुष सगत किए। परन्तु इस सबसे अधिक बात यह थी कि निरजन देव उन सबसे श्रेष्ठ पुरुष दिखाई दे रहा था, जितनों से वह अभी तक मिली थी।

वह मन मे विचार कर रही थी कि उसने उसमें क्या देखा है ?

वह सायं की चाय के समय पिता के घर जा वहां इस प्रस्ताव की सूचना देना चाहती थी, परन्तु वह मां के घर में सायं की चाय के समय से दो घटे पहले ही जा पहुंची।

वहां मां ने उसकी प्रसन्नता और उत्साह पर ठण्डा पानी डाल दिया था। वह समझ नहीं सकी थी कि मां ने उसकी सूचना को इतने शान्त भाव से क्यों सुना है ?

वह चुपचाप चाय के उपरान्त नर्सिंग होम मे लौट आई और अपने बैंडरूम में जा भीतर से द्वार बन्द कर लेट गई।

सरोजिनी ने उसे आते देखा था और चुपचाप उससे किसी प्रकार की बात किए बिना बैंडरूम मे जाते और द्वार भीतर से बन्द करते भी देखा था। वह समझ नहीं सकी कि क्या माजरा है।

वह अपने क्वार्टर के ड्राइंगरूम में ही बैठी थी। वहां बैठी एक पुस्तक पढ रही थी। इस समय मिसेज पंडित आ गईं। वह भी रेवा की, मां के घर से लौटने की, प्रतीक्षा कर रही थी।

मिसेज पण्डित आशा कर रही थी कि उसका लड़का रात खाने के समय आएगा और वह अपने प्रस्ताव के उत्तर की आकांक्षा करेगा। उसने देखा कि सरोजिनी अकेली बैठी पुस्तक पढ रही है। मिसेज पण्डित ने आते ही पूछा, "मैं समझी थी कि रेवा आ गई है?"

"हां, डाक्टर! वह आ गई है, परन्तु सीधा बेडरूम में जा भीतर से द्वार बंद कर लेट रही है।"

मिसेज पण्डित इसका अर्थ न समझ उसका मुख देखतीं रह गईं। बात सरोजिनी ने ही की,"डाक्टर! क्या बात है। मैं रेवा के व्यवहार को समझी नहीं। मध्याह्न को भी वह मुझसे मिले बिना मां के घर चली गई। मुझे बताकर जाती तो मैं भी उसके साथ जाती। वहां माता जी से मिले बहुत दिन हो गए हैं।"

अब मिसेज पण्डित ने सरोजिनी को पूर्ण बात बताकर रेवा के मन के भाव जानने के लिए कह दिया। उसने बताया, "बात यह है कि आज प्रातःकाल निरंजन देव ने रेवा को 'प्रोपोज' किया है। उस समय तो वह बहुत प्रसन्न प्रतीत हुई थी। परन्तु उसका वर्तमान व्यवहार समझ नहीं आया।"

सरोजिनी ने कह दिया, "मैं अभी उससे मिलकर उसके मन की बात जानने का यत्न करूंगी। आशा करती हूं कि वस्तुस्थिति का ज्ञान प्राप्त कर आपको उससे अवगत करा दूंगी।"

मिसेज पण्डित ने कह दिया, "मैं तुम दोनों को रात अपने यहां भोजन पर आमन्त्रित करती हूं।"

"मैं रेवा से कह दूंगी।"

डाक्टर गई तो सरोजिनी ने पुस्तक सेण्टर टेबल पर रखी और रेवा के बैंड-रूम का द्वार खटखटाने लगी। भीतर से आवाज आई, "क्या है?"

"तुम्हारा सिर है। दरवाजा खोलो।"

"और यदि न खोलूं तो क्या करोगी?"

"अभी बढ़ई बुलाकर तुड़वाकर भीतर आ जाऊंगी। भला यह भी कोई ढंग है रुठने का?"

रेवा की हंसी निकल गई और फिर द्वार खुल गया। बैडरूम में अंधेरा था। सरोजिनी ने प्रवेश कर 'स्विच-ऑन' किया तो प्रकाश हुआ। सरोजिनी ने देखा कि रेवा उन्हीं कपड़ों में थी जिनमें वह मां के घर से आई थी। उसे आए एक घंटा भर हो चुका था।

"और यहां छुपकर क्या कर रही थी?" सरोजिनी ने पूछ लिया।

"चिन्तन।"

"मुझे भी उसमें सम्मिलित कर लो। जब गाड़ी एक घोड़े से न चले तो दो घोड़े लगा लेने चाहिएं।"

रेवा हंसकर बोली, "तो चलो। बैठक में गाड़ी हांकते हैं।"

दोनों ड्राइंगरूम में आ बैठी। बैठते ही रेवा ने कहा, "मैं रूठी हुई नहीं हूं। हां, एक समस्या में उलझी हुई थी।"

"यही तो कह रही हूं कि यदि अकेली उस उलझन से नहीं निकल सकती तो मैं भी तुम्हारे साथ जुट जाती हूं। दोनों जोर लगाएंगी तो समस्या अवश्य सुलझ जाएगी।"

"तो सुनो।" रेवा ने प्रातः मिसेज़ पण्डित और उसके लड़के से हुआ वार्त्तालाप बता दिया। तदनन्तर उसके माता जी से मिलने और आशा के विपरीत माता जी का प्रस्ताव के बहुत ही ठंडक से सुनने की बात भी बता दी।

रेवा ने आगे कहा, "मैं सोने के कमरे में बिस्तर पर लेटी हुई विचार कर रही थी कि माता जी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार क्यों नहीं कर लिया।"

"वह इसलिए कि निरंजन जैसे सफल डाक्टर का तुम जैसी धनवान की बेटी से प्रस्ताव में वह उद्देश्य जानने में लीन हो गई होंगी।"

"इसमें क्या उद्देश्य हो सकता है?"

"उद्देश्य यह नर्सिंग होम, तुम्हारे पिता जी की सम्पत्ति और तुम्हारा पूर्व चरित्र और फिर इन सबमें निरंजन के प्रस्ताव में सहयोग। यह सब विचारणीय नहीं है क्या?"

"तो मैं क्या करू?"

"देखो, मिसेज़ पण्डित रात के खाने पर आमंत्रित कर गई हैं। सम्भवतः डाक्टर निरंजन भी वहां होगा। वहां खूब पेट भरकर खाना और खा पीकर कह देना कि माता जी तथा पिताजी उनसे मिल कर बात करेंगे।"

"यदि मां-पुत्र मुझसे पूछें कि वे क्या बात करेंगे?"

"तो कह देना कि यह तुम कैसे जान सकती हो।"

"तो इससे उनको संतोष हो जाएगा?"

"संतोष नहीं करेंगे तो क्या करेंगे? तुमसे विवाह नहीं करेंगे और बस। इससे अधिक वह कर ही क्या सकते हैं?"

रेवा को बात समझ आई कि वह वासनाभिभूत हो विवेक छोड़ बैठी है। इससे मन-ही-मन लज्जित हो, वह बोली, "तो यह रात का भोजन का निमंत्रण तुमने स्वीकार कर लिया है?"

"इन्कार करने में कोई कारण समझ नहीं आया था और अब तुम्हारी बात सुनकर तो वहां भोजन करते हुए निरंजन जी से दो-तीन चुटकियां लेने का मजा भी आएगा।"

7

रात भोजन पर डाक्टर निरंजन अपनी मां के पास नहीं आ सका। मिसेज पण्डित ने पुत्र के घर पर टेलीफोन किया तो निरंजन ने कह दिया कि एक सज्जन उससे मिलने आए हुए हैं, वह उन सज्जन को नाराज नहीं कर सकता।

डाक्टर ने जब निरंजन की बात बताई तो सरोजिनी डाक्टर की बात सुन हंस पड़ी। हंसते हुए रेवा से पूछने लगी, "रेवा! अब बताओ।"

"मैं क्या बताऊं, बताने की बात तो डाक्टर की है।"

मिसेज पण्डित ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे चौदह घंटे अभी और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"किस विषय में प्रतीक्षा करनी होगी?" रेवा ने पूछा।

"अपनी पुत्रवधू को गले लगा उसका माथा चूमने मे।"

इस पर तीनों हंसने लगीं।

अगले दिन लंच के समय निरंजन देव, रेवा के माता-पिता को साथ लेकर आ पहुंचा। यह अप्रत्याशित था। दोनों लड़कियां मुख देखती रह गई।

बात सेठ जी ने ही कही, "देखो रेवा! तुम्हारी मां ने बताया है कि तुम इस सम्बन्ध से प्रसन्न हो। बताओ, यह ठीक है?"

रेवा भूमि की ओर देखती हुई बैठी रही। उत्तर सरोजिनी ने दिया, "पिता जी! यह तो इस प्रस्ताव की प्रसन्नता से रात भर सोई नहीं। अब माता जी इसके सिर पर हाथ रख इसे आशीर्वाद देंगी तो यह निश्चिन्त हो सो सकेगी।"

"तो तुम्हारी मां का अनुमान ठीक ही है कि तुम इस सम्बन्ध से प्रसन्न हो?"

रेवा अभी भी चुप थी। बात सेठ जी ने कही, "मैं समझता हूं कि हमारा आशीर्वाद बन रहे दम्पति के लिए होना चाहिए।"

इस पर सत्यवती ने अपना ब्रीफकेस खोला और उसमें से एक बंद डिबिया निकाली। उस डिबिया में घिसा हुआ केसर और चावल रखे थे। उसने वह लड़की के सामने करते हुए कहा, "इससे डाक्टर साहब को तिलक करो और सगाई की रस्म संपन्न करो।"

"इससे क्या होता है ? मैं मन से तो निश्चय कर चुकी हूं।"

"यह रीति समाज में तुम्हारे मन की बात घोषित करने के लिए है। तुम्हारे मन की बात को ही तो तुम्हारे हाथ बताएंगे।

"शीघ्र करो। मुहूर्त्त ढल रहा है। तुम्हारे पिता जी इसके लिए एक बजे से पहले का समय बताते है।"

रेवा ने कलाई पर बंधी घडी में समय देखा। एक बजने में दस मिनट रहते थे।

अब रेवा ने अंगूठे पर केसर लगाया और निरंजन देव को तिलक कर दिया तथा पांच-छ: चावल के दाने उस पर लगा दिए।

अब मिसेज़ पण्डित उठी। उसने अपनी अलमारी से सोने की एक चेन निकाली और रेवा के गले में डाल उसके दोनों गालों को हाथों में पकड़ उसके मुख को उठाया और दोनों गालों को बारी-बारी चूमकर सिर पर हाथ से प्यार दे दिया।

सेठ जी ने जेब से एक चैक निकाला और मिसेज़ पण्डित को देते हुए कहा, "यह हमारी ओर से तुच्छ भेंट है।"

एक लाख एक हजार एक सौ एक रुपये का चैक था।

सरोजिनी चकित रह गई। वह समझ गई कि सब कुछ निरजन देव से पहले ही निश्चय हो चुका है।

निरंजन देव ने पूछा, "और पिताजी ! ज्योतिषी से विवाह का मुहूर्त्त नहीं निकलवाया ?"

"निकलवाया है। कल मध्याह्नोत्तर पांच बजे का है। विवाह यहां इस नर्सिंग होम में ही होगा। कल यहां सब प्रबन्ध हो जाएगा। आप अपने मित्रों सहित यहां आ जाइए। विवाह संस्कार के बाद रात का भोजन होगा। उसके उपरान्त आप पत्नी को लेकर अपने घर जा सकेंगे।"

अगली रात फोर्ट एरिया मे अपने फ्लैट के बेडरूम मे पति के समीप लेटी हुई रेवा विचार कर रही थी कि क्या अन्तर है वर्तमान में और उस काल मे जब वह देशपाण्डे अथवा किसी अन्य के पास जाती थी।

दोनों समय की अपने मन की भावनाओं में वह अन्तर तो देख रही थी। शारीरिक अनुभव में तो कुछ विशेष अन्तर नहीं था, परन्तु मानसिक स्थिति में अन्तर इतना स्पष्ट था कि उस समय की उन्मत्तावस्था मे भी वह अनुभव कर रही थी।

उसके पति ने पूछा, "क्या विचार कर रही हो ?"

रेवा बता नहीं सकी। इसपर भी उसने कह दिया, "कुछ वर्णनातीत है।"

"परन्तु तुम्हें इस कर्म का अनुभव तो है ही ?"

इस पर एक हल्की-सी कंपकंपी रेवा के शरीर में हुई। इसे डाक्टर निरंजन ने भी अनुभव किया।

अब रेवा ने पूछ लिया, "आपको किसने बताया है?"

"तुम्हारे पिता जी ने। वह विवाह से दो दिन पूर्व रात के समय मेरे क्लीनिक में आए थे और मुझसे बोले कि उनको मेरे प्रस्ताव से अति प्रसन्नता है, परन्तु बात पक्की होने से पहले एक बात समझ लेनी चाहिए।

"इस पर उन्होंने 'फ्री-लांसर्ज' क्लब की तुम्हारी पूर्ण बात बताई थी। यह भी बताया था कि तुम उस क्लब की 'फाउण्डर' थी।"

"तब भी आपने मुझे स्वीकार किया है?"

"जो कुछ इस समाचार से दुःख हुआ था, उससे अधिक तुम्हारे पिता जी की स्पष्टवादिता से प्रसन्नता हुई थी। उनका कहना था कि अन्धेरे में कूदना ठीक नहीं। जहां कूद रहे हो, वहां का दर्शन कराने के लिए ही वह यह सब बता रहे हैं।

"उन्होंने तुम्हारा पूरा जीवन सामने रखा तो मैं उनके इस रहस्योद्घाटन पर प्रसन्न था और अब तुम से पूछ रहा हूं कि दोनों में कुछ अन्तर समझ आया है या नहीं?"

"अन्तर तो है। वह इतना अधिक है कि उसका शब्दों में नाप-तोल बताने के लिए शब्द-कोश ढूंढ़ना पड़ेगा। यह फिर किसी समय बताऊंगी जब अपने मन के भावों को व्यक्त करने के लिए उचित शब्द ढूढ़ सकूंगी। अभी तो मैं आपके बाहुपाश में एक चिड़िया की भांति फंसी हूं और कुछ सहमी हुई अनुभव कर रही हूं।"

निरंजन देव हंस पड़ा और बोला, "तुम ठीक कहती हो। मुझे तुम्हारे सौंदर्य और स्त्रीत्व के साथ न्याय करना चाहिए। यह समय मीमांसा का नहीं है।"

विवाह के दो दिन उपरान्त पति-पत्नी हनीमून मनाने ऊटी चले गए। वहां वे पन्द्रह दिन व्यतीत कर लौटे तो सब, सेठ जी का परिवार तथा सरोजिनी, कमला और विश्वेश्वर भी, इनके स्वागत के लिए हवाई पत्तन पर पहुंचे हुए थे।

मां ने रेवा की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार दिया। सरोजिनी उससे गले मिली। पिता ने हाथ जोड़कर दम्पत्ति का स्वागत किया और कह दिया, "यहां से हम अपने घर चलेंगे। वहां आपकी माता जी भी आई होंगी। मध्याह्न का भोजन वहां होगा और फिर वहां से मैं आपके मकान पर आपको भेज दूंगा।"

इस सब का अर्थ दम्पत्ति समझने का यत्न करने लगे।

यह बात वहां बाईकुला वाले मकान पर पहुंचकर स्पष्ट हुई।

जब शर्बत इत्यादि पिया जा चुका तो सेठ जी ने कहा, "मैं आपको यहां इसलिए लाया हूं जिससे पीछे मैंने ट्रस्ट में जो कुछ परिवर्तन किए हैं, उनको आपको बताकर उन पर व्यवहार करवा सकूं।

"एक तो यह कि ट्रस्ट की कमेटी सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव करे कि भविष्य

में ट्रस्ट के पांच सदस्य होंगे। क्यों रेवा ! क्या कहती हो ?"

"मैं इसमें क्या आपत्ति कर सकती हूं।"

"दूसरी बात यह है कि दो नए सदस्य हों। निरंजन देव और सिद्धेश्वर। क्यों रेवा ?"

रेवा ने अपने पति के मुख की ओर देखा और कह दिया, "यदि यह स्वीकार करें तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है ?"

"तीसरी बात यह कि रेवा अपना त्याग-पत्र दे जिससे शेष सदस्य उसका स्थानापन्न ढूंढ सकें।"

"यह क्यों ?" रेवा ने आश्चर्य में पड़कर पूछा।

"यह इसलिए कि मैं उसके स्थान पर एक अधिक योग्य व्यक्ति के नाम का प्रस्ताव करना चाहता हूं। परन्तु यह स्थान खाली होने पर ही हो सकेगा।"

"पिता जी ! वैसे तो मैं पहले ही इस काम मे अरुचि अनुभव कर रही हूं, परन्तु आप क्या चाहते हैं ? मैं समझ नही सकी। मेरा कारण तो है—मेरी इस काम मे अरुचि, परन्तु आपका मुझे काम से निकाल देने का कारण समझ नहीं आया।"

"बताया तो है, परन्तु नए सदस्य का नाम पीछे बताऊंगा।"

"और यदि उसने स्वीकार न किया तो ?"

"तो तुमसे प्रार्थना कर दूंगा कि तुम अपना त्याग-पत्र वापस ले लो ?"

"मैं तो त्याग-पत्र देती हू, परन्तु यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि मुझसे अधिक योग्य समझा कौन जा रहा है ?"

इस पर सरोजिनी बोल उठी, "रेवा बहन ! तो तुमको यहां बम्बई में अपने से अधिक योग्य कोई दृष्टिगोचर ही नहीं हो रहा ?"

इस पर रेवा ने उसी समय समीप पड़े अपने ब्रीफकेस में से एक कागज निकाला। उसपर तीन पंक्तियों में अपना त्याग-पत्र लिख दिया।

उसने लिखा, "मैंने एक नया जीवन स्वीकार किया है, उसमें मैं नर्सिंग होम का काम भली-भांति नहीं कर सकूंगी। इस कारण मेरे स्थान पर कोई ऐसा सदस्य नियुक्त किया जाए जो वहां कार्यालय में बैठ प्रबन्ध कर सके।"

नीचे हस्ताक्षर कर उसने अपना लिखा पत्र सरोजिनी को दे दिया जो ट्रस्ट की सेक्रेटरी के रूप में कार्य कर रही थी।

अब सेठ जी ने कहा, "मेरा अगला प्रस्ताव है कि रेवा की मां से प्रार्थना की जाए कि वह ट्रस्ट का सदस्य बनना स्वीकार करे।"

इस प्रस्ताव पर तो सब बैठे हुओं को विस्मय हुआ। विस्मय इस कारण कि रेवा ने त्याग-पत्र इस कारण दिया था कि वह अपने विवाहित जीवन मे नर्सिंग होम में रहती हुई वैसा काम अब नही कर सकेगी जैसा पहले करती थी। सब

विचार कर रहे थे कि क्या सत्यवती सेठ जी का घर छोड़ नर्सिंग होम में जाकर रहेगी।

सत्यवती मुस्करा रही थी और एक प्रकार से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर रही थी। प्रश्न रेवा ने ही किया, "तो मां ! तुम यह कार्य स्वीकार करती हो ?"

"हां ! मैंने निश्चय किया है कि मैं वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश ले लूं।"

"अकेली ही ?" रेवा का अगला प्रश्न था।

"इसका निर्णय अकेले-अकेले ही किया जाता है। यह विवाह नहीं कि पति-पत्नी दोनों मिलकर किसी प्रकार के बन्धन में अपने को बांधें ?"

"तो श्रीमती सत्यवती जी यह स्वीकार करती हैं ?" सेठ जी का प्रश्न था।

"हां ! मैं इसकी अनुमति पहले ही दे चुकी हूं।"

"अतः मेरा ट्रस्ट के सदस्यों से यह प्रस्ताव स्वीकार करने का अनुरोध होगा।"

इस पर निरंजन देव ने कहा, "जब तक नया बोर्ड रजिस्ट्रार के द्वारा स्वीकृत नहीं होता, तब तक हम इसमें राय नहीं दे सकते।"

"वह सब पीछे हो जाएगा। कानूनी कार्यवाही वकील के द्वारा करवा ली जाएगी। यदि किसी प्रकार की कानूनी आपत्ति हुई तो उसको हटाने का उपाय कर लिया जाएगा।"

सब चुप रहे तो सेठ जी ने कहा, "मैं समझता हूं कि मेरा यह प्रस्ताव भी स्वीकार हुआ है ?

"अब मेरा ट्रस्ट के अतिरिक्त भी एक प्रस्ताव है। उसके विषय में मैंने डाक्टर निरंजन देव से पहले ही बातचीत कर रखी है। वह यह कि विश्वेश्वर और कमला रेवा के साथ ही जाकर रहेंगे।"

रेवा ने प्रश्नभरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखा। निरंजन मुस्करा रहा था।

ऐसा प्रतीत होता था कि इस प्रस्ताव के विषय में मृदुला पण्डित से भी बातचीत हो चुकी थी। वह भी मुस्कराती हुई रेवा की ओर देख रही थी।

"परन्तु पिता जी ! यह बात हम घर जाकर विचार करेंगे।"

"मेरा यह प्रस्ताव है, आदेश नहीं। इसका उत्तर तुम दोनों विचार कर दो। यहां विचार कर लो अथवा अपने घर जाकर विचार कर लो।

"बात यह है कि मैं यहां अपने घर का चित्र बदल रहा हूं। सत्यवती वानप्रस्थ ले रही है। वह नर्सिंग होम को अपना वानप्रस्थ आश्रम बनाकर रहेगी। मैं कहां रहूंगा, अभी जानता नहीं। इस कारण इस शिशु और इसकी दाई का प्रबन्ध मैं कर रहा हूं। मैंने शिशु के विषय में डाक्टर निरंजन देव से उनके हनीमून जाने से पूर्व विचार किया था और वह मान गए थे। रही बात उसकी दाई की। मैंने

उसका जीवन भर का वजीफा दो सौ रुपये महीना लिखा रखा है। वह उसे दुकान से मिलता रहेगा।"

"हम घर चलकर इस विषय पर विचार करेंगे।" रेवा का कहना था।

"ठीक है। अपना निर्णय शीघ्रातिशीघ्र बता देना।"

"परन्तु," निरंजन देव ने कहा, "विश्वेश्वर तो मेरे साथ आज ही जाएगा। रही बात कमला जी की। वह रेवा घर चलकर विचार कर लेगी।"

"परन्तु इससे तो बच्चा उदास रहने लगेगा?" रेवा का प्रश्न था।

"तो तुम कमला जी की सेवाएं ले लेना। बच्चा तो मुझको प्रिय है और मैं आशा कर रहा हू कि मेरे घर मे होने वाले बच्चो मे इसका नम्बर एक होगा।"

रेवा इस सब गोरख-धन्धे को समझ नही रही थी। वह विस्मय कर रही थी कि उनकी पन्द्रह दिन की अनुपस्थिति मे क्या कुछ उथल-पुथल हो गया है। वह इस पर भी चुप रही।

इसके उपरान्त रेवा सरोजिनी से पता करने लगी। यह मध्याह्न के भोजन के पूर्व था। जब सब लोग अपने-अपने विषय मे बातचीत कर रहे थे तो रेवा सरोजिनी को लेकर अपने पूर्व के बैडरूम मे चली गई। वहा उसे ले जाकर उसने पूछा, "मेरी अनुपस्थिति मे क्या हुआ है?"

"बहुत कुछ हुआ है। और उसका कुछ थोड़ा-सा ही दर्शन तुमको हुआ है।"

"तो इससे भी कुछ अधिक हुआ है?"

"हा! यहा तो केवल नर्सिंग होम और उसके ट्रस्ट से सम्बन्धित बातों का ही प्रबन्ध पिता जी ने बताया है। हा, विश्वेश्वर की बात उससे पृथक हुई है।"

"क्या?"

"सेठ जी ने अपनी सम्पत्ति का दान पत्र लिख दिया है और उसमें कुछ मेरे लिए भी लिखा है।"

"और मेरे लिए?"

"वह तो है ही। यह कमला भी है और साथ में विश्वेश्वर भी है।"

"मेरे मन में तो यह लगभग निश्चय ही है कि पिता जी का इससे विशेष सम्बन्ध है।"

"यह तो दान-पत्र देखकर ही निश्चय हो रहा है। परन्तु रेवा! जब यह लिखा-पढ़ी हुई तो उसमें पिता जी ने कहा है कि यह मेरी सम्पत्ति मेरी अपनी अर्जित है और मैं इसे अपने जीवन काल मे ही दे रहा हूं। अपने लिए और अपनी पत्नी के लिए मैंने इसमें से पृथक कर लिया है।"

"पर पिता जी बम्बई तो छोड नही रहे?"

"वह कहते हैं कि वह और माता जी ट्रस्ट का काम ट्रस्ट के भवन में रहते हुए करेंगे और अब व्यापार नहीं करेंगे।"

"सिद्धेश्वर क्या कहता है ?"

"मैं उससे अभी मिली नहीं। बात यह है कि नर्सिंग होम से तुम्हारे चले जाने से मेरा काम बढ़ गया है और मुझे यहां आकर पता करने का अवसर ही नहीं मिला।"

रेवा को इस सब में कुछ कारण समझ नहीं आया।

8

मध्याह्नोत्तर रेवा अपने पति और सास मिसेज़ पण्डित के साथ पति के निवास स्थान फोर्ट एरिया में जा पहुंची। निरंजन देव ने विश्वेश्वर को अपनी मां के पास गाड़ी में बैठाया हुआ था। स्वयं वह अगली सीट पर ड्राईवर के पास बैठा हुआ था।

घर पर पहुंचते ही डाक्टर के सेवक ने, जो पीछे मकान की देख-रेख के लिए वहां रहा था, इनसे पूछा, "क्या बनेगा—चाय अथवा कॉफी ?"

"कॉफी !" रेवा ने कहा, "मेरा मस्तिष्क बहुत चकरा रहा है। इसको स्थिर करने के लिए कॉफी अधिक उपयुक्त होगी।"

निरजन देव की मां ने मुस्कराते हुए सेवक से कहा, "देखो ! शीघ्र बना दो। मैं नर्सिंग होम को लौट रही हूं।"

"माता जी ! मैं भी चलूं ?"

"तुम लम्बी यात्रा से आई हो। आज विश्राम कर लो। कल चलना और क्वार्टर में जा, जो कुछ अपना लाने योग्य सामान होगा, ले आना। सेठ जी ने कहा है कि आगामी मगल के दिन वह वहां आ जाएंगे।

"सेठ जी के आने से वहां प्रबन्ध के बंटवारे में भी अन्तर पड़ेगा। वह अगले सप्ताह विचार होगा। परन्तु तुमको अपनी नर्सरी यहां बसानी चाहिए।"

इस पर निरजन देव हंस पड़ा। परन्तु उसने कुछ कहा नहीं।

कॉफी आई और सबने पी। कॉफी पीकर मिसेज़ पण्डित चली गईं।

अब विश्वेश्वर रेवा की टांगों में खड़ा था। उसने ही सबसे पहली बात की, "दीदी ! मौसी नहीं आई ?"

वह रेवा को दीदी ही कहकर सम्बोधन करना सीखा था और कमला को वह मौसी के नाम से बुलाया करता था।

निरंजन ने कह दिया, "देखो रानी ! जब तुम्हारे पिता जी ने विवाह से पूर्व तुम्हारे जीवन का वृत्तान्त बताया तो उन्होंने यह भी बताया कि तुम्हारे [illegible] हुआ था और वह बच्चा तुम्हारे ज्ञान में मर चुका है।"

"पिता जी" रेवा ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "[illegible]

[illegible]

हैं। वैसे वह अभी कुछ बड़ी आयु के है तो नहीं। मैं समझती हूं कि पचास के लग-भग ही हैं, परन्तु वे एक बालक की भांति सब कुछ उगल गए है।"

"हां, परन्तु जैसे काले कपड़े पर श्वेत वस्तु और भी उज्ज्वल दिखाई देती है, इसी प्रकार तुम्हारे पूर्व के व्यवहार की पृष्ठभूमि पर पिछले डेढ़-दो वर्ष के नर्सिंग होम में सेवा कार्य की शोभा बढ़ गई थी और मैं तुमसे उत्कट प्रेम करता हूं। सेठ जी की स्पष्टवादिता के लिए तो मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं।

"हां, तो वह बच्चा जिसे तुम मर गया जानती हो, वह यही विश्वेश्वर है। तुम्हारे पिता जी ने उसे डाक्टर रमज़ान से पांच सौ रुपये पर मोल लेकर कमला जी के पास पालने के लिए रख दिया था।"

रेवा अवाक् डाक्टर का मुख देख रही थी। डाक्टर ऐसे बात कर रहा था मानो वह सब कुछ पहले ही जानता है। डाक्टर ने आगे बताया, "जब विश्वेश्वर एक वर्ष का हुआ तो सेठ जी उसे अपने घर ले आए और फिर उन्होंने उसे गोद ले लिया। तुम पुनः विवाह करोगी अथवा नहीं और विवाह में तुम्हारा पति इस बच्चे को ग्रहण करेगा अथवा नहीं, यह निश्चय नहीं था। इस कारण उन्होंने उसे गोद लेने की रस्म की थी जिससे तुम्हारा बच्चा निराश्रय न रहे।

"जब तुमसे विवाह करने वाला कोई प्रत्याशी आया तो उन्होंने तुम्हारी माता जी से यह सब योजना विचार कर ली थी। उस योजना का पहला अंग ही था कि उन्होंने तुम्हारे विषय में सब बताकर मुझे पूछा कि मैं अब क्या समझता हूं।

"मैं उस समय तो भौंचक्का होकर कुछ कह नहीं सका। रात भर मैं विचार करता रहा। बहुत विचारोपरान्त मैंने भी योजना बनाई। मैं भी तो विधुर हूं। मेरी पत्नी को भी गर्भ था, परन्तु वह गर्भपात का हठ करने लगी। मैंने उसे सरकारी मैटर्निटी हस्पताल में भेज दिया। उसने गर्भपात कराया, परन्तु स्वतः रुग्ण शैय्या पर लेट गई। तीन मास तक बीमार रहकर उसने प्राण छोड़ दिए।

"इस घटना को हुए दो वर्ष हो चुके थे कि मेरी दृष्टि तुम पर पड़ी। यह नर्सिंग होम में तुम्हारे काम करने के दिनों की बात है।

"वैसे तो पहले ही दिन से मैंने तुमको पसन्द कर लिया था, परन्तु विचार के परिपक्व होने में और फिर मां से तुम्हारी जीवनचर्या सुन उसपर चिन्तन करने में समय लगा था। यह है मेरे प्रस्ताव की पृष्ठभूमि।

"उस रात जब सेठ जी ने तुम्हारे पूर्व जीवन की बात बताई तो मैं बहुत विचार करता रहा। अन्त में पूर्ण विचार कर इसी निश्चय पर पहुंचा कि मुझे इस जीवन सागर में छलांग लगानी चाहिए। मेरा अनुमान था कि तुम अभी सर्वथा तरोताजा हो और पांच-छः बच्चों को जन्म दे सकोगी। साथ ही यह आश्वासन था कि विश्वेश्वर तो आएगा ही। बस, मैंने प्रातः सेठ जी को टेलीफोन पर अपना निश्चय बताया तो उनके साथ भोजन के समय मध्याह्न नर्सिंग होम में चल पड़ा।

"ऊटी से लौटने पर नर्सिंग होम में और उसके ट्रस्ट में परिवर्तन सेठ जी के अपने विचार किए हुए हैं। मैं उनमें रुचि नहीं रखता था। परन्तु जब सेठ जी ने परिवार का विघटन कर वानप्रस्थ लेने की बात बताई तो मैंने विश्वेश्वर को मांग लिया। तुम कमला को साथ नहीं लाई। यह तुम जानो। यदि तुम उसकी सहायता की इच्छा नहीं रखती तो सेठ जी उसका प्रबन्ध स्वयं करेंगे।

"मैं विश्वेश्वर को ले आया हूं। यह इसलिए कि यह तुम्हारा है और अब तुम मेरी हो। इस कारण यह मेरा है।"

"परन्तु मैं ऐसा अनुभव कर रही हूं कि मैंने 'कन्सीव' कर लिया है।"

"तब तो और भी ठीक है। यह नम्बर एक होगा और आने वाला नम्बर दो होगा।"

रेवा हंस पड़ी। वह बोली, "देख लीजिए। इसके पालन-पोषण का खर्च भी देना पड़ेगा।"

"यहां ईश्वर की कृपा है। तुम्हारे पिता जी की सहायता के बिना भी जीवन की गाड़ी चलाने की सामर्थ्य है।"

"मैं समझती हूं कि यदि मेरा अनुमान ठीक है कि मैं पुन: गर्भ धारण कर बैठी हूं तो कमला को यहां लाना ही होगा।"

"ठीक है।"

"मैंने तब कमला के विषय में इस कारण कहा था क्योंकि मैं विश्वेश्वर को कमला से पिता जी की सन्तान मानती थी। इस कारण उनकी प्रेमिका को उनसे पृथक करने का विचार नहीं रखती थी।"

निरजन देव हंस पड़ा। उसने कहा, "जो कुछ सेठ जी के विषय में मैं जान सका हूं, वह यह है कि वह साधु स्वभाव हैं।"

"मैंने सुना है कि पिता जी ने अपना दान-पत्र लिख दिया है?"

"यह मुझे मालूम नहीं। परन्तु उससे इस विश्वेश्वर को यहां लाने का कोई सम्बन्ध नहीं।"

रेवा ने पिता के घर पर टेलीफोन कर दिया। टेलीफोन सत्यवती ने उठाया तो रेवा ने कहा, "मां! तुमने तो मुझे बिल्कुल नंगी कर पति के घर भेजा है।"

"क्यों? क्या हुआ है? कुछ वस्त्रों की आवश्यकता है तो यहां से तुम्हारे लिए भेजे जा सकते हैं।"

रेवा हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मां! मैं यह नहीं कह रही। मेरा मतलब है कि तुमने मेरा सब इतिहास डाक्टर साहब को बता दिया है। यहां तक कि जो मुझे पता नहीं था, वह भी उनको बता दिया है।

"विश्वेश्वर के विषय में तो मुझे पता नहीं था, वह भी डाक्टर साहब को बता दिया।"

"तो इससे कुछ कष्ट हो रहा है। कुछ है तो बताओ। जो कुछ बताया है, वह तुम्हारी अपनी ही करनी है। उसका फल तुम्हारी अपनी ही करनी का होगा। अच्छा अथवा बुरा, वह हमारा किया नहीं। हां, उससे यदि कुछ कष्ट हो तो बताओ। तुम्हारे पिता जी उसका भी कुछ प्रतिकार कर सकेंगे।"

"अभी तक तो सब ठीक है। हां, यहां एक समस्या और हो गई है। इस मास मैं रजस्वला नहीं हुई और मुझे समझ आ रहा है कि विश्वेश्वर का कोई बहन-भाई आ रहा है।"

"तब तो ठीक ही है। डाक्टर कैसा अनुभव कर रहा है?"

"वह अपनी बहादुरी पर बगलें बजा रहे हैं।"

सत्यवती हंस पड़ी और बोली, "मैं समझती हूं कि कमला को वहां भेज देना चाहिए। उसको रखने का प्रबन्ध कर लो।

"और देखो! उसके हाथ तुम्हारे पिता तुम्हें एक लिफाफा भेज रहे हैं। वह उनके दान-पत्र की एक प्रति है। उसमें कुछ तुम्हारे विषय में और कुछ कमला के विषय में भी है।

"वह तुम अपने पति को भी दिखा देना। उनके विषय में भी कुछ उसमें लिखा है।"

जब रेवा ने टेलीफोन बंद किया तो डाक्टर ने पूछा, "क्या कह रही हैं माता जी।"

"कमला आ रही है और पिता जी के दान-पत्र की एक प्रति ला रही है।"

"तो अब?" निरंजन देव ने कहा।

"अब मैं थक गई और प्रस्ताव कर रही हूं कि रात के खाने के समय तक आराम किया जाए।"

अगले दिन डाक्टर निरंजन देव को अपने क्लीनिक में जाना था और रेवा ने नर्सिंग होम से अपना सामान इत्यादि लाने जाना था।

अतः दोनों प्रातः जाने के लिए तैयार हो अल्पाहार लेने लगे।

अल्पाहार डाक्टर लेता था—दूध, दलिया, टोस्ट, मक्खन और पीछे कॉफी। यही पति-पत्नी दोनों के लिए तैयार था। कमला और विश्वेश्वर भी खाने की मेज पर बैठ दलिया ले रहे थे।

विश्वेश्वर ने पूछा, "दीदी! कहां जा रही हो?"

"अपने काम पर।"

"वह कहां है?"

"यहां से दूर है।"

"और कब आओगी?"

"किसलिए पूछ रहे हो?"

"मैं माता जी से मिलने चलूंगा।"
"कहां चलोगे?"
"उनके घर।"
"वह वहां नही हैं।"
"तो कहां हैं?"
"चलो, तुम्हें ले चलती हूं।"
विश्वेश्वर प्रसन्नता से रेवा के मुख पर देखने लगा। इस पर डाक्टर ने कहा, "दीदी का धन्यवाद कर दो।"
"वह क्या होता है।"
"वह तुम को माता जी के पास जो ले जा रही है।"
दो-तीन वर्ष का बालक इस सब का अर्थ नही समझ सका।
इस पर निरजन देव ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं लंच एक बजे लेने आ जाया करता हूं।"
"मैं भी यत्न करूंगी कि उससे पहले ही लौट आऊं। इस पर भी यदि किसी कारण से वहां के समय पर न आ सकी तो टेलीफोन कर दूंगी।"
"ठीक है।"
नर्सिंग होम में रेवा के पहुंचने से पहले ही सत्यवती पहुंची हुई थी। वह कार्यालय मे बैठी काम देख रही थी। इस समय पैंतालीस बैड पर जच्चा थी। कुछ के बच्चे हो चुके थे और कुछ के प्रसव में एक-दो दिन की देरी थी। पांच थीं जिनके उसी दिन प्रसव होने की आशा की जा रही थी। डाक्टर मिसेज पण्डित नए केसिज का निरीक्षण कर रही थी। वे नर्सिंग होम में दाखिल होने के लिए आए थे।

आजकल डाक्टर मृदुला पण्डित की सहायता के लिए दो अन्य डाक्टर थे। एक की ड्यूटी दिन के समय थी और एक की रात के समय।

रेवा वहां पहुंची तो उसके स्थान पर सत्यवती बैठी थी। डाक्टर से प्रवेश की स्वीकृति प्राप्त कर प्रसूता कार्यालय में आती थी। नए आए केसिज में से दो आ चुकी थी और डाक्टर का सर्टिफिकेट देख सत्यवती उनका नाम दर्ज कर रही थी। एक दम्पत्ति सामने बैठा था और दूसरी प्रसूता के साथ एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री थी।

वह क्लर्क अपनी पत्नी का सर्टिफिकेट सत्यवती के सामने रख पढ़ने लगी। रमणी, आयु अट्ठारह वर्ष, प्रथम प्रसव, अनुमानित तिथि पांच सितम्बर सायंकाल। सब प्रकार से स्वस्थ और सामान्य केस है।

सत्यवती ने पढ़ा और सामने बैठे व्यक्ति से पूछा, "आपका नाम?"
"ए० रौमुले।"

"कहां के रहने वाले है ?"

"हैदराबाद का। रेलवे में बम्बई सैण्ट्रल स्टेशन पर टिकट क्लेक्टर का काम करता हू।"

सत्यवती ने पांच दिन का भाड़ा दस रुपये मांग लिया।

वह बाबू बोला, "मैं आज तो रुपये लाया नही। जो कुछ लाया था, वह टैक्सी पर व्यय हो गया है। कल आऊंगा तो जमा करा दूंगा।"

सत्यवती ने बिल के आगे उधार लिखा। पर्चा सामने रखी ट्रे में रख दिया और मेज पर रखी घटी बजाई। एक नर्स आई तो सत्यवती ने कहा, "इस देवी को नम्बर दस में ले जाओ और वहां इसकी देख-रेख भली-भांति हो। इसके साथ कोई नहीं।"

नर्स उसे लेकर चली गई तो सत्यवती दूसरे केस को देखने लगी।

वह एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री के साथ आई थी। उसका डाक्टर का सर्टिफिकेट देखा तो सत्यवती ने सात दिन के चौदह रुपये मांग लिए।

प्रौढ़ावस्था की स्त्री ने कहा, "हम दोनों के भोजन की व्यवस्था यहां होगी। हमारा कोई सेवक नही जो भोजन ला सके।"

"दो प्राणियों के भोजन के दो रुपये नित्य के हिसाब से चौदह रुपये जमा कर दें।"

उस स्त्री ने अट्ठाईस रुपये जमा कराए तो सत्यवती ने घटी बजाई और नर्स को बता दिया, "इनको कमरा नम्बर पैंतीस मे ले जाओ।" साथ ही सत्यवती ने भोजन का कार्ड दे दिया।

अभी अगला रोगी आया नही था। इस कारण सत्यवती ने रेवा से पूछा, "सुनाओ, स्वास्थ्य कैसा है ?"

रेवा ने विस्मय मे मां को देखते हुए पूछा, "तो किसी ने मेरे बीमार होने की सूचना दी है ?"

"तुमने ही कल टेलीफोन पर कहा था कि तुम्हारे दिन चढ़ गए हैं।"

"तो यह बात है ? मां ! अब तक तो ठीक हू।"

"रजस्वला होने की तिथि से अनुमान लगाया था। आज चार दिन ऊपर हो गए हैं।"

सत्यवती मुस्कराई और बोली, "किबल अर्ज मर्ज बा वेला।"

"परन्तु मा ! यह है। मैं अनुमान करती हूं।"

सत्यवती ने बात बदल दी और कहा, "अपना कमरा खाली कर दो। सरोजिनी को मैंने एक पृथक कमरा दे दिया है। तुम्हारे कमरे मे मैं और तुम्हारे पिता रहेंगे।"

"तो पिता जी भी यहां के प्रबन्ध में काम करेंगे ?"

"नहीं ! वह भगवान की भांति शेषनाग की शय्या पर विश्राम किया करेंगे।"

रेवा विस्मय में मुख देखती रह गई। बात सत्यवती ने ही की, "शेषनाग है कोमल गद्दा और वह अपना रचना-कार्य समाप्त कर उसपर विश्राम करेंगे।

"लक्ष्मी, जो उन्होंने जीवन के पिछले पचीस वर्ष से पैदा की है, वह उनके चरण दबाएगी।"

रेवा ने मुस्कराते हुए पूछा, "और भगवान अब नया क्या रचने वाले हैं ?"

"वह अन्तर्ध्यान हो चिन्तन करते हुए नियोजित करेंगे।"

"तो नई सृष्टि की योजना बनाएंगे ?"

"यह तो है ही। चेतन तत्व निश्चल बैठ ही नहीं सकता। विश्राम के उपरान्त क्रियाशील जीवन आएगा ही।"

"मैं लंच के समय से पहले लौट आऊंगी।"

"ठीक है। सामान बांध लो और तैयार हो जाओ।"

रेवा मुस्कराई और अपने क्वार्टर में चली गई। सरोजिनी भी वहां अपना सामान बटोर रही थी। रेवा को आते देख सरोजिनी ने पूछा, "तो आ गई हो तुम ?"

"हां, नए मालिकों की आज्ञा हो गई है। स्थान खाली करना चाहिए।"

"मुझे भी कमरा नम्बर पांच मिल गया है। वह इससे कुछ छोटा है, परन्तु मैं अब अकेली हूं।"

"वीरभद्र का समाचार है कि वह मिलीटरी अकादमी की प्रथम श्रेणी में प्रवेश पा गया है। तीन वर्ष में कमीशन पा जाने की आशा कर रहा है।"

जब रेवा अपना सामान बटोरने लगी तो सरोजिनी ने दो प्याले कॉफी के लिए रेस्ट्रां में कहला भेजा।

रेवा ने अपना सूटकेस तैयार किया। तब तक कॉफी आ चुकी थी। दोनों सहेलियां बैठ कॉफी लेने लगीं। रेवा ने बताया, "विश्वेश्वर साथ में आया था। डाक्टर मिसेज पण्डित ने उसे अपने क्वार्टर की सेविका के हवाले कर कहा कि इसे शर्बत पिलाओ। शर्बत के लोभ में वह डाक्टर की सेविका के साथ चला गया है।"

सरोजिनी ने पूछा, "तुम्हारे पति को विश्वेश्वर पसन्द आया प्रतीत होता है। कल वह उसे अपने घर ले जाने में प्रसन्नता अनुभव कर रहा था।"

रेवा हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "वह जान गया है कि विश्वेश्वर मेरा लड़का है, जिसे मैं मर गया समझ रही थी।"

'ओह !'

"हां ! पिता जी ने मुझसे भी छलना खेली है। दो वर्ष तक वह मुझे मूर्ख बनाते रहे थे। अपने घर ले जाकर ही डाक्टर साहब ने मुझे बताया कि वह उसे क्यों अपने घर ले गए हैं। वह बोले कि वह जान गए हैं कि यह मेरा लड़का है और

मैं उनकी हो गई हूं, इस कारण लड़का भी उनका हो गया है।"

"और लड़का कैसा अनुभव करता है?"

"अभी तो वह अपनी दाई कमला से प्रसन्न है। रात वह उसी के कमरे में सोया था और अब मिसेज़ पण्डित उसे अपने अनुकूल करने लग गई हैं।"

"वैसे है वह बहुत ही प्यारा लड़का।"

बारह बजे उसने टैक्सी मगवाई और अपना सामान टैक्सी में रख रेवा ने विश्वेश्वर को बुला भेजा। पहले तो उसने जाने से इन्कार कर दिया, परन्तु जब उसे कहा कि उसकी मौसी प्रतीक्षा कर रही होगी तो वह तैयार हो गया।

तृतीय परिच्छेद

रेवा के एक लड़का और हुआ। वह विश्वेश्वर से अधिक सुन्दर और स्वस्थ था। सेठ जी से मिली सम्पत्ति के द्वारा डाक्टर निरंजन ने मातुंगा में अपना एक मकान बना लिया था। इस पर पांच लाख रुपये खर्च आया था। भूमि 'बम्बई विकास विभाग' से एक लाख रुपये में ली गई थी।

रेवा को पांच लाख रुपया पिता की सम्पत्ति से मिला था और पांच लाख विश्वेश्वर को।

दूसरा बच्चा भी एक वर्ष से बड़ा हो चुका था और रेवा घर के प्रबन्ध मे लीन रहती थी। एक दिन रेवा मध्य के भोजन के लिए पति की प्रतीक्षा कर रही थी। विश्वेश्वर नर्सिंग होम में अपनी दादी के पास रहता था। वह अब नर्सरी स्कूल में जाने लगा था। छोटा बच्चा रेवा के पास था। ठीक समय पर डाक्टर निरंजन देव आया और वह अपने साथ एक व्यक्ति को भी लाया।

रेवा ने देखा कि यह व्यक्ति देखा-भाला प्रतीत होता है। परन्तु वह स्मरण नहीं कर सकी थी कि उसने उसे कहां देखा है।

निरंजन देव ने अपनी पत्नी का परिचय करा दिया, "यह है रेवा पण्डित। मेरी पत्नी।"

उस व्यक्ति ने मुस्कराते हुए हाथ जोड़कर नमस्ते की और फिर कहा, "आप मुझे पहचान रही प्रतीत होती हैं?"

"हां! ऐसा समझ आता है कि इसी जन्म में आपको कहीं देखा है। परन्तु स्मरण नहीं आ रहा, कब और कहा देखा है।"

उस व्यक्ति ने कहा, "जिस दिन आपके पहला लड़का उत्पन्न हुआ था, मैं उस समय डाक्टर रमजान के नर्सिंग होम में प्रतीक्षा करने के कमरे में बैठा था। आपके पिता जी को मैंने बताया था कि मैं अपने बच्चे को अपने अधीन लेने आया हूं।"

यह कैलाशनाथ अवस्थी था। अवस्थी ने आगे कहा, "मेरा विश्वास था कि बच्चा मेरा है। अतः मैं डाक्टर रमजान से मिला। डाक्टर रमजान ने मुझे सेठ जी से मिला दिया। सेठ जी से यह निश्चय हुआ था कि बच्चे का पालन वह ही करेंगे, परन्तु मैं उससे जब चाहूंगा, मिल सकूंगा और जब वह कुछ बडा होगा तो उसको ले जाने पर विचार कर लिया जाएगा।

"आपके पिता जी की बच्चे को ले जाने पर यह भी आपत्ति थी कि

मैं उनकी हो गई हूं, इस कारण लड़का भी उनका हो गया है।"

"और लड़का कैसा अनुभव करता है?"

"अभी तो वह अपनी दाई कमला से प्रसन्न है। रात वह उसी के कमरे में सोया था और अब मिसेज़ पण्डित उसे अपने अनुकूल करने लग गई हैं।"

"वैसे है वह बहुत ही प्यारा लड़का।"

बारह बजे उसने टैक्सी मगवाई और अपना सामान टैक्सी में रख रेवा ने विश्वेश्वर को बुला भेजा। पहले तो उसने जाने से इन्कार कर दिया, परन्तु जब उसे कहा कि उसकी मौसी प्रतीक्षा कर रही होगी तो वह तैयार हो गया।

तृतीय परिच्छेद

रेवा के एक लड़का और हुआ। वह विश्वेश्वर से अधिक सुन्दर और स्वस्थ था। सेठ जी से मिली सम्पत्ति के द्वारा डाक्टर निरजन ने मातुंगा में अपना एक मकान बना लिया था। इस पर पांच लाख रुपये खर्च आया था। भूमि 'बम्बई विकास विभाग' से एक लाख रुपये में ली गई थी।

रेवा को पांच लाख रुपया पिता की सम्पत्ति से मिला था और पांच लाख विश्वेश्वर को।

दूसरा बच्चा भी एक वर्ष से बड़ा हो चुका था और रेवा घर के प्रबन्ध में लीन रहती थी। एक दिन रेवा मध्य के भोजन के लिए पति की प्रतीक्षा कर रही थी। विश्वेश्वर नर्सिंग होम में अपनी दादी के पास रहता था। वह अब नर्सरी स्कूल में जाने लगा था। छोटा बच्चा रेवा के पास था। ठीक समय पर डाक्टर निरजन देव आया और वह अपने साथ एक व्यक्ति को भी लाया।

रेवा ने देखा कि यह व्यक्ति देखा-भाला प्रतीत होता है। परन्तु वह स्मरण नहीं कर सकी थी कि उसने उसे कहां देखा है।

निरजन देव ने अपनी पत्नी का परिचय करा दिया, "यह है रेवा पण्डित। मेरी पत्नी।"

उस व्यक्ति ने मुस्कराते हुए हाथ जोड़कर नमस्ते की और फिर कहा, "आप मुझे पहचान रही प्रतीत होती हैं?"

"हां! ऐसा समझ आता है कि इसी जन्म में आपको कहीं देखा है। परन्तु स्मरण नहीं आ रहा, कब और कहां देखा है।"

उस व्यक्ति ने कहा, "जिस दिन आपके पहला लड़का उत्पन्न हुआ था, मैं उस समय डाक्टर रमजान के नर्सिंग होम में प्रतीक्षा करने के कमरे में बैठा था। आपके पिता जी को मैंने बताया था कि मैं अपने बच्चे को अपने अधीन लेने आया हूं।"

यह कैलाशनाथ अवस्थी था। अवस्थी ने आगे कहा, "मेरा विश्वास था कि बच्चा मेरा है। अतः मैं डाक्टर रमज़ान से मिला। डाक्टर रमज़ान ने मुझे सेठ जी से मिला दिया। सेठ जी से यह निश्चय हुआ था कि बच्चे का पालन वह ही करेंगे, परन्तु मैं उनसे जब चाहूंगा, मिल सकूंगा और जब वह कुछ बड़ा होगा तो उसको ले जाने पर विचार कर लिया जाएगा।

"आपके पिता जी को बच्चे को ले जाने पर यह भी आपत्ति थी कि मेरी

पत्नी, जो उन दिनों लंदन में थी, बच्चे को पसन्द करेगी अथवा नहीं? निश्चय नहीं था।

"मैं पिछले तीन वर्ष तक भारत नहीं आ सका। पिछले वर्ष मेरी पत्नी का देहान्त हो गया है। अब मैं वहां का सेवा कार्य छोड़ आया हूं और यहां रहने का मन में विचार कर लिया है। बच्चा ले जाने का विचार बना सेठ जी से मिला हूं। सेठ जी ने मुझे इन डाक्टर साहब की मां के पास भेज दिया। वहां मैं विश्वेश्वर को देख इनकी माता जी से भी बातचीत कर आया हूं।"

रेवा पहले तो बहुत घबराई। उसे स्मरण आ गया था कि वह व्यक्ति उससे एक ही बार मिला था और उसे भी विश्वास हो रहा था कि लड़का उसी सम्बन्ध का परिणाम है।

रेवा ने सैण्टर टेबल पर लगी घंटी का बटन दबाया। सेवक आया तो उसे सबके लिए कॉफी लाने के लिए कह दिया।

इस पर निरंजन देव ने कह दिया, "मैं इनको लंच लेने का निमंत्रण देकर ही यहां लाया हूं। कॉफी हम पीछे पियेंगे।"

रेवा ने कहा, "तब ठीक है। बातचीत खाना खाते हुए ही करेंगे।"

रेवा को समय मिल गया अपना व्यवहार निश्चय करने का। एक बार उसने व्यवहार निश्चय किया तो वह निश्चिन्त हो नौकर से बोली, "भोजन लगा दो।"

भोजन लगा, तो सब खाने बैठ गए। कमला भी वहां बैठी थी। वह अब रेवा के दूसरे बच्चे की दाई का काम करती थी।

कुछ देर तक भोजन चुपचाप लेते रहने के उपरान्त बात रेवा ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "देखिए जी! मैं आपकी शक्ल-सूरत पहचान गई हूं। मुझे भलीभांति स्मरण आ गया है कि मैंने आपके साथ ताज होटल के एक कमरे में कुछ समय व्यतीत किया था। परन्तु न तब और न ही अब मैं आपका नाम-धाम जानती हूं। ऐसे संयोगों से यदि कोई सन्तान हो तो वह मां की होती है।

"यह कुछ इस प्रकार है जैसे किसी खेत के समीप से कोई अन्न से भरा छकड़ा गुज़रा हो और उसमें से कोई दाना खेत में गिर जाए तो उससे जो अनाज उत्पन्न होगा, उस पर दावा छकड़े वाले का नहीं माना जा सकता।

"आपका दावा मैं खारिज करती हूं। उसमें कोई तथ्य नहीं समझती।"

"परन्तु मैं उस लड़के को देख आया हूं और मेरे मन में उसके लिए प्यार उमड़ रहा है। यह सबसे बड़ा कारण है कि बच्चा मुझे मिलना चाहिए। आपने तो उसे 'डिस्पोज़ ऑफ' कर दिया था।"

"नहीं श्रीमान्? इस अनिच्छित गिरे दाने के आप दावेदार नहीं बन सकते।"

"परन्तु आपके पिता जी तो मेरा दावा मानते हैं?"

"तो फिर उनसे बात करिए। वे ही इसका समाधान करेंगे।"

"मैंने उनसे कहा है। वह कहते हैं कि मुझे अपना दावा आपके सम्मुख सिद्ध करना चाहिए। इस कारण यहां आया हूं।"

"तो युक्ति से आपका दावा सिद्ध नहीं हुआ? जैसे छकड़े वाला किसी एक-आध दाने के किसी खेत में गिर जाने से उस दाने की उपज का मालिक नहीं बन जाता, उसी प्रकार इस बच्चे पर आपका दावा नहीं। अतः आपका दावा रद्द है।"

कैलाशनाथ अवस्थी युक्ति से पराजित हो गया और चुपचाप रेवा का मुख देखता रह गया।

इस समय निरंजन देव ने उससे पूछ लिया, "आपके अपनी पत्नी से कोई सन्तान है अथवा नहीं?"

"केवल एक लड़की है। वह इस समय दस वर्ष की है और लंदन में एक स्कूल में पढ़ती है।"

"और आपने," निरंजन देव ने आगे पूछा, "रेवा जी को इस बच्चे का जन्म देने और पालन करने के लिए क्या कुछ दिया है?"

"मैं सब प्रकार का खर्च देने के लिए तैयार था, परन्तु सेठ जी ने कह दिया कि रुपया उनके पास बहुत है। इसकी आवश्यकता नहीं।"

"परन्तु मिस्टर अवस्थी! मैंने इस रेवा रूपी खेत को प्राप्त करने के लिए यत्न किया है। कुछ व्यय भी किया है। इस कारण इसकी उपज पर भी मैंने अधिकार किया हुआ है। आगे भी यदि कुछ उत्पन्न हुआ तो उसका भी हकदार मैं हूं। परन्तु आपका दावा अयुक्त है।"

"तो मैं सेठ जी से बात करना चाहूंगा।"

"सेठ जी का मेरे घर की उपज पर किसी प्रकार का दावा नहीं। आप उनके पास जा सकते हैं।"

इसके उपरान्त भोजन की समाप्ति तक कोई नहीं बोला। सब चुपचाप भोजन करते रहे। भोजन समाप्त हुआ तो सब ने सैंक में हाथ धोए, कुल्ला किया और फिर ड्राइंग-रूम में आ बैठे।

वहां बैठते ही कमला ने कहा, "मैं समझती हूं कि विश्वेश्वर पर सबसे अधिक मेरा दावा है। मैंने उसकी चार वर्ष तक सेवा की है।

"मुझ से उतर कर ही बच्चे पर दावा रेवा जी का है। परन्तु अवस्थी जी! आपका दावा क्या है? मैं समझ नहीं सकी।

"आपने अपनी वासना तृप्ति के लिए कुछ यत्न किया था। उसका फल आपको तब ही मिल गया था। शेष जो कुछ हुआ, वह मेरे और रेवा जी के भीतर है। आप बीच में कहां से आ गए हैं?"

अवस्थी ने कहा, "मैं सेठ जी से मिलने जा रहा हूं। कदाचित् वह मेरी बात को समझ सकें।"

कैलाशनाथ अवस्थी गया तो रेवा ने कह दिया, "जीवन व्यतीत होने के साथ मैं उत्तरोत्तर अनुभव कर रही हूं कि एक भ्रममूलक विचार से अपने में बे-लगाम जीवन व्यतीत करने लगी थी।"

रेवा ने आगे बताया, 'फ्री लांसर्ज' के सदस्यों में एक देशपाण्डे मेरे सरकारी सचिवालय में सहयोगी थे। वह मुझे कुछ दिन हुए मिले थे। वह कह रहे थे कि अपने स्वतंत्र जीवन के पीछे भागते हुए वह उपदंश रोग में फंस गए थे। यद्यपि इलाज करवाने से वह अब स्वस्थ हो गए हैं, परन्तु जीवन में रस नहीं रहा। उनका स्वास्थ्य बरबाद हो चुका है और वह सेवा से निकाल दिए गए हैं।

"आजकल वह एक प्राईवेट फर्म में चार सौ रुपए महीना पर काम करते है।"

निरंजन देव का कहना था, "मुझे आपके पिता जी ने आपकी क्लब के विषय में बताया था। जब मुझे आपके विचारों के संकेत का ज्ञान हुआ तो मैं हैरान रह गया। मैंने आपके साधु स्वभाव और निर्मल चित्त वाले पिता जी से पूछा कि वह इन गुरु जी के चक्कर में कैसे फंस गए थे?

"वह बताने लगे कि मैं व्यापारी प्रकृति रखता हूं। व्यापारी प्रकृति में लेन-देन की बातें होती हैं। हम जो कुछ देते हैं, उसका उचित मूल्य अथवा प्रतिकार पा लेते हैं। इस कारण गुरु जी की कल्पनाओं तथा व्यवस्थाओं का विचार छोड़-कर मैं यह विचार करता था कि मैं गुरुजी से क्या प्राप्त कर सकता हूं। मैंने उनके आश्रम के एक विभाग के निर्माण के लिए साढ़े पांच लाख दिया था। गुरु जी मुझसे प्रसन्न थे।

"एक बार मैं लोकसभा की सदस्यता के लिए खड़ा हो गया। मैंने गुरु जी से आशीर्वाद मांगा। गुरु जी ने अपने शिष्यों को मेरे लिए काम करने को कह दिया और मैं संसद सदस्य चुन लिया गया।

"लोकसभा में भी मैं दस लाख खर्च करके गया था। तब एक महाराष्ट्रीय सदस्य सुरक्षा मंत्री थे। उनसे जान-पहचान थी। उन्होंने एक-दो बातें ऐसी बताईं कि एक वर्ष की सदस्ता में ही सब खर्च किया हुआ ब्याज सहित मैंने पैदा कर लिया। यह है व्यापारी प्रकृति।

"इसका गुरु जी की जीवन मीमांसा से सम्बन्ध नहीं है।"

डाक्टर निरंजन ने आगे बताया, "सेठ जी ने मुझे बताया है कि माता जी के व्यवहार से उनके विचारों में परिवर्तन आया है। माता जी नित्य भगवद्गीता का पाठ करती हैं और उसमें लिखे का चिन्तन करती रहती हैं।

"माता जी सेठ जी को अकर्म, कर्म तथा विकर्म के विषय में बताती रहती हैं। इसका प्रभाव सेठ जी पर यह हुआ है कि अब वह एक छींक भी लेते हैं तो उसमें भी पाप तथा पुण्य होता देखने लगते हैं।"

"यही कारण था कि पिता जी ने तुम्हें मेरे घर भेजने से पहले तुम्हारा पूर्ण वृत्तान्त बता दिया था। वह कहते थे कि वह इस कार्य में मौन रहने से निष्पक्ष नहीं रह सकते। और यदि वह कुछ नहीं बताएंगे तो वह धोखाधड़ी में सहयोग देना होगा।"

रेवा ने कहा, "परन्तु मुझे अवस्थी के विषय में वह अपनी पुरानी प्रकृति का ही पालन करते प्रतीत होते हैं। भला, इतनी सरल सी बात वह समझ नहीं सके कि चलते-फिरते वासना तृप्ति से कहीं सन्तान हो जाए तो उस सन्तान का स्वामी कौन हो सकेगा?"

निरंजन देव हंस पड़ा। उसने कहा, "स्वामी की बात तो मैं मान नहीं सकता। और न ही अवस्थी की, जो बालक का स्वामी बनने आया था।"

"स्वामी से मेरा अभिप्राय" रेवा ने कहा, "इसका पिता बनने के अधिकार से है।"

"परन्तु पिता और स्वामी में अन्तर है। पिता तो पालन करने वाले को कहते है। पालन करने वाला स्वामी नहीं होता।" डाक्टर का कहना था।

"तो क्या होता है?" समीप बैठी कमला ने पूछ लिया।

निरंजन देव ने आंखें मूंद विचार किया और फिर कहा, "पालन कर्त्ता में बहुत भाव छुपे प्रतीत होते हैं। एक तो सेवक का भाव भी है। इस सेवा का प्रतिकार उसे आत्मतुष्टि के रूप में प्राप्त होता है।

"पिता के भाव में अपने पितरों के ऋण उतारने का भी भाव है। जैसा हमारे पिता ने हमारे साथ व्यवहार किया है, उसका ऋण उतारने के लिए हम अपने पुत्र से भी वैसा ही करते हैं। इसे उधार लिया हुआ समाज को लौटाना कहते हैं।

"यह पिता का भाव उस आनन्द का मूल्य भी है जो पति को पत्नी अर्थात् बच्चे की मां से प्राप्त होता रहा है।

"और भी भावनाएं पिता-पुत्र के भाव मे हो सकती हैं।"

"तब तो पिता जी अवश्य कुछ विचार कर इस अवस्थी से सहानुभूति रखते होंगे।"

"हो सकता है। यदि उन्होंने अवस्थी की बात चलाई तो उनसे उनके अन्तर्भावों के विषय में पूछने का यत्न करेंगे।"

"हां, पिता जी का इस व्यक्ति को हमारे पास भेजने का क्या प्रयोजन हो सकता है, पता करना चाहिए।"

"तो आज सायंकाल चला जाए?"

"नहीं। पहले देखा जाए कि यह कैलाशनाथ अवस्थी यहां से पाए उत्तर को सेठ जी से बताता है अथवा नहीं और यदि बताता है तो सेठ जी के मन में उसकी क्या प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है।"

इस सबकी प्रतिक्रिया में कमला के मन में एक बात उठी। उसने कहा, 'रेवा बीबी। मैं विश्वेश्वर को यहां अपने पास रखने में अधिक कल्याण समझती हूं।"

डाक्टर निरंजन ने पूछ लिया, "कैसा कल्याण ? किसका कल्याण ?"

कमला का कहना था, "दोनों का। मेरा तथा विश्वेश्वर का। तीन-चार वर्ष से साथ-साथ रहते हुए हम दोनों के हित-अहित एक हो गए समझने लगी हूं। देखो, रेवा बीबी ! अब मुझे तुम्हारे और सेठ जी के साथ रहते हुए भी तीन वर्ष हो चुके हैं। इन वर्षों के सहजीवन से भी एक प्रकार की एकमयता उत्पन्न हुई है और मैं अपने हित आपके हित में जुड़ गए समझने लगी हूं।"

"हां, यही समाज है। समाज का निर्माण अध्यात्मवाद नहीं क्योंकि जीवात्माएं तो पृथक-पृथक हैं। वास्तव में शारीरिक सुख-सुविधाएं ही समाज बनने में कारण हो रही हैं।"

"इसके अनुरूप ही पति-पत्नी का सम्बन्ध है। यह शरीर का सम्बन्ध है। इसी कारण दाम्पत्य जीवन को समाज का बीज कहते हैं।"

"तब तो गुरु जी के कथन में भी कुछ आधार प्रतीत होने लगा है।" रेवा ने हंसते हुए कहा, "पुरुष-स्त्री का सम्बन्ध शरीर का ही है और जब शरीर तृप्त हो जाते हैं तो वे पृथक-पृथक हो जाने चाहिएं।"

"नहीं रानी !" डाक्टर ने कहा, "तृप्ति के उपरान्त सम्बन्ध निःशेष नहीं हो जाता। उस तृप्ति में जो साध्य है, वह ही तो रचने की इच्छा करने लगता है जिसमें पिता-पुत्र का और मां-बेटे का सम्बन्ध बनने लगता है।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं कि वासना तृप्ति पर पुरुष-स्त्री का सम्बन्ध समाप्त हो जाता है अथवा हो गया है। वह अपने सम्बन्ध में भावी सम्बन्ध का बीज छोड़ जाते हैं।

"उन सम्बन्धों को पृथक करने के लिए ही तो सन्तान निरोध के उपाय ढूंढ़े जा रहे हैं।" रेवा का कहना था।

"हां ! उठते हुए तूफान को घास-फूस के छाजन से रोकने का यत्न हो रहा है। प्रकृति की आंधी इतनी प्रबल है कि ये सब उपाय ऐसे उड़ जाते हैं जैसे घास-फूस का झोंपडा आंधी में उड़ जाता है।"

"परन्तु कई अवस्थाओं में तो यह तूफान रोका जा रहा है। सब सभ्य देशों में उत्पत्ति कम की जा रही है।"

"ठीक है। उनके झोंपड़े ईंट-चूने के बने होने से आंधी का मुकाबला करने में सफल हो रहे हैं, परन्तु उस सीमेण्ट-पत्थर के महल को उखाड़ डालने के लिए प्रकृति अन्य उपाय निर्माण कर रही है। वह है एटम बम, हाईड्रोजन बम और न्यूट्रोन बम।

"यह उपाय वही लोग निर्माण कर रहे हैं जो सन्तान निरोध के उपाय बना

रहे हैं। मेरा अभिप्राय है आधुनिक युग के वैज्ञानिक।

"देखो रेवा ! ये वैज्ञानिक एक ओर तो जीवन की रक्षा के लिए नई-नई औषधियां ढूंढ़ रहे हैं और दूसरी ओर जन-जन की हत्या का सामान ढूंढ़ रहे है। इस काल की यही विडम्बना है।"

रेवा मुख देखती रह गई।

2

कैलाशनाथ अवस्थी रेवा की युक्ति को सुन निरुत्तर हो गया था। वह भलीभांति समझता था कि जब वह क्लब में रेवा से मिला था और वहां उसने रेवा के साथ कुछ समय व्यतीत किया था, उस समय उसके मन में सन्तान प्राप्त करने का किंचित् मात्र भी विचार नहीं था।

वह रेवा की युक्ति को सुन स्तब्ध रह गया था कि किसी खेत के पास से गुजरने वाले छकड़े में से अन्न के कुछ दाने उछलकर खेत में जा पड़े और वहां जम जाएं तो उससे पैदा होने वाले अन्न पर छकड़े वाले का अधिकार नहीं हो सकता।

परन्तु वह विचार करता था कि करोड़ों दम्पति इस भूमण्डल में हैं। दस हजार में से नौ हज़ार नौ सौ निनयानवे होंगे जो वासना की तृप्ति के लिए ही समागम करते-करते सन्तान पैदा कर रहे है और फिर वह उस सन्तान के स्वामी बने फिरते है।

डाक्टर निरंजन देव के घर से वह निराश लौटा था, परन्तु इस विचार से वह पुनः उत्साहित हो नर्सिंग होम को चल पड़ा और वहां पहुच सेठ जी के मध्याह्न में विश्राम कर सोने के कमरे से बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगा। वह सेठ जी के क्वार्टर के ड्राइंग रूम में जा बैठा था। वहां सिद्धेश्वर अपनी पत्नी के साथ बैठा सेठ की प्रतीक्षा कर रहा था। सेठ जी तो विश्राम कर रहे थे, परन्तु सत्यवती नर्सिंग होम के कार्यालय मे बैठी प्रबन्ध देख रही थी।

सिद्धेश्वर को कैलाशनाथ नहीं जानता था। इस कारण जब सेवक ने कैलाशनाथ को वहां बैठाया तो सिद्धेश्वर सेवक के मुख की ओर देखने लगा।

सेवक ने कहा, "आप सेठ जी से मिलने कई दिन से आ रहे है और सेठ जी इनको यहां ड्राइंग रूम में ही मिला करते हैं।"

सिद्धेश्वर अवस्थी के मामले से तो अवगत था, परन्तु वह उसकी शक्ल से परिचित नहीं था। इस कारण सिद्धेश्वर ने पूछा, "क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूं?"

अवस्थी ने मुस्कराते हुए कहा, "यह पूछने का ढंग तो ठीक नहीं। परिचय पूछने से पहले अपना परिचय देना होता है।

"इस पर भी मैं पहले अपना परिचय दे देता हूं। मेरा नाम कैलाशनाथ अवस्थी है। टाटा मिल्ज़ का मैं लन्दन में चीफ एजेण्ट था। सेठ जी से एक विशेष कार्य है और उसी से पिछले कुछ दिनों से आ रहा हूं।"

अब सिद्धेश्वर ने अपना परिचय दे दिया, "मैं समझ गया हूं। मेरा नाम सिद्धेश्वर है। मैं सेठ जी का लड़का और उनके कारोबार का उत्तराधिकारी हूं।

"आपके विषय में सब सुन चुका हूं। तो क्या आप रेवा दीदी के बच्चे को लेने आए हैं?"

"वास्तव में मैं इस विचार से आया था कि यदि रेवा जी अभी तक अविवाहित है तो उनसे विवाह का प्रस्ताव करूं। परन्तु यहां पहुंच कर पता चला कि उन्होंने विवाह कर लिया है और उनके दूसरा लडका भी हो चुका है। इस कारण मैं यह माग कर रहा हू कि मेरा लड़का मुझे मिलना चाहिए।"

"परन्तु यह लडका आपका है, कैसे सिद्ध हो गया?"

"अभी-अभी मैं आपकी बहन से मिलकर आया हू। यह तो वह भी मान गई है कि लडका मेरा है। इस पर भी वह बच्चा देने के लिए तैयार नही हुई, परन्तु आपके पिता जी ने कुछ आशा दिलाई थी। इस कारण पुनः उनके द्वार पर आ बैठा हू।"

"परन्तु आपको लड़के की बहुत आवश्यकता है?"

"हां, मेरे एक लडकी है। वह इस समय दस वर्ष की है। उसका कोई बहन-भाई नही। साथ ही उसकी माता का देहान्त पिछले वर्ष हो चुका है।"

सिद्धेश्वर ने कहा, "आपका 'केस' मजबूत है। आप कोर्ट में दावा क्यों नही कर देते?"

"इसके लिए कोई कानून नही है। कानून केवल विवाहिता पति-पत्नी की सन्तान को ही माता-पिता की सन्तान मानता है। इस अवस्था मे वह लड़का माता-पिता विहीन माना जाएगा और जिसने उसकी पालना की है, वह ही उसका सरक्षक बन सकता है।"

"तब तो बहुत कठिन है। उसकी पालना एक कमला नाम की स्त्री ने की है, वह उससे बहुत प्रेम करती है। इस कारण वह आपको नही मिल सकता।"

"परन्तु शास्त्र की दृष्टि से तो वह मेरी सन्तान है और मुझको मिलनी चाहिए।"

सिद्धेश्वर ने मुस्कराकर कहा, "आप दावा तो कर ही दीजिए और देखिए जज क्या समझते है?"

अवस्थी समझ गया कि यह सेठ जी का लड़का है और उनकी भांति ही उससे सहानुभूति रखता है। उसने बात बदल दी, "तो यह आपकी धर्मपत्नी हैं?"

"हा! यह हैं निर्मला सिघानी। हमारी जात सिघानी है।"

अवस्थी ने हाथ जोड़ नमस्ते कर दी और बात सिद्धेश्वर से ही की। उसने पूछा, "तो आप अब पिता जी के स्थान पर व्यापार करते हैं ?"

"जी ! व्यापार में कुछ बाधा उत्पन्न हो रही है। पिता जी ने अपने जीवन मे ही व्यापार के लिए बीस लाख सुरक्षित रखकर शेष सब अपने उत्तराधिकारियों में वितरित कर दिया है। उन्होंन दान-पत्र लिख दिया है। इस कारण व्यापार में पूंजी कम हो जाने से कुछ कमी हुई है, परन्तु मैं पुनः इसे उसी स्तर पर ला रहा हूं जिसपर पिता जी इसे ले गए थे।"

"एक पजीकृत कम्पनी क्यों नही खोल लेते ? पूंजी की सहूलियत हो जाएगी।"

"मैं इसको ठीक नही समझता। कम्पनी में हिस्सेदार अधिक सख्या में होने से, उलट-पुलट सम्मतियां आने से व्यापार में प्रगति नही होती।"

"हां, यह तो है। परन्तु इसका उपाय भी है। किसी समझदार को अपना असिस्टैण्ट बना लें।"

"बनाया है परन्तु वह अपको नही बताऊंगा ?"

"क्यो ? मुझ में क्या खराबी है ?"

"आप सन्तान के लिए पागल हुए फिरते हैं। यह बुद्धिमता के लक्षण नही हैं।"

"और आपको सन्तान नही चाहिए ?"

"मेरी श्रीमती जी नहीं चाहती।"

"तब तो आपके पिता जी के लिए एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो जाएगी।"

"मेरे विचार में समस्या कुछ नही। यह श्रीमती जी इसको मुसीबत समझ रही है। इसीलिए मैं इन्हे यहा लाया हूं जिससे यह देखें कि कितने प्रसव नित्य होते हैं।"

कैलाशनाथ ने बताया, "एक दिन सेठ जी बता रहे थे कि एक स्त्री, जिसके एक मृत बच्चा उत्पन्न हुआ था, किसी दूसरे के बच्चे को चुरा भाग गई थी। पीछे वह पकडी गई और बच्चा उससे वापस लिया गया था। कभी-कभी मेरे मन में भी विचार आता है कि किसी का लड़का स्मगल कर लूं। परन्तु अब आपकी बहन के लड़के को देख उसे ही पाने की लालसा मन में बन रही है।"

"आप सब लोग पागल हैं।" एकाएक सिद्धेश्वर की पत्नी निर्मला के मुख से निकल गया, "जिसको यह मुसीबत सहनी पड़ती है, वही जानती है कि बच्चे जनना क्या होता है।"

"ठीक है," सिद्धेश्वर ने कहा, "श्रीमती जी ! मैं इसीलिए तो आपको यहां लाया हूं।"

ड्राइंग-रूम मे बातों की आवाज़ सुन सेठ जी समय से पन्द्रह मिनट पहले ही

बैड रूम से बाहर आ गए। वह सिद्धेश्वर और उसकी पत्नी निर्मला को देख पूछने लगे, "अब क्या हुआ ?"

"पिता जी ! पहले इन अवस्थी जी से बात कर लें। पीछे अपने आने का कारण बताऊंगा।"

"हां, तो अवस्थी जी ! मिले हैं निरंजन देव से।"

"जी, मिला हूं। उनकी पत्नी, आपकी लड़की से भी मिला हूं। वहां से तो कोरा उत्तर ही लेकर आया हूं।"

"तो फिर यहां किसलिए आए हैं ?"

"आपसे सहायता लेने के लिए। आपने डाक्टर साहब की माता जी को ऐसे समझाया था कि वह लड़का देने के लिए तैयार हो गई थी। मैं समझता हूं कि यदि आप रेवा जी को समझा देंगे तो वह भी मान जाएंगी।"

"परन्तु मिसेज पण्डित तो नहीं मानी थीं। उन्होंने तो केवल यह कहा था कि बच्चा रेवा का है तथा मैंने गोद लिया हुआ है। इस कारण हम ही उसके विषय में निर्णय कर सकते हैं। यह मानना नहीं कहा जा सकता।"

"तो आप इसमें कुछ नहीं कर सकते ?"

"और मैं आप सबको मूर्ख मानता हूं। यह बिलकुल वैसी ही भावना है जैसे यहां से बच्चा चुरा ले जाने वाली औरत की थी।"

"तो आप रेवा जी को समझा दें।"

"उनको कभी यहां ले आइए और फिर उनके सामने अपनी बात करिएगा तो मैं अपने मन की बात समझा दूंगा।"

"मैं उनको यहां आने का आपका आदेश बता सकता हूं क्या ?"

"अवस्थी ! तुम मूर्ख हो। मैंने यह नहीं कहा। मेरा मतलब है कभी किसी अपने काम से वह आए तो मैं उनको अपनी राय बता सकता हूं।"

सिद्धेश्वर ने बात बीच में ही काटकर कहा, "और पिता जी। आपकी क्या बात है ?"

"यही कि तुम सब लोग मूर्ख हो। बच्चा यहां तीन माताओं के बीच खेल रहा है। यह महान् सौभाग्य की बात है। उनसे उसे पृथक करना महामूर्खता होगी।

"देखो, मेरा सिद्धान्त यह है कि दूसरों को सुख पहुंचाना ही पुण्य है। इस कारण जिससे किसीको सुख अनुभव हो, उस स्थिति को बदलना पाप होगा।"

"अर्थात्," अवस्थी ने पूछ लिया, "वर्तमान अवस्था बदलनी ठीक नहीं ?"

"बच्चे के लिए कह रहा हूं, परन्तु यदि बच्चे के सुख से दूसरों को दुख और क्लेश होता है तो वह भी ठीक नहीं। उसमें भी अकल्याण ही दिखाई देता है।"

"मैं आपसे पुनः मिलूंगा।"

"हां, मिल सकते हो। मैं यहां छुपकर नहीं बैठा हुआ।"

कैलाशनाथ अवस्थी आने का मुहूर्त्त गलत समझ उठा और क्वार्टर से निकल गया।

जब अवस्थी चला गया तो सेठ जी ने पूछा, "कुछ चाय-पानी इसे पिलाया है अथवा नहीं ?"

"जी ! अभी नहीं। हम आकर बैठे ही थे कि यह आ गया और इसकी बातें होने लगी थीं। निर्मला भी इसे मूर्ख समझती है। वैसे तो यह मुझे और सब स्त्री-पुरुषों को मृगतृष्णा के पीछे भागने वाला समझ रही है। और इसीके विषय में मैं इसे मां के पास लाया हूं। मां ने ही इसे कहा है कि यह क्वार्टर में प्रतीक्षा करे। इस कारण हम यहां आ बैठे है।"

सेठ जी ने मुस्कराते हुए कहा, "और यह हम मूर्खों से क्या जानने अथवा समझने आई है ?"

"यह स्वयं तो यहां आई नहीं। यहां मैं इसे लाया हूं और मैं, आप तथा मां को मूर्ख मानकर नहीं लाया। मैं आपका इतना अनादर नहीं कर सकता। मैं अपने को भी मूर्ख नहीं समझता।

"निर्मला को रजस्वला हुए एक महीना और सात-आठ दिन हुए हैं। यह कह रही है कि इस अवस्था में यदि कुछ बन रहा है तो निकाल देना सुगम होगा। यह सन्तान निरोध का साहित्य बहुत ध्यान से पढती रहती है।"

इस समय सेठ जी ने बात सीधी पतोहू से करना उचित समझा, "और निर्मला बेटी ! उनका वह साहित्य क्या कहता है ?"

निर्मला ने कहा, "वह कहता है कि गर्भधारण करने के दस-पन्द्रह दिन के भीतर यदि इसे पम्प करा बाहर कर दिया जाए तो किसी प्रकार की हानि नहीं होती।"

"हां, यह तो ठीक ही लिखा है। इन दिनों में भ्रूण अभी जड़ नहीं पकड़े होता। यह अवस्था अभी बीच में से फूट रहे अंकुर की सी होती है। परन्तु संसार मे जो काम सुगम हो वह करने के भी योग्य होता है, किस ग्रन्थ मे लिखा है ?"

"पिता जी ! यह इस प्रकार नहीं। सन्तान नहीं होनी चाहिए। यह एक पृथक प्रश्न है। यह तो मैं पृथक समझी हू। उसी कारण कार्य करने का यह समय सुगम होने से मैंने कहा था।"

"और यह किसी दूसरी पुस्तक में लिखा है कि जिस व्यक्ति की आय चार सहस्र रुपया नित्य हो वह सन्तान पैदा न करे और जो दिन भर मेहनत मुशक्कत करने पर भी पेट भर खा नहीं सकता, वह एक दर्जन सन्तान पैदा करे।"

निर्मला सेठ जी की व्याख्या पर उनका मुख देखने लगी। वह समझी नहीं कि वह क्या कहना चाहते हैं। कुछ विचार कर उसने कहा, "यह किसीने विधान तो किया नहीं ? सरकार केवल सन्तान निरोध का प्रचार करती है। फिर जो कोई

सन्तान निरोध के उपाय प्रयोग करना चाहता है, उसकी सहायता कर देती है।"

"मैं सरकार की इस योजना और उसके प्रचार का विरोध नहीं कर रहा। मैं तो यह कह रहा हूं कि तुम्हारे जैसी सम्पन्न स्त्री के लिए कहां, किस पुस्तक में गर्भपात कराने के लिए कहा है ?"

"पिता जी ! एक दिन माता जी कह रही थीं कि आरम्भ के तीस-चालीस दिन में गर्भपात करना पाप नहीं।"

"देखो बेटी ! यह सब ठीक है। सिद्धेश्वर की माता जी की बात को मैं गलत नहीं कह रहा। यह एक विज्ञान और अध्यात्म की बात है। यह अनुमान किया जाता है कि भ्रूण में जीवात्मा का प्रवेश गर्भस्थिति के चालीस दिन उपरान्त होता है। *यह विज्ञान है। अध्यात्म यह है कि जीवात्मा आ जाने पर उसकी हत्या करनी* पाप है अथवा नहीं।

"इस कारण मैं इस सिद्धान्त को गलत नहीं कह रहा। मैं तो यह पूछ रहा हूं कि यह किस शास्त्र में लिखा है कि तीन-चार हजार नित्य पैदा करने वाले की पत्नी भी गर्भपात कराए ?"

"यह मैं अपनी सुख-सुविधा के लिए कह रही हूं।"

"तब तो तुम चोरी कर रही हो। होटल में स्वादिष्ट भोजन सेवन कर उसका दाम नहीं देना चाहती।"

"पिता जी ! हम दोनों राय करके ही इस कर्म का विचार रखते हैं। इस कारण वह किसीकी चोरी नहीं कर रहे। जिसका माल है, उसकी *अनुमति से ही* इसे निकाल बाहर कर रहे हैं।"

"तो सिद्धेश्वर इसके लिए राजी हो गया है ?"

इसपर निर्मला पति के मुख की ओर देखने लगी। सिद्धेश्वर ने इस प्रश्नभरी दृष्टि का उत्तर दे दिया। उसने कहा, "मैं यह समझता हूं कि यदि गर्भपात *कराना है तो अभी करा देना चाहिए। परन्तु कराने न कराने के विषय में* निर्मला के विचार करने की बात है। हां, यदि कहीं इसका परिणाम यह हो गया कि फिर इसके सन्तान हो ही नहीं, तो यह जाने, इसका काम जाने। मैं इससे निर्लेप हूं।"

"और यदि पीछे तुम्हारी इच्छा सन्तान के लिए हुई तो ?" सेठ जी का प्रश्न था।

"मैं इससे सम्बन्ध विच्छेद कर नया विवाह कर लूंगा।"

इस पर निर्मला बोल उठी, "परन्तु सन्तान का न होना सम्बन्ध विच्छेद में कारण नहीं हो सकता ?"

"हां ! सरकारी कानून मैं जानता हूं। परन्तु इससे ऊपर भी एक कानून है। जिसे 'नैचुरल ला' कहते हैं। माता जी उसे 'ऋत' कहा करती हैं। वह सरकारी कानूनों से ऊपर है। उसमें निःसन्तान पत्नी को छोड़ने का नियम है। और उसके

स्थान पर कोई उर्वरा ले आने का विधान है।"

"पर यह तो सरकारी कानून के विपरीत है ?"

सिद्धेश्वर ने मुस्कराते हुए कहा, "इस पर भी उस कर्म का पालन करने में कोई सरकारी कानून बाधक नहीं हो सकता। किसी पुरुष-स्त्री के विवाह के अतिरिक्त स्वेच्छा से सम्बन्ध बनाने में किसी भी सरकार का कानून बाधक नहीं होता। हां, इससे सरकारी कानून के अनुसार सम्पन्न विवाह के टूटने का प्रबन्ध है।"

सेठ जी हंस पड़े। हंसते हुए बोले, "सिद्धेश्वर ! तुम तो बहुत कुछ जान गए हो।"

"हां, पिता जी ! यह माता जी की कृपा का फल ही है। सरकारें मनुष्यों ने बनाई हैं। मनुष्य से बड़ा परमात्मा अथवा प्रकृति है। प्रकृति भी परमात्मा के नियमानुसार ही चलती है।

"इस कारण जब कोई सरकार परमात्मा के नियमों को भंग करने लगे तो उसके तोड़ने का अधिकार मनुष्य के पास रहता है। समाज को 'पैनल्टी' अर्थात् जुर्माना देना पड़ सकता है। समाज में रहते हुए उसके संरक्षण का लाभ उठाने के लिए यह जुर्माना देना ही चाहिए।"

"तुम ठीक कहते हो।" सेठ जी ने कह दिया, "समाज परमात्मा से नीचे है। मैं जब परमात्मा को नहीं मानता था तो इसे प्रकृति कहता था। अभिप्राय एक ही हैं, क्योंकि प्रकृति चेतना रहित होने से न इच्छा रखती है, न स्वतः कर्म करती है। इस कारण अब मैं परमात्मा और प्रकृति के नियमों में अन्तर नहीं मानता।

"समाज ने समाजवाद के नाम पर समाज के सब घटकों, योग्य-अयोग्य को भी काम देने का जिम्मा लिया है। यह वह दे नहीं सकती। इस कारण कैंची ले समाज को कतरकर छोटा करने का यत्न कर रही है।

"परिणामस्वरूप समाज और प्रकृति में एक प्रकार की होड़ लग गई है। प्रकृति तो समाज का विस्तार कर रही है और समाजवादी कैंची से कतर-कतरकर समाज को छोटा करने का यत्न कर रहे हैं।

"देखें, इस होड़ में कौन सफल होता है ? भू-मण्डल की समाजवादी सरकारें ज्यों-ज्यों सन्तान निरोध का प्रचार कर रही हैं, जनसंख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।

"हां, इसका एक परिणाम और हो रहा है। मूर्ख समाजवादी सरकारें कतरने की होड़ में गलत स्थान में समाज को कतर रही हैं। जो स्थान समाज में शोभा-युक्त है उसे विनष्ट कर रही हैं और कुरूप-अयोग्य अंग का पालन-पोषण कर रही हैं।

"मेरा अभिप्राय है कि मूर्खों की सन्तान में वृद्धि रोक नहीं सकी। पढ़े-लिखे,

सन्तान निरोध के उपाय प्रयोग करना चाहता है, उसकी सहायता कर देती है।"

"मैं सरकार की इस योजना और उसके प्रचार का विरोध नही कर रहा। मैं तो यह कह रहा हूं कि तुम्हारे जैसी सम्पन्न स्त्री के लिए कहां, किस पुस्तक में गर्भपात कराने के लिए कहा है ?"

"पिता जी ! एक दिन माता जी कह रही थी कि आरम्भ के तीस-चालीस दिन में गर्भपात करना पाप नही।"

"देखो बेटी ! यह सब ठीक है। सिद्धेश्वर की माता जी की बात को मैं गलत नही कह रहा। यह एक विज्ञान और अध्यात्म की बात है। यह अनुमान किया जाता है कि भ्रूण में जीवात्मा का प्रवेश गर्भस्थिति के चालीस दिन उपरान्त होता है। यह विज्ञान है। अध्यात्म यह है कि जीवात्मा आ जाने पर उसकी हत्या करनी पाप है अथवा नही।

"इस कारण मैं इस सिद्धान्त को गलत नही कह रहा। मैं तो यह पूछ रहा हूं कि यह किस शास्त्र मे लिखा है कि तीन-चार हजार नित्य पैदा करने वाले की पत्नी भी गर्भपात कराए ?"

"यह मैं अपनी सुख-सुविधा के लिए कह रही हूं।"

"तब तो तुम चोरी कर रही हो। होटल में स्वादिष्ट भोजन सेवन कर उसका दाम नही देना चाहती।"

"पिता जी ! हम दोनों राय करके ही इस कर्म का विचार रखते हैं। इस कारण वह किसीकी चोरी नहीं कर रहे। जिसका माल है, उसकी अनुमति से ही इसे निकाल बाहर कर रहे हैं।"

"तो सिद्धेश्वर इसके लिए राजी हो गया है ?"

इसपर निर्मला पति के मुख की ओर देखने लगी। सिद्धेश्वर ने इस प्रश्नभरी दृष्टि का उत्तर दे दिया। उसने कहा, "मैं यह समझता हूं कि यदि गर्भपात कराना है तो अभी करा देना चाहिए। परन्तु कराने न कराने के विषय में निर्मला के विचार करने की बात है। हां, यदि कही इसका परिणाम यह हो गया कि फिर इसके सन्तान हो ही नही, तो यह जाने, इसका काम जाने। मैं इससे निर्लेप हूं।"

"और यदि पीछे तुम्हारी इच्छा सन्तान के लिए हुई तो ?" सेठ जी का प्रश्न था।

"मैं इससे सम्बन्ध विच्छेद कर नया विवाह कर लूंगा।"

इस पर निर्मला बोल उठी, "परन्तु सन्तान का न होना सम्बन्ध विच्छेद में कारण नही हो सकता ?"

"हां ! सरकारी कानून मैं जानता हूं। परन्तु इससे ऊपर भी एक कानून है। जिसे 'नेचरल ला' कहते हैं। माता जी उसे 'ऋत्' कहा करती हैं। वह सरकारी कानूनों से ऊपर है। उसमे निःसन्तान पत्नी को छोड़ने का नियम है। और उसके

स्थान पर कोई उर्वरा ले आने का विधान है।"

"पर यह तो सरकारी कानून के विपरीत है ?"

सिद्धेश्वर ने मुस्कराते हुए कहा, "इस पर भी उस कर्म का पालन करने में कोई सरकारी कानून बाधक नही हो सकता। किसी पुरुष-स्त्री के विवाह के अतिरिक्त स्वेच्छा से सम्बन्ध बनाने मे किसी भी सरकार का कानून बाधक नही होता। हा, इससे सरकारी कानून के अनुसार सम्पन्न विवाह के टूटने का प्रबन्ध है।"

सेठ जी हस पड़े। हंसते हुए बोले, "सिद्धेश्वर! तुम तो बहुत कुछ जान गए हो।"

"हां, पिता जी! यह माता जी की कृपा का फल ही है। सरकारें मनुष्यों ने बनाई हैं। मनुष्य से बडा परमात्मा अथवा प्रकृति है। प्रकृति भी परमात्मा के नियमानुसार ही चलती है।

"इस कारण जब कोई सरकार परमात्मा के नियमों को भग करने लगे तो उसके तोड़ने का अधिकार मनुष्य के पास रहता है। समाज को 'पैनल्टी' अर्थात् जुर्माना देना पड़ सकता है। समाज मे रहते हुए उसके संरक्षण का लाभ उठाने के लिए यह जुर्माना देना ही चाहिए।"

"तुम ठीक कहते हो।" सेठ जी ने कह दिया, "समाज परमात्मा से नीचे है। मैं जब परमात्मा को नही मानता था तो इसे प्रकृति कहता था। अभिप्राय एक ही है, क्योंकि प्रकृति चेतना रहित होने से न इच्छा रखती है, न स्वत: कर्म करती है। इस कारण अब मैं परमात्मा और प्रकृति के नियमों मे अन्तर नही मानता।

"समाज ने समाजवाद के नाम पर समाज के सब घटकों, योग्य-अयोग्य को भी काम देने का जिम्मा लिया है। यह वह दे नही सकती। इस कारण कैंची ले समाज को कतरकर छोटा करने का यत्न कर रही है।

"परिणामस्वरूप समाज और प्रकृति में एक प्रकार की होड लग गई है। प्रकृति तो समाज का विस्तार कर रही है और समाजवादी कैंची से कतर-कतरकर समाज को छोटा करने का यत्न कर रहे हैं।

"देखें, इस होड़ में कौन सफल होता है? भू-ममण्ल की समाजवादी सरकारें ज्यों-ज्यों सन्तान निरोध का प्रचार कर रही है, जनसंख्या दिन दूनी रात चौगुनी चढ़ रही है।

"हां, इसका एक परिणाम और हो रहा है। मूर्ख समाजवादी सरकारें कतरने की होड़ में गलत स्थान में समाज को कतर रही है। जो स्थान समाज में शोभा-युक्त है उसे विनष्ट कर रही हैं और कुरूप अयोग्य अग का पालन-पोषण कर रही हैं।

"मेरा अभिप्राय है कि मूर्खों की सन्तान में वृद्धि रोक नहीं सकी। पढ़े-लिखे,

परिश्रमी, सद्बुद्धि वालों को सन्तान उत्पन्न करने से रोकने में अवश्य सफल हो रही है।"

"तो इस मूर्खता का परिणाम क्या होगा?" निर्मला का प्रश्न था।

निर्मला एम० ए० उत्तीर्ण थी। वह जानती थी कि उसका पति और श्वसुर भी हायर सैकेण्डरी से अधिक नहीं पढ़े हुए। विवाह तो व्यापार और सम्पत्ति देखकर हो गया था। वह पति को केवल हायर सैकेण्डरी तक पढ़ा देख उसे सीख देना अपना अधिकार समझती थी। परन्तु जब वह पति की युक्ति का उत्तर नहीं दे सकी तो अपनी बात अपनी सास को बताने चली आई थी। वह समझती थी कि उसकी सास स्त्री होने के नाते उसकी कठिनाई और कष्ट को सुगमता से समझ जाएगी।

यहां मिल गए उसके श्वसुर जो उसके पति से भी कम पढ़े-लिखे थे। जीवन मीमांसा तथा समाज शास्त्र की दृष्टि से वह श्वसुर को सर्वथा अशिक्षित समझ रही थी।

अब उन्हें भी युक्ति करते देख कि समाजवादी सरकारें समाज पालन का व्रत लें, समाज का पालन न कर सकने पर समाज को कैंची से कतर कर छोटा करने लगी हैं, सुन चकित रह गई।

इसपर जब उसके श्वसुर ने कहा कि मूर्ख सरकारें कैंची वहां चला रही हैं जहां समाज का श्रेष्ठ अंग है, तो वह अपने को अपने घर की कहारन से श्रेष्ठ नहीं कह सकी। वह कहारन घर में चौका-बासन करने आती थी। पांच की मां होने के उपरान्त छठे को पेट में लिए हुए थी।

इस उक्ति से कि जो कैंची नीना पर चलनी चाहिए, वह सेठ महेश्वर की पतोहू निर्मला 'एम० ए०' पर चल रही है, वह उठ खड़ी हुई।

पिता-पुत्र दोनों उसका मुख देखने लगे। इसपर निर्मला ने अपने पति को कहा, "चलिए, मेरा समाधान हो गया है।"

"तो अब माता जी से नहीं मिलोगी?" सिद्धेश्वर ने पूछा।

"उनको कष्ट देने की आवश्यकता नहीं रही।"

सेठ जी हंस पड़े। यह इस कारण कि सत्यवती ने पुत्र वधू के लिए कॉफी और केक-पेस्टरी इत्यादि लगवाकर पहुंचवा दी थी।

सेठ जी ने कहा, "यह सिद्धेश्वर की मां ने तुम्हारे लिए भेजी है और अल्पाहार का समय भी हो गया है।"

गरम-गरम कॉफी देख निर्मला बैठ गई और बोली, "इतना स्वादिष्ट सत्कार देख इसका सेवन न करना मूर्खता ही होगी।"

3

सिद्धेश्वर तो मां से मिलकर ही जाने का विचार रखता था। इस कारण निर्मला के बैठ जाने पर वह प्रसन्न हो बोला, "निर्मला ! धन्यवाद । मैं तो मां से मिलकर ही जाऊंगा।"

"ओह ! मैं भूल गई थी कि आपकी माता जी यहां की मैनेजर है।"

सिद्धेश्वर ने पूछ लिया, "परन्तु पिता जी ! एक बात का समाधान आपके कथन से नहीं होता। वह यह कि पृथ्वी पर बढ़ती हुई जनसंख्या का क्या परिणाम होगा ?"

"होगा वही जो मूर्खों का होता है। जो व्यवहार प्राय: देशों में चल रहा है, वह मूर्खतापूर्ण ही है। वह तो तुम जानती ही हो। मानव समाज में बुद्धि विहीनों की सख्या बहुत अधिक है और प्रचलित राज्य पद्धति मे शासन का सब कारोबार उनके हाथों मे चला गया है। कथित प्रजातन्त्र वास्तव में है मूर्खवाद। जिसके योग्य लोग नहीं, उनको वह करने को कहा जा रहा है।

"जनसाधारण शासन करना नही जानता। उसको धर्म और अधर्म मे भी अन्तर का ज्ञान नहीं और वह जिनको धर्म व्यवस्थापक निश्चय करते है, उनकी बात मानी जाती है।

"देखो, मैं समझाता हूं। विधि मंत्री भी तो जनसाधारण से चुना हुआ लोक-सभा का सदस्य होता है। यदि वह कोई व्यवस्था ऐसी देनी चाहे जो उसके विचार से ठीक है, परन्तु उसके क्षेत्र के लोग पसन्द नही करते तो उसे अपने आगामी चुनावों मे मत न मिलने का भय रहता है तो फिर वह दो में से एक बात कराता है। या तो अपनी विचारित बात करता ही नही अथवा करता है तो वह जनता के समक्ष बोलने लगता है और काले को श्वेत और श्वेत को काला कहने लगता है। दोनों बातें पतन का मार्ग ही हैं।

"आज दुनिया इस मूर्ख व्यवस्था के अनुसार चलाई जा रही है और भूमण्डल विनाश के कगार पर खड़ा है। किंचित् मात्र घटना से भी पूर्णभूमण्डल धू-धूकरने लगेगा।

"आज दो प्रवृत्तियां उभर रही हैं। एक यह कि जिनके पास किंचित् मात्र भी बल है, वह समझता है कि भूमण्डल में मूर्खों के मजमे को डरा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा कर लेगा। दस-बीस बन्दूकें लिए व्यक्ति उठते है और काबुल जैसे स्थान पर अधिकार कर लेते है। पूर्ण मुसलमान जगत् मुख देखता रह जाता है अथवा कुछ ऐसा हो जाता है कि कहीं हजरत मुहम्मद साहब की मूंछ का बाल चोरी हो जाता है और अढ़ाई हजार मील के अन्तर पर गैर-मुसलमानों का कत्ले-आम आरम्भ हो जाता है।"

"जहां बाल गुम होता है, वहां का शासक मुसलमान है, परन्तु उससे कोई नहीं पूछता।

"ये सब प्रजातांत्रिक प्रथा के चमत्कार हैं और सन्तान निरोध जैसे उपायों से एक बात हो रही है। बुद्धिशील दयावान परिवारों में जनसंख्या कम हो रही है और अनपढ़ तथा कुली का काम करने वालों के परिवार बड़े-बड़े हो रहे हैं।"

सेठ जी इसी लय में कहते चले जा रहे थे कि सत्यवती आ गई। उसे देख सेठ जी ने अपनी बात समाप्त कर दी। सत्यवती ने सिद्धेश्वर से पूछ लिया, "आज दुकान के समय में कैसे आ गए हो? मैं कई दिन से विचार कर रही थी कि या तो तुम्हें यहां रात के भोजन पर आमन्त्रित करूं अथवा किसी रात तुम्हारे घर पर जाकर डेरा डाल दूं।"

"तो मां! आज ही चलो न।"

"आज तो तुम आए हो और पहले बताओ कि किस अर्थ आए हो?"

"जिस कार्य से आए थे, वह तो पिता जी ने ही कर दिया है। हमारे मन में जीवन के विषय में एक बात पर संशय उत्पन्न हो गया था। मैं इसे लेकर तुम्हारे पास आ रहा था। परन्तु तुम्हारे आने से पहले ही पिता जी ने हमारा समाधान कर दिया है और हम सन्तुष्ट हो गए थे। अब हम तुम से आशीर्वाद लेने के लिए बैठे हुए थे। तुम निर्मला की पीठ पर हाथ फेर कर प्यार दो तो हम चलें।"

"तो मेरे आशीर्वाद से काम चल जाएगा?"

"क्यों निर्मला! बताओ, पीठ पर प्यार लेने से काम चलेगा अथवा नहीं?"

"काम तो," निर्मला ने कहा, "बिना पीठ पर प्यार लिए चल गया है। यदि वह भी मिल जाए तो दुहरा फल होगा।"

जब सिद्धेश्वर और उसकी पत्नी चले गए तो सेठ जी ने अवस्थी की बात बता दी। सत्यवती का कहना था, "मैं कुछ ऐसी ही आशा करती थी। आज समाज में मूर्खता की मात्रा प्रत्येक मानव में बढ़ रही है। उस, बच्चे चोर की बातें, स्मरण कर तो कलेजा मुंह को आता है। वह मूर्ख समझ नहीं सकी कि बच्चों को चुराना असम्भव है। अब बेचारी हवालात में पड़ी है और चोरी का मुकद्दमा चल रहा है।"

"मुझे तो" सेठ जी ने मुस्कराकर कहा, "यह बात समझ आ रही है कि पृथ्वी पर जो मानवों की संख्या बढ़ रही है, उनमें उन जानवरों की ही आत्माएं हैं, जिनको भून-भून कर मनुष्य खा जाते हैं। उन आत्माओं के कर्मफल पशु के थे, परन्तु जब हम उनको पशुओं में रहने नहीं देते तो वह अपने कर्मफल भोगने के लिए मानवों की सन्तान बन जाते हैं। चूंकि उनके कर्मफल में पशु जीवन लिखा होता है, इस कारण वे मानव शरीर में आकर भी कर्म पशुओं के से ही करते हैं।"

"मैं समझती हूं कि यदि मांस खाने वालों की संख्या कम हो जाए और भेड़,

बकरी तथा मछलियों की आत्माओं को उन शरीरों में ही रहने दिया जाए तो ऐसी यम-योनियों की आत्माए मनुष्यो में उत्पन्न नहीं होंगी।"

सेठ जी ने पत्नी के लिए भी चाय मगवा ली और पूछा, "आज कितने प्रसव हुए हैं ?"

"छ है। चार लड़के और दो लड़कियां। आज फैमिली प्लैनिंग विभाग का एक आदमी आया था। पिछले छ: मास के आंकड़े लेकर कह रहा था कि हमारा यह नसिंग होम राज्यपाल के अध्यादेश से बंद करना पड़ेगा। हम जनसख्या की वृद्धि मे सहायक हो रहे है।"

'तो फिर तुमने क्या उत्तर दिया है ?"

"मैंने उसे कहा है कि यहा काम इतना अधिक है कि आपकी बात पर विचार करने का समय ही नहीं। जब अध्यादेश जारी होगा तब हम विचार कर लेंगे।

"वह बोला, कि मैं इस बात की सिफारिश मुख्यमत्री के पास कर रहा हूं। इस नसिंग-होम की सुख-सुविधा और वह भी सामान्य से मूल्य पर सन्तान उत्पन्न करने को प्रोत्साहन देता है।

"मैं हसकर चुप रही। वह आंकड़े लेकर चला गया है।"

अब सेठ जी ने गम्भीर हो कहा, "मैं तो यह विचार कर रहा हूं कि हम जल ही मथ रहे हैं। इस समाज मे जो भी कार्य ठीक दिशा में किया जाता है, उसे मिथ्या दिशा मे मान लिया जाता है।

"उस इन्स्पैक्टर जैसों की आज देश में भीड़ लग रही है। करोड़ों-पद्मों रुपया व्यय करने पर भी जनसख्या बढती ही जाती है। इस पर भी ये लोग कभी विचार नही करते कि इनको उद्देश्य में सफलता मिल रही है अथवा नही ?"

सत्यवती अभी चाय ले ही रही थी कि चपरासी भीतर आया और बोला, "एक साहब मिलने आए है। उन्होंने अपना नाम के० सुन्दरम् बताया है।"

सेठ जी ने पूछा, "अकेले हैं अथवा साथ कोई स्त्री भी है ?"

"उनकी पत्नी है। साथ में एक बच्चा भी है।"

इस पर सत्यवती ने कहा, "उनको भीतर ले आओ।"

सत्यवती को स्मरण था कि वह पत्नी सहित एकबार पहले भी आ चुका था। वह जानती थी कि वह सेठ जी का गुरु भाई रहा है।

चपरासी तीनों प्राणियों को भीतर ले आया। सेठ जी ने उनका अभिवादन किया और पति-पत्नी को वही सोफा पर बिठा चाय-पानी पूछा।

"हां, सेठ जी ! कुछ तो लेंगे ही। हम आपके फ्लैट पर गए थे। वहां से पता चला कि आप अब यहां रहते हैं। इस कारण वहां से बसों में धक्के खाते हुए यहां आए हैं।"

सत्यवती ने घंटी बेजाई तो चपरासी आया। उसे उनके लिए भी चाय तथा

खाने का सामान लाने के लिए कह दिया गया। चपरासी गया तो सुन्दरम् ने बताया, "मेरी नियुक्ति अब 'बम्बई सेंट्रल' पर हो गई है। मेरा 'रैंक' बढ़ गया है क्योंकि फर्स्ट क्लास स्टेशन है।"

"तो गुरु जी ने यहां भी कुछ सहायता की है?"

"जी नहीं! जहां तक मुझे विदित है, उन्होंने मेरा विरोध ही किया है, परन्तु रेलवे के आजकल के डिविजनल सुपरिन्टेंडेण्ट कोई उनसे चिढ़े हुए व्यक्ति हैं। इस कारण ज्यों-ज्यों वह विपरीत यत्न करते गए, मेरा यहां आना निश्चित होता गया।"

"तब तो भाई सुन्दरम्! तुम डबल बधाई के पात्र हो।"

"हां, सेठ जी! परन्तु मुझे एक अन्य सहायक मिल गया है। वह अमृतसर के रहने वाले रेलवे के एक ठेकेदार हैं। वह नदियों पर रेल की पुलें ही बनाते हैं और रेल मिनिस्टर से लेकर छोटे-से-छोटे इंजीनियर से उनका परिचय है। नाम है रामकृष्ण भण्डारी।"

"नाम तो सुना है, परन्तु कभी दर्शन नहीं हुए।"

"मेरी भेंट भी इनसे एक घटनावश हुई थी। एक बार मेरी पत्नी मेरी शिकायत करने गुरु जी के पास गई थी और उन्होंने इसे आश्रम में ही रख लिया था।

"तब भण्डारी जी की पत्नी ने मेरी श्रीमती जी को समझाया था और यह घर लौट आई थी।"

सुन्दरम् ने भण्डारी की कहानी बताकर कहा, "मैंने भण्डारी दम्पति के लिए रेलगाड़ी में एक कूपे का आरक्षण कराया तो वह प्रसन्न हो मुझे अपना कार्ड दे गया था। जब मैं देश दर्शन के लिए निकला तो अमृतसर में उनके द्वार पर जा पहुंचा। वहां उनका असली परिचय मिला कि वह लखपति हैं और रेल के विभाग में बहुत प्रभाव रखते हैं।

"तब से मेरा उनसे परिचय है। उनकी सहायता से मैं वर्तमान पद पर पहुचा हूं और गुरु जी से मन उचाट हुआ तो अब घृणा हो गई है।"

इस समय सेवक सुन्दरम् और संतोषी के लिए चाय तथा टोस्ट ले आया। वे पीने लगे।

"पर आज आपको एकाएक हमारी याद कैसे आई है?" सेठ जी ने पूछ लिया।

"याद तो कई बार आती रहती थी। परन्तु आज एक विशेष बात हुई तो हम आपके मकान पर जा पहुंचे थे।

"बात यह है कि वह अमृतसर वाले भण्डारी आजकल यहां आए हुए हैं। वह कर्नाटक में एक ठेका ले रहे हैं और चाहते हैं कि यहा का कोई व्यक्ति उनके इस

कार्य में साझीदार बन जाए। इससे उनको प्रबन्ध करने में बहुत सुगमता रहेगी।

"आज प्रातःकाल उन्होंने अपने बम्बई में ठहरने की बात कही तो मुझे आपकी याद आ गई। मैंने उनसे आपका उल्लेख किया है। उन्होंने आपके विषय में यहां के लोगों से पूछताछ की है। पूछताछ के बाद ही उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है कि पता करूं कि इस काम में आप उनके साथ सम्मिलित हो सकेंगे क्या ?"

सेठ जी ने एक क्षण तक ही विचार किया और कह दिया, "मैं गृहस्थ जीवन से 'रिटायर' हो चुका हूं। मैंने अपनी पूर्ण सम्पत्ति का दान-पत्र भी लिख कर अपने उत्तराधिकारियों को दे दिया है।

"इस कारण मैं स्वयं तो कार्य में सम्मिलित नहीं हूंगा। हां, यदि वह चाहें तो मैं अपने लड़के को कह सकता हूं कि वह इस योजना में सम्मिलित हो सके।

"यदि वह यह प्रबन्ध स्वीकार करें तो मुझसे मिल कर बताएं कि कितना धन इसमें लगाना होगा और धन के अतिरिक्त वह किस प्रकार का सहयोग चाहेंगे ? तब मैं लडके से बात कर बताऊंगा।"

सुन्दरम् ने कहा, "बात यह है कि करोड़ों रुपये का ठेका है। पत्तीदार विश्वस्त व्यक्ति होना चाहिए। रुपये-पैसे के विचार से भी। रुपये-पैसे के बाजार में भी। आपके विषय में तो वह मार्केट में बात कर चुके हैं और सबने आपको शत-प्रतिशत विश्वास योग्य व्यक्ति माना है। आपके लडके के विषय में जाच-पड़ताल नहीं की गई।"

सेठ जी ने कह दिया, "मैं लड़के की ईमानदारी का जामिन हो सकूगा। हां, उसकी कार्य कुशलता के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता। अभी वह बाईस वर्ष का ही है।"

इसके उपरान्त सुन्दरम् ने बात बदल दी और पूछने लगा, "आपकी एक लड़की भी तो थी। वह आजकल कहां है ?"

सेठ जी हंस पड़े। हंसते हुए बोले, "उसने अब एक भद्र पुरुष से विवाह कर लिया है। उसकी इस विवाह से एक सन्तान भी है।"

"ओह ! तो उसमें भी गुरु जी की शिक्षा विलुप्त हो गई है ?"

"गुरु जी के और हमारे विचारों में एक आधारभूत अन्तर आ गया है। हम परमात्मा के अस्तित्व को मानने लगे हैं। प्रकृति और परमात्मा दोनों इस विश्व में साथ-साथ रहते है। वे परस्पर मिलकर रहते हैं। इस पर भी वह है पृथक-पृथक। बस, इसी आधारभूत बात में अन्तर होने से हमारे और उनके व्यवहार, विचार और विश्वासों में अन्तर आ गया है।

"वह समझते हैं कि प्रकृति स्वयमेव अपने ठीक मार्ग पर आ जाती है। इसके विपरीत हम समझते हैं कि प्रकृति न तो स्वयमेव ठीक मार्ग पर आ सकती है, न

ही गलत मार्ग पर जा सकती है। इसको मार्ग पर ले जाने वाला चेतन तत्त्व है।

"यही कारण है कि स्त्री-पुरुष का प्राकृतिक सम्बन्ध स्वयं ही होता है। परन्तु मनुष्य में बैठा चेतन आत्मा प्रकृति के इस कार्य को नियम में बांधने का प्रयास करता है। उस प्रयास में विवाह एक व्यवहार है।

"अब देखिए, आपके भण्डारी एक ठेकेदार के काम में लगने वाले हैं। यह काम प्रकृति की तोड़-फोड़ का होगा, परन्तु कार्य करने वाला चेतन तत्त्व होने से उस तोड़-फोड़ को दिशा देगा। उस दिशा मे भी समय का समावेश करेगा। इसी के लिए वह काम लेने से पूर्व इन सब बातों पर विचार करता है।"

इस पर सुन्दरम् ने कहा, "काम तो ले लिया गया है। परन्तु काम बहुत बड़ा होने के कारण वह उसमें सहयोगी चाहते हैं। साथ ही वह स्वयं पंजाब में एक अन्य काम मे व्यस्त है।"

"बस, वही बात है। रचना यज्ञ बहुत महान् है। इसमें पुरुष को स्त्री के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। स्त्री-पुरुष तो शरीर है। इस कारण उनके संचालन करने वालों के सहयोग की आवश्यकता है। सहयोग लेने-देने के नियम इस आत्मा ने ही बनाए हैं और विवाह सामाजिक नियमों में से एक है।"

सुन्दरम् जीवन की इस मीमांसा को समझ चुप कर गया।

4

इस दिन के पश्चात् कैलाशनाथ अवस्थी नही आया। वह समझ गया था कि उसके मन में इस बच्चे के लिए लालसा मिथ्या मोह ही है। उसे अपना नया विवाह कर विधिवत् सन्तान बनानी चाहिए। ईश्वर कृपा से अथवा उसके कर्मफल से उसकी पत्नी का देहान्त हो गया था। इस कारण उसे अपनी नई भूमि पर खेती-बाड़ी करनी चाहिए और भूमि को पाने के लिए सामाजिक और राजनियमों का पालन करना चाहिए। अत: उसने रेवा और उसके बच्चे का विचार छोड़ अपने विवाह की चिन्ता आरम्भ कर दी।

उस दिन सिद्धेश्वर अपनी पत्नी के साथ घर पहुंचा तो निर्मला ने कहा, "आपके पिता जी ने तो मेरे विचार की दिशा ही बदल दी है। मैं तब समझ रही थी कि मैं गर्भपात कराकर एक महान् कार्य करूंगी और अब मैं समझती हूं कि मैं गर्भ धारण कर एक महान् कार्य का आरम्भ कर रही हूं और मुझे उसको ठीक परिणामों पर पहुंचाने के लिए यत्न आरम्भ कर देना चाहिए।"

"मैं समझता हूं कि तुम रेवा दीदी से मिलने जाया करो। उससे तुमको बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होगा।"

"ठीक है। आप अपनी बहन को पहले यहां एक दिन भोजन पर निमंत्रण

दीजिए तो फिर मैं निःसंकोच उसके घर जा सकूंगी। जब से मेरा विवाह हुआ है, उनसे घनिष्टता बन नहीं सकी।"

सिद्धेश्वर ने उसी समय टेलीफोन उठाया और डाक्टर साहब के घर पर टेलीफोन कर दिया।

टेलीफोन निरंजन देव ने उठाया। वह अपने क्लीनिक से अभी आकर ड्राइंग रूम में बैठा ही था कि टेलीफोन खड़का तो उसने उठा लिया।

"ओह सिद्धेश्वर जी ! क्या बात है जो आपको हम जैसे सामान्य जीवों की याद आई है?"

सिद्धेश्वर ने कहा, "जीजा जी ! यहां एक कार्य विशेष में दीदी की सहायता की आवश्यकता उपस्थित हो गई है। इस कारण टेलीफोन किया है।"

"तो मुझे बताओगे अथवा दीदी को ही ?"

"आपको भी बता सकता हूं, परन्तु आवश्यकता दीदी की है।"

"हां, तो बताओ। वह बाथरूम में है।"

"बात यह है कि आगामी रविवार निर्मला आपके पूर्ण परिवार को लंच पर आमन्त्रित करना चाहती है। यह निमन्त्रण दीदी के द्वारा ही देने का विचार था।"

"तो अब यह मेरे द्वारा चल सकेगा अथवा नहीं ?"

"चल तो सकेगा। यदि आप चलाना चाहें तो ?"

"भाई ! खाने में कुछ स्वादिष्ट भोजन की आशा दिलाओ तो मैं संदेश वाहक बन सकूंगा।"

"तो 'मीनो' आप दीदी से राय कर बता दीजिएगा। बात यह है कि यहां मीनो गौण है। निर्मला पिछले छः मास में आपको निमंत्रण न देने का प्रायश्चित करना चाहती है। यह मुख्य बात है। इस कारण मीनो जो आप कहेंगे, वह आपकी रुचि अनुसार ही बन सकेगा।"

"लो ! तुम्हारी दीदी आ गई है। तुम स्वयं ही उससे बात कर लो।"

रेवा ने पूछा, "निर्मला मिलती तो रही है, परन्तु यह खाने पर निमन्त्रण की बात कैसे उत्पन्न हुई है ?"

"दीदी ! तुम आओगी तब ही बताएंगे।" सिद्धेश्वर ने कहा।

"तो फिर आऊंगी। बताओ, किस-किस को निमन्त्रण है।"

"पूर्ण परिवार को। जीजा जी और तुम तो हो ही। साथ ही विश्वेश्वर और जगदीश्वर भी हैं। विश्वेश्वर की मौसी भी है और यदि सम्भव हो तो जीजा जी की माता जी भी आमन्त्रित हैं।"

"यह तो उनसे पूछना पड़ेगा। मैं समझती हूं कि वह रविवार प्रातः ही बता सकेंगी कि उस दिन वह आ रही हैं अथवा नहीं। उनका काम ही ऐसा है। समय से पूर्व बताया ही नहीं जा सकता। हां, हम आएंगे।"

इस प्रकार बात निश्चय हो गई और रविवार के दिन मध्याह्न साढ़े बारह बजे डाक्टर निरंजन देव अपने परिवार के सदस्यों को लेकर अपने घर से बाईकुला सेठ जी के फ्लैट पर जा पहुंचा और मृदुला पण्डित विश्वेश्वर के साथ नर्सिंग होम से वहां आ पहुंची।

भोजन के पूर्व ही दावत का प्रयोजन स्पष्ट हो गया। सिद्धेश्वर ने ही बात कर दी, "निर्मला को बीस दिन का गर्भ है। यह विचार कर रही है कि इस गर्भ-काल को सहज पार करने के लिए किसी पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता है।

"मैंने दीदी का नाम बताया तो यह मुझे ही दीदी को इसका चार्ज देने के लिए कहने लगी। इस कारण इस कार्य के लिए मैंने आपको कष्ट दिया है जिससे न केवल दीदी, वरन् मौसी और जीजा जी की माता जी को भी इसका चार्ज दे दूं।"

सब हंस पड़े। हंसते हुए निरंजन देव ने कह दिया, "इस भू-मण्डल में सहस्रों प्रसव नित्य होते हैं। तो क्या वे भी सब गाईड ढूंढते रहते हैं?"

"यह जीवन का एक स्वभाविक काल है। यदि मनुष्य मन की प्रेरणा पर व्यवहार करता रहे तो सहज ही इस काल में व्यवहार का निश्चय कर सकता है।"

"परन्तु जीजा जी!" निर्मला ने कह दिया, "यदि मुझ में इस स्वभाविक अवस्था में सामान्य रूप में रहने की बुद्धि होती तो मैं गर्भपात के लिए परेशान न होती। अभी तीन दिन पूर्व तक मैं गर्भपात के लिए हठ कर रही थी। इस बुद्धि के अभाव अथवा विकृति का इलाज ही तो मैं ढूंढ रही हूं।"

डाक्टर मृदुला पण्डित ने कह दिया, "निर्मला ठीक कहती है। मनुष्य एक बुद्धिशील प्राणी होने से नित्य नए मार्ग का अनुसरण करने के पीछे लगा रहता है और इसी में धोखा खा जाता है।"

"जहां इस प्रकार के स्वभाविक कार्यों को अनेकानेक पशु-पक्षी सहज ही पार कर जाते हैं, वहां मनुष्य को इसके लिए 'नर्सिंग' की आवश्यकता रहती है। पशु को किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रहती। मनुष्य को प्रसव काल में दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। इसके साथ ही कही जाने वाली सभ्य स्त्रियों को सहायता की और भी अधिक आवश्यकता रहती है।"

"इस कारण एक प्रसूता का स्वभाविक और अस्वभाविक व्यवहार क्या है, इसकी जानकारी होनी चाहिए। बस, यही जानकारी इस विषय में पथ-प्रदर्शक होगी।"

भोजन लेते हुए और भोजन के उपरान्त भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभव डाक्टर मृदुला पण्डित बताती रही।

उसी सायंकाल मिसेज पण्डित ने दावत का कारण और उस कारण का परि-

णाम सत्यवती को बताया तो वह संतोष अनुभव करने लगी।

सत्यवती ने कहा, "मैं समझती हूं कि यह चेतन जीवात्मा की सजगता व ही लक्षण है कि उसका शरीर बुद्धिगम्य मार्ग स्वीकार कर लेता है।"

"तो जीवात्मा सुपुप्त भी होते हैं?" मृदुला का प्रश्न था।

"हां! एक जीवात्मा तो केवल शक्ति अर्थात् ऊर्जा का एक बिन्दु मात्र और जब जीवात्मा के साथ मन तथा बुद्धि का संयोग होता है तो यह सजग ह जाता है। पशुओं में मन तथा बुद्धि बहुत ही घटिया होती है और साथ ही उन साथ पशु के जीवात्मा का सयोग बहुत ही ढीला होता है।

"मनुष्यों के मन तथा बुद्धि अधिक निर्मल होते है, परन्तु उनके साथ कितन जीवात्मा का संयोग होता है, इसी पर उस जीवात्मा की सजग और सुपु अवस्था का ज्ञान होता है।

"ऐसा प्रतीत होता है कि सिद्धेश्वर की बहू एक सजग जीवात्मा है। तभ वह एक दिन सिद्धेश्वर के पिता से पन्द्रह मिनट की बातचीत को समझ लौट ग थी। यह लड़की सौभाग्यवती और पूर्वजन्म की पुण्यकर्मा है।"

इसी सायंकाल सिद्धेश्वर का टेलीफोन सेठ जी को आया। सिद्धेश्वर ने कह "पिता जी! यहां मेरे पास एक सज्जन बैठे है। वह मुझे अपने साथ एक ठेकेदा के धधे में सम्मिलित करना चाहते है और कह रहे हैं कि आपने मेरी उनके पा सिफारिश की है।"

"कौन है?" पिता ने पूछ लिया।

"श्री रामकृष्ण भण्डारी। अमृतसर के रहने वाले हैं। कावेरी पर एक पु बन रहा है और उनको ठेका मिल चुका है। प्रारम्भिक काम उन्होने आरम्भ क कर दिया है।"

"वह कह रहे है कि उनको एक काम कश्मीर राज्य में भी मिला हुआ है दोनों स्थानों में अन्तर बहुत है। इस कारण वह किसी ईमानदार व्यक्ति की खो में हैं जो उस काम पर देख-रेख और आवश्यकता पड़ने पर रुपए का प्रबन्ध क सके।

"मैंने उनको बताया है कि मैं अनुभवहीन हूं। परन्तु वह यह कह रहे है कि आपने मेरे नाम का सुझाव दिया है।"

"ठीक है! उनको साथ लेकर यहां आ जाओ। मैं इनके दर्शन की आकाक्ष कर रहा हूं।"

इसके उपरान्त सिद्धेश्वर ने दो मिनट ठहर कर उत्तर दिया, "पिता जी हम अभी आ रहे है।"

आधे घंटे में सिद्धेश्वर रामकृष्ण भण्डारी को लेकर नर्सिंग होम में आ गया सेठ जी इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह विस्मय कर रहे थे कि केवल मात्र सुन्दर

जो व्यापार के विषय में कदाचित् अनभिज्ञ व्यक्ति है, के कहने पर भण्डारी लाखों रुपये के कार्य का उत्तरदायित्व उसे और उसके कहने पर उसके इक्कीस-बाईस वर्ष के पुत्र पर डाल रहा है।

सेठ जी को कुछ ऐसा विचार आया था कि कहीं यह कोई भाग्यशाली मूर्ख न हो। ऐसे मूर्खों को उद्योग तथा व्यापार में तथा राजनीति में एकाएक उन्नति करते वह नित्य देखता था। और फिर उनका पतन भी वह देख चुका था। इससे वह उत्सुकता से इस व्यक्ति के दर्शन करने की इच्छा कर रहा था।

जब ये आए तो सेठ महेश्वर ने क्वार्टर के द्वार पर आकर भण्डारी का स्वागत किया और आदर सहित उसको भीतर ड्राइंग रूम में ले जाकर बैठाया। तत्पश्चात् ठण्डा शर्बत पिलाकर उसका आदर किया।

बात भण्डारी ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "लगभग आठ दिन हुए यहां के सैण्ट्रल रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर सुन्दरम् के पूछने पर कि मैं इतने दिन से यहां बम्बई में किस काम से ठहरा हुआ हूं, मैंने बताया था कि मैं अपने कावेरी के काम पर किसी सहयोगी की खोज में हूं। इस पर सुन्दरम् साहब ने आपका नाम बताया। मैंने अपने परिचितों से आपके विषय में पूछना आरम्भ कर दिया। मेरी सूचना आपके विषय में शत-प्रतिशत संतोषजनक थी। तब मैंने सुन्दरम् से ही कहा था कि आप से पता करें कि आप मेरे साथ सहयोग को किस प्रकार पसन्द करेंगे।

"मिस्टर सुन्दरम् ने आपके वानप्रस्थ लेने की बात बताकर यह भी कहा कि आपका लड़का है जिसकी सिफारिश आपने की थी।

"तब मैंने आपके लड़के के विषय में भी जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया। मेरे मापदण्ड से वह अनुकूल है। इस पर भी मैं उससे स्वयं मिलकर बातचीत करने उसके पास तीसरे प्रहर पहुंचा तो दो घंटे के वार्तालाप के उपरान्त मैंने इसके सामने अपनी योजना रखी है। यह अपने को इस काम में अयोग्य समझता है। मैं समझता हूं कि इसमें योग्यता का बीज है और उचित अवसर पर यह फूट पड़ेगा और फले-फूलेगा।"

सिद्धेश्वर गम्भीर भाव से दोनों बड़ों में बातचीत होते देख रहा था। वह इसमें बिना पूछे सम्मति देना नहीं चाहता था। रामकृष्ण ने ही कहा, "मैंने इस काम को लेने में दो लाख रुपया व्यय कर दिया है। इसमें मैं अपनी पूंजी का लगभग पचास प्रतिशत लगाने वाला हूं। वैसे मेरे पास धनाभाव नहीं है। परन्तु उस विशाल पूंजी पर एक ईमानदार व्यक्ति की दृष्टि मैं चाहता हूं।

"मैं कश्मीर का काम नहीं छोड़ सकता। वह राष्ट्र का काम है। वह मुझे मिला भी इसी कारण था कि मुझे कट्टर राष्ट्रवादी समझा गया है। इस काम को तो मैं अपने पुराने मेहरबानों के आग्रह पर ले बैठा हूं।

"अतएव मैं चाहता हूं कि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो मेरा स्थानापन्न बन वहां निरीक्षण कर सके।

"जहां तक 'टैक्निकल' ज्ञान का सम्बन्ध है, योग्य से योग्य इन्जीनियर इसकी सहायता के लिए होंगे।

"अब आप बताइए।"

सेठ जी ने कुछ विचार कर कहा, "मैं एक ही बात इस लड़के के विषय में कह सकता हूं कि जानबूझ कर यह अनियमित काम नहीं करेगा। यह मैं अपने इसके साथ पांच वर्ष तक काम करने के अनुभव से बताता हूं। शेष इसके तथा आपके विचार करने की बात है।"

"मैंने इसे कहा है कि इसे एक पैसा भी इसमें लगाना नही पड़ेगा। धन का सब प्रकार का प्रबन्ध है। इसे तो मेरे स्थान पर काम करना होगा।"

"बताओ सिद्धेश्वर?"

"आप आज्ञा और आशीर्वाद दें तो मैं अपने वर्तमान काम को किसी के हवाले कर इस काम में जुट जाऊंगा।"

सेठ जी ने पूछ लिया, "और भण्डारी जी! आपने इसे क्या कुछ देने का विचार किया है?"

"यह तो मेरे स्थान पर ही कार्य करेगा। इस कारण शुद्ध लाभ का पचास प्रतिशत का यह भागीदार होगा।"

"यह तो बहुत अधिक है।"

"नही सेठ जी! यह ठीक ही है। हां, इतना किया है कि लगाई पूंजी का बैंक दर से ब्याज मैं लूंगा।"

बात निश्चय हो गई और रामकृष्ण भण्डारी ने कहा, "इसे एक सप्ताह में अपना काम किसी को सौंप कर मेरे पास बैंगलोर आ जाना चाहिए। हमारे साझेदारी का अनुबन्ध पत्र कल इसे मिल जाएगा।

"मैं एक मास इसके साथ रहूंगा और फिर अपने दूसरे कार्य पर चला जाऊंगा। तब तीन मास में एक बार इधर आया करूंगा।"

जब सब बात समाप्त हो गई तो भण्डारी ने नर्सिंग होम देखने की इच्छा व्यक्त की। सेठ जी स्वयं उठे और भण्डारी को लेकर उसको लगभग पूर्ण नर्सिंग होम का दर्शन करा दिया।

भण्डारी ने पूछा, "इस पर अपने पास से क्या खर्च कर रहे हैं आप?"

"अपने पास से क्या मतलब?"

भण्डारी ने कहा, "मेरा मतलब यह है कि ट्रस्ट अपने पास से क्या खर्च कर रहा है।"

"ट्रस्ट ने यह भवन पांच लाख की लागत का बनवा दिया है। उसका भाड़ा

कुछ नहीं। इसमें फर्नीचर की प्रारम्भिक लागत डेढ़ लाख रुपया है। उसकी 'डेप्रिसिऐशन' ट्रस्ट अपने पास से देता है।

"इसके अतिरिक्त औसतन प्रति प्रसूता पर हम पांच सौ रुपये व्यय करते हैं। यह डाक्टर की सेवा, औषधियों का दाम, नर्सों का खर्च इत्यादि है।

"ट्रस्ट को इसके लिए प्रतिवर्ष पचास-साठ हजार रुपया देना पड़ता है।"

भण्डारी ने बताया, "इसी तरह के नर्सिंग होम में मेरी लड़की पिछले वर्ष पांच दिन के लिए रह कर आई और उसने पांच हजार रुपया व्यय किया था।"

सेठ जी ने कहा, "यह तो होना ही चाहिए। जितनी समाज में बुद्धिशील सेवाएं है, उनको भरपूर उजरत मिलनी चाहिए। परन्तु मैं समझता हूं कि हम धनी-मानियों का यह कर्त्तव्य है कि जो इतना व्यय नहीं कर सकते, उनके लिए वही सुविधाएं प्रस्तुत करें, जो हम अपने लिए करते हैं।

"मेरी अपनी लड़की प्रसव के लिए यहां बम्बई में एक नर्सिंग होम में सात दिन रही थी और मेरा दस हजार का बिल बना था। तब मेरे मन में इस ट्रस्ट का विचार उत्पन्न हुआ और मैंने यह नर्सिंग होम ट्रस्ट स्थापित कर दिया है।"

"मेरा अभिप्राय यह है कि पढ़ी-लिखी निर्धन जनता को धनाभाव के कारण सन्तान निर्माण में संकोच नहीं करना चाहिए।"

"तो यहां मजदूर वर्ग को आने नहीं दिया जाता?"

"हम इनकार नहीं कर सकते। करते भी नहीं, परन्तु हमने इस नर्सिंग होम को पढ़े-लिखों और बुद्धिशील व्यक्तियों के लिए ही स्थापित किया है।"

"यह क्यों? यह भेदभाव क्यों है?"

"यह इस कारण कि हमारी समाजवादी सरकार सन्तान निरोध का प्रचार कर रही है और वह प्रचार प्रायः निम्न मध्यम श्रेणी के घटकों में अधिक प्रभाव उत्पन्न कर रहा है। इससे मेरी श्रीमती के विचार में जाति में से बुद्धिशील अंश को निःशेष किया जा रहा है।

"यह एक महापाप हो रहा है। हम अपनी सामर्थ्य से इस मिथ्या नीति का निराकरण कर रहे हैं।

"मेरी पत्नी का कहना है कि समाजवादी प्रायः अनीश्वरवादी होते हैं। इससे वे न तो परमात्मा को, न ही आत्मा को मानते हैं। वे कर्मफल को भी नहीं मानते। इस कारण वे अपने समान जाति में मूर्खों को जन्म देने में प्रोत्साहन दे रहे है।

"हमने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार उनके अशुद्ध कर्म को प्रभावहीन करने का यत्न किया है।"

भण्डारी सर्वथा सन्तुष्ट होकर ही गया।

5

गुरु सोमेश्वर उत्तरी भारत के भ्रमण से लौटने पर बम्बई सैण्ट्रल रेलवे स्टेशन पर पहुंचे तो उनके स्वागत के लिए उनके शिष्यों की बहुत लम्बी-चौड़ी भीड़ पहुंची हुई थी। स्वभाविक रूप में स्टेशन मास्टर मिस्टर सुन्दरम् वहां उपस्थित था। प्रबन्ध के लिए पुलिस भी तैनात थी।

गुरु जी जब गाड़ी के डिब्बे से निकले तो उनकी दृष्टि सुन्दरम् पर भी पड़ी।

सुन्दरम् ने हाथ जोड़ नमस्कार की तो गुरु जी मुस्कराए। उनकी मुस्कराहट अति लुभायमान थी। उसे देखते ही सामान्य जन उनपर मुग्ध हो जाते थे।

सुन्दरम् पर से इस व्यक्तित्व का प्रभाव मिट चुका था। वह समझ गया था कि शरीर पूर्वजन्म के कर्मों से प्राप्त होता है। पूर्वजन्म की उपलब्धियां देखकर वर्तमान को भी श्रेष्ठ और हितकर समझना मूर्खता है। वर्तमान को इससे पृथक कर देना चाहिए।

इस सिद्धान्त की बात को समझ वह गुरु जी के वर्तमान जन्म के कर्मों का ही निरीक्षण करता था और उन्हें एक सामान्य व्यक्ति जान, उनसे तटस्थ हो गया था।

जब गुरु जी सुन्दरम् के समीप से गुज़रे तो उन्होंने पूछ लिया, "तो तुम यहां पहुंच गए हो?"

"जी! आपकी कृपा से मैं यहां आ पहुंचा हूं।"

गुरु जी समझ नहीं सके कि उनकी कृपा कैसे हुई है? उनके मन में यह जानने की इच्छा हुई कि वह किस सीढ़ी से वहां तक पहुंचा है। इस कारण उन्होंने पूछ लिया, "सेठ सोमानी जी के घर पर मध्याह्नोत्तर मिलना।"

"यत्न करूंगा। उस समय मेरी ड्यूटी होती है।"

"तो कल प्रातः अल्पाहार के समय मिलना।"

"अवश्य इस कृपा का लाभ उठाने का यत्न करूंगा।"

अगले दिन साढ़े आठ बजे प्रातः वह सेठ सोमानी के घर पर जा पहुंचा और गुरु जी से मिलने के लिए चपरासी से बोला तो वह बोल उठा, "आइए! आपकी प्रतीक्षा हो रही है।"

"भाई! कैसे जानते हो यह?"

"पिछले पन्द्रह मिनट में तीन बार आदेश आ चुका है कि सुन्दरम् साहब आएं तो तुरन्त भीतर ले आओ।"

सुन्दरम् समझ नहीं सका कि किस कारण से उसकी प्रतीक्षा हो रही है।

जब वह वहां पहुंचा तो सेठ जी के सेवकों ने सुन्दरम् के सम्मुख अल्पाहार रख दिया। सुन्दरम् ने कह दिया, "महाराज! मैं आपके सामने बैठ अल्पाहार

लेने की धृष्टता नहीं कर सकता।"

"मगर हम ही तो यह लेने को कह रहे हैं।"

"यह तो देख रहा हूं, परन्तु इस विचार से कि आपके साथ बैठ अल्पाहार लेने की योग्यता मुझमें नहीं, मैं घर से ही पेट भरकर आया हूं।"

"इस पर भी कुछ तो लो।"

विवश सुन्दरम् ने बर्फी की एक टुकड़ी ली। मुख में डाल और ऊपर से शीतल जल ले वह दत्त-चित्त हो अपने बुलाए जाने के प्रयोजन को जानने की प्रतीक्षा करने लगा।

"तुम इस स्थान पर पहुंच गए हो, यह जान हमें बहुत प्रसन्नता हुई है।"

"यह तो होनी ही चाहिए। यह पौधा आपका ही तो लगाया हुआ है। मैं एक फोर्थ ग्रेड स्टेशन पर लगा था। आपकी कृपा से ही मैं केवल दस वर्ष में ही इस स्थान को पा गया हूं। मुझ जैसी साधारण शिक्षा के व्यक्ति के लिए इससे और उन्नति का स्थान नहीं है।"

"है, अवश्य है। वह है पूर्ण निर्वाण। जब प्रकृति का यह अंश सर्वव्यापक प्रकृति में विलीन हो जाता है।"

"हां! उस दिशा में भी यत्न कर रहा हूं। आपकी कृपा से उस ओर भी प्रगति कर रहा अनुभव करता हूं।"

"तब ठीक है। अगले मास आश्रम के वार्षिक उत्सव पर आना।"

"जी! यत्न करूंगा। आपका हाथ अपने सिर पर देख तो मैं निर्भय हो संसार में विचर सकता हूं।"

गुरु जी का यह स्वभाव था कि वह अपने शिष्यों से वार्तालाप में सामान्य शुभकामना आदि की बातें ही करते थे। इस कारण प्रायः शिष्य यही समझते थे कि गुरु जी उनसे निकट का सा व्यवहार रखते हैं।

सुन्दरम् लगभग एक घंटा भर वहां ठहरा और फिर पूछने लगा, "गुरु जी! मुझे आज्ञा है?"

"तुम्हारी पत्नी आजकल कहां है?"

"मेरे घर पर अधिकार किए हुए है।"

"ओह! यह कैसे हो गया?"

"गुरु जी! वह कहती है कि उसका मुझसे विवाह होने से उसे यह अधिकार हो गया है कि वह मेरे घर की स्वामिनी बनी है।"

"कोई बच्चा इत्यादि हुआ है अथवा नहीं?"

"हां, महाराज! एक को जन्म दे चुकी है और एक और की इच्छा करती है।"

"और तुम यह उसे दे रहे हो?"

"महाराज ! इनकार कैसे कर सकता हूं। मांग बच्चों के नाम पर नहीं की जाती। वह तो किसी अन्य उद्देश्य से की जाती है। परन्तु उस मांग की पूर्ति करते हुए मैं यह अनुभव करता हूं कि सन्तान की इच्छा उसमें निहित है।"

"देखो सुन्दरम् ! यह सब मोह जाल है। जब इस मोह जाल से मुक्ति पाओगे तभी अपना कल्याण सिद्ध कर सकोगे।"

"महाराज ! मुक्ति तो तब ही हो सकती है जब वह सामने दिखाई न दे। उसके दृष्टि में रहते हुए उसकी इच्छा पूर्ति में ही अपनी इच्छा की पूर्ति समझ आने लगती है।"

"तुम्हें तो आय बहुत है।" गुरु जी ने बात बदलकर पूछा।

"जी हां ! वेतन तो काफी मिलने लगा है। परन्तु मैं ऊपर की आय नहीं करता।"

"क्यों ?"

"मेरी अपनी आय ही पर्याप्त है। मैं समझता हूं कि अधिक आय तो फिर पत्नी की सन्तान के लिए ही होगी। जब मेरी रुचि सन्तान के लिए नहीं तो फिर रिश्वत लूं तो किसके लिए। इस कारण ऊपर की आय को मैं अपने अधीनों में बांट देता हूं।"

"यह तो ठीक करते हो। तुम समाज का नियम भंग तो करते हो, परन्तु अपने स्वार्थ के लिए नहीं। यह निर्वाण अवस्था की ओर चलना है।"

"महाराज ! सब आपकी कृपा है।"

सुन्दरम् वापस आ गया, परन्तु गुरु जी का शिष्य, सोमानी परिवार का एक घटक, समीप बैठा दोनों में वार्तालाप सुन रहा था। उसने सुन्दरम् के चले जाने के उपरान्त पूछा, "महाराज ! मैं देख रहा था कि यह सरासर आपके सम्मुख झूठ बोल रहा था।"

गुरु जी ने पूछा, "कैसे कहते हो ?"

इसपर सोमानी हंसते हुए बोला, "जब हम यहां बैठे वार्तालाप कर रहे थे, इसका सहायक एक भण्डारी आपके एक अन्य शिष्य से व्यापार सम्बन्ध बना रहा है।"

"परन्तु वीरेन्द्र !" यह सोमानी का पूरा नाम था, "मैं इसमें रुचि नहीं रखता।"

"इसकी उन्नति में ?"

"न उन्नति में, न अवनति में।"

"तब तो परिणाम यह होगा कि यह और अधिक उन्नति करेगा आपकी तटस्थता की छत्रछाया में।"

"तब भी ठीक है। मैं इसके विपरीत नहीं। मेरी रुचि तो इस बात में है कि

यह तथा इसकी पत्नी हमारे शिष्य बन जाएं।"

वास्तव में सोमानी कावेरी के पुल के ठेके का स्वयं एक प्रत्याशी था। रेलवे के केन्द्रीय मंत्रालय में सोमानी की नहीं चली।

सुन्दरम् स्टेशन पर अपने कार्यालय में पहुंचा तो वहां भण्डारी और सिद्धेश्वर बैठे थे।

सुन्दरम् के आते ही भण्डारी ने कहा, "यह सेठ महेश्वर जी के पुत्र सिद्धेश्वर है। हम दोनों आपके सम्मुख इस कारण आए हैं कि आप हमारे अनुबन्ध पर साक्षी के रूप में हस्ताक्षर कर दें।"

"तो कोर्ट में चलना पड़ेगा?"

"नहीं। हमने निश्चय किया है कि कोर्ट में इसे रजिस्टर कराने की आवश्यकता नहीं।"

सुन्दरम् ने विस्मय में सिद्धेश्वर का मुख देखते हुए कहा, "क्यों सिद्धेश्वर! ठीक है यह?"

"हां! भण्डारी जी का अनुमान ठीक है कि यदि हम ठीक हैं तो कोर्ट में जाने की आवश्यकता नहीं और यदि हमारे मन में मैल है तो कोर्ट हमारी सहायता नहीं कर सकेगा।"

"हां, यह तो है ही। हमारे गांव के एक पटेल के परिवार में भाई भाई का झगड़ा चल रहा है। दस वर्ष से ऊपर हो गए हैं और अभी तक प्रथम कोर्ट में भी निर्णय नहीं हुआ। पिछले महीने मुद्दालय की ओर से साक्षी उपस्थित होने आरम्भ हुए हैं। सब अनुमान लगा रहे हैं कि निर्णय में अभी पांच वर्ष और लगेंगे।

"हमारे पास इतना समय नहीं। आप इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दीजिए। यह इसलिए कि इस पृथ्वी पर एक व्यक्ति है जो हमारे वचनों को जानता है।"

अनुबन्ध पढ़ा गया। उसमें कुछ लम्बा-चौड़ा नहीं लिखा था। इतना था कि हम अमुक-अमुक व्यक्ति कावेरी पर चल रहे काम के लाभ के पचास-पचास प्रतिशत के भागीदार हैं। हम परमात्मा को सर्वव्यापक समझ, उसके समक्ष शपथ लेते हैं कि दोनों एक दूसरे की राय से व्यवहार करेंगे और साझे लाभ के हकदार होंगे।"

सुन्दरम् ने हस्ताक्षर किए तो भण्डारी ने कहा, "मैं तो इतना लिखने की भी इच्छा नहीं करता था। परन्तु सिद्धेश्वर के पिता ने यह कहा है कि शर्तें लिखित में आ जाने से कभी कोई बात विस्मरण हो तो पढ़ने से स्मरण आ जाती है। इससे इसकी आवश्यकता है।"

सिद्धेश्वर ने कहा, "आज प्रातः मैं यही बात अपनी पत्नी निर्मला को बता रहा था तो उसने एक बात और बता दी। उसका कहना था कि ठेकेदारी में साझे-

दारी तो पांच-छः वर्ष की है। काम समाप्त होने पर साझेदारी समाप्त हो जाएगी, परन्तु पति-पत्नी तो जीवन भर की साझेदारी बिना लिखा-पढ़ी के ही निभा रहे हैं। मैंने उसे वचन दिया है कि मैं उसका पति होऊंगा और उसने वचन दिया है कि वह मेरी पत्नी होगी। यह वचन मरणपर्यन्त चलने वाला है। उसके सम्मुख यह पाच वर्ष की साझेदारी तो बहुत ही तुच्छ है।"

सुन्दरम् ने पूछ लिया, "तो सिद्धेश्वर ! तुम विवाह को ठेकेदारी के तुल्य ही समझते हो क्या ?"

"तो और क्या है ?"

भण्डारी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "सिद्धेश्वर जी की पत्नी ने ठीक ही कहा है। यह विवाह भी एक प्रकार की साझेदारी ही है। इसे धर्म इसलिए कहते हैं कि यह साझेदारी से कुछ अधिक है। इस सृष्टि मे आते हुए परमात्मा ने हमें सृष्टि-रचना काम धर्म के रूप में दिया है। धर्म तो यह इसके परिणामों को देखकर कहा जाता है। वैसे तो यह सामान्य साझेदारी ही है।"

दोनों सज्जन सुन्दरम् के हस्ताक्षर लेकर गए। सुन्दरम् अपने को रामकृष्ण भण्डारी के सम्पर्क में आने पर भाग्यशाली मानने लगा था।

एक दिन, उक्त हस्ताक्षर कराने के दो मास उपरान्त की बात है, कि सुन्दरम् को रेलवे बोर्ड के सम्मुख उपस्थित हो अपने बयान देने का नोटिस मिला।

सुन्दरम् ने तुरन्त लिख दिया, "मुझे यह बता दिया जाए कि किस बात पर मुझे बयान देने है। इसके पता चलने पर ही मैं ठीक-ठीक उत्तर दे सकूंगा और यदि यहां से कुछ कागज़ पत्र लाने की आवश्यकता हो तो ला सकूगा।"

इसका उत्तर आया कि बात इतनी गुप्त है कि पेशी से पहले बताई नहीं जा सकती। परिणाम यह हुआ कि सुन्दरम् निश्चित दिन और समय पर बोर्ड के सम्मुख दिल्ली उपस्थित हो गया।

रेलवे बोर्ड के तीन सदस्यों की एक 'समिति' सुन्दरम् से भेंट के लिए नियत थी। उनके सामने सुन्दरम् उपस्थित हुआ तो किसी प्रकार के उसके विपरीत आरोप बताने के स्थान उससे पर प्रश्न किए जाने लगे।

समिति के चेयरमैन ने पूछा, "आप किसी रामकृष्ण भण्डारी को जानते है ?"

"जानता हूं।" सुन्दरम् ने कहा।

"वह आपका किस प्रकार परिचित है ?"

"उनसे मेरी भेंट एक आचार्य सोमेश्वर जी के आश्रम में हुई थी। वहां से परिचय बढते-बढ़ते अब मित्र का-सा भाव हम दोनों में है।"

"आप में और उनमें कौन-सी बात साझी है, जिससे एक दक्षिण का रहने वाला एक उत्तरी भारत के धनी-मानी को अपना मित्र मानता है ?"

"उनके मन में क्या बात है, यह मैं नहीं जानता। परन्तु मेरे अपने मन में

उनके विचारों की श्रेष्ठता कारण है जिससे मैं अपने को उनके समीप मानता हूं।"

"क्या हम जान सकते हैं कि क्या सामीप्य है ?"

"वह श्रेष्ठ विचारों का स्वामी है। श्रेष्ठ विचारों वालों में सामीप्य स्वाभाविक है।"

"तुम्हारी बात समझ में नहीं आई।"

सुन्दरम् ने एक क्षण तक विचार किया और कहा, "एक बात उदाहरण के रूप में बताता हूं। किसी का सुन्दर, ओजस्वी तथा पुत्रवान् अथवा धनवान का पुत्र होना, अथवा किसी राजा अथवा विख्यात महात्मा का पुत्र होना उस व्यक्ति के अपने गुण नहीं कहे जा सकते। ये उसके पूर्वजन्म के फलस्वरूप ही है। परन्तु उसके वर्तमान जीवन के कर्म तो उसके अपने गुणों-अवगुणों का दर्शन कराते है। इस दृष्टि से मिस्टर भण्डारी गुणशील और कर्मशील व्यक्ति हैं। मैं ऐसे व्यक्ति से सामीप्य अनुभव करता हूं।"

"परन्तु इसका तुम्हारी बात से क्या सम्बन्ध है ?" चेयरमैन ने पूछा।

"हुजूर ! यही तो कह रहा हूं कि आपका चेयरमैन पद पर नियुक्त होना यह प्रकट नहीं करता कि आप इस पद के योग्य भी हैं। हां, आपकी सूझ-बूझ को समझने से ही आपके इस पद के योग्य होने का ज्ञान हो सकता है।"

"बहुत गुस्ताख हो।"

"बिल्कुल नहीं। मैं आपको एक उदाहरण देकर समझा रहा हूं। यदि अभी भी बात स्पष्ट नहीं हुई तो एक अन्य उदाहरण दे सकता हूं। अपने देश मे एक महात्मा गांधी हुए हैं। कहते है कि उनकी ख्याति इतनी थी कि विदेशी सरकार भी उनकी सुख-सुविधा के लिए स्पैशल ट्रेनें चलाती थी; परन्तु उनकी ख्याति से उनके जीवन का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। उनके जीवन के उद्देश्यों की सिद्धि ही उनकी योग्यता का मूल्य बता सकती है।

"इसी प्रकार पण्डित नेहरू भारत के बेताज बादशाह माने जाते थे। यह भी उनके पूर्वजन्म के कर्मों के कारण था। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि किसी की जन-जन में ख्याति उसके महान् होने के लक्षण नहीं, वरन् उसके अपने कर्मों का अनुशीलन ही उसकी महिमा का ज्ञान करा सकता है।"

चेयरमैन ने आवेश में कहा, "मिस्टर सुन्दरम् ! तुम बहुत ही मोटी बुद्धि के व्यक्ति हो।"

"हुजूर ! इस विषय में भी मेरी परीक्षा ली जा सकती है। मैं तो यह भी कहता हू कि आप किसी भी डिपार्टमैण्टल परीक्षा में मेरे साथ बैठकर परीक्षा देकर देख लीजिए। यदि आप से अधिक अंक न पा सकूं तो मुझे जो चाहें कह सकते हैं।"

चेयरमैन ने सामने रखी फाईल पर लिख दिया, "मोस्ट ऑब्स्टिनेट एण्ड थिक

हैडिड आफिसर" और मीटिंग समाप्त कर दी।

सुन्दरम् भी उठ खड़ा हुआ और पूछने लगा, "तो आज मैं बम्बई लौट सकता हूं?"

"मैं चाहता हूं कि आप यही इस जांच का परिणाम जानकर लौटें तो अधिक उचित होगा।"

"देखिए मिस्टर चेयरमैन !" सुन्दरम् ने कहा, 'यह जांच नही है। आपने मेरे विरुद्ध कोई चार्जशीट नही लगाई। मैंने मांगी थी, आपने दी नही। यहा आपने केवल एक प्रश्न पूछा है कि मेरा भण्डारी जी से क्या सम्बन्ध है। मैंने उसका उत्तर दे दिया है। यह चार्जशीट नही है।

"यदि आप कुछ करेंगे, जो मेरे अधिकारों के विरुद्ध होगा तो मैं उसके विरोध में कानूनी चाराजोई करूंगा।"

"ठीक है। आज्ञा की प्रतीक्षा करें। अपना दिल्ली में ठहरने का पता बाहर क्लर्क को बता जाएं।"

सुन्दरम् ने वैसा ही किया और इम्पीरियल होटल, जहां वह ठहरा हुआ था, जा पहुचा। तीसरे दिन उसे बोर्ड के कार्यालय से आज्ञा आई कि उसे काम से सस्पैण्ड किया जाता है।

सुन्दरम् ने तुरन्त ही उत्तर लिख दिया कि आपकी आज्ञा अवैधानिक है। जब तक इस आज्ञा के पोषण में उचित कागजात, आरोप-पत्र, उसपर मेरा उत्तर और उसपर उचित अधिकारी की आज्ञा इत्यादि न हों, तब तक मैं अपने को सस्पैण्ड हुआ नही मानूंगा।

इसका उत्तर नही आया और वह बम्बई लौट गया। वहां जाकर उसे पता चला कि उसके स्थान पर एक अन्य व्यक्ति काम पर नियुक्त हो चुका है।

सुन्दरम् ने सरकारी क्वार्टर खाली कर दिया और सेठ महेश्वर के मकान पर चला गया। सिद्धेश्वर इन दिनों बैंगलोर में गया हुआ था। उसकी पत्नी निर्मला सत्यवती के पास नर्सिंग होम में आकर रहने लगी थी।

सुन्दरम् ने कोर्ट में दावा कर दिया कि उसे अकारण सेवा से मुक्त करने की आज्ञा दी जा रही है। इस कारण कोर्ट बोर्ड की आज्ञा रद्द करे और उसे पुन: अपने काम पर बहाल करने की आज्ञा दे।

6

सेठ जी के पूछने पर सुन्दरम् ने बताया, "मेरा विश्वास है कि यह गुरु सोमेश्वर अथवा उनके किसी चेले की करनी का फल है।"

सेठ जी का कहना था, "वास्तव में तुम्हारे निकाले जाने से लाभ जिसको

पहुंचना है, वह सीधे अथवा उल्टे हाथ मे इस षड्यन्त्र को चलाने वाला है।"

"अभी तक लाभ तो मेरे एक असिस्टैण्ट को पहुंचा है। परन्तु मैं उसकी इतनी बड़ी हिम्मत नहीं समझता कि रेलवे बोर्ड के निर्णय पर प्रभाव उत्पन्न कर सके।"

"अच्छा भाई सुन्दरम् ! मैं जानने का यत्न करूंगा। मेरी कुछ जान-पहचान दिल्ली मे है। मैं यत्न करूंगा। तुम बताओ कि मुकद्दमे में क्या सहायता चाहते हो ?"

"अभी तो मैंने अर्जी की है। उस अर्जी पर आज्ञा हो गई है कि रेलवे बोर्ड को नोटिस जारी किया जाए, परन्तु मुझे बताया गया है कि नोटिस जारी करने में एक महीना लग जाना सहज ही है।"

सेठ जी हंस पड़े, "तब तक खाना-पीना कहां चलेगा ?"

"मेरे पास निर्वाह के लिए पर्याप्त है। आपने कृपा कर मुझे मकान मे रहने को स्थान दिया है।"

"ठीक है ! मुझे अपनी प्रगति से अवगत कराते रहना।"

सुन्दरम् के मामले की गूंज लद्दाख क्षेत्र में भी पहुंची। भण्डारी, वहां दो ऐयरोड्रोम बनवा रहा था। भण्डारी ने सुन्दरम् को लिख भेजा, "मैं अगले मास दक्षिण में आऊंगा, तब आप से मिलूंगा।"

बम्बई मैजिस्ट्रेट के कोर्ट से रेलवे बोर्ड को नोटिस जारी हुआ और दो महीने की तिथि उत्तर के लिए निश्चित की गई।

सुन्दरम् इन दिनों खाली था, इस कारण वह सेठ जी के मकान के नीचे सिद्धेश्वर के कार्यालय में आ बैठता था। सिद्धेश्वर ने अपने कार्यालय में हैडक्लर्क नीलकण्ठ सरोदे को अपने स्थान पर काम करने के लिए नियुक्त कर दिया था।

नीलकण्ठ सरोदे पिछले दस वर्ष से इस फर्म मे काम करता था और सिद्धेश्वर उसे काम पर अधिकार देकर स्वयं भण्डारी से साझेदारी करने चला गया था।

निश्चित तिथि को भण्डारी बम्बई में आया और सेठ महेश्वर से सुन्दरम् का पता पा उससे मिलने आ पहुंचा।

जब भण्डारी सिद्धेश्वर के कार्यालय में पहुंचा तो वहां सुन्दरम् को बैठा देख पूछने लगा, "तो आप यहां कार्य करने लगे हैं ?"

"जी नहीं ! यहां मुझे किसी ने नियुक्त नहीं किया। खाली बैठा थोड़ी बहुत सरोदे साहब की सहायता कर देता हूं।"

"अर्थात् बिना रीति-रिवाज के विवाह सम्पन्न हो गया है।" भण्डारी ने मुस्करा कर कहा।

सुन्दरम् हंस पड़ा। हंसता हुआ बोला, "हां, है तो कुछ वैसा ही, परन्तु जिससे बिना रीति-रिवाज के विवाह किया है, उसका पति सामने ही बैठा है। श्रीमान् सरोदे जी की अनुमति से ही उनके स्थान का भोग कर रहा हूं।"

"यह तो और भी बुरा है। यह तो बर्दा फरोशी है।"

"परन्तु यह अपने काम के प्रयोग का दाम नहीं ले रहे। इस कारण यह बर्दा-फरोशी नहीं हो सकती।"

"तब तो यह पोलिएण्ड्री हो जाएगी।"

"जी! यह भी नहीं। मैं अधिक से अधिक देवर ही माना जा सकता हूं।"

"क्यों जी!" भण्डारी ने सरोदे से पूछा, "इनकी सहायता को कैसा समझते हैं आप?"

"यह इन्होंने ठीक ही बताया है। यह यहां के कार्य को भाभी की सेवा मान कर ही कर रहे हैं। और फिर इनकी अपनी पत्नी भी है। उसकी सेवा भी यह करते रहते हैं।"

वहां सब बैठे इस नोक-झोंक को सुन रहे थे। सब हंसने लगे।

भण्डारी ने कहा, "मिस्टर सुन्दरम्! मैं आपको अपने साथ होटल ले चलने के लिए आया हूं।"

"चलिए।"

दोनों कार्यालय से निकल आए और होटल को चल पड़े।

बात भण्डारी ने अपने कमरे में बैठ कर की। उसने कहा, "देखिए! मैंने सब बात पता की है। यहां एक वीरेन्द्र सोमानी नाम का व्यक्ति है। उसने तुम्हें निलम्बित कराया है। इससे उसका अपना कुछ भी हित नहीं हो रहा, परन्तु मुझसे उसका रोष है। वह वर्तमान ठेका लेने में मेरा प्रतिस्पर्धी था और काम पाने में असफल रहा है। यद्यपि उसके रेट कुछ कम थे, परन्तु उसे विश्वस्त नहीं समझा गया। यह मेरे विपरीत सोमानी का एक आघात है। उसका आशय मेरे एक मित्र को हानि पहुंचा कर मुझे दुःखी करना मात्र है।

"रेलवे बोर्ड मुकद्दमा हारेगा। सम्भव है इसमें दस वर्ष लग जाएं। तब तक आप अपना आधा वेतन लेते रहेंगे। आधा आपको पीछे मिलेगा।

"परन्तु दस वर्ष तक आप बेकार बैठे रहेंगे तो मस्तिष्क और अन्य अंगों को जंग लग जाएगा। इस कारण आप कुछ काम करते रहें, जिससे निर्वाह चल सके।"

"भण्डारी जी! यह सब ठीक है, परन्तु मैं समझता हूं कि इसमें भी गुरु सोमेश्वर जी का हाथ है। लगभग तीन मास हुए सोमेश्वर जी यहां बम्बई आए थे और उन्होंने मुझे वीरेन्द्र जी के घर में अल्पाहार के लिए दावत दी थी। मैं गया तो था, परन्तु मैंने अल्पाहार नहीं लिया था। परन्तु बात इस वीरेन्द्र सोमानी के सम्मुख हुई थी।

"मुझे विश्वास हो रहा है कि सोमानी ने गुरु जी के किसी शिष्य के द्वारा यह सब किया है। परन्तु इसमें गुरु जी को क्या लाभ होगा, मैं समझ नहीं सका। न ही,

रेलवे बोर्ड के चेयरमैन के मेरे विपरीत कार्यवाही से रेलवे को क्या लाभ होगा, यह मैं समझ सका हूं।"

भण्डारी ने कहा, "परन्तु मिस्टर सुन्दरम्! आज समाज में इतनी खराबी घुस आई है कि हमें दूसरों की चिन्ता में अपना जीवन व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। आप अपनी दृष्टि अपनी सुरक्षा तक ही सीमित रखिए।

"बताइए, मैं आपके लिए कहीं काम ढूंढ़ दूं अथवा आप स्वयं ढूंढ़ लेंगे?"

"मैं समझता हूं कि आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। यदि कुछ ऐसा हुआ कि मैं अपनी योजना में सफल नहीं हुआ तो फिर आप से सहायता मांग लूंगा।"

"क्या करने का विचार है?"

"मुकद्दमा लड़ने के लिए मुझे बम्बई में ही रहना पड़ेगा। दूसरे, यदि मैं प्रत्यक्ष में कहीं कोई आय वाला काम करूंगा तो मुझे मुकद्दमा जीतने पर शेष वेतन मिलने में कठिनाई होगी। इस कारण कार्य तो करूंगा और उसका प्रतिकार कुछ नहीं लूंगा।"

"तो सेठ जी से बात कर रहे हैं?"

"अभी बात नहीं की। हां, अब बात करूंगा।"

भण्डारी तो एक ही दिन बम्बई रहकर कावेरी वाले काम पर चला गया। परन्तु जब पहली पेशी में सब-जज ने रेलवे से उस आज्ञा की नकल मांगी जिसमें सुन्दरम् को काम से पृथक किया गया था तो बोर्ड ने छः मास की तारीख ले ली।

इसका अभिप्राय यह था कि सुन्दरम् अभी कम-से-कम छः मास के लिए आधे वेतन पर छुट्टी पर था।

एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा, "तुम सेठानी जी से कुछ काम नर्सिंग होम में ले लो और मैं तनिक गुरु जी के आश्रम को सेंध लगाने जा रहा हूं।"

संतोष बाई का विचार था, "व्यर्थ है।"

"कुछ भी हो। पहले मैं एक श्रद्धालु सेवक के रूप में आश्रम में जाता था। अब मैं एक भेदिये के रूप में सेंध लगाने वहां जा रहा हूं। मैं बीच-बीच में बम्बई आता रहूंगा।"

परिणामस्वरूप एक दिन सुन्दरम् गुरु आश्रम को चल पड़ा और संतोष सत्यवती से मिलने जा पहुंची। वह अपना बच्चा साथ लिए हुए इस नर्सिंग होम में पहुंची तो सत्यवती ने उससे पूछा, "कैसे आई हो?"

"कृष्णम् के पिता गुरु जी के आश्रम को गए हैं। मैं वहां अकेली अनुभव करती हूं। इस कारण यहां आप से कुछ काम और आश्रय लेने चली आई हूं।"

"क्या काम कर सकोगी?"

"नर्स का काम तो कर सकूंगी। कुछ अन्य काम भी बताएंगी तो करने का

यत्न करूंगी।"

"वेतन क्या लोगी ?"

"मेरे पति ने मुझे खाने-पहनने और बच्चे के पालने के लिए पर्याप्त दे रखा है। इस कारण अवैतनिक काम करूंगी।"

"और यह बच्चा ?"

"यह इस समय चार वर्ष का है। यहां विश्वेश्वर के साथ खेला करेगा।"

"तो तुम काम पर कब आओगी ?"

"जब भी आप कहें।"

"ठीक है। कल दिन के दस बजे आ जाना। मैं तुम्हारे लिए काम ढूंढ़ रखूंगी।"

इस प्रकार संतोष बाई ने अपने दिन भर काम में लगे रहने का प्रबन्ध कर लिया।

सेठ जी ने जब सुन्दरम् की पत्नी की बात सुनी तो कह दिया, "तुम्हारा परिवार यहां बड़ा हो रहा है।"

"हां ! आप हैं, मैं हूं। निर्मला है, विश्वेश्वर और अब वह संतोष बाई तथा उसका लड़का कृष्णम् भी आ गया है। वैसे मृदुला पण्डित भी इस परिवार की सदस्या प्रतीत होती है।"

"बहुत मजेदार बात है। बिना प्रसव की यंत्रणा सहे, परिवार की सृष्टि कर रही हो।"

"हां ! यह तो है, परन्तु ये सब उत्तरदायित्व आप निभा सकेंगे ? यही कभी-कभी विचार करती हूं।"

"भविष्य में क्या होगा, इसकी चिन्ता तो मूर्ख करते हैं। बुद्धिमान वर्तमान में ही रहते हैं। भूत तो व्यतीत हो गया। भविष्य का पता नहीं। इस कारण शेष तो वर्तमान ही है। इसमें दिनानुदिन की सोचने वाला मनुष्य सुखी रहता है।"

संतोष को नर्सिंग होम में नर्स का काम करते हुए एक मास हो गया था कि सुन्दरम् उससे मिलने आया। वह भी यह जान कि संतोषी नर्सिंग होम में काम करने लगी है, प्रसन्न था। वह सेठ जी से मिला और फिर उसने सत्यवती का धन्यवाद किया कि उसने उसकी पत्नी को उपकारी काम में लगा दिया है।

"हां, और उसने कोई वेतन अथवा भत्ता भी स्वीकार नहीं किया। यहां तक कि अपना खाना-पीना एवं अन्य खर्च भी अपने पास से कर रही है।"

सुन्दरम् ने कहा, "वह कहती है कि वह मेरी पत्नी है। इससे वह किसी अन्य को अपना पालनकर्ता नहीं मानेगी। यह काम तो दान-दक्षिणा का है। यह नौकरी नहीं।"

सेठ जी का कहना था, "वह ठीक कहती है। स्त्री पति के अतिरिक्त अन्य

किसी की अधीनता के लिए नहीं बनी। यदि पति उसके खिलाने-पिलाने के लिए पैदा नहीं कर सकता तो उसका अधिकार नहीं कि उसे पत्नी के रूप में रखे।"

"आपके कथन का अर्थ यह हो जाएगा कि स्त्रियां, जो उनको खाने-पहनने को दे, उसी की भोग्या बन जाएं।" सुन्दरम् ने कह दिया।

"मिस्टर सुन्दरम्! गुरु आश्रम में एक महीना रह कर आए हो। इस कारण कुछ मूर्ख बन रहे हो। देखो, मेरा कहना यह है कि पत्नी पति के घर-गृहस्थ के काम को समेट कर परिवार का एक अत्यावश्यक अंग बन जाती है। स्त्री गृहस्थ के इस भाग को कुशलतापूर्वक करे और यदि उसके इस काम के लिए पति उसके खाने-पहनने और रहने का प्रबन्ध नहीं कर सकता तो वह उसका अधिकारी नहीं कि गृहस्थ के कर्मों के इस अंग का भार उस पर रहे। पत्नी तब उसके काम का उत्तरदायित्व छोड़ दे।

"रही बात परस्पर भोग की। उसे मैं गौण मानता हूं। गौण इस विचार से नहीं कि जिस किसी के साथ इच्छा हो, सम्बन्ध बना लिया जाए। तब यह गौण कार्य नहीं रह जाएगा। वह जीवन का मुख्य अंग बन जाएगा। गृहस्थ जीवन गौण हो जाएगा।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि यदि पति-पत्नी परस्पर के सम्बन्ध को सीमित रखना आवश्यक समझते हैं तो इसलिए नहीं कि वह पति-पत्नी हैं। प्रत्युत इस कारण कि वह सन्तान के साझे माता-पिता होने वाले हैं। इस कारण कहीं यह न हो जाए कि पति-पत्नी बैठकर विचार किया करें कि सन्तान नम्बर एक उनकी है अथवा किसी अन्य की।

"समाज ने सन्तान को निश्चित माता-पिता देने के लिए विवाहित जीवन में पति-पत्नी में सम्बन्ध सीमित कर दिया है।"

सुन्दरम् ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं गुरु आश्रम को इस कारण गया था कि मैं गुरु जी के विचारों का स्रोत समझ सकूं। गुरु जी कहा करते हैं यौन तृप्ति से समाधि की समानता है। विवाह एक बन्धन है। और समाज की प्रगति में बाधक है। मरने के उपरान्त प्रकृति का बना शरीर परमाणुमय हो जाता है और क्योंकि प्राणी में प्रकृति के परमाणु के अतिरिक्त कुछ अन्य है नहीं, इस कारण पूर्व और भावी जन्म मिथ्या कल्पना है। इन विचारों का स्रोत जानने की लालसा से वहां पहुंचा हूं।

"एक बात है। आश्रम में पचास से ऊपर कर्मचारी तथा सेवक रहते हैं जो वहीं खाते-पीते हैं तथा सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। वे सब के सब गुरु जी के शिष्यों तथा आश्रम में आने वाले अभ्यागतों के सम्मुख गुरु जी की प्रशंसा खुले दिल से करते हैं।

"फिर धनी-मानी, सेठ साहूकारों के सामने आश्रमवासी गुरु जी के विषय में

चमत्कारिक बातें बताते रहते हैं और सत्य तथा मिथ्या प्रमाण साक्षी के रूप में प्रस्तुत करते रहते हैं।

"गुरु जी का व्यक्तित्व अति ओजस्वी है। इनकी वाणी में मिठास है। और इन सबसे ऊपर यह बात है कि गुरु जी का अध्ययन अति विस्तृत है। इस अध्ययन को वह अपने रंग में रंग कर अपने प्रवचनों में प्रस्तुत करते हैं और लोग समझते हैं कि वह एक पहुंचे हुए गुरु है।

"एक बात मैंने और भी अनुभव की है। उन पर कोई भी शिष्य युक्ति-प्रतियुक्ति करने का साहस नहीं कर सकता। बाहरी लोगों को तो युक्ति करने का अवसर ही नहीं मिलता। जो कोई प्रश्न करता है तो ऊपरी बातों पर ही करता है।

"अपने एक मास के प्रवास में बस यही कुछ मैं देख पाया हूं। अब मैं पुनः वहां जाऊंगा और संतोष यहां माता जी के पास रहेगी।"

सेठ जी ने मुस्करा कर पूछा, "तो वहां कोई अन्य संतोष मिल गई है?"

"सेठ जी! मेरी इस विषय में रुचि नहीं रही। वैसे मैं इस अनुभव से अनभिज्ञ भी नहीं हूं और मैं चाहता तो मिलनी असम्भव भी नहीं थीं, आश्रमवासियों का निजी जीवन भी गुरु जी की जीवन मीमांसा के अनुरूप ही है। गुरु जी कहते हैं कि मन पर किसी प्रकार का बोझा नहीं रहना चाहिए। बोझा रहने पर मनुष्य ध्यान तथा समाधि नहीं लगा सकता। मैंने एक दो बार यत्न किया कि मैं गुरु जी की इस मीमांसा पर उनसे चर्चा करूं। परन्तु वह मेरी बात पर हंस पड़ते थे और व्यंग्य में बात समाप्त कर दिया करते थे।"

अब सेठ जी ने भी हंसते हुए कह दिया, "सुन्दरम् जी! किसी के व्यवसाय का रहस्य जानने के लिए उस जैसा व्यवसाय करना पड़ता है। तुम इस पशुपन का रहस्य नहीं जान सकोगे जब तक तुम स्वयं उस पद पर आसीन नहीं हो जाते।"

"सेठ जी! यह तो असम्भव है। मैं उन जैसा गौर वर्णीय, सुन्दर रूप-रेखा तथा ओजस्वी व्यक्तित्व रखने वाला नहीं हूं।

"मेरी शिक्षा भी अधूरी ही है। मैं बी० ए० तक पढ़ा हूं। वह एम० ए० हैं और प्राध्यापक का काम कर चुके हैं। इस कारण उनका-सा व्यापार करना तो अभी सम्भव नहीं।

"मैं तो शिष्य के रूप में ही गुरु जी के हृदय तक पहुंचना चाहता हूं। आखिर वह सरकारी अफसरों, मद्रास-बम्बई और कलकत्ता के सेठों और समाचार पत्रों के संवाददाताओं को किस प्रकार मूर्ख बना रहे हैं, यही मैं देखना चाहता हूं।"

अगले दिन सुन्दरम् पुनः आश्रम में जा पहुंचा।

7

आश्रम में पहुंच सुन्दरम् यह देख चकित रह गया कि रेलवे बोर्ड का चेयरमैन रामानन्द भावे गुरु जी के पास बैठा बातें कर रहा था।

सुन्दरम् ने गुरु चरण स्पर्श किए और फिर हाथ जोड़ चेयरमैन साहब को नमस्कार की। भावे ने सुन्दरम् को देखा तो चिन्ता के भाव में पहले उसे और फिर प्रश्नभरी दृष्टि से गुरु जी के मुख पर देखने लगा।

रामानन्द भावे को प्रश्नभरी दृष्टि में देखने पर गुरु जी ने कहा, "यह के० सुन्दरम् हैं। मेरे शिष्यों में से हैं। कभी बागी थे। अब पुनः आश्रम की शरण में आ गए हैं।"

"मैं आपसे पृथक् में बात करना चाहता हूं।"

"किसी अन्य समय कर लेंगे। अभी तो यह अपनी पत्नी से मिलकर आए हैं। जरा उसकी बात भी जान लें। एक बार वह हमारी शिष्या बनने आई थी।

"वह कहने लगी कि अपना जूठा दूध पीने को दे दें तो कृत-कृत्य हो जाऊंगी। वह अनुभव करेगी कि उसने हमारे होठों का स्पर्श प्राप्त कर लिया है।

"हमने थोड़ा-सा झूठा दूध उसे दिया तो वह अत्यन्त प्रसन्न हो, माथा भूमि पर लगा प्रणाम कर चली गई।

"उसे एक भण्डारी यहां से बरगलाकर ले गया था। सुना है वह अब पुनः इनके पास रहने लगी है। हम शिष्या के विषय में जानने के लिए उत्सुक हैं।"

मिस्टर भावे मौन बैठा रहा। गुरु जी ने सुन्दरम् से पूछा, "वह सन्मार्ग पर आई है अथवा नहीं?"

"महाराज! अभी नहीं! उसे वहां सेठ महेश्वर मिल गया है और उनके आश्रय में वह सन्तुष्ट प्रतीत होती है।"

"परन्तु वह तो इस समय पचास वर्ष का व्यक्ति है?"

"जी! संतोष बाई उनकी लड़की की भांति वहां रहती है।"

"ठीक है! लड़की का पिता गुरु के पद पर नहीं बैठ सकता। इस कारण वह शीघ्र ही उससे उदास हो यहां आने की लालसा करने लगेगी।"

"मैं अभी-अभी बम्बई से लौटा हूं और यहां का प्रथम कर्तव्य आपके चरण स्पर्श करने चला आया हूं। अब आज्ञा चाहता हूं।"

"हां, जा सकते हो।" गुरु जी ने कहा तो सुन्दरम् बैठक घर से निकल गया।

सुन्दरम् के जाते ही रामानन्द भावे ने कहा, "गुरु भाई वीरेन्द्र सोमानी के कहने पर मैंने इसे रेल की सेवा से पृथक् कर दिया है। इस कारण इसे यहां देख मुझे विस्मय हुआ है।"

"मुझे सब विदित है। सोमानी जी ने सारा वृतान्त बताया है।"

"तो आप इसे यहां किसलिए आशीर्वाद दे रहे हैं?"

"आशीर्वाद तो हम सबको देते हैं।"

भावे इस नीति को समझ नहीं सका। इस कारण उसने बताया, "वास्तव में यह निर्दोष है। इसने रेल विभाग पर मुकद्दमा कर रखा है। इस मुकद्दमे में यह जीतेगा। परन्तु तब तक मैं रिटायर हो जाऊंगा। इस कारण जो कुछ तब होगा, उसका मुझसे सम्बन्ध नहीं होगा। रेलवे को इसे इस बीच के काल का पूरा वेतन देना पड़ेगा।"

गुरु जी ने मुस्कराकर पूछा, "तो इससे रेल विभाग का दिवाला पिट जाएगा क्या?"

"नहीं। सरकारी कार्यों के दिवाले नहीं पिटते।"

"तो फिर आपको चिन्ता किस बात की है?"

"मैं विचार करता हूं कि यदि आप इससे सन्तुष्ट हैं तो मैं ही इसके विरुद्ध आज्ञा वापस ले सकता हूं और मुकद्दमा बेकार हो जाएगा।"

"तो स्वयं इससे मिलकर बात कर लो। हमें इससे प्रसन्नता ही होगी।"

"और वीरेन्द्र सोमानी।"

"उसे हम समझा देंगे। वह अभी युवक है। कभी-कभी गलत बात भी कर सकता है।"

उसी दिन तीसरे प्रहर सुन्दरम् विश्राम कर उठा और कमरे से बाहर निकला तो द्वार के बाहर रामानन्द भावे को खड़े, उसके कमरे का नम्बर पढ़ते देख नमस्कार कर पूछने लगा, "श्रीमान्! क्या देख रहे हैं?"

"कमरा नम्बर इकावन ढूंढ़ रहा था।"

"वह यही है। आजकल इसमें मैं रहता हूं।"

"मैं आपसे ही मिलने आया हूं।"

"तो यहीं मिलेंगे अथवा किसी अन्य स्थान पर। वैसे मैं इस समय कॉफी पीने का विचार कर रहा था।"

"आप मेरे कमरे में आइए। वहां सेवक कॉफी का प्रबन्ध कर रहा है।"

"तब चलिए। परन्तु श्रीमान् ने किस कारण से स्मरण किया है और इस समय मेरे कमरे में आने का कष्ट किया है?"

"वहां कमरे में चलकर बात करेंगे।"

दोनों भावे के कमरे में आ गए। उस कमरे में पहुंच सुन्दरम् को सोफा पर बैठा रामानन्द ने अपने निजी सेवक को कहा, "दो प्याले कॉफी ले आओ।"

सेवक गया तो रामानन्द भावे ने कहा, "मुझे ज्ञात नहीं था कि गुरु जी के आपके विषय में इतने अच्छे विचार हैं। अब उनकी बातों से पता चला है कि आप

उनके प्रिय शिष्यों में हैं।

"इस कारण मैं विचार करने लगा हूं कि आपके खिलाफ सेवा से निलम्बित करने की आज्ञा वापस ले ली जाए।

"बताइए आप क्या चाहते है?"

"मैं तो चाहता हूं कि मुकद्दमा चलता रहे। मुझे गुरु जी की सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता रहेगा।

"मुकद्दमा तो रेल विभाग हारेगा ही। मेरा पूरा वेतन तो मुझे मिलेगा। यदि मैं भूल नहीं करता तो मुकद्दमा दस वर्ष तक चलेगा और तब मुझे रेलवे से नब्बे हजार रुपया एकदम मिलेगा।"

"यह तो ठीक है मिस्टर सुन्दरम्! परन्तु यहां दस वर्ष तक बेकार बैठे रहे तो दस वर्ष उपरान्त किसी भी काम के योग्य नहीं रह जाएगे।

"हम अफसर लोग दो-चार दिन के लिए यहां आश्रम में ऐसे आते हैं जैसे लोग किसी उद्यान में खुली सुरभित हवा खाने जाते हैं। दो-तीन दिन यहां रहे और चल दिए। यह स्थान जीवन व्यतीत करने के लिए नहीं।"

"परन्तु जिस सोमानी जी के कहने पर आपने मुझको निलम्बित किया है, उसको क्या उत्तर देंगे?"

भावे परेशानी में मुख देखता रह गया। इसपर सुन्दरम् को एक विचार सूझा। उसने कहा, "तो आप मेरे विपरीत सरकारी आज्ञा वापस कर लीजिए। और फिर मैं विचार करूंगा कि कब और कहां वापस आऊं।"

"तब ठीक है। शेष मैं कर लूंगा। गुरु जी की आज्ञा हुई है कि आपसे सम्बन्ध साधारण कर लिए जाएं।"

"अर्थात् मुझे डीग्रेड कर दिया जाए। अब मैं श्रीयुत् भावे जी को अदालत में मूर्ख, नालायक और कार्य में अकुशल सिद्ध करने जा रहा हू। गुरु जी मुझे पुनः आपका वफादार अधीन कर्मचारी बनाना चाहते हैं।"

"तो आप मुकद्दमा उठवाना नही चाहते?"

"यह मुकद्दमा मेरे कहने से चला नही। मैंने श्रीमान् जी से 'इंटरव्यू' के समय भी कहा था, पीछे इम्पीरियल होटल से लिखे पत्र में भी लिखा था कि मुझे सेवा से पृथक करने में कोई कारण नही। इसपर भी आप समझे नहीं और मैंने गुरु जी से यह कहा था कि रेलवे बोर्ड का चेयरमैन कोई अयोग्य, कम बुद्धि रखने वाला व्यक्ति है।

"और अब आप कह रहे हैं कि गुरु जी हममें 'नॉर्मल' सम्बन्ध चाहते हैं।"

के० सुन्दरम् के इन्टरव्यू की बात रामानन्द को याद आ गई। उस दिन इसने कहा था कि उसके पदपर नियुक्त होने मात्र से यह सिद्ध नहीं हो जाता कि वह इस पद के योग्य भी है और आज यह कह रहा है कि वह उसे अदालत में मूर्ख और

अयोग्य सिद्ध करने जा रहा है और गुरु जी की आज्ञा उसे यह सिद्ध करने से वंचित कर रही है।

वह मन में विचार करता था कि यह अपने आप में पूर्ण रूप में आश्वस्त है कि उसे अदालत में अयोग्य और मूर्ख सिद्ध कर देगा। इससे वह कांप उठा। परन्तु इस बात का विचार कर कि वह तो गुरु जी का कहा मान, मुकद्दमा वापस ले रहा है, वह अपना अपमान भीतर ही भीतर पी गया और बोला, "भला-बुरा आपका अथवा मेरा जो कुछ भी होना है, गुरु जी की आज्ञा से है। इस कारण एक श्रद्धालु भक्त की भांति मुझे उनकी आज्ञा का पालन करने से प्रसन्नता ही होगी।"

इस समय सेवक कॉफी ले आया और दोनों गुरु भाई पीने लगे।

कॉफी पीते हुए सुन्दरम् ने कहा, "यह कॉफी होस्टल की नहीं है। यह तो बहुत ही बढ़िया है।"

"हां, गुरु जी मुझ पर विशेष कृपा रखते हैं।"

"तभी! परन्तु गुरु जी स्वयं भी इतनी बढ़िया कॉफी पीते हैं क्या?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"तो आप भी इस आश्रम को दान-दक्षिणा करते होंगे?"

"कुछ विशेष नहीं। गुरु जी की आज्ञा पर इनके भक्तों को काम देता रहता हूं।"

"तो वे लोग देते होंगे?"

"यह तो वे ही बता सकते हैं।"

"आखिर इतने बड़े आश्रम का खर्च कहां से चलता है?"

"देखो मिस्टर सुन्दरम्! वह आप पर बहुत प्रसन्न हैं। यह उनसे ही पता करें। तुम्हें अवश्य बता देंगे।"

बात समाप्त हो गई।

गुरु जी विश्राम करने अपने कमरे में आए तो सुन्दरम् भी वहां उपस्थित हो गया। गुरु जी ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो सुन्दरम् ने कहा, "भगवन्! आप विश्राम कीजिए, मैं आपके चरण दबाऊंगा।"

गुरु जी मुस्कराकर अपने पलंग पर लेट गए।

सुन्दरम् ने पांव दबाते हुए कहा, "भगवन्! कल रामानन्द जी ने कॉफी पिलाई थी। वह अति स्वादिष्ट थी। पूछने पर वह बताने लगा कि आपकी उनपर विशेष कृपा है।"

गुरु सोमेश्वर जी हंस पड़े। हंसते हुए बोले, "मेरे लिए मेरे सब शिष्य समान हैं। सब लोगों को आश्रम के कॉमन-किचन से ही मिलती है। केवल यह प्रबन्ध है कि जैसा, जैसा व्यक्ति चाहता है, वैसा ही उसके लिए प्रबन्ध हो जाता है। यह आश्रम उन लोगों के धन से ही चलता है और उसी धन से इनके लिए प्रबन्ध

होता है।"

"तब तो ठीक है। यह होना ही चाहिए।"

समय व्यतीत होने लगा। एक मास के पश्चात् सुन्दरम् को रेलवे बोर्ड का पत्र मिला कि कोर्ट की जांच-पड़ताल के कारण आपके मामले पर पुनरावलोकन किया गया है और बोर्ड इस परिणाम पर पहुंचा है कि आपको पुनः पहली ही 'पोस्ट' पर नियुक्त कर दिया जाए। अतः यह आज्ञा दी जाती है कि आप प्रथम सितम्बर को बम्बई सैण्ट्रल स्टेशन पर अपने काम पर उपस्थित हो जाए।

पत्र पच्चीस अगस्त को मिला था। इस कारण उसके लिए तुरन्त बम्बई लौटना आवश्यक था। वह पत्र ले गुरु जी की सेवा में पहुंचा और पत्र सुना बोला, "यह सब आपकी कृपा का फल है। परन्तु इससे मैं आपके अति सुखद सान्निध्य से वंचित हो रहा हूं।"

गुरु जी मुस्कराकर पूछने लगे, "तो कब आओगे ?"

"महाराज ! मैं इस आज्ञा से प्रसन्न नहीं हू। इसमें दो कारण हैं। एक तो मैं आपकी संगत से वंचित किया जा रहा हूं और दूसरे, मेरा यहां आने का एक उद्देश्य था। उसको प्राप्त किए बिना ही यहां से जा रहा हूं।"

"परन्तु समय-समय पर आते रहोगे तो उनकी प्राप्ति असम्भव नहीं।"

8

सुन्दरम् बम्बई पहुंचकर पत्नी को लाने के लिए नर्सिंग होम में जा पहुंचा। उसने अपनी पत्नी को बताया कि दो मास आश्रम में रहकर भी वह जान नहीं सका कि क्यों देश के धनी-मानी लोग और सरकार के बड़े-बड़े अधिकारी भी गुरु जी के चरण स्पर्श करते हैं और उनके संकेत पर चलते हैं।

संतोष बाई दो मास से अधिक काल तक सत्यवती की संगति में रहने से स्वयं को समझदार समझने लगी थी। उसने हंसते हुए कहा, "यह तो सेठ जी ने आपको जाते समय भी कहा था कि किसी बात का रहस्य जानने के लिए स्वय उस विषय की योग्यता प्राप्त करनी होती है। वह आपने नहीं की।"

"क्या योग्यता चाहिए थी ?"

"वह आप सेठ जी से पता करिए। वह ही बता सकेंगे कि गुरु जी का रहस्य जानने के लिए क्या योग्यता आवश्यक है ?"

"आज सत्ताईस अगस्त है। पहली सितम्बर को मुझे ड्यूटी पर पहुंचना है। मैं दो दिन तो इस 'होम' में रहना चाहता हूं और फिर सेठ जी के मकान पर जा रहूंगा। आशा करता हूं कि मेरा क्वार्टर मुझे शीघ्र ही मिल जाएगा। फिर हम वहां चले जाएंगे।"

"मैं तो यहां अपने को बहुत सुखी अनुभव करती हूं।"

"क्या सुख है यहां ?"

"यह पुरुषों को नहीं बताया जा सकता। हमारी मिज़ेस पण्डित प्रत्येक प्रसव के उपरान्त ईश्वर का धन्यवाद किया करती हैं कि वह परमात्मा के यज्ञ कार्य में सहायक हो रही है।"

"परन्तु आज समाज में बच्चे निर्माण करना एक दोष माना जाता है।"

"जी नहीं। इस विषय मे माता सत्यवती जी ने बताया था कि बच्चे पैदा करना मना नहीं। दो अथवा तीन से अधिक निर्माण करना दोष माना जाता है।

"माता जी का कहना है कि समाज में शौर्य और जीवन को भय में डालने की प्रकृति बढ़ानी चाहिए। यही मनुष्य के कल्याण का साधन है। उनका कहना है कि उन लोगों की भी प्रतिवर्ष गणना होनी चाहिए जो साहस और शौर्य का काम करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए हैं। उनकी संख्या में वृद्धि तो जाति में उन्नति का चिह्न होगा।"

सुन्दरम् सेठ जी को मिलने गया तो वहां उनके पास भण्डारी बैठा था। भण्डारी ने बताया नहीं कि वह किस कारण आया है, परन्तु जब सुन्दरम् ने बताया कि उसको निलम्बित करने की आज्ञा को रद्द करने का पत्र आया है, तो वह हंस पड़ा। उसने कहा, "रेल मंत्री द्वारा लोकसभा में तुम्हारे मुकद्दमे पर प्रश्न पूछे जाने से भयभीत हो मामला रफा-दफा किया जा रहा है।"

सुन्दरम् को यह कारण ठीक प्रतीत हो रहा था, परन्तु वह यह नहीं समझ सका कि भावे गुरु जी के पास क्या करने आया था। यदि गुरु जी मंत्री से उलट राय देते तो क्या होता ?

वह इस बात को विचार करता रहा, परन्तु उसने अपने मन का संशय भण्डारी के सामने प्रकट नहीं किया। उसने पूछ लिया, "भण्डारी जी ! मैं आपके दर्शन की इतनी जल्दी आशा नहीं करता था। वहां कुछ सिद्धेश्वर की गड़बड़ तो नहीं ?"

"नहीं ! वह न केवल सर्वथा नेक, सत्यनिष्ठ युवक है, वरन् वह कार्यकुशल भी है। वहां का कार्य सरलता से चल रहा है। यह तो मैं अपने लद्दाख के कार्य से आया हूं। वहां के लिए कुछ मशीनरी फ्रांस से आने वाली थी। यहां के कस्टम विभाग ने बताया था कि वह नहीं आई और मेरे पास सूचना थी कि वह फ्रांस से भेजी गई है।"

"तो क्या पता चला है ?"

"मामला पुलिस के हाथ में दे दिया गया है। सरकार तो ऐसा करना नहीं चाहती थी, परन्तु मैंने एक अत्यन्त कठोर पत्र सैनिक विभाग को लिखा था। विवश होकर सैनिक विभाग ने मामला पुलिस को दिया है।

"मैं पुलिस को उत्साहित करने आया हूं कि मेरा आना फल लाएगा। यदि मेरा बस चला तो बहुत से लोग, कदाचित् आपके गुरु आश्रम के अधिकारी भी, हवालात में होंगे।"

सुन्दरम् ने पूछ लिया, "आप कब तक यहां रहेंगे?"

"अब यहां आया हूं तो कावेरी पर काम भी देखने जाऊंगा और फिर लौटकर जाऊंगा।"

यह भेंट नर्सिंग होम में हो रही थी। भण्डारी अगले दिन प्रातः ही गया तो सुन्दरम् संतोष बाई को सत्यवती से छुट्टी दिला बाईकुला वाले सेठ जी के मकान में ले गया।

निश्चित दिन वह स्टेशन पर गया तो उसके असिस्टैंट ने चार्ज दे दिया।

चार्ज देने के उपरान्त बाबू ने बताया, "यद्यपि आपके आने से मेरी पदोन्नति की आशा कुठाली में पड़ गई है, इस पर भी यहां के पूर्ण स्टाफ को आपके मान सहित वापस आने से अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।"

"तो वृन्दावन बाबू! सबको मेरा धन्यवाद पहुंचा देना।"

"स्टाफ के लोग आपके आने पर प्रसन्नता का एक उत्सव करना चाहते हैं।"

"देख लो! प्राईवेट रूप में धन्यवाद करना और सार्वजनिक रूप से एक सरकारी भूल को प्रकट करने में अन्तर है। इसके लिए जलसा करना हानि भी पहुंचा सकता है।"

"तो आपको विदित नहीं?"

"क्या विदित नही?"

"श्री रामानन्द भावे समय से दो वर्ष पूर्व सेवा मुक्त होने पर विवश किए गए हैं।"

यह सुन्दरम् के लिए सर्वथा नवीन समाचार था। इस पर भी उसने कहा, "इसकी सरकारी रूप में घोषणा होने दो। पीछे इस सार्वजनिक समारोह पर विचार किया जाएगा।"

स्टेशन पर ऊपर की आय सहस्रों रुपए नित्य की होती थी, परन्तु सुन्दरम् वह सब अधीन कर्मचारियों में बंटवा देता था। इससे सब कर्मचारी प्रसन्न रहते थे। यद्यपि वृन्दावन बाबू भी सुन्दरम् की प्रथा का अनुकरण करता था, इस पर भी दोनों में अन्तर था। सुन्दरम् इस ऊपर की आय में स्वयं एक पैसा भी नहीं लेता था और वृन्दावन बाबू अपना हिस्सा छोड़ता नहीं था। इससे कुछ अधिक अन्तर नहीं पड़ता था, परन्तु सुन्दरम् और वृन्दावन में अन्तर तो स्पष्ट ही था।

सुन्दरम् को अपने स्टेशन पर आए एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि दिल्ली से आने वाली फ्रन्टियर मेल में रामानन्द भावे परिवार सहित आ पहुंचा।

सुन्दरम् को एक कुली ने सूचना दी तो वह भागा-भागा आया और गम्भीर

भाव से भावे का स्वागत करने लगा। जब सब सामान डिब्बे में से निकाला जा चुका तो सुन्दरम् ने पूछा, "श्रीमान ! अब आगे क्या कार्यक्रम है ?"

"मैं अपने गांव में जाकर शेष जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखता हूं। इस पर भी मेरे कुछ लेन-देन की बात रेल विभाग में हो रही है। उसके निश्चय होने में एक-दो मास लग सकते हैं। तब तक मैं यहां बम्बई में रहूंगा।"

"और यहां रहने का प्रबन्ध है ?"

"अभी तो होटल में प्रबन्ध करूंगा।"

"तो मैं एक स्थान बताऊं ?"

"हां !"

"सेठ महेश्वर जी का निजी मकान सर्वथा खाली पड़ा है। कहे तो टेलीफोन से स्वीकृति ले दूं।"

"बहुत गहरी छन रही है उनसे ?"

"वह बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं। गुरु आश्रम में ही उनसे परिचय हुआ था, परन्तु पीछे परिचय और भी अधिक परिपक्व हुआ है।"

भावे परिवार को वेटिंग रूम में भेज स्वयं सुन्दरम् के साथ उसके कमरे में चला आया। सुन्दरम् ने सेठ जी को टेलीफोन किया और उनके मकान में अपने एक मेहरबान को ठहराने की स्वीकृति मांग ली।

स्वीकृति मिली तो समीप खड़े हुए भावे ने पूछा, "उन्होंने नाम नहीं पूछा ?"

"मैंने स्वयं ही बताया है कि मेरे एक मेहरबान हैं। उन्होने इतना ही पर्याप्त समझा है।"

भावे एक-दो क्षण सुन्दरम् का मुख देखता रहा और फिर एकाएक उठकर बोला, "तो अपने किसी सेवक को मेरे साथ मकान पर भेज दें।"

"भेज देता हूं। मेरी पत्नी भी उसी मकान मे रहती है। मुझे यहां अभी अपना क्वार्टर नही मिला। वह मकान बहुत खुला है। उनके फ्लैट में सात कमरे पूर्ण रूप से सुसज्जित हैं। मैं तो एक कमरे में ही रहता हू। हां ! मैं अपनी पत्नी को कहला भेजता हूं कि आपको प्रत्येक प्रकार से सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर दे।"

"मिस्टर सुन्दरम् ! आप मेरे लिए यह सब क्यों कर रहे है ?"

"आपने गुरु आश्रम में एक अति स्वादिष्ट कॉफी का प्याला पिलाया था। मै उसे भूल नही सका। मै स्वयं भी यहां से अवकाश पा घर आऊंगा और देखंगा कि आपको सब प्रकार से आराम और सुख मिले।"

9

रामानन्द भावे स्वयं चकित था कि उससे यह भूल कैसे हो गई कि उसने गुरु भाई

सोमानी के कहने पर एक निर्दोष रेलवे अधिकारी को निलम्बित कर दिया था। वह निलम्बित होने पर कदाचित् समझ रहा था कि सुन्दरम् गुरु जी के पास जाकर उनकी मिन्नत कर अपना मामला महकमे के भीतर ही ठीक कराने का यत्न करेगा। यदि सुन्दरम् गुरु जी के सम्मोहिनी प्रभाव में इस समय भी होता तो वह ऐसा करता। रेलवे बोर्ड की उसे निलम्बित करने की आज्ञा पाते ही वह भागा-भागा गुरु आश्रम में आता और गुरु जी से सिफारिश कराता। परन्तु उसके मस्तिष्क पर से गुरु जी का सम्मोहिनी प्रभाव मिट चुका था। इस कारण वह इम्पीरियल होटल से सीधा गुरु आश्रम को भागने के स्थान बम्बई आया और फिर सेठ जी की सम्मति से रेलवे बोर्ड की आज्ञा को रद्द कराने का यत्न कर बैठा।

पहली ही पेशी में बोर्ड से आज्ञा की प्रतिलिपि मांगी गई, जिससे सुन्दरम् को निलम्बित किया गया था। रेलवे वकील के कहने पर छः मास की तारीख दे दी थी। परन्तु इस बीच में लोकसभा के एक सदस्य ने संसद मे प्रश्न पूछ लिया और कहा कि मिस्टर के० सुन्दरम् तथा रेलवे बोर्ड की सब-कमेटी में हुई बातचीत की रिपोर्ट लोकसभा की मेज पर रखी जाए।

रिपोर्ट मिनिस्टर साहब ने मंगवाई। रिपोर्ट पढ़ वह उसे मेज़ पर रखने में अपना और रेलवे बोर्ड का कल्याण नहीं समझते थे। इस कारण रेलवे मन्त्री ने पहले तो भावे को कहा कि निलम्बित करने की आज्ञा वापस लो। भावे इसके लिए गुरु जी की सेवा में जा पहुंचा। वह चाहता था कि सुन्दरम् एक प्रार्थना-पत्र भेजे कि उसके मामले पर पुनरावलोकन हो। उसे विस्मय हुआ कि सुन्दरम् स्वयं गुरु आश्रम में उपस्थित है। परिणाम यह हुआ कि बिना शर्त आज्ञा वापस लेनी पड़ी।

रेलवे मन्त्री ने सुन्दरम् को पुनः सेवा पर वापस लेने की आज्ञा जारी करते ही भावे को समय से पूर्व सेवामुक्त होने पर विवश कर दिया।

यह सब लोकसभा का पेट भरने के लिए किया गया। भावे बम्बई में कुछ दिन रह कर रेलवे विभाग से लेन-देन की बात करना चाहता था। इसके लिए उसे बम्बई में एक-दो मास ठहरने की आवश्यकता अनुभव हो रही थी।

जब सुन्दरम् ने उसे सेठ जी के मकान में रहने की सुविधा दिलवाई तो वह चकित रह गया। भावे पहुंचा तो सेठ जी का सेवक उनको आदरपूर्वक ड्राइंग रूम में ले जाकर पूछने लगा, "कितने कमरे खोल दें?"

संतोष बाई नहीं जानती थी कि आने वाले कौन हैं। मकान के सेवकों ने बताया था कि श्री सुन्दरम् जी के कोई अतिथि हैं। इससे वह भी इनके स्वागत के लिए ड्राइंग रूम में आ गई थी।

भावे था, उसकी पत्नी थी और उनके नाते-नातियां थीं। भावे की एक ही लड़की थी और वह अपने पति के साथ भारत के लन्दन स्थित हाई कमीशन में

सेवा कार्य करती थी। लड़की के दोनों बच्चे अपनी नानी के पास रहते थे।

अतः इन्होंने कह दिया, "दो बैड-रूम मिल जाएं।"

भावे के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब वह स्नानादि से निवृत्त हुए तो उनके लिए प्रातः का अल्पाहार आ गया। भावे ने कहा, "हम बाज़ार में जाकर खा सकते थे।"

इस पर संतोषबाई ने कहा, "सेठ जी का टेलीफोन आया था कि आप कृष्णन् के पिता के बहुत मेहरबान हैं। इस कारण इतना कुछ तो आपके लिए करना ही होगा।"

तदनन्तर डेढ़ बजे लंच भी तैयार हो गया। संतोष बाई ने बताया कि उसके पति लगभग तीन बजे आएंगे। तब तक आपको लंच मे देरी हो जाएगी।

भावे चुपचाप यह आदर-सत्कार स्वीकार करता रहा।

तीन बजे सुन्दरम् आया। तब भावे अपने कमरे में आराम कर रहा था। सायंकाल की चाय के समय सुन्दरम् और उसकी भेंट हुई तो भावे ने कहा, "मिस्टर सुन्दरम्! मैं समझता हू कि मुझे बम्बई में दो-तीन महीने ठहरना पड़ेगा। तब तक तो यह प्रबन्ध आप पर बोझा प्रतीत होगा।"

सुन्दरम् ने मुस्कराकर कहा, "श्रीमान्! यहां इस घर में ठहरने वाले के खाने इत्यादि का खर्च सेठ जी देते हैं। मैं भी उनका दिया ही खाता हूं।"

"परन्तु खाना तो दक्षिणी ढंग का है?"

"हां, उन्होंने अपने सेवकों को आज्ञा दे रखी है कि जैसा मेरी श्रीमती चाहे, वैसा ही बना दिया जाए।

"सेठ जी से मेरी बातचीत हुई है। मैंने आपका पूर्ण परिचय उनको दिया है। इससे वह अति प्रसन्न थे कि मैंने आपको यहां ठहरने का निमन्त्रण दिया। वह कह रहे थे कि आप जब तक चाहें यहां रह सकते हैं।"

"तब तो मुझे उनसे मिलना चाहिए।"

"हां, यदि आप चाहें तो मैं आपको कल मध्याह्नोत्तर चाय के समय वहां ले चलूंगा। आपका परिचय उनसे करा दूंगा।"

"परन्तु वह आप पर इतने दयालु क्यों हैं? क्या उनका रेलवे विभाग से अधिक काम पड़ता है?"

"जी नहीं! उनका पूर्ण व्यापार विदेशों से है। उस व्यवसाय का कार्यालय नीचे है। वह स्वयं तो वानप्रस्थ ले एक चैरिटेबल नर्सिंग होम चलाते हुए वहीं रहते हैं।"

"और उनका व्यवसाय कौन देखता है?"

"उनका एक लड़का है। वह आजकल यहां नही है। कार्य उनका एक सेवक करता है। सेठ जी की पतोहू निरीक्षण करती रहती है। सेठ जी का लड़का एक

मिस्टर भण्डारी के साथ साझेदारी में कावेरी के काम पर गया हुआ है।"

भण्डारी का सुन भावे समझ गया कि भण्डारी यहां भी है। इससे वह डर गया। उसे ज्ञात था कि भण्डारी के एक मित्र ने, जो ससद का सदस्य था, ही प्रश्न पूछ उसे रेलवे बोर्ड से निकलवाया था।

इस पर भी वह मौन रहा और सेठ जी से मिलने की इच्छा व्यक्त करता रहा।

अगले दिन वह सुन्दरम् और उसकी पत्नी के साथ सेठ जी से मिलने जा पहुंचा। उस समय वहा रामकृष्ण भण्डारी भी बैठा था। भावे को देख भण्डारी एक क्षण तक विस्मय में सुन्दरम् के मुख पर देखकर पूछने लगा, "सुन्दरम् जी! इनको कहां से पकड़ लाए हैं?"

उत्तर भावे ने ही दिया, "भण्डारी जी! आपको विदित ही है कि मुझे समय से पूर्व सेवा से पृथक होने पर विवश किया गया है।"

'जी! यह तो जानता हूं, परन्तु आप जैसे अपराधियों के लिए तो स्थान जेलखाना होना चाहिए।"

"भाई, वहां ही हूं। सेठ जी द्वारा स्थापित बाईकुला के जेल में पहुंच गया हूं। परन्तु वह जेल ताज होटल की भांति सुसज्जित है।"

भण्डारी हस पड़ा। सेठ जी ने सफाई दे दी। उन्होंने बताया, "कल सुन्दरम् का टेलीफोन आया कि उसका एक मेहरबान कुछ दिन बम्बई में रहने के लिए आया है। सुन्दरम् और उसकी पत्नी मुझे अति प्रिय हैं। इस कारण इनके मेहरबान को मैंने अपने फर्नीश्ड फ्लैट में रहने की स्वीकृति दे दी है।"

इस पर भण्डारी ने कहा, "सेठ जी! आपकी सौजन्यता और सरकार की नपुंसकता ने मेरी सब योजना मिट्टी में मिला दी है।"

"क्या योजना थी आपकी?"

"मैं इन श्रीमान् के लिए दो वर्ष तक बम्बई और दिल्ली में फुटबाल की भांति इधर-उधर भटकने का प्रबन्ध कर रहा था। मेरी योजना थी कि दो वर्ष जो इनकी सेवा के शेष हैं, इसमें यह सरकार की अर्दली में तो रहें, परन्तु बिना वेतन के।

"परन्तु यदि यह इस सब काल में आपके अतिथि रहने वाले हैं तो मैं समझता हूं कि अपनी योजना को समेट लूं क्योंकि तब यह आपको दण्ड देना होगा।"

सेठ जी ने कहा, 'नहीं भण्डारी जी! इनके रहने से मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। आप अपनी योजना चलाइए।"

"नहीं! अब मैं इनको एक ही महीने में मुक्त कर गांव भेज देना चाहूंगा।"

सब हंसने लगे।

भण्डारी ने एक बात और बताई, "मैंने गुरु आश्रम को एक षड्यन्त्र में फंसा ही दिया था, परन्तु अपने सुरक्षा मन्त्री का कल एक पर्सनल पत्र आया कि मुझे

इस मामले में रुचि नहीं लेनी चाहिए। इससे सरकार की भारी बदनामी होगी।"

भावे ने पूछा, "गुरु जी की क्या बात थी ?"

"बात यह है कि एक लाख फ्रैंक के मूल्य की मशीनरी लद्दाख के ऐयर-पोर्ट के लिए मंगवाई गई थी। मशीनरी वहां से भेजी गई, परन्तु यहां नहीं पहुंची।

"वह जहाज, जिसमें माल आया था, लौट गया था। मैंने लिखा-पढ़ी की और एक षड्यन्त्र का पता चला। षड्यन्त्र में गुरु जी के कुछ शिष्य भी सम्मिलित दिखाई दिए हैं। मशीनरी फ्रांसीसी जहाज से वसूल कर एक आस्ट्रेलियन जहाज पर लाद दी गई थी। उसे पचास हजार फ्रैंक के लाभ पर आगे बेच दिया गया था। कल मुझे यह आज्ञा हुई है कि मुझे उस सरकार की मान प्रतिष्ठा का ध्यान रखना चाहिए जो मुझे लाखों रुपये प्रतिवर्ष का लाभ कराती है। अतः मैंने अपने को इससे पृथक कर दिया है और सरकार ने भी जांच वापस कर ली है। मशीनरी पुनः फ्रांस से चलेगी और दो महीने में यहां पहुंचेगी।

"इस मामले में किस-किस की जेब गरम हुई है, मुझे जानने में रुचि नहीं। मुझे यह पता चला है कि मेरे पूर्ण परिश्रम पर पानी फिर गया है और गुरु जी तथा उनके चेले-चोटे अभी भी दनदनाते फिर रहे हैं। यदि जांच पूरी होती तो इस षड्यंत्र में उनके हाथ होने का ज्ञान स्पष्ट हो जाता।"

भावे के मुख से निकल गया, "तो इसका आपको आज ज्ञान हुआ है ?"

"मुझे सन्देह तो कई वर्षों से था कि गुरु जी की आड़ में गैरकानूनी बातें होती रहती हैं। परन्तु अभी तक कोई पकड़ में नहीं आई थी। अब आशा थी कि कुछ रहस्योदघाटन होगा, परन्तु अब मुझ पर कोई दबाव पड़ा है और मुझे चुप रहना पड़ा है। इस कारण इस प्रकार के स्पष्ट अपराध भी रहस्य ही रह गए हैं।"

सुन्दरम् ने पूछा, "और यह समाज सुधार तथा मानव को उन्नत करने की बातें ?"

भावे का कहना था, "ऐसी बातें जन-साधारण के समक्ष मुलम्मेबाजी होती हैं। बात यह है कि आज भारत में प्रकृतिवाद और सुख-भोग का दौर चल रहा है। चोटी के विद्वानों से लेकर स्कूल की पाचवीं-छठी श्रेणी तक के विद्यार्थी तक प्रकृतिवादी हो रहे हैं और जब भी कोई महापुरुष प्रकृति का नाम लेकर अप्राकृतिक बात बताने लगता है तो वह महान् विद्वान्, योगिराज और सिद्ध माना जाता है।

"मैं भी इसी प्रलोभन में फंसा चला जा रहा था। परन्तु ज्यों ही इन प्रकृतिवादियों को पता चला कि मेरा सितारा अस्ताचल की ओर है, इन्होंने मेरा साथ छोड़ मेरी निन्दा करनी आरम्भ कर दी।"

भण्डारी ने बताया, "सेठ जी ! इस सब की जड़ है भौतिकवाद। मूल प्रकृति निर्जीव है। भौतिकवाद निर्जीवों का सिद्धान्त है। उसे लागू किया जा रहा है

जीवात्मा पर। उसका परिणाम यह है कि आकाश से पाताल तक सब बेईमान और स्वार्थी हो रहे हैं।"

"हां ! यह तो है। मेरी पत्नी कहा करती है कि मन प्रकृति से सम्पर्क में रहने के कारण कामनाओं के पीछे भागता है। यह जीवात्मा ही है जो इन कामनाओं से पार पा सकता है। इसमें विवेक उसकी सहायता कर सकता है। परन्तु न विवेक है, न ही जीवात्मा के अस्तित्व पर विश्वास और परिणाम ही दिखाई दे रहा है।"

• • •

मुद्रक : आइरिस प्रिंटिंग, शाहदरा, दिल्ली

21980